हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग ।

प्रश्नपत्र

प्रथमा और मध्यमा

१९७४

प्रकाशक
परीक्षा-समिति

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी. ए. के प्रबन्ध से प्रयाग के सुदर्शन प्रेस में छपी और प्रयागस्थ साहित्य-सम्मेलन-कार्य्यालय से प्रकाशित हुई।

प्रथमा परीक्षा

साहित्य १

[परीक्षक—ला० भगवानदीन]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. अयोध्या काण्ड के आधार पर इन्द्रादि देवताओं के स्वभाव और आचरण वर्णन कीजिये और अपने कथन के प्रमाण में कुछ वाक्य भी उद्धृत कीजिये। १५

२. नीचे लिखे हुए पद्यों में से किसी चार के अर्थ लिखिए और यह बताइए कि वे किस प्रसङ्ग में आए हैं। २०

(क) सभा सकुचबस भरत निहारी।
रामबंधु धरि धीरज भारी॥
कुसमय देखि सनेह सँभारा।
बढ़त बिंध्य जिमि घटज निवारा॥
शोक कनक लोचन मति छोनी।
हरी बिमल गुन गन जग जोनी॥
भरत बिबेक बराह बिसाला।
अनायास उधरी तेहि काला॥

(ख) बारिधि के कुंभभव घन वन दावानल,
तरुन तिमिर हू के किरन समाज हौ।
कंस के कन्हैया कामधेनु हू के कंटकाल,
कैटभ के कालिका विहंगम के बाज हौ।
भूषन भनत जग जालिम के सचीपति,
पन्नग के कुल के प्रवल पच्छिराज हौ।
रावन के राम कार्तवीज के परसुराम,
दिल्लीपति दिग्गज के सेर सिवराज हौ॥

(ग) चपला की चमक चहुंश्रा सो लगाई चिता,
चिनगी चिलक पटबीजना चलायो है।
हेती बगमाल स्याम बादर सु भूमि कारी,
बीरबधू लह बुंद भुव लपटायो है।
हरीचंद नीर धार आंसू सी परत जहां,
दादुर को सोर रोर दुखिन मचायो है।
दाहन बियोग दुखियान को मरेहू यह,
देखो पापी पावस मसान बनि आयो है।

(घ) शर-रूप रसना को पसारे रिपु-रुधिर पीती हुई।
उत्कृष्ट भीषण शब्द करती जान मनचीती हुई।
अर्जुन कराग्रोत्साहिता प्रत्यक्ष कृत्यामूर्ति सी।
करने लगी गाण्डीव-मौर्वी प्रलय काण्ड-स्फूर्ति सी॥

(ङ) पराधीन ह्वै कौन चहै जीबो जग माहीं।
को पहरै दासत्व शृङ्खला पग माहीं।
इक दिन की दासता अहै शत कोटि नरक सम।
पल भर को स्वाधीनपनो स्वर्गहु ते उत्तम।

३. सत्य हरिश्चन्द्र-नाटक का जो दृश्य आप को सब से अच्छा जँचा हो उस का वर्णन लिखिये। ७

४. नीचे लिखे वाक्यों के अलंकारों के नाम बतलाइये और प्रत्येक की परिभाषा लिखियेः— १५

(क) नासपाती खातीं ते बनासपाती खाती हैं।
(ख) केरा के से पात बिहराने फन सेस के।
(ग) रघुनंद आनँदकंद कौशलचंद दशरथ नंदनं।
(घ) लसत मंजु मुनि मंडली मध्य सीय रघुचंद।
ज्ञान सभा जनु तनु धरे भक्ति सच्चिदानंद।
(ङ) जगत को जैतवार जीत्यो अवरंगजेब,
न्यारी रीति भूतल निहारी सिवराज की।

५. दोहा, हरिगीतिका, घनाक्षरी, रोला और छप्पय के लक्षण लिख कर उदाहरण में ऐसे छंद लिखिये जो इस प्रश्नपत्र के न हों। १५

६. निम्न लिखित शब्दों के अर्थ लिखिए—
कपालक्रिया, शिष्टाचार, ब्रह्मदंड, अंतःपुर, मुस्तैदी, अग्निसमाज, शर्वरीनाथ, अनट, संजोउ, सीकर, लिप्सा, कलरव, धनंजय, ब्याज, उल्का, वृकोदर। ८

७. नीचे लिखे हुए मुहावरों के अर्थ लिखिये और अपने बनाये हुए वाक्यों में उन का शुद्ध प्रयोग दिखलाइए—
हाथ डालना, आँख चोराना, मुँह लगाना, चित्त से बाहर, ख़बर लेना, गोता खाना, खेत रहना, बकुला मारे पखना हाथ। १२

८. नाटक, अंक, गर्भांक, नेपथ्य, इन शब्दों की परिभाषा इस प्रकार लिखिए जिस से इन का ठीक तात्पर्य समझ में आजाय। ८

साहित्य २

[परीक्षक—पं० कृष्णशंकर तिवारी, बी. ए.]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

१. चंडू को सौ अजान के बीच एक सुजान कहा गया है। बतलाइए कि इस सुजान के व्यवहार का प्रभाव किन किन पर कैसा पड़ा है। साथ ही यह भी संक्षेप से लिखिये कि इस उपन्यास के कौन कौन से पात्र चंडू के सहकारी और सहायक थे और इन्होंने क्या क्या कार्य किये? १५

२. नीचे लिखे वाक्यों का आशय सरल भाषा में समझाइये—
(क) असती जारिणी के कटाक्ष के समान सौदामिनी अभ्र पटल में चमक चमक कर छिपती हुई मानों इस बात को प्रकट करती है कि चरित्र में दाग़ लग जाना ऐसी ही बुरी बात है कि मुँह छिपाना पड़ता है। ५
(ख) दिन में सूर्य का, रात में चन्द्रमा का दर्शन किसी किसी दिन घड़ी दो घड़ी के लिए वैसे ही घुणाक्षर-न्याय सा हो जाता है कि जैसे अन्यायी राजा के राज्य में न्याय और इन्साफ़ कभी कभी बिना जाने अकस्मात् हो जाता है। ५

(ग) यह कल का पुतला जो अपने उस खिलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। ३

(घ) यदि जप, तप, संयम, व्रत, कर ध्यावेगा तो इससे मुँह-माँगा फल पावेगा ॥ ५

३. (क) धर्म-प्रवृत्ति, बुद्धि-प्रवृत्ति और आनुषंगिक-प्रवृत्ति किस को कहते हैं। ७

(ख) मन को स्वच्छन्द बना देने से किस प्रकार की हानि सम्भव है और यदि किसी विषय में चिरकाल से संलग्न होने के कारण मन उकता जाय तो उस को पुनः उसी विषय में किस प्रकार संलग्न कर सकते हैं। ८

४. शकुन्तला—(व्याजस्तुति की भाँति) हाँ सत्य है, तुम राजा लोग ही तो सब बात के प्रमाण होते हो और तुम ही यथार्थ धर्म और लोक रीति जानते हो, स्त्री दुखिया कैसी ही लाजवती और सुलक्षणी हो, तो भी धर्म नहीं जानती है, न सच बोलना जानती है। अच्छी घड़ी में मनभावते को ढूंढ़ने आई और अच्छे मुहूर्त में पुरुवंशी राजा से व्याह हुआ। तेरे मीठे बचनों ने मेरे विश्वास को जीत लिया था परन्तु हृदय में छिपा हुआ वह अस्त्र निकला जिस से मेरे कलेजे को घाव लगा।

(क) व्याजस्तुति किसे कहते हैं ? ३

(ख) "अच्छी घड़ी में मन भावते को ढूंढ़ने आई और अच्छे मुहूर्त्त में पुरुवंशी राजा से व्याह हुआ" इस वाक्य में कौन सा अलङ्कार है। उस अलङ्कार का लक्षण भी लिखिए। ४

(ग) व्याजस्तुति, यथार्थ, सुलक्षणी, पुरुवंशी, धर्मप्रवृत्ति, प्रबल, बुद्धिप्रवृत्ति, निरर्थक, इन पदों में जो समास हैं उनके नाम लिखिये। ४

(घ) जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है उनके कारक बताइये। ४

(ङ) वाक्य, वाच्य, भूतकाल, सर्वनाम और अव्यय के लक्षण और भेद लिखिये। ५

५. निम्न लिखित वाक्यों का स्पष्ट अर्थ लिखियेः—

(क) ये लोग रेउड़ी के लिए मसजिद ढहाने वाले हैं ॥ १ ॥

सेतमेत की टाँय टाय कर रहा है ॥२॥ खल उघरें तत्काल ॥३॥ बात की करामात ॥४॥ आज चकोर को दिन में चकाचौंधी कैसी ॥५॥ पूत सपूते तो धन क्या, पूत कपूते तो धन क्या ॥६॥ ६

(ख) अरुणोदय की तरुणाई से पूर्व दिशा मानो टेसू के रंग का वस्त्र पहने हुए दिननाथ सूर्य की अगवानी के लिए उद्यत सी हो अपनी सौत पश्चिम दिशा को ईर्षा से कलुषित कर रही है।

यहाँ पर पश्चिम दिशा को सौत क्यों कहा और ईर्षा से उसे कलुषित करने से क्या तात्पर्य है ? ४

(ग) कवन धर्म आचार, जग जीवन मम बंधु प्रिय।
करि जस लह्यो अपार, जो न दिये जलजात धुज।

यह किसने किसके प्रति कहा है और इस वाक्य से वक्ता का क्या आशय है। ३

(घ) नीचे लिखे शब्दों का उपयोग अपने बनाये वाक्यों में कीजिए:—मष्ट मारे, रामरमौअल, तरहदारी, प्रति-नायक, स्थानभ्रष्ट, धारापात, दुहाई, छेड़छाड़। ४

६. समाचार पत्रों से भाषा की उन्नति किस प्रकार हो सकती है ? ६

७. (क) निम्न-लिखित गद्य का सारांश अपनी भाषा में लिखिए—
प्रकृति का सदा से यह नियम चला आया है कि किसी देश की भाषा सदा एक रूप में नहीं रहती। प्रत्येक देश की भाषा के सम्बन्ध में इस नियम का उदाहरण मिल सकता है-बहुधा देखा जाता है कि देश के अभ्युत्थान के साथ साथ भाषा भी उन्नति के शिखर पर चढ़ती जाती है; पीछे देश के अधःपतन होने पर जब उसकी पहिली उन्नति के कोई चिन्ह नहीं रह जाते, तब केवल भाषा ही वहां की प्राचीन उन्नति की पूरी साखी भरती है। ६

(१) "उन्नति के" इस शब्द का कारक बताइये। किस शब्द से इसका सम्बन्ध है ? २

(२) वाक्य में "भरती है" का कर्ता और कर्म बताइए। १

साहित्य ३

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[परीक्षक—पं० रामचन्द्र शुक्ल]

नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर विस्तृत प्रबन्ध लिखिए जो कम से कम १०० पंक्तियों का हो।

१. भारत वर्ष में धन का दुरुपयोग

२. किसी वन की शोभा

३. हिंदू या मुसलमान कुटुम्ब में स्त्रियों की वर्तमान अवस्था और उसके कारण।

४. सदाचार क्या है और मनुष्य को सदाचारी होने की क्या आवश्यकता है?

इतिहास

[परीक्षक—पण्डित हरिमङ्गल मिश्र, एम. ए.]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

१. कौन कौन से दो प्रसिद्ध चीनी यात्री कब और क्यों भारत में आये? उन्होंने भारत के विषय में क्या लिखा है संक्षेप रीति से बतलाइये। १५

२. मौर्य वंश कब कैसे और कहां पर प्रतिष्ठित हुआ? चन्द्रगुप्त वा अशोक का संक्षेप वर्णन कीजिये। १५

३. भारतवर्ष के मुसलमान राजाओं में आप किस को सब से अच्छा समझते हैं और क्यों? १०

४. मरहठे कौन हैं? इनकी उन्नति का संक्षिप्त वर्णन लिखिये। १५

५. सिक्खों और अंग्रेज़ों में प्रथम युद्ध क्यों हुआ? उसका वर्णन तथा परिणाम लिखिये। १०

६. लार्ड रिपन के कार्यों का वर्णन कीजिये। १

७. भारतवर्ष को ब्रिटिश सम्राज्य द्वारा कौन कौन से लाभ प्राप्त हुए हैं संक्षेप में लिखिये। १०

८. लार्ड डेलहौज़ी के समय कहाँ तक भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार था। मानचित्र खींच के दिखलाइये। १५

भूगोल

[परीक्षक—श्री० नन्दराम, बी. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[केवल ८ प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल जायंगे। सब प्रश्नों में बराबर अङ्क हैं]

१. चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण में क्या भेद है? दोनों एक ही तिथि में एक साथ क्यों नहीं दिखलाई पड़ते। सूर्य का मण्डलाकार ग्रहण कैसा होता है और इसका क्या कारण है। एक नियत काल का अन्तर देकर क्रम पूर्वक ग्रहण क्यों नहीं लगा करते?

२. (क) ओस, पाला और कुहरा में क्या अन्तर है।

(ख) मेघ कितने प्रकार के होते हैं? वर्षा कैसे होती है।

३. "हिमालयादि किसी समय समुद्री तल में गोते खा रहे थे" इसका क्या प्रमाण है। पहाड़ों की बनावट का कुछ हाल संक्षेप से लिखिये और यह भी बताइये कि उससे और पृथ्वी की प्राचीनता से क्या सम्बन्ध है?

४. (क) एशिया के किस भाग में बसरा और बग़दाद हैं? आप वहां का कुछ हाल जानते हों तो लिखिये।

(ख) अफ़ग़ानियों की कितनी जातियां हैं। सब का नाम लीजिये। "अफ़ग़ानिस्तान की मैत्री भारतवर्ष के लिए अति उत्तम है।" क्यों?

५. "भारत सरकार" किसे कहते हैं? आप जो जानते हों विस्तार से लिखिये।

६. इस देश में रेल की प्रधान लाइनें कितनी और कौन कौन हैं।

दूसरे देशों से इस देश का सम्बन्ध किस प्रकार है। विशेष हाल लिखिये।

७. पंजाब, बङ्गाल और राजपुताने में देशी रियासतों के नाम दीजिये। देशी राज्य कितने प्रकार के होते हैं। भारतवर्ष का कौन सा भाग देशी राज्यों के अन्तर्गत है। अनुमान से क्षेत्रफल बताइये। उनमें क्या विशेषता हैं?

८. बतलाइये ये क्या और कहाँ हैं:—कोटा, बड़ोदा, बालासोर, शिकारपुर, गिलगिट, गोलकुंडा, चित्तौर, चितराल, महानदी और अरावली।

९. (क) नदियों से कौन सा उपकार वा अपकार होता है।
(ख) बङ्गाल में पंजाब से क्यों अधिक वृष्टि होती है।

१०. भारतवर्ष का मानचित्र बनाकर उसमें निम्न लिखित स्थान दिखलाइये।
कराची, बनारस, पेशावर, गोदावरी, सांभर, नागपुर, रानीगंज, अरावलि और अजमेर।

११. इन देशों की उपज क्या हैं (१) आसाम (२) उत्तरी बर्मा (३) सिन्ध।

१२. दिन रात तथा ऋतु परिवर्तन होने के क्या कारण हैं? केपकालौनी में सब से बड़ा दिन कब होता है?

१३. एक मनुष्य दिल्ली में ओटावा से आया और उसका मित्र सिंगापुर से साथ हो गया। एक कहता है आज रविवार है, दूसरा शनिवार—बतलाइये कौन ठीक है?

प्रारम्भिक विज्ञान और स्वास्थ्य-रक्षा

[परीक्षक—श्री० महावीरप्रसाद, बी. एस-सी., एल. टी., विशारद]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. आपेक्षिक घनत्व का क्या तात्पर्य्य है? किसी द्रव का आ० घ० जान कर उसकी शुद्धता कैसे जानी जा सकती है? उदाहरण देकर समझाइये। किसी ऐसे सरल यंत्र का

वर्णन कीजिए जिससे द्रव का आ० घ० बिना किसी कांटे और बांट के मालूम हो सके। १५

२. शोरे में कोयले की बुकनी मिल गयी है। इस मिश्रण से शोरा अलग करके रवे बनाए जायं तो क्या क्या काम करने पड़ेंगे? ब्योरेवार वर्णन कीजिए और जहाँ कहीं चित्रों की आवश्यकता हो चित्र भी दीजिए। १५

३. एक सीसे के टुकड़े की तोल २ तोला है, पानी में तोलने से इसकी तोल १·८२ तोले हुई। यदि यही टुकड़ा तेल में तोला जाय तो क्या ठहरेगा? तेल का आ० घ० ०·९ है। १०

४. काँच की कुप्पी में पानी भर कर उसका मुँह डाट से कस कर बंद कर दिया जाय और पेंदे में आँच लगायी जाय तो कौन सी घटना होने की सम्भावना होगी और क्यों? उदाहरण देकर समझाइए। १०

५. जाड़े में छुरी का फल ठंडा मालूम होता है परन्तु बेंट न ठंडा न गरम। यह क्यों? क्या तापक्रम में कुछ भेद नहीं है? १०

६. लम्प की चिमनी से प्रयोग करके यह कैसे सिद्ध कीजिएगा कि किसी वस्तु के जलने में हवा की आवश्यकता पड़ती है और इसके आने जाने के लिए कम से कम दो मार्ग होने चाहिएँ? जो लोग कोठरी की हवा शुद्ध करना चाहते हैं उनको इस प्रयोग से क्या शिक्षा मिलती है? १६

७. २५°श वाले १०० तोले पानी में १००°श वाली पानी की भाफ कितनी छोड़ी जाय कि पानी का तापक्रम ७५°श हो जाय? १२

८. नीचे लिखे विषयों में से किसी एक पर कम से कम ३० पंक्तियों का एक निबन्ध लिखिए—

(१) हैज़ा फैलने के कारण और उनसे बचने के उपाय।

(२) शीतला से बचने के उपाय।

(३) हवा के बिगड़ने के कारण। १२

दूसरे देशों से इस देश का सम्बन्ध किस प्रकार है। विशेष हाल लिखिये।

७. पंजाब, बङ्गाल और राजपुताने में देशी रियासतों के नाम दीजिये। देशी राज्य कितने प्रकार के होते हैं। भारतवर्ष का कौन सा भाग देशी राज्यों के अन्तर्गत है। अनुमान से क्षेत्रफल बताइये। उनमें क्या विशेषता हैं?

८. बतलाइये ये क्या और कहाँ हैं:—कोटा, बड़ोदा, बालासोर, शिकारपुर, गिलगिट, गोलकुंडा, चित्तौर, चितराल, महानदी और अरावली।

९. (क) नदियों से कौन सा उपकार वा अपकार होता है।
(ख) बङ्गाल में पंजाब से क्यों अधिक वृष्टि होती है।

१०. भारतवर्ष का मानचित्र बनाकर उसमें निम्न लिखित स्थान दिखलाइये।
कराची, बनारस, पेशावर, गोदावरी, सांभर, नागपुर, रानीगंज, अरावलि और अजमेर।

११. इन देशों की उपज क्या हैं (१) आसाम (२) उत्तरी बर्मा (३) सिन्ध।

१२. दिन रात तथा ऋतु परिवर्तन होने के क्या कारण हैं? केपकालोनी में सब से बड़ा दिन कब होता है?

१३. एक मनुष्य दिल्ली में ओटावा से आया और उसका मित्र सिंगापुर से साथ हो गया। एक कहता है आज रविवार है, दूसरा शनिवार—बतलाइये कौन ठीक है?

प्रारम्भिक विज्ञान और स्वास्थ्य-रक्षा

[परीक्षक—श्री० महावीरप्रसाद, बी. एस-सी., एल. टी., विशारद]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. आपेक्षिक घनत्व का क्या तात्पर्य्य है? किसी द्रव का आ० घ० जान कर उसकी शुद्धता कैसे जानी जा सकती है? उदाहरण देकर समझाइये। किसी ऐसे सरल यंत्र का

वर्णन कीजिए जिससे द्रव का आ० घ० बिना किसी कांटे और बांट के मालूम हो सके। १५

२. शोरे में कोयले की बुकनी मिल गयी है। इस मिश्रण से शोरा अलग करके रवे बनाए जायं तो क्या क्या काम करने पड़ेंगे? ब्योरेवार वर्णन कीजिए और जहाँ कहीं चित्रों की आवश्यकता हो चित्र भी दीजिए। १५

३. एक सीसे के टुकड़े की तोल २ तोला है, पानी में तोलने से इसकी तोल १·८२ तोले हुई। यदि यही टुकड़ा तेल में तोला जाय तो क्या ठहरेगा? तेल का आ० घ० ०·९ है। १०

४. काँच की कुप्पी में पानी भर कर उसका मुँह डाट से कस कर बंद कर दिया जाय और पेंदे में आँच लगायी जाय तो कौन सी घटना होने की सम्भावना होगी और क्यों? उदाहरण देकर समझाइए। १०

५. जाड़े में छुरी का फल ठंडा मालूम होता है परन्तु बेंट न ठंडा न गरम। यह क्यों? क्या तापक्रम में कुछ भेद नहीं है? १०

६. लम्प की चिमनी से प्रयोग करके यह कैसे सिद्ध कीजिएगा कि किसी वस्तु के जलने में हवा की आवश्यकता पड़ती है और इसके आने जाने के लिए कम से कम दो मार्ग होने चाहिएँ? जो लोग कोठरी की हवा शुद्ध करना चाहते हैं उनको इस प्रयोग से क्या शिक्षा मिलती है? १६

७. २५°श वाले १०० तोले पानी में १००°श वाली पानी की भाफ कितनी छोड़ी जाय कि पानी का तापक्रम ७५°श हो जाय? १२

८. नीचे लिखे विषयों में से किसी एक पर कम से कम ३० पंक्तियों का एक निबन्ध लिखिए—

(१) हैज़ा फैलने के कारण और उनसे बचने के उपाय।
(२) शीतला से बचने के उपाय।
(३) हवा के बिगड़ने के कारण। १२

गणित

[परीक्षक—श्री० हीरालाल खन्ना, एम. एस-सी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. (१) सरल कीजिए—

$$\frac{५\frac{५}{८}}{६\frac{३}{७}}\text{का}\frac{६\frac{७}{११}}{९\frac{१}{८}} \div \frac{\text{७ रु० ८ आने}}{\text{१२ रु० ८ आने}}\text{ का}\frac{१}{३}\left(२\frac{३}{११}+\frac{१३}{२२}\right)$$ १०

(२) चार दशमलव के स्थान तक वर्गमूल निकालिए—

$१-(\cdot०६७८)^{२}$ ८

२. एक बनिया ४ रु० प्रतिमन के भाव का २० मन गेहूं, ३ रु० ८ आने प्रतिमन के भाव के कुछ गेहूं में मिला कर मिले हुए गेहूं को ३ रु० १२ आने प्रतिमन के भाव से बेचता है तो उसे १० रु० का लाभ होता है। बतलाइए प्रतिशत उसको क्या लाभ हुआ ? १५

३. एक व्यापारी अपने माल पर दो प्रकार के दाम लगाता है, एक नगद दे कर लेने वालों के लिए और दूसरा ६ महीने के उधार पर लेने वालों के लिए। उधार के दाम में $१२\frac{१}{२}$ प्रतिशत प्रतिवर्ष ब्याज का मिला हुआ है। यदि किसी वस्तु का उधार दाम २६ रु० ४ आ० हो तो उस वस्तु का नगद दाम क्या होगा ? १०

४. उदाहरण देकर समझाइए कि यदि किसी भिन्न के अंश और हर को उसी संख्या से गुणा कर दें तो भिन्न के मान में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। ५

५. एक वर्गाकार आंगन का प्रत्येक किनारा ३५ फुट है; दस इंच लम्बी, ५ इंच चौड़ी और ४ इंच मोटी ईंटों से आंगन को पक्का कराने में कम से कम कितना खर्च पड़ेगा। जब

ईंटों का भाव ८ रु० हज़ार हो और प्रति १०० ईंटों के बैठाने में आठ आने और ख़र्च पड़े ? १२

६. लकड़ी के ३ लट्ठे १० गज़ २ फुट ६ इंच, ८ गज़ २ फुट, और ६ गज़ १ फुट ६ इंच लम्बे हैं; कितनी लम्बी धज्जियां काटी जायं कि प्रत्येक की लम्बाई समान हो और किसी लट्ठे में से कोई छोटा या बड़ा टुकड़ा न बचे ? ऐसी कितनी धज्जियां निकल सकती हैं ? १०

७. एक लड़के ने अपने पैसों का ·८ एक मनुष्य को दिया, शेष के ·०६ से उसने आम ख़रीदे । अब उसके पास केवल चार आने रह गये तो पहले कितने पैसे थे ? ८

८. क और ख एक काम को ८ दिन में कर सकते हैं। ख अकेला ही ४ दिन तक काम करके छोड़ दे तो शेष काम को समाप्त करने के लिए क को कितने दिन काम करना पड़ेगा ? १०

९. एक ख़रगोश एक शिकारी कुत्ते से ३० गज़ आगे है। ख़रगोश जितनी देर में चार छलांगे भरता है कुत्ता केवल तीन ही छलांग भर पाता है, यद्यपि कुत्ता एक छलांग में $२\frac{१}{२}$ गज़ जाता है और ख़रगोश $१\frac{१}{३}$ गज़। यदि कुत्ता ख़रगोश को पकड़ना चाहे तो पकड़ सकता है या नहीं और पकड़ सकता है तो कितनी दूरी पर ? १२

मुनीबी १

[परीक्षक—श्री० गौरीशङ्कर प्रसाद, बी. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००—सब प्रश्नों में बराबर अंक हैं

१. साधारण महाजनी कारबार करने के लिए कम से कम कौन कौन सी बहियें रखनी आवश्यक हैं—उनमें से किस बही से क्या काम लिया जाता है, स्पष्ट रीति से लिखिये।

२. नीचे लिखे हुए व्यापारों में कौन कौन सी बहियें प्रायः काम में लायी जाती हैं, अलग अलग उनके नाम तथा उपयोग लिखिये।

(क) सर्राफ़ी अर्थात् हुंडियों का लेन देन इत्यादि।
(ख) अनाज की आढ़त।
(ग) कपड़े की थोक बिक्री की दूकान जिसमें देसावर से माल आता जाता है।
(घ) चीनी और केराने की बड़ी दूकान।
(ङ) छोटी परचून की दूकान।

३. लेखा बही या खतिऔनी किसे कहते हैं? काम काज में इस बही के द्वारा क्या सुविधा होती है और इस प्रकार की बही न रखने से क्या कठिनाइयां हो सकती हैं?

४. अंग्रेज़ी चाल के बंकों में कौन कौन रजिस्टर हुआ करते हैं? उनका अलग अलग नाम तथा उनके काम का पूरा हाल लिखिये।

जेनरल लेजर और परसनल लेजर किनको कहते हैं—इसमें क्या अन्तर है?

५. आपने रामप्रसाद श्यामप्रसाद की लिखी लक्ष्मीप्रसाद राधाप्रसाद कलकत्ता ऊपर तथा गयाप्रसाद गोवर्धनदास के रखे ५०००) की हुंडी मिती वैशाख बदी १ से दिन ६१ पीछे की मिती जेठ सुदी १ को दर २) बट्टे में मेघराज हरविलास से ख़रीदा, और उसे उसी दिन अपने कलकत्ते के अढ़तिये खरगप्रसाद सीतलप्रसाद के नाम भेज दिया।

(क) अपनी बही में इस व्यवहार का जमा ख़र्च महाजनी रीति से आप कैसे करेंगे? उत्तर की पुस्तक में बही की रीति से पूरा पूरा जमा ख़र्च कीजिये।
(ख) आपका अढ़तिया उस हुंडी को पाकर वेचा करेगा, उसका पूरा ब्योरा लिखिये।

६. कल्ह की रोकड़ बची हुई आपके पास १४१७।–)। है। आपने गंगाप्रसाद की आढ़त से ११५ कनस्टर घी जिसमें ।ऽ८॥=) फ़ी कनस्टर माल है दर ४८।=) मन के भाव ख़रीदा और उनको १०००) दाम मध्ये दिया। रामखिलावन हलवाई के हाथ आपने २५ कनस्टर घी दर ४७।=) मन के भाव बेंचा, जिसमें से उसने

४००) आपको दिया—भगवानदास हलवाई से पिछले बक़ाये का ४७६।=)॥। असल और २७।=) ब्याज का मिला—१५) आपने अपने मुनीब को तनख़ाह मध्ये दिया—५।≡) घर के ख़र्चे में लगा—रामसरन ब्योपारी ने आपको १५० बोरे गोदाम में बतौर अढ़तिये के रख लिया और ब्योपारी को १२००) माल पेटे दिया और बिल्टी छोड़ाने में ६७=)॥। ख़र्च पड़ा।

ऊपर लिखे व्यवहारों को वही की रीति से अपनी उत्तर पुस्तक में लिखिये और विध मिला डालिये।

७. साल के अन्त में अथवा जब चाहें अपनी स्थिति या कारबार की अवस्था स्पष्ट रूप से जानने के लिए आप क्या क्या करेंगे, उसे विशेष रीति से लिखिये।

मुनीबी २

[परीक्षक—श्री० गौरीशङ्कर प्रसाद, बी. ए., एल–एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००—प्रत्येक प्रश्न में बराबर अङ्क हैं।

१. युद्धऋण साधारण ५) सैकड़े ब्याजवाला दर ६५) सैकड़े भाव में और मामूली गवर्नमेंट प्रामेसरी नोट ३॥। सैकड़े ब्याज का दर ६६) सैकड़े भाव में मिलता है और इन दोनों में ही ब्याज की रक़म पर -) प्रति रुपया इनकम टिकस देना पड़ता है। ५॥) सैकड़े का वार बांड (war bond) बराबर में मिलता है और इसकी आमदनी पर टिक्स माफ़ है। आपके पास दस हज़ार रुपया है तो आप किस प्रकार के काग़ज़ में रुपया लगावेंगे और हर प्रकार से क्या क्या वार्षिक नफ़ा होगा।

२. ।-) प्रति गज़ के भाव से ४० गज़ मलमल आपने मोल लिया और आध गज़ वर्ग के (मुरब्बा) बराबर बराबर के रूमाल फाड़ कर फ़ी रूमाल)॥ उसके किनारों की सिलाई का दिया और दो दो आना फ़ी रूमाल बेंच डाला तो आपको कुल क्या लाभ हुआ?

३. जमा ख़र्चा और कटुवा ब्याज फैलाने की रीतियों को उदाहरण के साथ समझाइये–

५०१) सावन बदी ५	१२००) असाढ़ सु० २
४००) सावन सु० ८	१३००) सावन सु० ३

११०० भादो वदी १० २५००) भादो ब० ५
३२००) भादो सु० ७ ७००) भादो सु० १४
१६००) कुवार वदी १३ १५००) कुवार सु० १
५००) कातिक वदी ११ २७००) कातिक ब० ८

ऊपर लिखे सरख़त का महाजनी रीति से कातिक सु० १५ तक का ब्याज फैलाकर महीना आंक रखिये और ॥) सैकड़े के हिसाब से ब्याज लगाइये।

४. १५७६)३ गोजई दर ।)२। के भाव ख़रीदा उसे साफ़ कराने में ।) मन ख़र्च पड़ा और ९००) गेहूं दर)६ का ५००) जौ दर ।)३ का ७५) सरसों दर ८) का और ७५) तीसी दर)८॥ सेर वो २०) बेझरा दर ।)५ का बेंच डाला। बाक़ी मिट्टी कूड़ा निकला तो इस ब्योपार में आपको कितने सैकड़े का नफ़ा हुआ।

५. नीचे लिखे पत्रों पर कितने का और कैसा स्टाम्प लगेगा और लिखने की तिथि से कितनी मियाद के भीतर उनके बाबत नालिश अदालत में दाख़िल होनी चाहिये।

(क) १०००) की हुंडी कातिक बदी १५ सम्वत् १९७३ से दि‹ ९१ पीछे की।
(ख) २०००) की पहुंचे दाम की हुंडी।
(ग) १५) का हैंड नोट।
(घ) १९) की रसीद।
(ङ) १०००) का रेहननामा भोकबंधक जिसमें ५ बरस की मियाद बाद रुपया देने की प्रतिज्ञा तथा नालिश करने का अधिकार दिया हुआ है।
(च) १५००) का रेहननामा दिष्टबंधक।

६. आपका रुपया किसी के यहाँ घी के दाम का बाक़ी है तो साधारणतः आपको कितनी अवधि के भीतर नालिश करनी चाहिये।

उस अवधि को बढ़ाने के लिए आपका असामी क्या क्या और कब कब कर दे तो आपकी मियाद बची रहे।

७. दिये लेख की नागरी अक्षरों में प्रतिलिपि कीजिये।

आरायज़नवीसी व कारिन्दगरी १

[परीक्षक—पं० महेशदत्त शुक्ल, बी. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००—सब प्रश्नों में बराबर अंक हैं।

[नोट—प्रश्नों का उत्तर लिखने में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि जहाँ तक संभव हो अर्बी और फ़ारसी के क्लिष्ट शब्द न प्रयोग किये जायं।]

१. एक वकालतनामा लिखिए।

२. राम प्रसाद ने लाला कालिन्दी प्रसाद से १००) रु० ऋण मि० पौष कृष्ण ६ सं० १६७३ को २) मासिक प्रति सैकड़ा ब्याज पर लिया और ६ महीने के बाद ऋण ब्याज सहित देने की प्रतिज्ञा की। उपर्युक्त समय पर ऋण चुकता नहीं किया गया। लाला कालिन्दी प्रसाद व्यौहार लाना (नालिश करना) चाहते हैं, अर्ज़ी-दावा लिखिए।

३. (अ) इन्सालवेण्ट (दिवालिया) होने के निवेदन पत्र में किन किन बातों की आवश्यकता है।

(इ) मुफ़लिसी में नालिश करने के लिए निवेदन पत्र लिखिए।

४. निम्न लिखित शब्दों की परिभाषा लिखिए।
ख़सरा, जमाबन्दी, स्याहा, तमस्सुक, ज़मानत-नामा, भोग-बन्धक, गवाह और फ़ैसला।

५. निम्न लिखित शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द लिखिए।
मुद्दई, मज़कूर, इस्तग़ासा, मुक़दमा, फ़रार होना, मुतबन्ना, मुतवफ्फ़ी।

६. एक भूमि का विक्रयपत्र (बैनामा) लिखिए।

आरायज़नवीसी व कारिन्दगरी २

[परीक्षक—श्री० कुंवर हरप्रसाद सिंह वकील हाई कोर्ट]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. निम्न लिखित दस्तावेज़ों पर किस हिसाब से स्टाम्प लगेगा। १२

(क) विक्रयपत्र (वयनामा)।

(ख) दत्तकपत्र (तबनियत नामा) अर्थात् ऐसा पत्र जिसके द्वारा गोद ली जाती है।

(ग) दृष्ट-बन्धक पत्र (रहननामा बिला कृब्ज़ा)।

२. जब व सड़क पर करनलगंज से कटरा जा रहा था अ ने पिछले बैर के कारण व को ३ बेंत मारे और व से कहा कि तू चोर है और तूने सैकड़ों को धोखे दिये हैं। उस समय जब अ ने यह वाक्य कहे सड़क पर सैकड़ों मनुष्य चल रहे थे। व एक प्रतिष्ठित पुरुष प्रयाग नगर का है। व का विचार अ पर अदालत फ़ौजदारी में दावा दायर करने का है। आप उसकी ओर से दोषारोपण पत्र (इस्तिगासा) लिख दीजिये परन्तु उस में जहां तक हो सके जुर्म और किस दफ़ा और किस क़ानून के अनुकूल जुर्म हो लिखिए। २०

३. निम्न लिखित प्रार्थनापत्रों पर कितनी कोर्ट फ़ीस लगनी चाहिये। १२

(क) दोषारोपण पत्र (इस्तगासा)।

(ख) (दीवानी) में प्रतिलिपि (नक़ल) के लिए निवेदन पत्र।

(ग) (फ़ौजदारी) में प्रतिलिपि (नक़ल) के लिए निवेदन पत्र।

४. १०००) के प्रोनोट (इन्दुलतलब रुक्का) पर और ५) के प्रोनोट पर कितने का टिकट लगाना चाहिये और किस क़िस्म का? ८

५. कारिन्दे को कितने कागज़ात रखने चाहियें जिस में हिसाब वसूल तहसील का ठीक रहे और पटवारी भी धोखा न दे सके। ६

६. वर्षा ऋतु में जो फ़सल बोई जाती है उसे क्या कहते हैं और उसमें कौन कौन से अन्न होते हैं? ५

७. अ ज़मींदार है व काश्तकार ग़ैर दख़ीलकार है, व को अ बेदख़ल करना चाहता है, व की मुद्दत काश्त ५ साल है। कृपया बेदख़ली की नालिश तय्यार कर दीजिये। १४

८. दिये हुए उर्दू लेख को नागराक्षरों में लिखिए। २०

मध्यमा परीक्षा १९७४

साहित्य १

[परीक्षक—पं० सत्यनारायण कविरत्न]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी। १५
यद्यपि मृषा सत्य भासै जब लगि नहिं कृपा तुम्हारी॥
अर्थ अविद्यमान जानिय संसृति नहिं जाइ गुसाईं।
बिनु बांधे निज हठ सठ परबस पर्यो कीर की नाईं॥
सपने व्याधि विविध बाधा भई मृत्यु उपस्थित आई।
वैद्य अनेक उपाय करहिं जागे बिनु पीर न जाई॥
श्रुति गुरु साधु समृति सम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी।
तेहि बिनु तजे भजे बिनु रघुपति बिपति सकै को टारी॥
यहु उपाय संसार तरन कहँ विमल गिरा श्रुति गावै।
तुलसिदास "मैं" "मोर" गये बिनु जिय सुख कबहुँ न पावै॥

(क) उक्त पद का भावार्थ स्पष्ट लिखिये।

(ख) गोस्वामी तुलसीदास का "भारी भ्रम" से क्या वही अभिप्राय है जो आजकल समझा जाता है? उसके दूर करने को जो जो उपाय उन्होंने बताये हैं वे आत्म अभ्युदय में कहाँ तक सहायक हो सकते हैं, इसपर आलोचनात्मक व्याख्या कीजिये।

२. गढ़ तस बांक जैस तोर काया। पुरुष देखि ओही की छाया॥ १५
पाई नाहि जूझ हठ कीन्हे। जें पावा तें आपुहिं चीन्हे॥
नौ पंवरी ते गढ़ मझियारा। औ तहं फिरहिं पांच कुतवारा॥
दशों द्वार गुप्त एक नाके। अगम चढ़ाव बाट सुठ बांके॥
भेदी जाय कोई वह घांटी। जौ लहि भेद चढ़ै होय चांटी॥

(क) उक्त पद्य में किस गढ़ का वर्णन किसके द्वारा किया

गया है और किस अवसर पर किससे किया गया है । इस पद्य में दी हुई उपमा को भली भाँति दरसाइए ।

(ख) मलिक मुहम्मद जायसी के धार्मिक विचार एवं उनकी अन्य मतावलम्बियों के साथ सहानुभूति के विषय में अपनी सम्मति लिखिये ।

२. मूली-भूता प्रणय विविधा-बुद्धि की वृत्तियां हैं । १२
हो जाती हैं समधिकृत जो व्यक्ति के सद्गुणों से ।
ये होते हैं नित-नव, तथा दिव्यता-धाम स्थायी ।
पाई जाती प्रणय-पथ में स्थायिता है इसी से ॥ १ ॥

जो होता है निरत तप में मुक्ति की कामना से ।
आत्मार्थी है, न कह सकते आत्मत्यागी उसे हैं ।
जी से प्यारा जगत-हित औ' लोक-सेवा जिसे है ।
प्यारी सच्चा अवनितल में आत्मत्यागी वही है ॥ २ ॥

(क) उक्त पद्यों का भावार्थ सरल भाषा में लिखिये । इनमें किस छन्द का प्रयोग किया गया है ? उसका लक्षण बताइए ।

(ख) लोक-सेवा से क्या तात्पर्य है । कवि की यह नीति आपको कहांतक स्वीकृत है । इसपर विवेचनात्मक स्व-सम्मति दीजिए ।

३. अगिन की लपटैं इमि हैं नहीं, विरह की झर ज्यों विषमै कहीं । १५
विरह सों युवती अति ही डरैं, मृतक लै हँसि पावक में जरै ॥१॥

दिगपालन के सब अंश मिलें, वहु भूपति देव स्वरूप सुहायो ।
तिहिं कों मिलि हौं करि व्याह उछाह भयो यह वासव को मन भायो ।
कहिं चाटु उचाटु करैं कत तैं चित शैल सतीनको कानै चलायो ॥
न सकौं बरिहौं हरिहौं न तऊ नल कों बरिहौं यह मैं ठहरायो ॥२॥

(क) उक्त पद्यांश कहां से उद्धृत किये गये हैं ? इनका सरल भावार्थ लिखिये ।

(ख) पिछले सवैया में कौन नायिका है ? उसका लक्षण दीजिये ।

(ग) नायिका भेद किसे कहते हैं ? उसे साहित्य से निकाल देने से क्या हानि अथवा लाभ होने की सम्भावना है ? कारण स्पष्ट लिखिये।

५. दच्छिन नायक एक तुही भुवि भामिनि को अनुकूल ह्वै भावै। १२
दीनदयाल न तोसो दुनी पर म्लेच्छके दीनहिं मारि मिटावै।
श्री शिवराज भनै कवि भूषण तेरे सरूप को कोउ न पावै।
सूर सुबंस में सूर सिरोमनि है करि तू कुलचन्द कहावै॥

(क) उपर्युक्त सवैया में रेखाङ्कित शब्दों की टीका कीजिये। इस पद्य में जो अलङ्कार हों उनका लक्षण उदाहरण सहित दीजिये।

(ख) भूषण की कविता किस विशेष गुण के कारण आजकल आदरणीय समझी जाती है। अपने समय में भूषण की उद्देश्य पूर्ति कविता द्वारा कहां तक हुई ?

६. पद्मावत की भाषा से जायसी का समय निश्चित कीजिये। इस कवि की रचना-शैली का किस सीमा तक अनुकरण तथा अनुसरण किया गया। यथासम्भव उदाहरण सहित उत्तर दीजिये। १०

७. विविध तरंगाकुल यमुना यद्यपि आती थी। २०
उमड़ा कर निज हृदय वेदना प्रगटाती थी।
मनों सोच जल में डूबी बहती जाती थी।
कभी भँवर भ्रम में पड़ तट से टकराती थी।
वस जान आर्य-गौरव गया सुधि बुधि तजि बन सोगिनी।
रज तन लपेट रमने लगी मानों कोई योगिनी॥ १॥

सुख दुख में नित एक हृदय को प्रिय विराम थल।
सब विधि सों अनुकूल बिलद लच्छन मय अविचल।
जासु सरसता सकै न हरि कवहूँ जरटाई।
ज्यों ज्यौं बाढ़त सघल सघन सुन्दर सुखदाई॥
जो अवसर पै संकोच तजि परिणत दृढ़ अनुराग सत।
जग दुर्लभ सज्जन प्रेम अस बड़भागी कोऊ लहत॥ २॥

(क) उक्त छन्दों का अनुवाद सरल स्वच्छन्द भाषा में कीजिये।

(ख) रेखाङ्कित शब्दों की पद-व्याख्या कीजिये।

(ग) द्वितीय छन्द का वाक्य विश्लेषण कीजिये।

साहित्य २

[परीक्षक—पं० श्यामविहारी मिश्र, एम. ए.]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

१. निम्न-लिखित अवतरणों को भली भाँति समझाइए—

(क) ऊधौ तहाँई चलो लै हमैं जहँ कूबरी कान्ह बसैं इक ठौरी।
देखिए दास अघाय अघाय तिहारे प्रसाद मनोहर जोरी॥
कूबरी सों कछु पाइए मंत्र लगाइए कान्ह सों प्रेम की डोरी।
कूबर भक्ति बढ़ाइए बन्दि चढ़ाइए चन्दन बन्दन रोरी॥

ऊपर की सवैया में दो मुख्य शब्दालंकार बताइए। इस में कौन सा रस है? उसके चारों अंगों (स्थायी, विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी) का एक एक उदाहरण इसी सवैया से दीजिए तथा ध्वनि और व्यंग्य का भी एक एक उदाहरण दीजिए और सब बातों को समझाइए। २५

(ख) प्राकृतों में अपभ्रंश नाम से जिस प्राकृत का परिचय प्राकृत भाषा के सुपंडित वैयाकरण मात्र ने दिया है उसके गर्भ में ही बीज रूप से पंजाबी भाषा और हमारी वर्तमान हिन्दी का अस्तित्व आप सहज में देख सकते हैं। ६

इस पर अपनी अनुमति लिखिए।

(ग) सकल कुसुम रस पान करि मधुप रसिक सिरताज।
जो मधु त्यागत ताहि लै होत सबै जग काज॥

इस दोहे से राक्षस मंत्री ने क्या ध्वनि निकाली? ५

२. शाकटायन के सिद्धांत, "सब नाम धातुज हैं" का द्वितीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति ने कैसे समर्थन किया है? ६

३. राक्षस मंत्री की चार भूलों की कारणों सहित विवेचना कीजिए। १०

४. सम्पत्ति के उपभोग विषयिनी तीन मुख्य शिक्षाओं की व्याख्या कीजिए। ८

५. सौंदर्य्योपासक का उसकी साली पर आशक्त होने के विषय में अपना विचार कारण सहित लिखिए। ७

६. नाटक का नायक कैसा होना चाहिए? नाटक के गुण दोषों पर नायक निर्वाचन का क्या प्रभाव पड़ता है? ६

७. वासवदत्ता की कथा संक्षेप से लिखिए। ५

८ (क) निम्न-लिखित क्रियाओं से सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाइएः—जागना, डूबना, पीना। ६

(ख) कृदन्त और तद्धित का भेद समझाइए और दोनों के दो दो उदाहरण दीजिए। ८

९. निम्न-लिखित पद में मुख्य अर्थालङ्कार समझा कर लिखिए—

कमला क्यों थिर ह्वै सकै जासु चंचला नाम? ८

साहित्य ३

[परीक्षक-राय साहब पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी, बी. ए.]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

निम्न-लिखित विषयों में से किसी एक पर लेख लिखिये—

१. हिन्दुओं के प्रधान त्योहार और उनके मनाने की विधि।

२. राष्ट्र-भाषा की आवश्यकता और उसके लिए हिन्दी की उपयुक्तता।

३. श्री रामचरितमानस धर्म्म-नीति-शिक्षा का भंडार

साहित्य ४

[परीक्षक—पण्डित शुकदेवविहारी मिश्र, बी. ए.]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

१. हिन्दी के प्राचीन अंकक्रम में नौ अंकों के अतिरिक्त शून्य का काम कैसे निकाला जाता था? हिन्दी लिपि का नाम देवनागरी किस कारण से पड़ा? प्राचीन अंकों और अक्षरों के रूपों में समय समय पर जो परिवर्त्तन हुए हैं उसके मुख्य कारण क्या हैं? १०

२. पहली, पांचवीं और दशवीं शताब्दियों में हिन्दी में पांच (५) का अंक कैसे लिखा जाता था? ५

३. भारतेन्दु जी ने नाटक के काव्यमिश्र, शुद्धकौतुक और भ्रष्ट नामक तीन भेद लिखे हैं। इन तीनों के लक्षण लिखिये। नाटक और प्रहसन में भेद बतलाइये। ७

४. "संस्कृत के प्रधान नाटकों का जब निर्माण हुआ था तब यवनिका आदि का प्रबन्ध था"। इसके मुख्य प्रमाण लिखिये। ७

५. मिश्र-बन्धुविनोद में हिन्दी साहित्य के आठ समय विभागों के नाम और संवत् लिखिये तथा यह बतलाइये कि प्रत्येक काल में हिन्दी भाषा तथा साहित्य की मोटे प्रकार से क्या दशा रही? अज्ञातकाल उत्तर से छोड़ दीजिये। २०

६. हिन्दी का पहला गद्य लेखक कौन था? प्रौढ़ माध्यमिक काल में हिन्दी भाषा तथा साहित्य की क्या दशा थी? १५

७. सेनापति ने रचना कब की थी? उनकी काव्यशैली पर टिप्पणी लिखिए। १०

८. लल्लूजी लाल और सदल मिश्र की हिन्दी में क्या भेद था? ६

९. ठाकुर शिव सिंह सेंगर के सरोज एवं अन्य रचनाओं का कुछ समालोचना गर्भित कथन कीजिये। १०

१०. हिन्दी नाटकों का सूक्ष्म इतिहास लिखिए। १०

इतिहास १

[परीक्षक—श्री० नरेन्द्र देव, एम. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[प्रश्न १ और ६ अनिवार्य्य हैं। ८ प्रश्नों का उत्तर देना होगा। खण्ड ३ से कोई एक प्रश्न करना आवश्यक है। स्पष्टता के लिए ४ अंक नियत हैं।]

१

१.* अशोक महाराज का संक्षिप्त इतिहास लिखिये। १५

२. बुद्धदेव का जीवन चरित संक्षेप में लिखिये और उनके मुख्य मुख्य सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिये। ११

३. चीनी यात्री फ़ाहियान के भारत भ्रमण का संक्षिप्त विवरण लिखिये। ११

४. आधुनिक सभ्यता से तुलना करते हुए अपनी प्राचीन सभ्यता के संबन्ध में आपने क्या मन्तव्य स्थिर किया है? ११

५. एलोरा गुफा, भरहुत, विक्रमादित्य, धम्मपद, कनिष्क, कालिदास, सांची, विहार, गिरनार और आर्यावर्त्त पर छोटे छोटे नोट लिखिये। ११

२

६.* अकबर के समय मुग़ल साम्राज्य का कितना विस्तार था? भारतवर्ष का मानचित्र खींच कर दिखलाइये। १५

७. अकबर की तुलना औरंगज़ेब के साथ कीजिये। दोनों की नीति में क्या भेद था? ११

८. अंग्रेज़ और फ़रासीसियों के परस्पर युद्ध का कारण लिखिये और यह भी बतलाइये कि अन्त में अंग्रेज़ किस प्रकार विजयी हुए। ११

९. अंग्रेज़ों का सिक्खों के साथ जो अन्तिम युद्ध हुआ उसका संक्षिप्त विवरण और फल लिखिये। ११

१०. लार्ड डलहौसी की ज़ब्ती की नीति क्या थी और वह ११
कहां तक सफल रही ?

३

११. चाणक्य के अर्थ शास्त्र के आधार पर भारतीय शासन ११
पद्धति का संक्षिप्त विवरण लिखिये।

१२. शिवाजी महाराज के शासन-व्यवस्था के संबन्ध में एक ११
छोटा निबन्ध लिखिये।

१३. शासन और विचार विभागों को पृथक् रखने से क्या ११
लाभ है ?

१४. बड़े लाट की व्यवस्थापक सभा का संगठन किस प्रकार ११
होता है ? सदस्यों के अधिकार क्या हैं और भारतवासियों के
नेता इसमें योग देकर कहां तक देश का उपकार करने में
समर्थ हो सकते हैं ?

इतिहास २

[परीक्षक—श्री० ताराचन्द, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[केवल ६ प्रश्नों के उत्तर लिखने चाहियें। प्रत्येक प्रश्न
में बराबर अङ्क हैं।]

१. युरोप के इतिहास के अध्ययन से जो लाभ आपको हुए हैं
उनको वर्णन कीजिये।

२. भारत वर्ष का इतिहास किस सामग्री से निर्माण किया जा
सकता है ? पुराणों की कथाओं से इसमें कहां तक सहायता
मिलती है ?

३. "इतिहास के चिरानुभूत नियम के अनुसार प्रत्येक देश,
प्रत्येक राज्य, प्रत्येक जाति का अभ्युत्थान, उन्नति, शिखरारोहण
तथा पतन अनिवार्य है"। व्याख्या कीजिए।

४. रोम साम्राज्य के अधःपतन के कारण क्या थे ? इसमें टिउ-
टन जातियों ने क्या भाग लिया ?

५. माध्यमिक काल में पोपों के इतिहास के महत्व बतलाइये।

६. सामयिक युरोप में राजनीति तथा समाज सम्बन्धी जो विचार फैल रहे हैं उन पर टिप्पणी लिखिये।

७. हेनरी द्वितीय के राज्य काल का वर्णन कीजिये और जो प्रभाव उसके कार्यों का इङ्गलैंड पर पड़ा उस पर दृष्टि डालिये।

८. जेमूज़ प्रथम तथा चार्लस प्रथम के समय में राजा तथा प्रजा में जिन कारणों से विवाद हुआ उनको समझाइये।

९. चौदहवीं शताब्दी में फ्रांस की क्या दशा थी? वहां के राज-शासन को किस बड़ी आपत्ति का साम्हना था और क्योंकर वह इस आपत्ति से निर्मुक्त हुआ?

१०. फ्रांस के महान विप्लव के कारण लिखिये और इस विप्लव-से जो लाभ युरोप को पहुंचे हैं उनकी व्याख्या कीजिए।

११. सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में जर्मनी की राजनैतिक सामाजिक तथा धार्मिक दशा क्या थी?

१२. वर्त्तमान युरोपीय महा संग्राम के कारण वर्णन कीजिए।

गणित

[परीक्षक—श्री० व्रजराज, बी. एस-सी., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[केवल ८ प्रश्नों के उत्तर लिखने चाहिएं। प्रत्येक प्रश्न में बराबर अङ्क हैं।]

१. (१) यदि $क + ख + ग = १८०^\circ$, तो सिद्ध कीजिए कि ज्या क + ज्या ख + ज्या ग = ४ कोज्या $\frac{क}{२}$. कोज्या $\frac{ख}{२}$. कोज्या $\frac{ग}{२}$।

(२) ज्या $२२\frac{१}{२}^\circ$ किस के तुल्य है?

२. किसी त्रिभुज की दो भुजाएं ८५ और ७५ गज़ हैं और

इनके बीच का कोण ७५ है। शेष अवयव निकालिए, यह दिया है कि

घ १६० = २·२०४१२, घास्प $५२^\circ ३०'$ = १०·११५०२,

घा स्प $४^\circ ४०'$ = ८·६१०६

३. दो बांस क ख और च छ किसी नदी के तीर पर इस प्रकार से गड़े हैं कि क च=क ख। च छ इतना ऊंचा है कि क के ठीक सामने दूसरे तीर पर यदि एक स्थान अ लें तो यहां से क ख और च छ के सामने के कोण तुल्य होंगे। सिद्ध कीजिए कि नदी का पाठ

$$= \frac{\text{क ख}}{\sqrt{\text{च छ}^2 - \text{कख}^2}}$$

४. सिद्ध कीजिए कि

(१) छेरे^{2} अ (१ + छेरे २ अ)=२छेरे २अ।

(२) को छेरे अ=कोस्प अ + $\sqrt{३}$. तो अ के जितने मान हो सकते हैं सब बतलाइये।

५. सिद्ध कीजिए—किसी वृत्त की स्पर्श रेखा और उस चापकर्ण से जो स्पर्श विन्दु से खींचा गया हो जो कोण बनते हैं वे यथा क्रम से वृत्त के एकान्तर चापक्षेत्र के कोणों के समान होते हैं।

६. (१) सिद्ध कीजिए कि किसी त्रिभुज के तीनों कोण मिलकर दो समकोण के समान होते हैं।

(२) सिद्ध कीजिए कि किसी त्रिभुज के तीनों मध्यगत अनुषंगी होते हैं।

७. यदि दो त्रिभुज एक दूसरे के समकौणिक हों तो उनकी संगत भुजाएं भी आनुपातिक होंगी।

८. जिन तीन संख्याओं के अन्तरों का अन्तर १ और जिन का योग १८ और वर्गों का योग ११० होता है, वे तीनों संख्या क्या हैं?

९. य और र किस के तुल्य हैं।

$$\left.\begin{array}{l} (१)\ य^{२} + र^{२} = २०७१ \\ \quad य^{२} र + य र^{२} = १५६६ \end{array}\right\}$$

$$(२)\ \frac{१}{य-१} + \frac{१}{य-२} + \frac{१}{य-३} = ०$$

१०. वर्ग मूल निकालिए:—

$$(१)\ १-२य\sqrt{१-य^{२}}$$

$$(२)\ २२+१०\sqrt{-३}$$

दर्शन

[परीक्षक—पाण्डेय जगन्नाथप्रसाद, एम. ए., एल-एल. बी., काव्यतीर्थ, दर्शनकेसरी]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[पांच प्रश्नों के सन्तोषप्रद उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिलेंगे]

१. कालः स्वभावो नियतिर्यदृच्छा
भूतानि योनिः पुरुष इति चिन्त्यम्।
संयोग एषां न त्वात्मभावा-
दात्माप्यनीशः सुखदुःखहेतोः॥

उक्त भाव की विशद व्याख्या कीजिए और पाश्चात्य दर्शनों में इसकी जितनी उपपत्तियाँ आपको मिली हों उनका वर्णन करते हुए अपना मत सयुक्ति सिद्ध कीजिए।

२. द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति॥

ऊपर दिये हुए सिद्धान्त का युक्ति सहित वर्णन करके जीवात्मा और परमात्मा के भेद को स्पष्ट कीजिए। इस सम्बन्ध में हेगेल के सिद्धान्त का भी विशद वर्णन कीजिए।

३. अफ़लातूँ प्रदर्शित शिक्षा प्रणाली का वर्णन कीजिए और उसके दार्शनिक सिद्धान्तों की सयुक्तिक परीक्षा सहित उसके विख्यातनामा शिष्य का मत सिद्ध कीजिए।

४. महादार्शनिक कान्त के शुद्ध ज्ञान-परीक्षा का सुबोध उपपादन कीजिए। ह्यूम तथा कान्त प्रदर्शित कार्य-कारण-भाव-सम्बन्धी विचार तारतम्य का भी विशद वर्णन कीजिए।

५. संशयवाद में डे कार्टके प्रतिपाद्य "मैं सोचता हूं इसलिए मैं हूँ" की क्या आवश्यकता है? स्पष्ट रीति से इस आचार्य के सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए और इसके दर्शन पर जो दो मुख्य संदेह हैं उनके मैलेब्रांश-प्रदत्त समाधान की आलोचना कीजिए।

६. विकासवाद अथवा कार्य-कारण भाव पर भिन्न भिन्न अनुकूल तथा प्रतिकूल सिद्धान्तों के अवतरण सहित एक प्रबन्ध लिखिये।

७. अफ़लातूँ और अरस्तु के जीवनचरित तथा दर्शन पर परस्पर तुलनात्मक प्रबन्ध लिखिए।

विज्ञान

[परीक्षक—श्री० गोपालस्वरूप भार्गव, एम. एस-सी.]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[प्रत्येक विभाग से एक एक प्रश्न करना आवश्यक है। ७ प्रश्नों के करने से पूर्णाङ्क प्राप्त हो सकते हैं]

१

१. एक कमरे में पांच लम्प रखे हैं, यदि उसमें कोई मनुष्य प्रवेश करे, तो उसकी कितनी छाया पड़ेंगी?

एक दीवार से कुछ दूरी पर एक लम्प रखा है। यदि कोई मनुष्य लम्प से दीवार की ओर जाय, तो उसकी छाया में जो दीवार पर पड़ती है क्या परिवर्तन होंगे?

२. यदि सूर्य के प्रकाश की कोई किरण किसी त्रिपार्श्व (तिपहल) में होकर निकले, तो उसमें क्या परिवर्तन हो जायगा। सविस्तार लिखिये।

"जो वस्तुएँ शब्द करती हैं वह कांपती रहती हैं" क्या उपरोक्त कथन सत्य है? इसके प्रमाण में कुछ प्रयोगों का वर्णन कीजिए।

बादल की गरज और बिजली की चमक में क्या सम्बन्ध है? गरज सुनाई देने के पहले बिजली की चमक क्यों दिखाई देती है? किसी कुएँ में पत्थर डाला जाला जाय तो पत्थर पानी में डूबता पहले दिखाई देगा या उसके डूबने का शब्द पहले सुनाई देगा? यदि कुँआ ११२० फ़ुट गहरा हो, तो बतलाइये कि पत्थर के डूबने का शब्द, डूबने के कितनी देर पीछे सुनाई देगा?

२

५. लोहे के एक टुकड़े का विशिष्ट गुरुत्व निकालने की विधि सविस्तार लिखिये। विशिष्ट गुरुत्व और आपेक्षिक घनत्व में क्या सम्बन्ध है?

६. गर्मी में काले वस्त्र पहनने में क्या हानि है? किसी काले पीपे में पानी गरम करके धूप में रखे, तो छाया में रखे जाने की अपेक्षा वह क्यों देर में ठण्डा होगा? कम्बल में लपेट कर या बुरादे में गाड़ कर बरफ़ क्यों रखी जाती है।

७. लम्पों में चिमनी लगाने से क्या लाभ है? यदि चिमनी छोटी बड़ी कर दी जाय तो क्या होगा?

८. विद्युत् धारा के गुण लिखिये और इनमें से किसी के द्वारा विद्युत् धारा नापने की विधि वर्णन कीजिये।

९. बिजली की रोशनी के लिए बिजली की धारा किस भांति उत्पन्न की जाती है?

१०. बिजली कितने प्रकार की होती है और किस भांति उत्पन्न की जा सकती है? प्रत्येक प्रकार की बिजली के गुण लिखिये।

३

११. विद्युत् घट (बैट्री) किसे कहते हैं? किसी प्रकार के विद्युत् घट का वर्णन कीजिये और बतलाइये कि उससे पानी का विश्लेषण किस प्रकार किया जा सकता है?

१२. अभिद्रवजन किस भांति बनाते हैं ? यदि ५ ग्राम जस्ता गंधक के तेज़ाब में गला दें तो २३०° श और ७२५ मिलीमीटर के दबाव पर कितनी घन शतांशमीटर गैस निकलेगी ?

१३. गंधकाम्ल किस भांति बनाया जाता है ?

१४. विरञ्जक चूर्ण (रंग उड़ाने वाला) किस भांति तैयार करते हैं और उसका प्रयोग कैसे होता है ?

१५. समुद्र के जल से हरिन कैसे निकाली जाती है ? हरिन के मुख्य गुणों का वर्णन कीजिये ।

१६. (१) यदि वायुमण्डल में नत्रजन न होती तो क्या होता ?

(२) यदि सृष्टि के आदि में सौडियम हरिन से मिल कर यौगिक न बनाता, तो संसार की क्या दशा होती ?

(३) नत्रजन किस भांति मनुष्य का सब से भयानक शत्रु और अनुग्राहक मित्र है ?

(४) संसार में ओषजन का भाण्डार ज्यों का त्यों बनाये रखने के लिए प्रकृति ने क्या प्रबन्ध किया है ?

४

१७. जड़ और तने में क्या भेद होता है ?

जड़ कै प्रकार की होती हैं ? जड़ों का क्या उपयोग है ?

जड़ें पृथ्वी में किस ओर जाया करती हैं ?

क्या कोई पौदे ऐसे भी होते हैं जिनकी जड़ें पृथ्वी में न घुसें और आकाश की ओर बढ़ें ?

१८. पूर्ण पत्ती किसे कहते हैं ? पत्तियों के नाड़ी-क्रम और आकृति के विषय में कुछ लिखिये ।

१९. क्या पौदे बिना बोए भी उग सकते हैं ? प्रकृति ने बीजों के प्रवास के क्या साधन रचे हैं ?

२०. पूर्ण और अपूर्ण फूल कैसे होते हैं ? अपरिमित पुष्प कै प्रकार के होते हैं ।

२१. पौदे क्या और कैसे खाते हैं? पौदों की शरीर रचना के सम्बन्ध में कुछ लिखिये।

धर्मशास्त्र

[परीक्षक—पं० श्रीकृष्ण ज्योशी]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[पहिले ६ प्रश्नों के उत्तर मनुस्मृति के अनुसार होने चाहियें]

१. मनुष्यों, पितरों, देवतों और ब्रह्मा के अहोरात्र अर्थात् दिन रात का और मन्वन्तर के क्या क्या परिणाम हैं। १५

२. जातकर्मादि संस्कारों के नाम, उनका समय और विधि क्या क्या हैं और उपनयन काल की भिन्न भिन्न द्विज वर्णों के लिए क्या व्यवस्था है। १५

३. ब्रह्मचारी के लिए कौन कौन पदार्थ और कौन कौन कर्म वर्जित हैं। ८

४. गृहस्थ ब्राह्मण की जीविका के विषय में मुख्य विधि और निषेध क्या क्या हैं। १२

५. अपुत्र के धन के अधिकारी कौन कौन होते हैं; जब कुल में कोई अधिकारी न रहे तो धन किसको मिलना चाहिये। १०

६. सत्वादि तीन गुणों के स्वरूप, लक्षण, भिन्न भिन्न प्रकार के फल और मुख्य गतियों के विषय में क्या लिखा है। १५

७. वृक्ष, लता इत्यादिकों में श्रवण दर्शनादि शक्ति होने के प्रमाण शान्ति पर्व में क्या लिखे हैं और यह प्रस्ताव किस प्रसंग में है। इस विषय में मनुस्मृति में क्या लिखा है। ५

८. अनुशासन पर्व में दैव और पुरुषकार के विषय में ब्रह्मा और वसिष्ठ मुनि के संवाद का क्या आशय है और उसके समर्थन में मुख्य प्रमाण और दृष्टान्त क्या क्या दिये गये हैं। २०

अर्थ-शास्त्र

[परीक्षक—श्री० संगमलाल, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[निम्न लिखित १० प्रश्नों में से ७ प्रश्न करने से पूर्ण अंक मिल जायंगे। प्रत्येक प्रश्न में अंक बराबर हैं।]

१. किसी वस्तु को अधिक परिमाण और कम परिमाण में उत्पन्न करने में क्या लाभ और हानि हैं ?

२. मिश्रित पूंजी वाली कम्पनी के लाभ और उसकी कठिनाइयां क्या हैं ? इस की सफलता के लिए किन बातों की आवश्यकता है ?

३. श्रम विभाजन के फल, लाभ और हानियों का वर्णन कीजिए।

४. सहकारी बंकों से क्या लाभ है ? उन को सफलता पूर्वक चलाने के लिए किन बातों पर ध्यान रखना चाहिये।

भारतवर्ष में ऐसे बंकों की आवश्यकता है कि नहीं। यदि है, तो क्यों ?

५. भारतवर्ष में काम करने वालों की उत्पादन शक्ति कैसे बढ़ सकती है ?

६. भारतवर्ष की कृषि की उन्नति के लिए गवर्नमेंट को क्या क्या उपाय करने चाहियें ?

७. सुवर्ण और रजत में क्या गुण हैं जिन के कारण इन के सिक्के बनाये जाते हैं और दूसरी चीज़ों के नहीं।

८. एडम स्मिथ के कर लगाने के चार नियमों का सविस्तार उल्लेख कीजिए।

९. पूंजी किसे कहते हैं ? इस की वृद्धि और संग्रह कैसे हो सकते हैं ?

१०. मज़दूरी किसे कहते हैं ?

"आबादी के बढ़ने और मज़दूरी के निर्ख से बहुत बड़ा सम्बन्ध है" इस वाक्य को सिद्ध कीजिये।

ज्योतिष

[परीक्षक—पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

१. सूर्यसिद्धान्त के विषयों की यथाक्रम संक्षिप्त सूची लिखिये। १०

२. सूर्य सिद्धान्त के अनुसार बनाई हुई भूपरिधि और वास्तविक भूपरिधि में क्या अन्तर है और सूर्य सिद्धान्तीय भूपरिधि बनाने की रीति में स्थूलता क्या है ? १०

३. सौरमास संख्या ५१८४००,०० अधिमास संख्या १५९३३३६, चान्द्रदिन संख्या १६०३०००००८० और सौर दिन संख्या १५७७९१७८२८ है अतएव चान्द्रमास संख्या और क्षयतिथि-संख्या का मान क्या होगा ? ६

४. अहर्गण बनाने की ठीक ठीक रीति लिखिए। १२

५. पलभा, अक्षांश, शङ्कु, द्युज्या, चरफल, विक्षेप, मन्दोच्च, शीघ्रोच्च, पञ्चतारा, और अक्षज्या की परिभाषा लिखिए। १५

६. त्रिज्या की कला और चन्द्रादि ग्रहों की परमविक्षेप-कलाओं की संख्या लिखिए। १०

७. ६० घड़ी का दिन और ६० ही घड़ी रात पृथ्वी के कितने अक्षांश पर और कब होती है और उसका क्या कारण है। ८

८. ग्रहों के दिनमान बनाने की रीति लिखिए और यह भी बतलाइये कि दिन और रात का मान सदैव समान किस स्थान पर रहता है ? १०

९. ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार बृहस्पति का पूरा पूरा वर्णन लिखिए। १०

१०. रात और दिन क्यों छोटे बड़े होते हैं और ऋतुओं के परिवर्तन का क्या कारण है? ५

११. लघुग्रह, प्रधानग्रह और अवान्तरग्रह इन तीनों की परिभाषा लिखिए। ३

१२. वारुणी और वरुण ग्रह का ज्ञान कब हुआ था। २

वैद्यक

[परीक्षक—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल आयुर्वेदपञ्चानन]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

१. जलवायु परिवर्तन, तैल मर्दन, स्नान और षटरस भोजन का क्या सम्बन्ध है? १०

२. मनुष्यों में भिन्न २ प्रकृति होने का क्या कारण है? एक ही प्रकार के जलवायु और स्वास्थ्य परिचर्या में रहने पर भी भिन्न भिन्न लोगों के स्वास्थ्य में भिन्नत्व क्यों दिखाई पड़ता है? १०

३. (क) आखों में अंजन अथवा सुर्मा क्यों लगाना चाहिये? ५

(ख) किस प्रकार के मनुष्यों के लिए व्यायाम निषिद्ध है ५

४. ऋतु परिवर्तन क्यों होता है, वर्षाऋतु में मनुष्यों को अपना आहार-विहार और व्यवहार कैसा रखना चाहिये? १०

५. रसों की उत्पत्ति किस प्रकार होती है, कौन रस शरीर में कैसा कार्य करता है?

६. पञ्च तत्वों की पृथक पृथक पहचान क्या है, और वह शरीर के लिए कहाँ तक उपयोगी हैं? १०

७. (क) यदि कोई मनुष्य शिर के बल ऊंचे से गिरा हो तो उसकी संभाल कैसी करनी चाहिये? ५

(ख) भीड़ से दबे, कुचले और घबड़ाये हुए मनुष्य की सहायता किस प्रकार कीजियेगा? ५

८. आपको यदि कोई ऐसा रोगी मिले जिसे किसी कारण से बहुत आघात लगा हो और उसके कई स्थानों से ऐसा रक्त निकल रहा हो जो उसके जीवन के लिए हानिकारी हो तो निपुण चिकित्सक के आने के पहिले ही आप उस रक्त को किस प्रकार बन्द करेंगे ? १०

९. रोगी की सुश्रूषा की व्यवस्था के लिए जाते ही किसी सुश्रूषा कारी को किन किन बातों पर दृष्टि डालनी चाहिये और उनकी पूर्ति के लिए कैसा प्रबन्ध करना उचित है ? १०

१०. दुधपिये बच्चे की सँभाल करने में सुश्रूषा-कारिणी को किन मुख्य बातो का ध्यान रखना चाहिये ? १०

संस्कृत से अनुवाद

[परीक्षक—साहित्याचार्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

नीचे लिखे गद्य पद्य का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

आसीत् पुरा कस्मिन्नपि नगरे वीरसिंहो नाम राजा। स यशसा गुणेन कान्त्या धैर्येण विभवेन पराक्रमेण च सुरेन्द्रप्रतिमः प्रजाभिरगृह्यत। कदाचित्स महीपालो यदृच्छया किमपि गहनं वनमाससाद। परिजनहीन एकाकी महीप आत्मानं सङ्कटपतितं मन्यमानः परं खेदमाकलयाञ्चकार। तदैव केनापि पठ्यमानं श्लोकमेकं शुश्राव।

वीरोऽसि कृतविद्योऽसि कुलीनोऽसि महामते।
आत्मानं सङ्कटे मग्नं भावयन् किन्न लज्जसे॥

कुतश्चिदागतामिमां वाणीं श्रुत्वा चकितो राजा त्वरितमेव सात्विकेन बलेन पुनर्नवीकृत इव समुतस्थौ। उत्थाय च पश्चिमायां दिशि कानिचित्पदानि गत्वा कामपि वृद्धां कस्यापि तरोश्छायायां विषण्णवदनां स्थितामपश्यत्। राजा तत्समीपं गत्वा सादरं पप्रच्छ,

मातः, का भवती अत्र विजने कथं निवासः स्वीकृतो भवत्याः, आज्ञां कामयते जनोऽयम्।

वृद्धा राजानं सुचिरं निरीक्ष्य कोष्णं निःश्वस्य प्रोवाच। आकृत्या राजेव वत्सो विज्ञायते, अथवा कृतं सन्देहेन। मां कर्मशक्तिं वदन्ति विज्ञाः। साम्प्रतं कर्मपराङ्मुखाः संवृत्ताः श्रीमन्त इत्यरण्यवासाय मतिमकरवम्। राजा—भवती कर्मशक्तिः। पुरा भवत्या एवानुगृहीता राजान आत्मनो यशसा भूमण्डलं धवलयितुमशक्नन्। पुण्येनाद्य भवती दृष्टा। अद्य भवत्या उपदेशेनात्मानं पवित्री कर्तुमीहते जनोऽयम्।

राज्ञः प्रार्थनां श्रुत्वा क्षणं किञ्चिदिव ध्यात्वा प्रोवाच—

राज-शक्तिः प्रजा-शक्तिरिति शक्तिद्वयं नृप।
योगे सुखं वियोगे हि दुःखं लोकस्य जायते।

यो महीपः प्रजानाथमात्मानं कर्तुमीहते।
आराधनीया निखिलाः प्रजास्तेन प्रयत्नतः॥

ज्ञानं शिरः कर्म हस्तौ पण्डितैरिति बोध्यते।
तयोः संयोगकर्ता हि राजा प्रोक्तः सनातनः॥

एवं विधानुपदेशान् श्रुत्वा राजा तस्याः पादयोर्निपपात। बद्धाञ्जलिश्च सगद्गदमुवाच।

मातः, अद्य धन्योऽयञ्जनो भवत्या प्रसादेन सञ्जातः, भवदुपदेशानुसारेणैवेतः परं कर्म कर्तुं प्रवृत्तो भविष्यामि। एकोऽयमनुरोधः श्रीमत्या मदीयो मानयितव्यः। श्रीमत्या अरण्यवासः परिहर्तव्यः। नगरमिदानीं सनाथीक्रियतां भवत्याः।

सा प्रोवाच—

जनेषु कर्म प्रसितेषु वत्स
विभावयान्तं मम दुःखसिन्धोः
तदा समुज्झित्य वनं प्रियं तत्
वासाय मे स्यान्नगरं त्वदीयम्।

प्रसन्नो राजा स्वराजधानीं परावर्तत।

अंगरेज़ी से अनुवाद

[परीक्षक—पं० चन्द्रमौलि सुकुल, एम. ए., एल. टी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००।

निम्नलिखित का अनुवाद शुद्ध मुहावरेदार हिन्दी में कीजिये—

Babar did not see Samarkand again for many years. He had matched his strength against Shaibani Khan, and the latter had shown himself the stronger. The young prince (Babar)—he was king of nothing now—did not give in on that account; he sought more than once to cross swords with his powerful adversary; but he made no fresh attempt upon his capital for a long while. For the present he retired among the shepherds on the hills near Uratipa, waiting upon events. He had the happy faculty of being interested wherever he was, and now he found much amusement in talking to the Persian Sarts in the mountain village, and watching their sheep and herds of mares, as he took long rambles barefooted among the pastures. He lodged with the headman of the village, a veteran of seventy or eighty, whose mother was still alive at the age of a hundred and eleven. She had children, grandchildren, great-grandchildren, and great-great-grandchildren to the number of ninety-six in the district round about, and she delighted the prince with her reminiscences of old days. One of her people had actually served in Timur's army when he invaded Hindustan: 'She remembered it well, and often told us stories about it,' says Babar. Perhaps the old woman's tales fired her listener's imagination, and led him to dream of that Indian empire which was one day to be at his feet.

At present nothing lay at his feet but humble peasants and their flocks. He was so poor that he viewed with alarm the arrival of his grandmother, 'with the family and heavy ba*

and a few lean hungry followers,' escaped from Samarkand. His pride had fallen so low that he was persuaded by a politic counseller to send a present to his more fortunate brother Jahangir; he sent him an ermine cap and a heavy sword. The presents were carried by those of his followers who, having nothing but mischief to do in the village, were allowed to return to their homes. He made a raid himself in the winter. His enemy was ravaging the country about the river Sir, and babar could not resist the temptation of having a thrust at him. He led his few troopers to the place, but found nothing of the inimical tribe but their tracks. The river was another temptation, for Babar was a magnificent swimmer, as he afterwards proved in India.

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

प्रश्नपत्र

प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी. ए. के प्रबन्धसे प्रयागके सुदर्शन प्रेसमें
छपी और प्रयागस्थ साहित्य-सम्मेलन-कार्य्यालयसे प्रकाशित हुई

सम्मेलन सम्बन्धी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र

प्रथमा परीक्षा सं० १६७२

साहित्य १

(परीक्षक—पं० मन्नन-द्विवेदी, गजपुरी बी० ए०)

समय ३ घण्टे

(१) रामायण के पात्रों में जिसको आप सर्वोत्तम समझते हों, उसका वर्णन कीजिये और कारण दिखाइये कि क्यों आप उसको सबसे उत्तम समझते हैं। १५

(२) निम्नलिखित पदों में अलङ्कार बतलाइये—
इसके अनन्तर अङ्क में रक्खे हुए सुस्नेह से,
शोभित हुई इस भाँति वह निर्जीव पति के देह से-
मानों निदाघारम्भ में सन्तप्त आतप जाल से
छादित हुई विपिनस्थली नव पतित किंशुक शाल से। १५

(३) मुद्राराक्षस-रचयिता विशाखदत्त अथवा उसके अनुवादक भारतेन्दु–हरिश्चन्द्र के विषय में जो कुछ आप जानते हैं लिखें। १५

(४) जेहि कर जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू।
इस चौपाई का भाव लिखिये और बतलाइये कि इसको किसने और कहाँ कहा था। ऊपर की चौपाई के भावों की सत्यता के विषय में आपको जितने उदाहरण मालूम हों लिखें। १५

(५) निम्नलिखित कविता में क्या क्या साहित्य-दूषण हैं—
(क)—कर वन्दना गुरु की मुदित यह पार्थ से लड़ने चला,
विख्यात विन्ध्याचल यथा आकाश से भिड़ने चला।
(ख)—अर्जुन बिना सब पाण्डवों के वध न करने के लिए;
करुणार्द्र होकर कर्ण ने थे वचन कुन्ती को दिये। १०

(६) निम्नलिखित पद्य कौन सा छन्द है, उसका लक्षण क्या है, और पद्य में आपको यदि कोई दोष देख पड़े तो बतलाइये—
(क)—पर, अर्जुनाधिक पाण्डवों का वध न करने के लिये,
करुणार्द्र होकर कर्ण ने थे वचन कुन्ती को दिये।

(ख)—वाचक ! विलोको तो ज़रा, है दृश्य क्या मार्मिक अहो!
देखा कहीं अन्यत्र भी क्या शील यों धार्मिक कहो। १०

(७) निम्नलिखित पद्यों में से किन्हीं तीन का अर्थ लिखिये।

(क)—और देव सों काम नहिं यम को करो प्रणाम।
जो दूजन के भक्त को प्राण हरत परिणाम॥
यदपि उदित कुमुदिन सहित पाय चाँदनी चन्द।
तदपि न तुम बिन लसत है नृप शशि जगदानन्द॥ २०

(ख)—जो केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाउ जानि बड़ि माता॥ जो पितु मात कहेउ बन जाना। तौ कानन शत अवध समाना॥

(ग)—आकाश में चलते हुए यों छवि मुझे दिखला रही,
मानों जगत को गोद लेकर मोद देती है मही।
उन्नत हिमाचल से धवल यह सुरसरी यों टूटती,
मानों पयोधर से मही के दुग्ध-धारा छूटती।

(घ)—ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं। कन्दमूल भोग करैं कन्दमूल भोग करैं तीन बेर खातीं सो तो तीन बैर खातीं हैं। भूखन शिथिल अङ्ग भूखन शिथिल अङ्ग बिजन डुलाती ते व बिजन डुलाती हैं। भूषन भनत शिवराज बीर तेरे त्रास नगन जड़ातीं ते व नगन जड़ाती हैं—

—:०:—

साहित्य २

(परीक्षक—पं० शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए०)

समय २ घण्टे

(१) प्यारे न्यारे चन्द हौ मृगान रथ मैं नहे।
केहरी समान कटि है।
उपरोक्त दोनों वाक्यों में प्रधान अर्थालङ्कार कौन हैं सो समझा कर लिखिये।

(२) खञ्जरीट नहिं लखि परत कछु दिन साँची बात।
बाल द्गन सम होन को मनों करन तप जात॥
खञ्जरीट नहिं लखि परत कछु दिन साँची बात।
बाल द्गन सम होनको करन कठिन तप जात॥

उपरोक्त दोहे में जो थोड़ा सा अन्तर दो बार लिखने से किया गया है उससे उसके अर्थालङ्कार में क्या अन्तर पड़ता है? समझा कर लिखिए। १०

(३) चन्द्रमा सोलहों कलाओं से पूर्ण अपनी प्रेयसी निशा की मुख-छवि पर निहाल है। उसकी सब ओर छिटकी हुई चाँदनी सम विषम भूभाग को एक आकार दरसाती हुई चक्रवर्ती राजा की आज्ञा समान सर्वत्र व्याप रही है, मानो वितान रूप नीले आकाश के शामियाने के नीचे सुफ़ेद फ़र्श बिछा दिया गया हो।

उपरोक्त वाक्यों का अर्थ सरल भाषा में लिखिए और यह भी बतलाइए कि निशा को चन्द्रमा की प्रेयसी क्यों माना गया है। १५

(४) भारतमित्र पत्र का इतिहास सङ्क्षेप से लिखिये। १५

(५) बिहारबन्धु का इतिहास सङ्क्षेप रूप से लिखिये। १०

(६) निम्न लिखित वाक्यों का अर्थ सरल हिन्दी में लिखिये:—

(क) ऐसा कौन आर्यसन्तान होगा, जिस का चित्र श्रीत्रिवेणीजी के निरीक्षण से उल्लसित न हो जाय? यहाँ त्रिपथगामिनी उन भागीरथी गङ्गा का सूर्य-नन्दिनी से सङ्गम हुआ है कि, जिनके शरण में लाखों ऋषि मुनि अनादि काल से रहते आये हैं, और जिनके उत्तम जल से दैहिक, मानसिक और भौतिक ताप दूर होते हैं। १०

(ख) नहीं साहब विधवा विवाह की क्या मैं तो सधवा विवाह को भी बुरा नहीं मानता। भला आप सुधारक लोगों के सामने किसी की मजाल है कि ज़बान हिला सके। ५

(ग) भारतवर्ष में हिन्दू और मुसलमान दो बड़ी जातियां हैं। दोनों के शिक्षित लोगों के विचारों में हम एक विचित्र

भेद देखते हैं। शिक्षित हिन्दू अपनी जाति, धर्म और समाज की जहाँ तक बने निन्दा करते हैं। समाज के गुणों को छिपाते हैं और दोषों को बढ़ा बढ़ा कर दिखाते हैं। उधर शिक्षित मुसलमानों का ठीक इसके विरुद्ध आचरण है। ५

(८) चन्दा की कथा सङ्क्षेप से लिखिए और उसके पात्रों में से रामू और चन्दा के गुण दोष कहिए। १०

(९) नीचे लिखे हुए महावरों की व्याख्या कीजिये। जहाँ कहीं अलङ्कार दिखलाते बने, स्पष्ट दिखाइये। १०

१—आँख का पानी ढरक जाना।

२—शरम हया को पी बैठना।

३—पैरा वह गया।

४—मिट्टी छूते सोना होता था।

५—ग्रन्थ चुम्बकों को मुंह खोलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी।

६—इनके कहने को ज़रा भी किसीने दूखा कि तिवरी बदल जाती थी।

७—नौ नक़द न तेरह उधार।

८—कोयले के व्यवहार में हाथ पैर काले।

साहित्य ३

(परीक्षक—पं० रामचन्द्र शुक्ल)

समय ३ घण्टे

१०० अङ्क

(१) किसी ग्राम के दृश्य का ऐसा वर्णन जिसमें जीवों के भिन्न भिन्न व्यापार भी आ जायँ।

(२) सुशीलता किसे कहते हैं और उससे व्यवहार में किस प्रकार सुगमता होती है।

(३) शिक्षितों और अशिक्षितों के जीवन में अन्तर।

ऊपर के लिखे विषयों में किसी एक पर निवन्ध लिखिये। निवन्ध १०० पङ्क्तियों से कम में न हो।

१० अङ्क शुद्धता और स्वच्छता के होंगे।

इतिहास

(परीक्षक—पं० हरिमङ्गल मिश्र एम० ए०)

समय—३ घण्टा

[पूर्णाङ्क १०० । प्रत्येक प्रश्न के अङ्क समान हैं]

(१) अलाउद्दीन ख़िलजी के राज्य का सङ्क्षिप्त वर्णन लिखिये।

(२) औरङ्गज़ेब की योग्यता और उसके राज्य के महत्त्व का विस्तार-पूर्वक वर्णन लिखिये।

(३) मरहठों के राज्य का अन्त जिन जिन कारणों से हुआ हो उन्हें बतलाइये।

(४) लार्ड कार्नवालिस के वन्दोबस्त इस्तरारी के नफ़ा नुक़सान पर अपनी सम्मति लिखिये।

(५) लार्ड वेलेस्ली की राजनीति क्या थी ? सङ्क्षेप में लिखिये।

(६) लार्ड डेलहौसी कृत प्रजाहित और राज्यप्रबन्ध के कार्यों का वर्णन कीजिये।

(७) निम्न लिखित शब्दों पर टिप्पणी लिखिये।

ख़लीफ़ा, ख़ालसा, जज़िया, जागीरदार, बड़े लाट की कौंसल, नैशनल काङ्ग्रेस।

(८) भारतवर्ष का नक़्शा खींच के निम्न लिखित स्थानों को दिखलाइये।

(अ) वे लड़ाई के मैदान जहाँ राजपूतों ने मुसलमानों को परास्त किया।

(ब) वे नगर या देश जिन्हें शिवा जी ने लूटा हो।

—:o:—

भूगोल

समय ३ घण्टे

(परीक्षक—पं० कृष्णशङ्कर तिवारी बी० ए०)

१—नीचे लिखे शब्दों की परिभाषा लिखिए:—

भूकम्प, मानसून, तुषार, झरना, स्फटिक कत्तल, अक्षाङ्शरेखा, देशान्तर रेखा, ज्वार भाटा। 12

२—पृथ्वी की अन्तरस्थ गर्मी के क्या क्या सबूत हैं? ज्वालामुखी पर्वतों का भूडोल से क्या सम्बन्ध है? ८

३—नीचे लिखी बातों में से किसी तीन के कारण बताइये:— १५

(क) हम ज्यों ज्यों पहाड़ों के ऊपर चढ़ते हैं त्यों त्यों हमें अधिक सर्दी मालूम होती है।

(ख) हिन्दुस्तान के पश्चिमीय तट पर पूर्वीय तट की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है।

(ग) ठण्ढी हवा उतनी भाप नहीं धारण कर सकती जितनी गर्म हवा कर सकती है।

(घ) पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच का व्यास उसके विषुवत रेखा के बीच के व्यास से २७ मील कम है।

(ङ) ग्रीष्म ऋतु में दिन बड़ा और रात छोटी होती है।

४—हिन्दुस्तान की आब हवा का सङ्क्षेपरूप से वर्णन करिए, तथा वहाँ के उन भागों के नाम लिखिए जहाँ सब से अधिक और सब से कम वर्षा होती है। १०

५—नीचे लिखे स्थान क्या और कहाँ हैं:—

रायो डी जेनिरो, शिकागो, मेडेगास्कर, सिडनी, न्यूगिनी, विनीपेग, बर्मिङ्घम, विस्टूला। १०

६—कलकत्ते में एक फुटबाल का खेल रविवार की सन्ध्या के ६ बजे खेला गया और उसका समाचार लन्दन में उसी दिन क़रीब दो बजे दिन को समाचारपत्रों में प्रकाशित हो गया। बताइये क्या यह सम्भव है? और यदि है तो क्यों है? १०

७—बङ्गाल की खाड़ी में जो जो प्रसिद्ध नदियाँ गिरती हैं उनके नाम क्रमबद्ध लिखिए। १०

८—एक मनुष्य बेहरिङ्ग के समुद्र से एशिया के किनारे किनारे जाता हुआ स्वेज़ के बन्दर को पहुँचना चाहता है। बताइये उसे मार्ग में कौन कौन से प्रसिद्ध समुद्र, खाड़ियाँ, और बन्दर मिलेंगे? १०

९—हिन्दुस्तान का एक मानचित्र खींचिए, और उसमें निम्नलिखित स्थान दिखलाइए:—

नर्वदा, गङ्गा, सिन्धु, सतलज, कावेरी, लाहौर, नीलगिरि, आगरा, सुलेमान, देहली, अरावली, और प्रयाग। १५

—:०:—

अङ्कगणित

समय ३ घण्टे

(परीक्षक—बाबू ज्योति प्रसाद बैजल एम० ए०)

१—क़ीमत दरियाफ़्त कीजिये

$\frac{६·७५७}{२·१७४२} \times \frac{·२५८}{२·७८} \times$ १२ आने $९\frac{३}{४}$ पाई १६

२—तीन मनुष्यों की दौड़ में, पहले ने दूसरे को १०० गज़ की दौड़ में ५ गज़ से हराया; दूसरे ने तीसरे को २०० गज़ की दौड़ में १० गज़ से हराया। बतलाइये कि ४०० गज़ की दौड़ में पहले और तीसरे में कौन जीतेगा और कितने गज़ों से ? १६

३—व्यावहारिक रीति से ३७५·३६७५ बीघे ज़मीन का लगान ४.२५ रुपये की दर से निकालिये। १२

४—एक रक़म का सूद दो बरस में ५६।) है और उसी रक़म का दो बरस में ५०) मिती काटा है। बतलाइये कि रक़म कितनी है और सूद प्रति सैकड़ा क्या है ? १६

५—किसी अङ्क में से ३२० घटाए, जो बाक़ी बचा उसमें २४ जोड़े, जोड़ को ८ से गुणा किया तो मालूम हुआ कि गुणनफल ३०४ और ७६० के जोड़ के बराबर है। बताओ कि अङ्क क्या है ? ८

६—एक सौदागर ने ६ आने के ५ दस्ते की दर से कुछ काग़ज़ ख़रीदा। वह उसी काग़ज़ को इस हिसाब से बेचता है कि १० दस्ते की बिक्री की क़ीमत जो कुछ आती है वह २५ दस्ते की ख़रीद की क़ीमत पर मुनाफा होता है। मालूम कीजिये कि उसने एक दस्ता काग़ज़ किस क़ीमत पर बेचा ? १२

७—क और ख मिल कर सब काम को ६ दिन में कर सकते हैं, ख अकेला उसको १६ दिन में; क और ख ने मिलकर ३ दिन काम किया; क अकेला शेष को कितने समय में कर लेगा? २०

—:o:—

आरम्भिक विज्ञान

समय ३ घण्टे

(परीक्षक—पं० गोमतीप्रसाद अग्निहोत्री बी-एस-सी.)

केवल ८ प्रश्न करने चाहिएं। सब प्रश्नों में समान अङ्क हैं। पूर्णाङ्क १००।

१—नीचे लिखी वस्तुओं की तोल बिना तराज़ू के जानी जा सकती है या नहीं?

(१) चाँदी की कटोरी

(२) कटोरी भर पानी

अपना कथन यथाशक्ति पुष्ट कीजिए।

२—'अर्कमीदिस का सिद्धान्त' क्या है? उसके सत्यासत्य की परीक्षा करने के लिए जिन जिन प्रयोगों की आवश्यकता हो उनका सङ्क्षिप्त वर्णन लिखिए।

३—द्रव पदार्थों के शोधने के लिए क्या उपाय है? सचित्र वर्णन लिखिए।

४—धातु और अधातु में क्या भेद है? उदाहरण दीजिए। क्या कोई द्रव धातु भी है? उसके कुछ गुण बताइए।

५—'तापक्रम' से अभिप्राय क्या है? तापमापक या थर्मामीटर पर 'हिमाङ्क' अङ्कित करने की रीति लिखिए।

६—पानी का अधिक से अधिक घनत्व किस तापक्रम पर होता है? कोई प्रयोग वर्णन कीजिए जिससे आपका कथन पुष्ट हो।

७—'कलारी' किसे कहते हैं? 0° श तक ठण्ढे किये हुए एक सेर पानी में ९५° श तक गरम किया हुआ तीन छटाँक पानी मिलाने पर सारे मिश्रित जल का तापक्रम क्या होगा?

८—गरमी किन किन रीतियों से फैलती है? उन सब में क्या भेद है? प्रत्येक के उदाहरण दीजिए।

९—नरम लोहे का लम्ब प्रसार गुणक ·००००१२ है—इसका मतलब समझाइये।

इस लोहे का ५ गज़ लम्बा छड़, २०° श से १००° श तक गरम किए जाने पर कितना बढ़ जायगा!

१०–गुप्त ताप से क्या अभिप्राय है? १० ग्राम बरफ़ ०° श पर है। उसे १००° श वाली भाफ के रूप में परिणत करने के लिए कितने ताप की आवश्यकता है?

११–शरीर में रक्त का संचार किस भाँति होता है? सङ्क्षेप में वर्णन कीजिए।

१२–'जल' के विषय में छोटा सा स्वास्थ्य-सम्बन्धी लेख लिखिए।

मध्यमा परीक्षा सं० १९७३

साहित्य १

(परीक्षक—पं० श्यामविहारी मिश्र एम० ए०)

समय ३ घण्टे

१—निम्न लिखित छन्दों के अर्थ लिखिये और उन्हें भली भाँति समझाइये:—

क—(१) कीन्हेसि अग्निपवन जल खेहा।
कीन्हेसि बहुतै रङ्ग औ रेहा॥
कीन्हेसि धूप सेव औ छाहाँ।
कीन्हेसि मेघ बीज तेहि माहाँ॥१॥

(२) कीन्हेसि अगर कस्तुरी बीना।
कीन्हेसि भीमसेन औ चीना॥
कीन्हेसि द्रव्य, गर्व जेहि होई।
कीन्हेसि लोभ अघाइ न कोई॥२॥ ६

ख—(१) मन्द चहउँ कवि यश लहन हैहैं हँसी संसार।
उन्नत लभ्य फल लोभ जिमि उिगनो बाँह पसार॥१॥

(२) बिना सुरासुर मथन जिमि ऋष्य शृङ्ग करतूत ।
प्रकटै सदि नृप पयधि से किमि रत्नोपम पूत ॥२॥　　६

ग—(१) तरनि जगत-जलनिधि तरनि जै जै आनन्द ओक ।
कोक कोकनद सोकहर लोक लोक आलोक ॥१॥

(२) पम्पा मानसर आदि अगन तलाब लागे
जिनके परन मैं अकथ युत मथ के ।
भूषन यों साज्यो राजगढ़ सिवराज रहे
देव चक्र चाहि कै बनाए राज पथ के ॥
बिन अवलम्ब कलि कानि आसमान मैं
है होत बिसराम जहाँ इन्दु औ उदथ के ।
महत उतङ्गमनि जोतिन के सङ्ग आनि कै
यो रङ्ग चाहा गहत रवि-रथ के ॥३॥　　१०

घ—(१) नव नागरि तन मुलुक लहि जोबन आमिल जोर ।
घटि बढ़ि ते बढ़ि घटि रक़म करी और की और ॥१॥

(२) मकराकृत गोपाल के कुण्डल सोहत कान ।
मनो सस्यो हिय वर समर ड्योढ़ी लसत निसान ॥२॥

(३) डीठि न परत समान दुति कनक कनक से गात ।
भूषन कर करकस लगे परस पिछाने जात ॥३॥

ऊपर के छन्द नम्बर घ—(१) की उदाहरणों सहित व्याख्या करो ।

छन्द नं० घ-(२) के विषय की जो कथा जानते हो लिखो।

छन्द नं० घ-(३) में जो प्रधान अलङ्कार हो उसे व्याख्या सहित समझाइये ।　　१०

ङ—(१) जहँ जनमेजय जनक जगपति विधि
हरिहर परिहरि प्रपञ्च छलु ।
सुकृत प्रवेश करत जेहि आश्रम
विगत विषाद भये पारथ नलु ॥१॥

(२) न करु विलम्ब विचारु चारुमति
वरष पाछिले सम अगिले पलु ।

मन्त्र सो जाइ जपहि जो जपतै
अजर अमर हर अचइ हलाहलु ॥२॥

(३) आश्रम वर्णन धर्म विहित जगु
लोक वेद मर्याद गई है ।
कामधेनु धरनी कलि गोमर
विवस विकल जामति न बई है ॥३॥

ऊपर के छन्द नं० ङ—(१) और (२) के विषय की जो कथाएं आप जानते हों उन्हें बहुत सङ्क्षेप से लिखें और छन्द ङ—(२) में किस मन्त्र का इशारा है ।

छन्द नम्बर ङ—(३) पर अपनी राय लिखिये और जो कुछ अदूरदर्शी लोग इस समय को नष्ट कह कर अपने बालपन के समय को बहुत अच्छा कहते हैं उस पर विवेचना कीजिये । १५

च—(१) जो भीड़ आलय समीप ब्रजेश के थी ।
सो कातरा बहु बनी भय-कंस से थी ॥१॥
(२) सञ्चालिता विषमता करती उसे थी ।
सन्ताप की विविध-संशय की दुखों की ॥२॥

ऊपर छन्द नम्बर च—(१) और (२) की कथा जानते हो तो सङ्क्षेप में लिखो और अन्वय करो । ८

२—१—प्रश्न नम्बर १ में जिन शब्दों के नीचे आड़ी रेखा खिँची है उनके शुद्ध रूप लिखिये । हिन्दी में ऐसे विकृत रूपों के प्रयोग के विषय में अपनी सम्मति कारणों सहित बतलाइये ५

२—तुलसीदास का सङ्क्षिप्त हाल लिखिये और उनकी भक्ति पर विवेचना कीजिये । १०

३—पद्मावत की कथा का सारांश बतलाइये और जायसी की सहानुभूति एवम् उदारता तथा कट्टरपन पर अपनी सम्मति लिखिये । १०

४—"शिवराजभूषण" में कवि ने जो कुछ अपने विषय में लिखा है उसका सूक्ष्म रूप में वर्णन करो और उसके निवास स्थान का ठीक पता दीजिये । ५

साहित्य ४

(परीक्षक—बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०)

समय ३ घण्टे

(१) प्राचीन नागरी अक्षरों तथा आधुनिक नागरी अक्षरों के रूपों में क्या क्या मुख्य भेद हैं और इनके प्रधान कारण क्या हैं? उदाहरण सहित इसे लिखिए। १०

(२) क्ष और ज्ञ अक्षरों के आधुनिक रूपों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई? इनके इतिहास के विषय में जो कुछ आपको ज्ञात हो, लिखिए। १०

(३) नागरी अङ्कों में शून्य का प्रचार किस समय से हुआ? इससे पहले क्या अवस्था थी? शून्य के आविष्कार और प्रचार से संसार की ज्ञानवृद्धि में क्या सहायता पहुँची? इन विषयों पर अपने विचार लिखिए। १०

(४) किसी नाटक को अङ्कों और गर्भाङ्कों में विभक्त करने में किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। इस सम्बन्ध में आधुनिक नाटकों की कैसी स्थिति है? १०

(५) यदि हिन्दी में वैसा ही व्याकरण बना होता जैसा कि संस्कृत में पाणिनि का है तो हिन्दी साहित्य पर उसका कैसा प्रभाव पड़ता? इस समय हिन्दी में व्याकरण शास्त्र की कैसी स्थिति है और उसका कैसा प्रभाव इस साहित्य पर पड़ रहा है? १०

(६) मिश्रबन्धुविनोद की भूमिका में ग्रन्थकर्ताओं ने इस मत की पुष्टि की है कि हिन्दी शब्दों के रूपों के लिखने में किसी जटिल और अनिवार्य नियम का पालन करना आवश्यक नहीं है। वे इस सम्बन्ध में स्वच्छन्दता के पक्षपाती हैं। उन्होंने इस मत की पुष्टि में कौन कौन से कारण बताए हैं और उनके विषय में आपकी क्या सम्मति है? १०

(७) सूर सूर तुलसी शशी, उड़गन केशवदास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकाश॥

इस उक्ति पर अपने विचार और सिद्धान्त सङ्क्षेप में लिखिए। तथा सूरदास, तुलसीदास और केशवदास की कविता की परस्पर तुलना कीजिए। आपकी सम्मति में इनमें किन किन बातों में समानता और किन किन में अन्तर है। अपने विचारों तथा सिद्धान्तों की पुष्टि में जहाँ तक सम्भव हो उनके ग्रन्थों से उद्धरण दीजिए। १८

(८) सतसैया के दोहरा, ज्यों नावक के तीर।
देखत में छोटो लगें, घाव करें गम्भीर॥

इस दोहे में जो बात लिखी गई है उसका स्पष्टीकरण उदाहरणों सहित कीजिए। १०

(९) हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रेम-कथात्मक कविताओं का क्या स्थान है। इसका आदि कवि कौन हुआ और किस सम्प्रदाय के कवियों ने इस अङ्ग की विशेष पुष्टि की, हिन्दी साहित्य के इस अंश का इतिहास सङ्क्षेप में लिखिये। १२

—:o:—

इतिहास १

(परीक्षक—पं० जनार्दन भट्ट एम० ए०)

समय ३ घण्टे

कोई आठ प्रश्न करने से पूरे अङ्क मिल सकते हैं। पूर्णाङ्क १००

१—भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की सामग्री विस्तारपूर्वक लिखिये।

२—"धम्म" शब्द की व्याख्या करिये और इसके मूलतत्व अशोक के शब्दों में लिखिये। अशोक ने भारतवर्ष में और भारतवर्ष से अन्यत्र किन किन देशों में "धम्म" का प्रचार करने के लिये किन किन उपायों का अवलम्बन किया?

३—"गुप्त वंश के राजाओं का समय संस्कृत-भाषा और हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म का समय था"—इस कथन को प्रमाणित करिये।

४—ईसा की ७ वीं शताब्दी में कौन सा बौद्ध यात्री भारतवर्ष में आया और उसने भारतवर्ष के बारे में क्या लिखा ?

५—गुलाम घराने का सिलसिलेवार इतिहास—उदय से अन्त तक—सङ्क्षेप में लिखिये।

६—अकबर की तुलना औरङ्गज़ेब से करिये और यह लिखिये कि मुग़ल साम्राज्य के अधःपतन के कौन कौन से कारण थे।

७—डूप्ले का सङ्क्षिप्त जीवनवृत्तान्त लिखिये और यह बतलाइये कि उसका राजनैतिक उद्देश्य क्या था और किन किन कारणों से वह अपने उद्देश्य में असफल हुआ।

८—लार्ड रिपन ने राज्य में कौन से सुधार किये और उनका प्रभाव भारतवर्ष में क्या पड़ा ?

९—(१) रेग्युलेटिङ्ग ऐक्ट (Regulating act) (२) इस्तमरारी बन्दोबस्त (Permanent Settlement) (३) सब्सिडियरी सिस्टम (Subsidiary system) (४) डाक्ट्रिन ऑफ लैप्स (Doctrine of lapse) (५) महारानी विक्टोरिया का घोषणापत्र

इन पर छोटे छोटे लेख लिखिये।

१०—(१) कौटिल्य अर्थशास्त्र (२) पुष्पमित्र (३) समुद्रगुप्त (४) मिहिरगुल (५) अबुल फ़ज़ल (६) अहमदशाह अबदाली (७) नन्दकुमार (८) क्लाइव

इन पर सङ्क्षिप्त नोट लिखिये।

—:o:—

इतिहास २

(परीक्षक—बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन एम. ए.)

समय ३ घण्टे

[पहिले प्रश्न का उत्तर देना आवश्यक है। उसके लिये १६ अंक हैं। शेष प्रश्नों में से किन्हीं सात प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए, प्रत्येक में १२ अंक हैं।]

१. अङ्गलदेश (इङ्गलैण्ड) के इतिहास में क्रम क्रम से प्रजामत ने जिस प्रकार बल पकड़ा और अपने लिये सामयिक शासकों से स्वत्व निश्चित कराये उसका संक्षिप्त विवरण मुख्य घटनाओं और कारणों सहित लिखिए।

२. जिन कारणों से तृतीय विलियम को अङ्गल देश का राज्य मिला उनका विवरण लिखिए।

३. प्राचीन यूनान देश का भूगोल सम्बन्धी कुछ हाल लिखिए। प्राचीन काल में उस देश में एकता के भाव के प्रचार में विरोधी कारण क्या थे और सहायक कारण क्या थे ?

४. "मनुष्यों के परस्पर मेल जोल से रहने में उन्नति, एकता की वृद्धि, तथा जातिभेद वा देशभेद वाले भावों में कमी को स्थूलतः 'सभ्यता' कहते हैं"। यदि इतनी ही परिभाषा पूर्ण और ठीक मान ली जाय तो बताइये कि भारतवर्ष में सभ्यता के बढ़ने अथवा घटने का क्या क्रम रहा है।

५. रोमन सम्राट् कंसटण्टैन (Constantine) का कुछ हाल लिखिए।

६. "माध्यमिक काल में युरोपीय सभ्यता के गुरु मुसलमान ही थे"। इसकी व्याख्या कीजिए।

७. युरोपीय इतिहास में किस समय को "परिवर्त्तन काल" कहा है और क्यों ?

८. विस्टफ़ालिया (Westphalia) की सन्धि का जर्मन और भिन्न देशों पर क्या परिणाम हुआ ?

९. फ्रेञ्च सम्राट् तृतीय नैपोलियन का कुछ हाल लिखिए। जर्मनी के साथ फ्रांस का जो युद्ध संवत १६२७–२८ में हुआ उसके लिये वह कहां तक उत्तरदाता था ?

१०. निम्न लिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए।

(क) धर्मपरीक्षा (ख) बल-साम्य (ग) यीशुचिह्न (घ) समष्टि-वाद।

११. इतिहास किन सामग्रियों से निर्माण किया जाता है ?

१२. "इस समय [अर्थात् प्राचीन हिन्दू लोगों के समय] तुमुल युद्ध बड़ी राज्य क्रान्ति आदि जो इतिहास की सामग्री है उनका अभाव होने के कारण इतिहास लिख रखने की प्रथा यहाँ प्रचलित नहीं हो सकी होगी।" इस वाक्य पर अपनी स्वतन्त्र टिप्पणी लिखिए।

—:o:—

गणित

(परीक्षक—पं० कमलाकर द्विवेदी, एम. ए.)

समय ३ घण्टे

(पूर्णाङ्क १००)

१. सिद्ध कीजिए $-अ \times -ब = +अ.ब.$ और $अ \times ब = ब \times अ$, अ और ब का चाहे जो धनात्मक मान हो। ५

२. (अ) $क^{४} + ६४$ के खण्ड कीजिये।

(ब) $अ + ब\sqrt{-१}$ का वर्गमूल निकालिये।

३. एक इञ्जिन बिना गाड़ी के २४ मील एक घण्टे में जा सकता है और यदि उसमें कुछ गाड़ियाँ लगा दी जायँ तो उसकी गति कम हो जाती है। इस कमी की मात्रा का चलन गाड़ियों की संख्या के वर्गमूल पर निर्भर है अर्थात् इस कमी की मात्रा और गाड़ियों की संख्या के वर्गमूल की निष्पत्ति कोई स्थिर संख्या होती है। चार गाड़ियों के साथ इञ्जिन की गति २० मील प्रति घण्टे की होती है। यह बतलाइये कि वह इञ्जिन अधिक से अधिक कितनी गाड़ियों को खींच सकता है। १०

४. निम्नलिखित पदों का वर्गमूल निकालिये

(अ) $२४\sqrt{-१} - ७$ ४

(ब) $२४(२ + \sqrt{३})$ ४

५. किसी त्रिभुज में एक सम त्रिकोण बनाइये जिसके शिरःकोण त्रिभुज की भुजाओं में हों। ८

६. एक ऐसा वृत्त खींचिये जो दो निर्दिष्ट सरल रेखा को स्पर्श करै। ८

७. (अ) किसी त्रिभुज में एक वर्ग बनाइये। ८

(ब) किसी त्रिभुज का आधार दिया हुआ है और उसका शिरःकोण भी ज्ञात है तो उसके अन्तर्गत वृत्त के केन्द्र का क्या मार्ग होगा? ८

८. (अ) चक्रीय माप किसको कहते हैं? २

यदि य किसी कोण का चक्रीय माप है तो सिद्ध कीजिये स्प य > य > ज्या य। ३

(ब) सिद्ध कीजिये

$$\frac{\text{ज्या}^3 \text{य} - \text{को ज्या}^3 \text{य}}{२ + \text{ज्या } २ \text{ य}} = \frac{१}{\sqrt{२}} \text{ज्या} \left(\text{य} - \frac{\pi}{४}\right)$$ ५

और

$$\frac{\text{ज्या}\frac{५\pi}{१२}}{\text{ज्या}\frac{\pi}{१२}} - \frac{\text{को ज्या}\frac{५\pi}{१२}}{\text{को ज्या}\frac{\pi}{१२}} = २\sqrt{३}$$ ५

९. किसी त्रिभुज अ ब स में सिद्ध कीजिये

$$\text{ज्या अ. ज्या ब. ज्या स} = \frac{\triangle}{२\text{र}}$$

जिसमें △ त्रिभुज का क्षेत्रफल है और र त्रिभुज के वहिर्गत वृत्त का व्यासार्द्ध है। १०

१०. एक वुर्ज और उस पर एक गुम्वज समतल भूमि में एक विन्दु पर जिसकी दूरी वुर्ज से अ है तुल्य कोण वनाते हैं। यदि च वुर्ज की उँचाई हो तो सिद्ध कीजिये कि गुम्वज की उँचाई $\text{च}.\frac{\text{अ}^2 + \text{च}^2}{\text{अ}^2 - \text{च}^2}$ के तुल्य होगी।

—:o:—

दर्शन

(परीक्षक—प्रो० दीवानचन्दजी एम. ए.)

समय ३ घण्टे

१. प्रकृति, पुरुष और परमात्मा के स्वरूप और उनके परस्पर सम्बन्ध की बाबत श्वेताश्वतर उपनिषद् क्या शिक्षा देता है? १०

२. इसी उपनिषद् के अनुसार ध्यान और समाधि का स्वरूप और फल लिखिये। १०

३. गीता में परमात्मा के स्वरूप की बाबत क्या बताया गया है? १०

४. कृष्ण के उपदेश का सारांश क्या है? १०

५. तर्कशास्त्र के लक्षण और विषय पर लिखिये।
इस शास्त्र के अंग कौन कौन से हैं? १०

६. न्याय के नियम क्या हैं?
किसी न्याय के वाक्यों और उनके अंगों के नाम लिखिये। १०

७. आचार के सम्बन्ध में सुक़रात ने क्या शिक्षा दी है? उसके शिष्यों ने उसे कैसे समझा? १५

८. डेकार्ट ने जीवात्मा, ईश्वर और संसार को कैसे सिद्ध किया है? १५

९. ह्यूम के सिद्धान्त का सार लिखिये। १०

—:०:—

विज्ञान

(परीक्षक—पं० नन्दकुमार तिवारी, बी. एस. सी. और पं० लक्ष्मीनारायण नागर बी. ए., एल. एल. बी.)

समय ३ घण्टे

द्रष्टव्य—विज्ञान में (१) वनस्पति, (२) रसायन, (३) भौतिक इन तीनों विभागों के प्रश्न नीचे अलग अलग दिये जाते हैं। प्रत्येक विभाग से अधिक से अधिक तीन ही प्रश्नों के उत्तर

देने होंगे। परन्तु सब मिला कर आठ प्रश्नों से अधिक न किये जायँ। अङ्क सबके बराबर हैं। वनस्पति विभाग के प्रश्नों के उत्तर एक कापी में और रसायन तथा भौतिक विभाग के उत्तर दूसरी कापी में लिखने होंगे। चित्रित और सुस्पष्ट उत्तरों के लिए अच्छे अंक दिये जायँगे। पूर्णाङ्क १०० ।

वनस्पति विभाग

-जीवित और अजीवित पदार्थों में क्या अन्तर है? इनको पूर्ण रूप से उदाहरण सहित लिखिये, वृक्षों को इनमें से किस श्रेणी में रक्खेंगे और क्यों?

-बीज क्या है और उसका क्या उद्देश्य है? किसी बीज का जिसका आपने परीक्षण किया हो विवरण लिखिये और साथ ही साथ यह बतलाइये कि एकपत्रक और द्विपत्रक बीजों में क्या भेद है?

या

किसी द्विपत्रक बीज के भागों का पूरा पूरा बयान लिखिये और उद्भेद के समय से बीजांकुर पौदा बन जाने तक जो जो परिवर्तन इन भागों में होते हैं बतलाइये।

-तना किसको कहते हैं? वायव्य और भौमिक तनों में क्या अन्तर है? प्रत्येक का उदाहरण दीजिये।

-जड़ से पेड़ों को जो लाभ पहुंचते हैं लिखिये, जड़ और तने में क्या भेद है? अगर एक जड़ और भौमिक तना दिया जाय तो उनका ठीक ठीक ज्ञान आप कैसे करेंगे?

या

किसी प्रामाणिक परिपूर्ण पत्ती के भागों के नाम और उनमें से हर एक का थोड़ा थोड़ा वर्णन लिखिये। साधारण और संयुक्त पत्ती में कौन सा मुख्य भेद है?

-किसी पुष्प का वर्णन कीजिए और उसके भागों का पूरा पूरा हाल लिखिए।

६—सेचन किसको कहते हैं? आत्मसेचन और परसेचन में क्या भेद है? इनमें से जो कम लाभकारी है उसको रोकने के लिए प्रकृति कौन कौन से उपाय करती है? इनका पूरा हाल लिखिये।

रसायन विभाग

७—(क) ३२ तोले पारे को ६२ तोले गंधक के साथ तेज़ आँच देते हैं। यदि ऐसा प्रबन्ध किया जाय कि मिश्रण का कोई अंश इस प्रक्रिया में नष्ट न हो, तो कितना गंधक वा पारा बिना यौगिक बने बच जायगा?

(ख) दोनों के संयोग से जो पदार्थ बनेगा उसका साङ्केतिक चिह्न, नाम और गुण लिखिये, तथा प्रक्रिया का समीकरण लिखकर उसे समझाइये।

८—गंधक को आँच देने से उसमें कितनी कितनी आँच पर क्या क्या परिवर्त्तन दीखते हैं, विस्तार से लिखिये। गंधक के कितने प्राकृतिक रूपान्तर होते हैं?

९—गंधक का तेज़ाब कैसे बनाया जाता है? सङ्क्षिप्त वर्णन, समीकरणों के साथ लिखिये।

१०—हवाई जहाज़ के एक गुब्बारे में ३५° श और ७४१ मि. मि. वायु भार पर भरने के लिए ५००० लीटर उज्जन चाहिए। जस्ते का पारमाणविक गुरुत्व ६५ हो तो कितने ग्राम जस्ता लगेगा?

११—व्यापार के लिए विरंजन चूर्ण कैसे बनता है? यदि हम थोड़ा सा बनाना चाहें तो क्या क्या उपकरण चाहियें? समीकरण लिखिये और यह बतलाइये कि हरिण बनाने का आज कल सब से सुलभ और लाभकारी उपाय क्या समझा जाता है।

भौतिक विभाग

१२—बिजली उत्पादन-दृष्टि से कितने तरह की होती है और किस किस रीति से उत्पन्न की जाती है। सब के एक एक उदाहरण दीजिए। क्या चुम्बक से उससे कोई सम्बन्ध है; यदि हो तो स्पष्ट समझाइये।

१३—एक चाँदी के पदक पर सोना इस प्रकार चढ़ाना है कि एक ही ओर स्वर्ण-वेष्टित हो और दूसरी ओर चाँदी ज्यों की त्यों झलके। किन वैद्युत उपायों से यह क्रिया सम्भव होगी। विस्तार से उपकरणों और क्रियाओं का वर्णन कीजिए। समीकरण भी दीजिये।

१४—तार द्वारा समाचार भेजना किन सिद्धान्तों पर निर्भर है। सङ्क्षेप से वर्णन कीजिए। क्या टेलिफ़ोन से उससे कोई समानता है। टेलिफ़ोन के सिद्धान्त क्या हैं?

१५—बिजली कैसी कैसी दशाओं में ताप में वा प्रकाश में बदल जाती है? उन दशाओं का वर्णन कीजिए और उदाहरण दीजिए। क्या ताप को भी बिजली में बदल सकते हैं?

—:o:—

धर्मशास्त्र

(परीक्षक—पं० श्रीकृष्ण जोशी)

समय ३ घण्टे

१—नीचे के शब्दों का मनुस्मृति में क्या अर्थ लिखा है?:—
'ब्रह्मर्षिदेश', 'मध्यदेश', 'व्रात्य', 'आचार्य्य', 'उपाध्याय', 'दैव विवाह', 'आर्ष विवाह', 'परिवेत्ता', 'पञ्च महायज्ञ', 'पङ्क्ति पावन'। २०

२—प्रणव, व्याहृति, गायत्री, प्राणायाम और सन्ध्यावन्दन के विषय में मनुस्मृति में क्या लिखा है? १०

३—विवाह किस कुल की और कैसी कन्या से करना लिखा है और किन कुलों की और कैसी कन्याओं का निषेध किया है? १०

४—राष्ट्ररक्षा का विधान और रक्षकों की जीविका के विषय में क्या नियम लिखे हैं? १०

५—शत्रु के राज्य पर चढ़ाई और लड़ाई किस विधि और किस नीति से करना लिखा है? १५

६—शान्ति पर्व में ऐल-काश्यप और कुबेर-मुचकुंद के सम्वादों

में राजा और पुरोहित के विषय में जो लिखा है उसका सारांश क्या है ? १०

७—शील का लक्षण और उसकी प्राप्ति के उपाय के विषय में राजा युधिष्ठिर के प्रश्न के उत्तर में भीष्म पितामह ने धृतराष्ट्र-दुर्योधन का सम्वाद और उसके अन्तर्गत ब्राह्मण-वेषधारी इन्द्र और प्रह्लाद की जो कथा कही वे क्या हैं और उस कथा का सारभूत शील विषयक प्रश्न का उत्तर क्या है ? १५

८—भीष्म पितामह ने राजा युधिष्ठिर को गौतमी, व्याध, सर्प-मृत्यु, और काल का जो इतिहास सुनाया वह सङ्क्षेप में क्या है और किस अवसर पर किस प्रयोजन से सुनाया ? १०

—:o:—

अर्थशास्त्र

(परीक्षक—अध्यापक बालकृष्ण एम० ए०)

समय ३ घण्टे

१—समष्टिवाद के भिन्न स्वरूप, प्रत्येक के दोष और सामाजिक उन्नति में प्रत्येक का कार्य्य समझा दो। १५

२—(क) उन आर्थिक शक्तियों या प्रवृत्तियों का वर्णन करो जिनसे एंजल महाशय सैन्य बल को व्यर्थ ही सिद्ध करते हैं। ८

(ख) बहुत से लोगों का कहना है कि एंजल की फिलासोफ़ी को आज कल की योरुपीन युद्ध ने अशुद्ध कर दिखाया है। इस कथन की टीका कीजिए। ७

३—राष्ट्र को एक व्यक्ति से उपमा किन कारणों से देनी चाहिए और किन कारणों से नहीं ? एंजल की सम्मति दीजिए। १०

४—(क) मिश्रित पूंजीवाली मण्डलियों की कठिनाइयाँ, लाभ और भारतवर्ष में उनकी उन्नति की मात्रा दिखाइये। १०

(ख) बड़ी मात्रा की उत्पत्ति भारत में होनी चाहिये या छोटी की ? १०

५—क्या राज को उत्पत्ति का साधन कहना चाहिये ? हाँ और ना के कारण लिखिये। ८

६—(क) विदेशी व्यापार के हानि लाभ लिखिये। आज कल की भारतीय दशा से उदाहरण भी दीजिए। ७

(ख) क्रमागत ह्रास नियम का प्रयोग भूमि और व्यवसाय में सिद्ध कीजिए। १०

७—युक्त प्रान्त अमेरिका और भारत की आर्थिक सम्पत्ति में भेद किन कारणों से है ? १५

—:०:—

ज्योतिष

(परीक्षक—ज्योतिषभूषण पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी)

समय तीन घण्टे

स्वच्छ एवं सुवाच्य लेख के लिये १० अङ्क

(१) सूर्यसिद्धान्तानुसार, उसका मूल रचयिता कौन है और उस का संसार में प्रचार किसके द्वारा हुआ ? ५

(२) सूर्यसिद्धान्त में फलित की कहीं चर्चा है या नहीं, यदि है तो किस प्रङ्ग से ? १०

(३) सूर्यसिद्धान्त में सात (सूर्यादि) वारों का अस्तित्व पाया जाता है या नहीं ? ५

(४) सूर्यसिद्धान्तानुसार सूर्य पृथ्वी की परिक्रमा करता है कि पृथ्वी सूर्य की ? १०

(५) सूर्यसिद्धान्तानुसार पञ्चाङ्ग की रचना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से की जाती है कि मेषसङ्क्राति से ? १०

(६) पञ्चाङ्ग किन पाँच वस्तुओं को कहते हैं और उनके बनाने की रीति क्या है ? १५

(७) सूर्यसिद्धान्त की ग्रहगणना में उनकी सङ्ख्या ७ है या ९ ? २

(८) सूर्यसिद्धान्त में अनुष्टुप्छन्द के श्लोकों के अतिरिक्त कोई दूसरा छन्द भी है यदि है, तो उसकी सङ्ख्या क्या है ? ३

(९) क्रान्तिमण्डल और राशिचक्र की परिभाषा क्या है ? ५

(१०) मण्डलाकार सूर्य ग्रहण क्यों होता है और उसकी प्रशंसा क्या है ? ५

(११) यदि दो मील का एक कोश मानें तो सूर्यसिद्धान्तीय भूव्यास और आधुनिक विषुवत् सम्बन्धी भूव्यास में कितने कोशों का अन्तर आता है ? १०

(१२) देशान्तर जानने के लिये सूर्यसिद्धान्तानुसार और यूरोपीय विद्वानों के मत से भूमध्यरेखा के स्थान कौन हैं ? दोनों में कितने अंश का अन्तर है ? १०

—:०:—

वैद्यक

(परीक्षक—पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल वैद्यपञ्चानन)

समय ३ घण्टे

सब प्रश्नों के अङ्क समान हैं। पूर्णाङ्क—१००

१—निरोगी मनुष्य की पाचनक्रिया का वर्णन करें और यह भी बतलावें कि पाचनक्रिया में अन्तर पड़ने के मुख्य कौन कौन से कारण हैं।

२—ब्रह्मचर्य का प्रभाव और उसके गुणों का वर्णन करें तथा व्यायाम का हमारे शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है, यह भी अलग अलग बतावें।

३—रस कितने हैं, क्या ऋतु भेद से रसों का विचार कर हमें अपने आहार के पदार्थों में परिवर्तन करना आवश्यक है ? यदि है तो अलग अलग ऋतु और रसभेद के अनुसार वर्णन कर बतलावें।

४—मनुष्य को निद्रा की आवश्यकता क्यों है, अच्छी निद्रा न आने के क्या कारण हैं, जिन्हें अच्छी निद्रा न आती हो उन्हें क्या उपाय करना चाहिए ?

५—हंसोदक, सत्तू, भैंस का दूध, शहद, नींबू और सैंधवनमक के सङ्क्षिप्त गुण बतलावें।

६—विष खाने वाले मनुष्य की पहचान क्या है, किसी द्रव आहार द्रव्य में विष मिलाया गया है इसे आप कैसे जानेंगे ? यदि कोई मनुष्य विष मिला पदार्थ खा गया हो तो किसी चतुर

वैद्य अथवा डाक्टर के आने के पहले आप उसकी प्रारम्भिक चिकित्सा कैसे करेंगे ?

७—यदि सेवासमिति के कुछ सदस्यों को रास्ते में तीन ऐसे पीड़ित मनुष्य मिलें जिनमें एक पानी में डूबा हुआ बेहोश निकाला गया हो, दूसरा पेड़ से गिर पड़ा हो और उसकी खोपड़ी में घाव हो गया हो और तीसरे को साँप ने काट लिया हो, विशेषता यह कि आसपास पाँच मील तक कोई प्रवीण वैद्य अथवा डाक्टर न हो तो उन सदस्यों को ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिये ?

८—रोगी की सेवा और देख रेख रखनेवाले परिचारक अथवा परिचारिका में कौन कौन से गुण होने चाहियें और उससे वैद्य को किन किन विषयों में सहायता मिल सकती है ? यह भी बतलावें कि रोगी के खान पान वस्त्र परिच्छेद और रहने की जगह के सम्बन्ध में परिचारिक के क्या कर्तव्य हैं ?

—:०:—

संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद

(परीक्षक—पं० चन्द्रमौलि शुक्ल एम. ए.)

समय ३ घण्टे

निम्न लिखित गद्य पद्य का अनुवाद सरल हिन्दी में कीजिये ।

(अङ्क—१००)

आसीदयोध्यायां पुरि भूरिवसुर्नाम वणिक् । तस्य प्रचुरवसुर्नाम पुत्र बभूव । स च पितर्य्युपरते लब्धपितृविभवः पितृपरिजनवृद्धान् पृच्छति स्म । रे वृद्धाः कथयत मम पिता केनोपायेन धनमेतावद्-र्जितवान् । वृद्धा ऊचुः । वणिज्यया केवलम् । तथाहि—

वृद्धोपदेशतो ज्ञानं प्रतिष्ठा राजसेवया ।
यशः पुण्यं च दानेन द्रविणं तु वणिज्यया ॥

प्रचुरवसुरुवाच । कीदृशी सा वणिज्या । वृद्धा ऊचुः । साधो, पिता तव गौड़े क्रीतं वस्तु गज्जने विक्रीय गज्जने क्रीतं गौड़े विक्रीय यदा यत्र सुलभं तदा तत्र तत् क्रीणाति महर्घं विक्रीणीते । तथाहि-

देशाद्देशान्तरं नीतं कालात् कालान्तरं तथा ।
वस्तुमूल्यविभेदेन वणिजो लाभमादिशेत् ॥
पतिभक्ता न या नारी व्यवसायी न यः पुमान् ।
तावुभावपि लीयेते वृष्टिपाषाणखंडवत् ॥

ततो भवानपि व्यवसायं कर्त्तुमर्हति । पुरुषो व्यवसायं विना लक्षेश्वरोऽपि लक्ष्म्या परिहीयते । ततः स वणिक्पुत्रश्चिन्तयामास । यत् कोटिसंख्यं मम वित्तं विद्यते तन्मध्ये लक्षक्रीतं वस्तु देशाद्देशान्तरं नीतं दशगुणं भविता । भाव्यमानायां धनवृद्धौ का चिन्ता । दशभिरेव लक्षैः पुनः कोटिमुत्पादयिष्यामि । संप्रति तु दशलक्षपरिशिष्टधनव्ययं कुर्वन् यौवनोचितं सुखमनुभवामि । यतः—

अर्था भवंति गच्छन्ति लभ्यन्ते च पुनः पुनः ।
पुनः कदापि नायाति गतं तु नवयौवनम् ॥

परिजनास्तं तुष्टुवुः । साधु वणिक्पुत्र साधु । पिता तव कृपण आसीत् धनोपार्जनायासमात्रपात्रं बभूव । धनं तु त्वया भोक्तव्यम् । ततस्तेषां वचनेन जातरभसः स मूढः सर्वस्वव्ययमंगीचकार । यतः—

धनं यस्य व्यथा तस्य व्यय व्यसनकर्मणि ।
भोक्तॄणां पुनरन्येषां कुतः पीडा धनव्यये ॥

अपि च ।

आसादयंति खादंति यावत्स्वामिधनं नराः ।
तावदेव स्तुवंत्येनं क्षीणवित्तं त्यजंति च ॥

इत्युदर्कमपरामृशन्नेव स युवा स्रक्चंदनवनिताताम्बूलादीनामुपयोगेन सर्वं धनमुत्सन्नमकरोत् । परिशिष्टे दशलक्षेऽपि पूर्वेणैव परामर्षेण लक्षमेकं धृत्वा नव लक्षाणि वियोजयामास । पश्चाद्दशममपि लक्षं चखाद । तथाहि—

क्षीयते निःस्रवे कूपे जनोद्धृतजले जलम् ।
निरुपाये तथा गेहे क्षीणं भवति वैभवम् ॥

ततः क्षीणे सर्वधने वणिक्पुत्रः सर्वोपायासमर्थोऽवसादमाससाद । श्लोकः—

वित्तं विना बुद्धिविवेकहीनः पूर्वानुगत्या बहुलव्ययश्च ।
लक्षेश्वरो निर्धनतामुपेतः कमप्युपायं क्षमते न कर्त्तुम् ॥
इति मूढकथा ।

—:o:—

अङ्गरेज़ीसे हिन्दी में अनुवाद

(परीक्षक—पं० मोहन लाल मिश्र)

समय ३ घण्टे

हिन्दी में अनुवाद कीजिये :—

Use and assert your own reason: reflect, examine and analyze everything, in order to form a sound and mature judgment: let no *ipse dixit* impose upon your understanding, mislead your actions or dictate your conversation. Be early, what if you are not, you will, when too late, wish you had been. Consult your reason betimes; I do not say that it will always prove an unerring guide, for human reason is not infallible; but it will prove the least erring guide that you can follow. Books and conversation may assist it, but adopt neither blindly nor implicitly, try both by that best rule which God has given to direct us—reason. Of all the troubles, do not decline as many people do, that of thinking. The herd of mankind can hardly be said to think; their notions are almost all adoptive: and, in general, I believe it is better that it should be so; as such common prejudices contribute more to order and quiet than their own separate reasonings would do, uncultivated and unimproved as they are.

In general, however, the penal law must content itself with keeping men from doing positive harm, and must leave to public opinion, and to the teachers of morality and religion the office of furnishing men with motives for doing positive good. It is evident that to attempt to punish men by law for not rendering to others all the services which it is their duty to render to others, would be preposterous. We must grant impunity to the vast majority of these omissions which a benevolent morality would pronounce reprehensible, and must content ourselves with punishing such omissions only when they are distinguished from the rest by some circumstances which mark them out as peculiarly fit objects of penal legislation. १०

It is not ignoble to feel that the fuller life which a sad experience has brought us is worth our own personal share of pain; surely it is not possible to feel otherwise any more than it would be possible for a man with cataract to regret the painful process by which his dim blurred sight of men as trees walking had been exchanged for clear outline and effulgent day. The growth of higher feeling within us is like the growth of faculty, bringing with it a sense of added strength: we can no more wish to return to a narrower sympathy, than a painter or a musician can wish to return to his cruder manner, or a philosopher to his less complete formula. २०

उत्तमा परीक्षा सं० १९७३

हिन्दी साहित्य

साहित्य १

(परीक्षक—बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०)

समय ३ घण्टे

१—नीचे लिखे छन्दों का अन्वय और अर्थ स्पष्ट लिखो और यह भी बताओ कि वे किस वर्णन में किस अवसर पर किस के द्वारा कहे गये हैं—

(क) चढ़त नदी जिम मेह, नेह नवला जुवनागम ।
सिद्ध ध्राह दिन चढ़त, सुगुरु सिष्षक विद्या क्रम ।
सज्ज ओप ज्यौं भरनि, लच्छि व्यापारह वढ्ढत ।
बढ़त भट्ट गज वंस, वेलि द्रुम सीसह चढ्ढत ।
जिस सरद रयनि सुद पष्ष तिथि, बढ़त कला
ससि तस गमत ।
चहुआन सूर सोमेस सुअ, इस सुदसा दिन दिन जमत ॥ १२

(ख) लोहानो आजान, बाँह लम्बी पस्सारै ।
लम्बी बाँह पसारि, तेग लम्बी उब्भारै ।
उब्भारै विम्भार, वीर वाहै वढ्ढाली ।
अढ्ढाली अरि वढ्ढि, कंध सोहै सुढ्ढाली ।
सुढ्ढाल कंध विव खंड हुअ, विधि ओपम कवि चंद कहि ।
आवृत्त धत्त आजान भुअ, मनु कजल कोट की
विज्ज लहि ॥ १०

(ग) जिहि पुर गवन न होइ, ताहि कोइ पंथ न बुज्झै ।
जिहाँ दिष्ट नह मिटै, तहाँ कैसैं करि सुज्झैं ।
जो श्रुवमन नह सुनी, कहौ कैसी परि कहियै ।
जाके देह न होइ, ताहि कैसे कै गहियै ।
इह कथ असम अद्भूत अति, हठ निग्रह सुत जिन करै ।
सुनत ही श्रवन दुख उप्पजै, सिद्ध न कोइ कारज सिरै ॥ ८

(घ) मुक्ताहार विहार सार सुबुधा, अब्धा बुधा गोपिनी।
सेतं चौर सरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगिनी।
बीना पानि सुबानि जानि दधिजा, हंसा रसा आसिनी।
लंबोजा चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नासिनी॥ १

(ङ) रची सुखधाम सभा नृप राम,
लसैं भट पंकति दक्खिन वाम।
रजैं कवि पंडित सम्मुख सर्व,
तजैं अरु काव्य जिन्है लखि गर्व।
लसैं हरि आसन उप्पर भूप,
ढरैं व्यजनावलि सीस स्वरूप।
ढुरैं सिर चौर दुइयाँ अवदात,
मनो सिव सेखर गङ्ग प्रपात॥

२—(क) ऊपर के पाँचों छन्दों में जहाँ जहाँ अलङ्कारों का प्रयोग हुआ हो उनका स्पष्टीकरण करो और उनके नाम बताओ। १

(ख) ऊपर के छन्दों में आए हुए निम्न लिखित शब्दों की पूरी व्युत्पत्ति लिखोः— १

जुवनागम, सुद, सुभ्र, पस्सारै
उझ्झारै, विव, सेत, इह, जिन, वद्धि।

(ग) छन्द (ग) में "हठ निग्रह सुत जिन करै" से किस हठ का तात्पर्य है। वह हठ किसने किससे किया।

(घ) छन्द (ख) की छन्दोशास्त्र के अनुसार परीक्षा करो और उसका गण तथा मात्रा विभाग स्पष्ट लिखो।

३—चन्द कवि का सङ्क्षिप्त वृत्तान्त लिखो और पृथ्वीराज रासो की भाषा का वर्णन लिख कर उसके गुण या दोषों का अपनी बुद्धि के अनुसार उल्लेख करो।

४—पृथ्वीराज रासो के निम्न लिखित दोहों की व्याख्या करो और यह बतलाओ कि इनके द्वारा कहाँ तक और क्या सहायता इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता को पहुँचती है।

एकादस सै पंचदह, विक्रम साक अनन्द ।
तिहि रिपुजय पुर दहन को, भय प्रिथिराज नरिन्द ॥
एकादस सै पंचदह, विक्रम जिमि ध्रम सुत्त ।
त्रितिय साक प्रथिराज को, लिष्यो विप्र गुन गुत्त ॥

—:o:—

साहित्य २

(परीक्षक—बाबू रामदास गौड़, एम० ए०)

समय ३ घण्टे

सूचना—केवल १०० अङ्क के प्रश्न करने आवश्यक हैं ।

—(क) तमने काका जीवं के दुवा की आरामं चओ । जीन के रीजं में रोकड़ रुपीआ ५०००) तुमरे औ । हाती गोड़े का परचा सीवाअ आवेंगे षजानं से । इनं को कोई माफ करेंगे जीनको नरक के अधंकारी होवेंगे ! सई दुवे हुकम के हडमंत राअ ।

(ख) "तब हुरम कह्या उसका नाम तो मैं जानती हूँ । उसका ये सुभाव है । सो ताता षाणा तो षाता नहीं है और उकड़ू बैठता नहीं है । इस बात का मयाना ये है । जो पतिसाहि सलामति रसाले का लोग सारे ही यहाँ जिमावो । वै सकस आपै नजरि आवैगा । तब पतिसाहि रसाले का लोग सब ही कौ जिमावणे की तयारी कराई । अर पाणी ढोलिया । अर सकल कौ ताता पुलाव पुरसाया सो सारा ही जीम्या । पातसाह हुरम दोउ गोषडे के बीच बैठे देखते हैं ।"

(ग) इतने में नारायणदास के घरते पाँच हजार रुपैयान की थैली आई, सो द्वारपालन ने मौहर छापि करिके नारायणदास के पास पठाई । तिन ने पाँचौ थैली उन दोऊ भाईन कौ सौंपि दीनी और दंडौत कीनी और कह्यो जो अब तुम बेगि पधारौ और श्री आचार्य्य जी महाप्रभून कौं मेरी दंडौत करियो । दोऊ भाई विदा होयकै

चले। इतने में पात्साह बोल्यो जो पाँचौ थैली नारायण घारी लावौ।

चश्रो, रीजं, उकड़ू, ताता मयाना, ढोलिया, पुलाव, गोषड़े, बिनने, जो, घारी, इन शब्दों की व्याख्या करते हुए लिखिए कि इनमें कौन कौन प्रान्तीय और कौन व्यापक हैं और उनके प्रकृत रूप क्या हैं। ६

(क), (ख) और (ग) में परस्पर तुलना करके विभक्तियों के विशेष भेद दिखलाइये और बोली के रूप पर विचार करके इन वाक्यों के लिखने वालों के प्रान्त का अनुमान कीजिए और अपनी धारणा के कारण लिखिए। ८

२—(क) "सुगल तुम जाय नारिन को आश्वासन करि भुज भूषन के कर वासविकी पारलौकिकी क्रिया कराय के आवौ। डील धराधर तुमहू जाउ जब कृत्य करि चुकैं तब सुगल को राज तिलक करि भुजभूषन कों युवराज करि लिवाये लिये आइवो।"

(ख) "रोते रोते उसकी आखें सूज गई होंगी और तत्ती स्वास लेते लेते होठों का रंग फीका पड़ गया होगा, खुले बालों में हाथ पै रक्खा हुआ उसका मुख ऐसा छबि छीन दीखता होगा जैसे घटा में मलीन चन्द्रमा।"

(ग) "वह पहले तो यह झूठ सुनते ही भैचक सा रह गया लेकिन फिर जो दिल में उसके जोश आया तो चाहा कि उस लड़की पर हल्ला करे और जब अर्दली के सिपाहियों ने उसे रोका तो जेब से छुरी निकाल कर अपनी ही छाती में मारी।"

(घ) "तिस खिरियां हाथ बढ़ाये थे तो हाथ पसारे खड़ी रह गई ऐसे कि जैसे घन से मान कर दामिन बिछुर रही हो के चन्द्र से चन्द्रिका रूप पीछे रह गई कहो और गोरे तन की जोति छूटि छिति पर छाय यों छबि दे

रही थी कि मानो सुन्दर कंचन की भूमि पै खड़ी है नयनों से जल की धार वह रही है और सुवास के बस जे मुख पास भँवर आय आय बैठे थे उन्हें भी उड़ाय न सकती थी।"

(च) "जैसे मनुष्यों में देवता ब्राह्मण है चांडाल दैत्य है उनकी ज्ञाति में अन्तर नहीं है। मनुष्य दोनों हैं। ब्राह्मण का लोग चरणोदक लेते हैं और चांडाल का स्पर्श होता है तो सचैल स्नान करना होता है। हेतु आचरण का वह आरोपित है वास्तव्य नहीं है। और जो यह कहो कि संस्कार करके ब्राह्मण और चांडाल है तो व्यास जी नारायण के अवतार हैं धीमरी के पेट से जन्मे हैं। नारद जी दासी सुत। वाल्मीक जी पूर्व चांडाल हैं। इसी भाँत कर बहुत संत हैं। यह लोग नारायण के समेष्ठी क्योंकर हुए। संसार वर्ण-संकर है। ब्राह्मण चांडाल की निर्णय तो बनाय के होती है। तो इससे जाना गया संस्कार का भी प्रमाण नहीं। आरोपित उपाधि है। क्रिया उत्तम हुई तो सौ वर्ष में चांडाल से ब्राह्मण होय और जो क्रिया भ्रष्ट होय तो वह तुरत ही ब्राह्मण से चांडाल होता है। यद्यपि ऐसे विचार से हमें लोग नास्तिक कहेंगे इस बात का डर नहीं। जो बात सत्य है उसे कहना चाहिए कोई बुरा माने कि भला माने।"

(–) (ख) (ग) (घ) (च) में जिन शब्दों वा वाक्यों के नीचे आड़ी लकीर खींची है उनकी पूरी व्याख्या करते हुए जहाँ सम्भव हो वहाँ आधुनिक गद्य में उनके रूप दिखाइये। १२

(=) (क) अंश किस बोली में लिखा गया है। क्या इसमें और किसी प्रान्त के प्रयोग आ गये हैं। यदि हाँ तो प्रमाण के साथ लिखिये।

(ङ) (ख) (ग) (घ) (च) की आलोचना करते हुए यथा सम्भव इनके लेखन-काल का अनुमान कीजिए और अपने अनुमान के कारण भी दीजिए। ८

३—व्रजभाषा, बुंदेलखंडी और अवधी बोलियों के उदाहरण पुराने कवियों के गद्य अथवा पद्य से ही दीजिए और हो सके तो आज कल की बोली के गद्य उदाहरण देते हुए तीनों बोलियों में व्याकरण की दृष्टि से अन्तर दिखलाइये। १७

४—वर्त्तमान काल में हिन्दी की कविता की भाषा खड़ी बोली होनी चाहिए अथवा सूर तुलसी आदि प्रसिद्ध महा कवियों से मिलती जुलती बोली में। इस विषय पर विवेचनापूर्ण विचार प्रकट कीजिए। १४

५—पूत तुम्हार कहावन जोगू। अहउँ न मह फिरि करउ न सोगू॥
अपने घर मजूर जो देखिअ। ता महँ एक सरिस मोहिँ लेखिअ॥

यह किस बोली में है? जिन प्रान्तीय बोलियों का आप को अच्छा अभ्यास हो उनका नाम लिखिए और उनमें से हर एक में ऊपर की चौपाई वाले वाक्य का गद्य में अनुवाद लिखिए और उनमें व्याकरण की दृष्टि से अन्तर दिखलाइये। ७

६—आपके मत में खड़ी बोली का घनिष्ट सम्बन्ध किस प्राकृत से है। अपने मत की पुष्टि में खड़ी बोली के आदिम रूप और उसके क्रमशः अभ्युदय पर एक छोटा सा निबन्ध लिखिए। २५

७—गत सवा सौ वर्षों के भीतर हिन्दी के गद्य लेखकों में आप के मत से, कौन सब से उत्तम गद्य लेखक हुआ है। अपने मत की पुष्टि में हो सके तो प्रमाण दीजिए। [वर्त्तमान गद्य लेखकों पर विचार करना इस प्रश्न के अन्तर्गत नहीं है।] १८

—:o:—

साहित्य ३

(परीक्षक—श्री० हरि रामचन्द्र द्विवेकर, एम० ए०)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क—१००

(१) 'हिन्दी' शब्द का अर्थ क्या ? 'हिन्दी भाषा' किस प्राचीन भाषा से निकली है तथा इसके भिन्न भिन्न प्रान्तानुसार कितने भेद हैं ? दो चार भेद सोदाहरण दिखला कर उनमें साधारणता क्या है यह लिखो।

(२) 'खड़ी हिन्दी' किसे कहते हैं ? इसका अन्य प्रांतिक भाषाओं से क्या सम्बन्ध है ? इसका प्रचार कब से हुआ तथा भविष्यत्काल में इसकी क्या स्थिति होगी यह विस्तारपूर्वक लिखो।

(३) अक्षरों की उत्पत्ति कैसे हुई ? जिस समय कि अक्षर ज्ञात न थे लोग अपने विचार दूरस्थ मनुष्य पर कैसे प्रकट करते होंगे ? क्या वर्तमान देवनागरी लिपि में भी कुछ परिवर्तन होने का सम्भव है ? यदि नहीं तो क्यों और है तो क्या ?

(४) 'अक्षरों के स्वरूप से लेख का काल निश्चित किया जा सकता है।' किसी अक्षर के प्राचीन स्वरूप से आज तक के सब स्वरूप यथाकाल निर्दिष्ट कर पूर्वोक्त कथन का विवरण करो।

(५) प्राचीन तथा अर्वाचीन अङ्कों की लेखन पद्धति में क्या भेद है ? वर्तमान पद्धति कब से चली तथा आज भी दूसरी कौन सी अङ्क-पद्धति प्रचलित है। यह लिख कर '७' इस अङ्क के सब स्वरूप दो॥

—:o:—

साहित्य ४

(परीक्षक—बाबू श्याम सुन्दर दास, बी. ए.)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

निम्न लिखित विषयों में किसी एक विषय पर एक।

लिखो जो उत्तर पुस्तक के कम से कम १५ और अधिक से अधिक ३० पृष्ठ में आवे।

(१) जातीय उत्थान में साहित्य का स्थान और इस सम्बन्ध में हिन्दी की स्थिति।

(२) हिन्दी साहित्य में पद्यात्मक काव्य की बहुलता के कारण और उसका जातीय जीवन पर प्रभाव।

(३) हिन्दी भाषा के व्याकरण के मौलिक सिद्धांत क्या होने चाहिएं। संस्कृत और प्राकृत व्याकरणों से इसमें कहां तक सहायता ली जा सकती है। भाषा के विकास-सिद्धांत को ध्यान में रख कर अपने विचारों का स्पष्टीकरण करो।

—:o:—

साहित्य ५

(परीक्षक—प्रोफ़ेसर रामदास गौड़, एम. ए.)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

प्राकृत प्रकाश

१—वररुचि के अनुसार कितनी भाषाएँ प्राकृत के अन्तर्गत हैं? हिन्दी भाषा का उनमें किन किन से सम्बन्ध है? शब्द और धातु के रूपों का उदाहरण देकर अपने कथन की पुष्टि कीजिए।

२—"यह मुद्रिका मातु मैं आनी, दीन राम तुम कहँ सहिदानी।"
"मैं" "आनी" "दीन्ह" सहिदानी" इनके प्रकृत रूप लिख कर यह दिखलाइये कि प्रकृति से किस प्रकार परिवर्त्तन होते होते वर्त्तमान रूप बन गये। यथा सम्भव अपने उत्तर की पुष्टि में सूत्रों का प्रमाण भी दीजिए।

३—'त्रयोदश' शब्द के किन किन सूत्रों के अनुसार क्या क्या रूपान्तर हो कर उसका वर्त्तमान रूप "तेरह" बन गया है?

४—"घोल" शब्द का प्रकृत रूप क्या है? घोल शब्द के हिन्दी में क्या क्या अर्थ हैं और प्रकृति से उनका कहाँ तक सम्बन्ध है। इस

तरह के अन्य शब्दों के उदाहरण देते हुए, सम्भव हो तो, यह भी दिखलाइये। कि यौगिक और रूढ़ि अर्थ में कैसी परिस्थिति में कैसे कैसे अन्तर पड़ गये हैं ?

५—"जीहा", "दाढ़", "धीआ", "पुट्ठी", "पिआ", "पिअरो" इन शब्दों के अर्थ लिखते हुए इनकी व्युत्पत्ति की व्याख्या कीजिए और सम्भव हो तो सूत्रों का प्रमाण भी दीजिए।

प्राकृत पैङ्गलम्

(क) जहा भूत वेताल णच्चन्त गावंत खाए कबंधा,
सिआ फार फेक्कार हक्का रवन्ता, फुले कण्ण रंधा,
कआ टुट्ट फुट्टेइ मंथा कबंधा णचंता हसंता,
तहा वीर हम्मीर संगाम मज्झे तुलंता जुअंता।

(ख) ढोल्ला मारिअ ढिल्लि महँ मुच्छिअ मेच्छि सरीर।
पुर जज्जल्ला मंतिवर चलिअ वीर हम्मीर॥
चलिअ वीर हम्मीर पाअभर मेइणि कंपइ,
दिग मग णह अंधार धूलि सूरह रह झंपई।
दिग मग णह अंधार आणु खुरसाणक ओल्ला,
दरमरि दमसि विपक्ख मारअ ढिल्लि मह ढोल्ला॥

(ग) माई रूए हेओ
हिण्णो जिण्णो अवुड्ढओ देओ।
संभु कामंती सा
गोरी गहिलत्तणं कुणइ॥

६—उपर्युक्त पद्यों का अन्वय कीजिए और सरल हिन्दी में भाषान्तर कीजिए।

७—इन पद्यों के नाम, लक्षण, यति आदि लिखिए। यदि प्रचलित हिन्दी पद्यों के इन रूपों की तुलना में पिंगल के पद्यों में कोई विशेषता देख पड़े तो उसकी भी टीका कीजिए।

८—ढिल्लि, मेच्छ, जज्जल्ला, हम्मीर, खुरसाणक और ओल्ला शब्दों की व्याख्या कीजिए और हो सके तो ऐतिहासिक दृष्टि से इन पद्यों के निर्माता के समय पर अपना विचार प्रकट कीजिए।

—:o:—

लिखो जो उत्तर पुस्तक के कम से कम १५ और अधिक से अधिक २० पृष्ठ में आवे।

(१) जातीय उत्थान में साहित्य का स्थान और इस सम्बन्ध में हिन्दी की स्थिति।

(२) हिन्दी साहित्य में पद्यात्मक काव्य की बहुलता के कारण और उसका जातीय जीवन पर प्रभाव।

(३) हिन्दी भाषा के व्याकरण के मौलिक सिद्धांत क्या होने चाहिएं। संस्कृत और प्राकृत व्याकरणों से इसमें कहां तक सहायता ली जा सकती है। भाषा के विकास-सिद्धांत को ध्यान में रख कर अपने विचारों का स्पष्टीकरण करो।

—:o:—

साहित्य ५

(परीक्षक—प्रोफ़ेसर रामदास गौड़, एम. ए.)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

प्राकृत प्रकाश

१—वररुचि के अनुसार कितनी भाषाएँ प्राकृत के अन्तर्गत हैं? हिन्दी भाषा का उनमें किन किन से सम्बन्ध है? शब्द और धातु के रूपों का उदाहरण देकर अपने कथन की पुष्टि कीजिए।

२—"यह मुद्रिका मातु मैं आनी, दीन राम तुम कहँ सहिदानी।"

"मैं" "आनी" "दीन्ह" सहिदानी" इनके प्रकृत रूप लिख कर यह दिखलाइये कि प्रकृति से किस प्रकार परिवर्त्तन होते होते वर्त्तमान रूप बन गये। यथा सम्भव अपने उत्तर की पुष्टि में सूत्रों का प्रमाण भी दीजिए।

३—'त्रयोदश' शब्द के किन किन सूत्रों के अनुसार क्या क्या रूपान्तर हो कर उसका वर्त्तमान रूप "तेरह" बन गया है?

४—"घोल" शब्द का प्रकृत रूप क्या है? घोल शब्द के हिन्दी में क्या क्या अर्थ हैं और प्रकृति से उनका कहाँ तक सम्बन्ध है। इस

तरह के अन्य शब्दों के उदाहरण देते हुए, सम्भव हो तो, यह भी दिखलाइये। कि यौगिक और रूढ़ि अर्थ में कैसी परिस्थिति में कैसे कैसे अन्तर पड़ गये हैं ?

५—"जीहा", "दाढ़", "धीआ", "पुट्ठी", "पिआ", "पिअरो" इन शब्दों के अर्थ लिखते हुए इनकी व्युत्पत्ति की व्याख्या कीजिए और सम्भव हो तो सूत्रों का प्रमाण भी दीजिए।

प्राकृत पैङ्गलम्

(क) जहा भूत वेताल णच्चन्त गावंत खाए कबंधा,
सिआ फार फेक्कार हक्का रवन्ता, फुले कण्ण रंधा,
कआटुट्ट फुट्टेइ मंथा कबंधा णचंता हसंता,
तहा वीर हम्मीर संगाम मज्झे तुलंता जुअंता।

(ख) ढोल्ला मारिअ ढिल्लि महँ मुच्छिअ मेच्छ सरीर।
पुर जज्जल्ला मंतिवर चलिअ वीर हम्मीर॥
चलिअ वीर हम्मीर पाअभर मेइणि कंपइ,
दिग मग णह अंधार धूलि सूरह रह झंपई।
दिग मग णह अंधार आणु खुरसाणक ओल्ला,
दरमरि दमसि विपक्ख मारअ ढिल्लि मह ढोल्ला॥

(ग) माई रूए हेओ
हिण्णो जिण्णो अवुड्ढओ देओ।
संभु कामंती सा
गोरी गहिलत्तणं कुणइ॥

६—उपर्युक्त पद्यों का अन्वय कीजिए और सरल हिन्दी में भाषान्तर कीजिए।

७—इन पद्यों के नाम, लक्षण, यति आदि लिखिए। यदि प्रचलित हिन्दी पद्यों के इन रूपों की तुलना में पिंगल के पद्यों में कोई विशेषता देख पड़े तो उसकी भी टीका कीजिए।

८—ढिल्लि, मेच्छ, जज्जल्ला, हम्मीर, खुरसाणक और ओल्ला शब्दों की व्याख्या कीजिए और हो सके तो ऐतिहासिक दृष्टि से इन पद्यों के निर्माता के समय पर अपना विचार प्रकट कीजिए।

—:o:—

लिखो जो उत्तर पुस्तक के कम से कम १५ और अधिक से अधिक ३० पृष्ठ में आवे।

(१) जातीय उत्थान में साहित्य का स्थान और इस सम्बन्ध में हिन्दी की स्थिति।

(२) हिन्दी साहित्य में पद्यात्मक काव्य की बहुलता के कारण और उसका जातीय जीवन पर प्रभाव।

(३) हिन्दी भाषा के व्याकरण के मौलिक सिद्धांत क्या होने चाहिएं। संस्कृत और प्राकृत व्याकरणों से इसमें कहां तक सहायता ली जा सकती है। भाषा के विकास-सिद्धांत को ध्यान में रख कर अपने विचारों का स्पष्टीकरण करो।

—:o:—

साहित्य ५

(परीक्षक—प्रोफ़ेसर रामदास गौड़, एम. ए.)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

प्राकृत प्रकाश

१—वररुचि के अनुसार कितनी भाषाएँ प्राकृत के अन्तर्गत हैं? हिन्दी भाषा का उनमें किन किन से सम्बन्ध है? शब्द और धातु के रूपों का उदाहरण देकर अपने कथन की पुष्टि कीजिए।

२—"यह मुद्रिका मातु मैं आनी, दीन राम तुम कहँ सहिदानी।"

"मैं" "आनी" "दीन्ह" सहिदानी" इनके प्रकृत रूप लिख कर यह दिखलाइये कि प्रकृति से किस प्रकार परिवर्त्तन होते होते वर्त्तमान रूप बन गये। यथा सम्भव अपने उत्तर की पुष्टि में सूत्रों का प्रमाण भी दीजिए।

३—'त्रयोदश' शब्द के किन किन सूत्रों के अनुसार क्या क्या रूपान्तर हो कर उसका वर्त्तमान रूप "तेरह" बन गया है?

४—"घोल" शब्द का प्रकृत रूप क्या है? घोल शब्द के हिन्दी में क्या क्या अर्थ हैं और प्रकृति से उनका कहाँ तक सम्बन्ध है। इस

तरह के अन्य शब्दों के उदाहरण देते हुए, सम्भव हो तो, यह भी दिखलाइये। कि यौगिक और रूढ़ि अर्थ में कैसी परिस्थिति में कैसे कैसे अन्तर पड़ गये हैं ?

५—"जीहा", "दाढ़", "धीआ", "पुट्ठी", "पिआ", "पिअरो" इन शब्दों के अर्थ लिखते हुए इनकी व्युत्पत्ति की व्याख्या कीजिए और सम्भव हो तो सूत्रों का प्रमाण भी दीजिए।

प्राकृत पैङ्गलम्

(क) जहा भूत बेताल णच्चन्त गावंत खाए कबंधा,
सिआ फार फेक्कार हक्का रवन्ता, फुले कण्ण रंधा,
कआटुट्ट फुट्टेइ मंथा कबंधा णचंता हसंता,
तहा वीर हम्मीर संगाम मज्झे तुलंता जुअंता।

(ख) ढोल्ला मारिअ ढिल्लि महँ मुच्छिअ मेच्छ सरीर।
पुर जज्जल्ला मंतिबर चलिअ वीर हम्मीर॥
चलिअ वीर हम्मीर पाअभर मेइणि कंपइ,
दिग मग णह अंधार धूलि सूरह रह झंपई।
दिग मग णह अंधार आणु खुरसाणक ओल्ला,
दरमरि दमसि विपक्ख मारअ ढिल्लि मह ढोल्ला॥

(ग) माई रूए हेओ
हिएणो जिएणो अबुड्ढओ देओ।
संभु कामंती सा
गोरी गहिलत्तणं कुणइ॥

६—उपर्युक्त पद्यों का अन्वय कीजिए और सरल हिन्दी में भाषान्तर कीजिए।

७—इन पद्यों के नाम, लक्षण, यति आदि लिखिए। यदि प्रचलित हिन्दी पद्यों के इन रूपों की तुलना में पिंगल के पद्यों में कोई विशेषता देख पड़े तो उसकी भी टीका कीजिए।

८—ढिल्लि, मेच्छ, जज्जल्ला, हम्मीर, खुरसाणक और ओल्ला शब्दों की व्याख्या कीजिए और हो सके तो ऐतिहासिक दृष्टि से इन पद्यों के निर्म्माता के समय पर अपना विचार प्रकट कीजिए।

—:०:—

साहित्य ६

(परीक्षक—पं० गिरिधर लाल नागर, बी० एस-सी०)

समय ३ घण्टे

गुजराती भाषा

१—(अ.) बुद्धि प्रमाणे माननी नुं, करुं छुं वरणन;
ज्यम सागर मां थी चांच जलनी, भरे पक्षीजन.
दमयंती नो चोटलो, देखी अति सोहाग;
अभिमान मूकी लज्जा आणी, पाताल पेठो नाग.
सृष्टि करता ब्रह्मा जी ए, भर्यु तेज नुं पात्र;
ते तेज नुं प्रजापतिए घड्यू , दमयंती नु गात्र.
तेमां थी कांई शेष वाध्युं, घडतां खेरो पडियो;
ब्रह्मा ए एकठुं करीने, तेनो चन्द्रमा घडियो.
दमयंती ना अधर देखी, पेट वेध्युं प्रवाली;
ए कामनी नो कंठ सांभलि, कोकिला थई काली.
रसना वाणो सांभली, सरस्वती ने आव्यो वैराग;
कुंवारी पोते रही; संसार कीधो त्याग.
दंत देखी दाडम फाट्युं, कपोत संताडे महोने;
ते नाद करतो फरे वनमां, दुःख कहुं हुं कोने.

(i) उपर ना पदो मां आवेली उपमाओ ने सारी पेठे समझावता एओ नो अर्थ लखो.

(ii) राजा नल ना वखाण करतां कविए ऊपर नी उपमाओ नथी वापरी. बीजी केई उपमाओ नो प्रयोग कीधेलो छै, अने एवी भिन्नता शा माटे.

(ब.) भूप में दीठी गर्वघेलडी, सखी वे मध्य उभी अलवेलडी;
कदली स्थम्भ जुगल साहेलडी, वच्चे वैदर्भी कनक नी वेलडी.
वेल जाणे हेम नी, अवेव फूले फूली;
चकित चित्त थयुं माहरुं, ने गयो दूतत्व भूली.
साम सामा रह्या शोभे, व्योम भोम बे सोम.
इन्दु मां विन्दु विराजे, जाणे उडगण भोम.

उभे अमिनिधि कीरण प्रगट्यां, कला थई प्रकाश;
ज्योते ज्योत थी स्थंभ प्रगट्यो, शुं एथी थंभ्यो आकाश.
कामनी नो परिमल बेहेके, कला शोभे लक्ष;
शके धराधर वास लेवा, चढ्यो चन्दन वृक्ष.
कुरंग मीननी चपलता, शुं खंजन जाणे पडियां;
नेत्र अणिअग्रे श्रवण विंध्या, सोय थई नीमड़ियां.

(i) ऊपर ना पदो मां कोण अलंकार छे ते पोताना उत्तर ने समर्थन करतां लखो.

(ii) ऊपर ना पदो नो अर्थ सारी पेठे लखो.

२—(अ.) "माटे इंद्रियो जेम आपणी मित्र तेम आपणी शत्रु छे. ते एक नदी ना प्रवाह जेवी छे; ज्यां सुधी ते धीमे चाले छे त्यां सुधी सघला ने फायदो करे छे, पण ज्यारे ते जुस्सा थी वहे छे त्यारे तेना सपाटा मां जे आवे तेने घसड़ी जाय छे. ते एक वाघ जेवी छे. ज्यां सुधी तेने पांजरा मां गोंधी राखे त्यां सुधी कांई चिन्ता नही, पण तेने पांजरु तोडतां वार लागती नथी. तेने जीतवी ए घणु कठण काम छे, अने घणाज थोड़ा माणस थी ते बनी शके छे, माटे तेओ ने फावबाज न देवी ए डहापण छे, एटला कारणो थी सन्यासी, योगी, वगेरे पोतानी इंद्रियो ऊपर भरोसो राखता नथी."

उपर लख्या नूं अर्थ दृष्टान्त सहित लखो.

(ब.) "घणां खरां तो काल नी मोटी रेल मां घसडाई गयां; अने ते ओ हताज नहीं एम लागे छे; पण थोडां एक तो दरिया मांना खड़क नी पेठे मजबुत उभा छे; अने ते ओ उपर थी काल रुपी रेल जोर थी चाली गई तो पण ते ओ ना पाया हजी रहेला छे; अने अनन्त काल पर्य्यन्त ते ओ अचल रेहेशे. ए पाया रही गया ते शुं ? ते ओ ना नाम; तेओ नी आबरु."

एमा थी शी शिखामण लेवा नी छे ते, पोताना उत्तर ने दृष्टांतो थी समर्थन करतां, लखो.

३—नीचे ना पदो जे जे स्थले वापरवा मां आव्या छे तेते स्थल नूं वर्णन करतां एम नो अर्थ लखो.

(अ.) कोण नेत्र लुहे, राय रुए, एवे शब्द सांभल्यो गाढ़ो;
लोह प्रेम जल, मूकाव राय नल, वलताने बाहेर काढ़ो.
साभली वाणी, जाणी राणी, रोई रोई बेठो स्वर;
हरखे भरायो, स्वरे धायो, वीरसेन कुंवर.
पाडे बराडा, बले हवाडा, तरफड़े मोटो व्याल;
कहे दया सिन्धु, दीनबन्धु, काढ़ नल भूपाल.

ए वाणी जेनी छे तेनी पूरी कथा भी लखो.

(ब.) भारे वचन कह्या तें ब्राह्मण, निसर्यो मेहेणां देवारे;
वस्तु ने विपत तो वोहोरनीओ, करते हशे पर घेर सेवारे.
वोहोर्यूं ते कांई रत्न जाणी ने, काच थई निवड़ीयुंरे;
तत्व रहित माटे तज्युं छे, नथी छूंटी पडीयुंरे.
तेह मित्र ने तजियें जेनुं, मलवुं मन विना ठालुंरे;
ते स्त्री ने परहरिए जेनुं, पियुं करतां बेट वहालुंरे.
*गूढ़ वचन कही घोडारमा, बाहुक जईने बेठोरे;
सुदेव तो सांसांमां पडयो, प्राण विचार मां पेठोरे.

* ए वचन मा "गूढ़ता" शी हती ते भी लखो.

(स.) "अरे ! जीव ने शरीर नी कबर मां दफ़न करी ने फरवूं."

(ह.) अने महारण मां थाक तथा तरस थी कष्टा तो मुसाफर मृगजल जोईने पाणी नी आशा राखी चाल्योज जाय छे, तेम करण राजाए आगल उपर सारा नी उमेद राखी संसार रूपी प्रवास मां शांत मन थी चाल वा नो निश्चय कीधो."

४—प्रश्न ३—(ह) नो वाक्य विन्यास लखो.

५—नीचे लखेला गुजराती शब्दों नो अर्थ लखो अने उदाहरण तरीके हरएक ने माटे एक एक गुजराती वाक्य बनावी लखोः—

तद्दन; कंटालीजवुं; करोठुं; वेहेड़ां; कचरा वालु; वांसे; कालावाला; तसदी; बेबाकला; खंडणी.

६—राजा करण केवो हतो एनो एक सरस चित्र तेनी कथा ऊपर थी टुंका मां लखी बतावो.

अथवा

राजा नल नी हंस थी मैत्री केम थई अने तेओ मां पूर्व जन्म नो शो सम्बन्ध हतो ते अथ इति लखो.

—:o:—

इतिहास

राजनीति

(परीक्षक—प्रोफ़ेसर ताराचन्द, एम० ए०)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

केवल ५ प्रश्न करने आवश्यक हैं।

१—स्वाम्य (sovereignty) की व्याख्या कीजिये। बतलाइये कि क्यों प्रजा राज्य (state) की आज्ञा पालन करती है। इस विषय में जो विविध सिद्धान्त आपको मालूम हों उनकी पर्य्यालोचना कीजिए।

२—किन सिद्धान्तों के अनुसार राजतत्त्वों को श्रेणियों में विभक्त करते हैं? पेश्वाई राज तथा मुग़ल साम्राज्य को आप किन श्रेणियों में रक्खेंगे और क्यों?

३—स्वाधीनता (liberty) शब्द किन किन अर्थों में प्रयोग में आता है। राजनीति की दृष्टि से इसका सब से अच्छा अर्थ क्या है। भारतवर्ष में मुसलमानों के समय में और आधुनिक समय में इस अर्थ के अनुसार स्वाधीनता की मात्रा में कितना अन्तर है। क्या यह आवश्यक है कि जहाँ एकाधिपत्य हो (despotism) वहाँ स्वाधीनता न हो?

४—राज्यों (state) के विकास (evolution) का वर्णन कीजिए।

५—पैतृक समाज (patriarchal society) की सविस्तार व्याख्या कीजिये।

६—व्यवस्था (legislation) का राज्य (state) से क्या सम्बन्ध है ? इस सम्बन्ध का इतिहास संक्षेप रीति से लिखिये। भारतवर्ष में क्यों हिन्दू तथा मुसलमानी राज्य में व्यवस्थापन की कमी थी ?

७—राज्य (state) के कौन कौन से उपकरण (functions) होते हैं ? ग्रेट ब्रिटेन के राज्य में किस प्रकार इन उपकरणों का विधान होता है ?

८—राज्यों के संहतन (federation of states) के क्या क्या रूप हैं और उनमें क्या भेद हैं। जर्मन साम्राज्य की शासन-पद्धति का वर्णन लिखिये। बताइये कि इस साम्राज्य की गणना किस रूप की संहति (federation) में हो सकती है।

९—समाज तंत्र (socialism) की व्याख्या कीजिये। इसके विविध रूप लिखिये। और समाज तंत्र के सिद्धान्तों को भली भाँति समझाइये।

१०—आधुनिक यूरोपीय महायुद्ध का समाज तंत्र के भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा। युक्तियों से अपने सिद्धान्त का समर्थन कीजिए।

११—हाब्ज़ (Hobbes), लाक तथा रूसो (rousseau) के स्वाम्य (sovereignty) तथा नैसर्गिक स्थिति (national state) सम्बन्धी मतों के भेद तथा सादृश्य दिखलाईये।

—:o:—

इङ्गलैंड की पार्लमेंट का इतिहास

(परीक्षक—प्रोफ़ेसर श्री प्रकाश, एम० ए०)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

कुल छः प्रश्नों का उत्तर दीजिये। प्रथम प्रश्न और बाक़ी प्रश्नों के प्रत्येक विभाग से कम से कम एक प्रश्न का उत्तर आवश्यक है।

१—निम्न लिखित वाक्यों में से तीन पर टिप्पणी लिखिये—

(क) न्यायाधीश अथवा अन्य योग्य अधिकारी के आज्ञा बिना कोई भी किसी प्रकार से दण्डभागी न होगा।

—अधिकार प्रार्थनापत्र १६२८ (petition of rights)

(ख) तुम लोगों का मुझ पर अभियोग चलाने का कोई अधिकार नहीं है। तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर हम नहीं देंगे।

—पार्लमेंट से स्थापित न्यायालय के सम्मुख प्रथम चार्ल्स के वचन १६४९.

(ग) रोमन कैथोलिक धर्म के अनुयायी आंगलदेश के राज्य-सिंहासन पर नहीं बैठ सकते।

—अधिकारों का मसविदा १६८९ (bill of rights)

(घ) कोई राज्य कर्मचारी कामन्स सभा (house of commons) का सभासद नहीं हो सकता।

—आक्ट आफ सेट्लमेंट १७०१ (act of settlement)

(ङ) आपके प्रतिनिधि जो कामन्स सभा (house of commons) में जाते हैं उनका कर्तव्य है कि आप की सम्मति का विरोध करते हुवे भी अपनी बुद्धि के अनुसार कार्य करें,

और यदि ये ऐसा न करें तो वे आप की यथाथ सेवा नहीं करते।

—ब्रिस्टल नगर के प्रतिनिधि चुनने वालों के सम्मुख एडमन्ड बर्क का व्याख्यान।

प्रथम विभाग

(इसमें से कम से कम एक प्रश्न का उत्तर आवश्यक है)

२—आंगल देश में नार्मन लोगों के आने से क्या क्या राजनैतिक परिवर्तन हुवे, उनका सारांश लिखिये।

३—माग्ना कार्टा १२१५ (magna charta) क्या वस्तु है। किस राजनैतिक दशा में राजा जोन (John) इस पर "हस्ताक्षर" करने के लिए वाध्य हुवा और इसका ऐतिहासिक महत्त्व क्या है।

४—प्रथम एडवर्ड के आदर्श पार्लमेंट १२६५ (model parliament) की विशेषता क्या थी। इसमें और साइमन डी मंटफर्ट (Simon de Montfort) के आदर्श पार्लमेंट १२६५ में क्या अन्तर था। किन किन कारणों से राजा ने इसे निमन्त्रित किया था।

५—आंगलदेश की शासन प्रणाली पर रोज़ेज़ के युद्ध (wars of the roses) १४५५-१४८५ का क्या प्रभाव पड़ा।

द्वितीय विभाग

(इसमें से कम से कम एक प्रश्न का उत्तर आवश्यक है)

६—रेफ़र्मेशन पार्लमेंट १५२६, १५३६ (reformation parliament) की विशेषता वतलाइये। पार्लमेंट के इतिहास में इसे क्या स्थान मिलना चाहिये।

७—आंगलदेश में धर्मसुधार (reformation) का संक्षिप्त इतिहास लिखिये और इसका प्रभाव राज्य प्रणाली पर क्या पड़ा उसका उल्लेख कीजिये।

८—किन किन अधिकारों के लिए १७वीं शताब्दी में राजा वा पार्ल-

मेंट में विरोध हुवा, मुख्य मुख्य घटनायें क्या हुवीं और अन्त में इसका परिणाम क्या हुवा।

तृतीय विभाग

(इसमें से कम से कम एक प्रश्न का उत्तर आवश्यक है)

९—प्रधान सचिव (prime minister) के पद की स्थापना किस प्रकार हुवी। प्रधान सचिव (prime minister) मन्त्री मण्डल (cabinet), और पार्लमेंट में आपस का क्या सम्बन्ध है इसे भली भांति लिखिये।

१०—आंगलदेश में शासन (executive), व्यवस्थापन (legislative) और न्यायानुशासन (judicial) की शक्तियों का आपस में क्या सम्बन्ध है और इस सम्बन्ध से किस प्रकार की स्वतन्त्रता की रक्षा होती है।

११—इस समय लार्ड्ज़ सभा (house of lords) और कामन्स सभा (house of commons) के क्या क्या अधिकार हैं और इनमें से कौन प्रबल है और कैसे उसके स्वत्वों की रक्षा होती है।

१२—आंगल शासन प्रणाली की विशेषतायें लिखिये और अन्य देशों की शासन प्रणालियों से इसकी तुलना कीजिये।

—:०:—

भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास

(परीक्षक—श्री० नरेन्द्रदेव, एम० ए०)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

नोटः—केवल ६ प्रश्न परीक्षार्थियों को करना होगा। इनमें वे प्रश्न जिनके आगे + चिह्न है सम्मिलित रहेंगे। (३) तथा (४) से एक एक प्रश्न परीक्षार्थियों को अवश्य करना होगा।

(१)

+१-(क) भारतवर्ष का मानचित्र खींचिये और उसमें उन

स्थानों को दिखाइये जहाँ अशोक महाराज के लेख पाए गए हैं। ८

(ख) इन लेखों की भाषा तथा लिपि के सम्बन्ध में एक छोटा सा नोट लिखिये। २

२—(अ) अशोक के "धम्म" की पूर्ण रीति से व्याख्या कीजिये। १

(क) अशोक महाराज के धार्मिक मत के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कीजिये और उनकी पुष्टि में प्रमाण दीजिये। २

३—"देवानं पिय पियदसि" के लेख किन कारणों से अशोक महाराज के कहे जाते हैं?

इसका कोई सुदृढ़ प्रमाण भी हाल में मिला है? यदि है तो उसको लिखिये। ८

(२)

४—चाणक्य के अर्थशास्त्र से भारतीय शासन-पद्धति तथा सामाजिक और आर्थिक दशा का जो चित्र मिलता है उस पर एक छोटा सा निबन्ध लिखिये। ८

+५-समुद्र गुप्त के राजत्वकाल का इतिहास लिखिये। इस समय के इतिहास के साधन भी बताइये। ८

+६-तक्षशिला, पाटलिपुत्र, सांची, मिहरौली का लौह स्तूप, रुद्रदामन् का गिरनार लेख, खारवेल महाराज का (हाथीगुंफा) लेख, पहलव, लिच्छवि, विक्रम संवत् और अजन्ता के चित्रः—

इन पर छोटे छोटे नोट लिखिये। ८

७—राजपूतों के प्रभाव के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का क्या मत है? इस मत के समर्थन में क्या क्या प्रमाण दिये जाते हैं? आप अपना विचार भी युक्ति पूर्वक प्रकट कीजिये। ८

(३)

८—ईसा से पूर्व ६ ठी शताब्दी में उत्तर भारत की आर्थिक दशा क्या थी ? ८

८—(१) ब्राह्मी लिपि के प्रभव के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न विद्वानों का क्या मत है ? आपको कौन सा मत ग्राह्य है और क्यों ? ७

(२) प्राचीन काल में भारतवर्ष में लिखने की क्या सामग्री थी ? १

(४)

१०-बौद्ध संघ की जो 'संगीति' कनिष्क महाराज के समय में हुई थी उसका संक्षेप में वृत्तान्त लिखिये। कनिष्क का राजत्वकाल क्या है और बौद्ध धर्म से उनका क्या सम्बन्ध है ? ८

११-भारतवर्ष में बौद्धधर्म के ह्रास के कारण क्या हैं ? ८

१२-त्रिपिटक, पाली, धम्मपद, जातक, अट्ठंगिकमग्ग, त्रिरत्न, महायान, हीनयान, और बोधिसत्व

इनका संक्षिप्त विवरण दीजिये।

—:o:—

यूरोपीय इतिहास-वर्त्तमान काल

(परीक्षक—प्रोफ़ेसर ताराचन्द, एम० ए०)

समय ३ घण्टे

केवल ५ प्रश्न करने चाहियें। पूर्णाङ्क १००

१—यूरोपीय पुनरुज्जीवन (renaissance) की व्याख्या कीजिये और बतलाइये कि इसके मुख्य कारण क्या थे।

२—धर्म संशोधन (reformation) के पहले जर्मनी की आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा समाजिक दशा क्या थी ?

बतलाइये धर्म संशोधन की क्यों प्रबल आवश्यकता थी ?

३—रोमन कैथलिक विपक्ष संशोधन (counter reformation) के साधनों का वर्णन कीजिये और उसकी सफलता के कारणों को समझाइये।

४—तीस वर्षीय युद्ध (thirty years war) का यूरोप के विकास पर क्या प्रभाव पड़ा ? युद्ध के कारणों तथा उसकी गति का वर्णन संक्षेप रूप से कीजिये।

५—रूस के उत्थान का संक्षिप्त इतिहास लिखिये। पीटर ने जिन रीतियों से रूस को यूरोपीय सभ्यता सिखाने का प्रयत्न किया उनकी व्याख्या कीजिये और बताइये कहाँ तक रूस पर इन यत्नों का प्रभाव पड़ा।

६—सप्तवर्षीय युद्ध (seven years war) का पृथ्वी के इतिहास में क्या महत्व है ? और यूरोप के इतिहास में क्या ? युद्ध के परिणाम का संक्षिप्त वर्णन लिखिये।

७—महाविप्लव (revolution) के पहले फ्रांस की क्या दशा थी। फ्रांस की इस दशा से क्या यह ज्ञात होता था कि महाविप्लव होने वाला है ? उन शक्तियों को वर्णन कीजिये जो महाविप्लव को उत्पन्न करने में सहायक हुईं।

८—राष्ट्रीय समिति (national convention) का संक्षिप्त इतिहास लिखिये। समिति के महत्व पर अपने विचार प्रकट कीजिये।

९—नैपोलियन का जीवन चरित साम्राज्य के स्थापन होने तक का लिखिये। महाविप्लव के १५ ही वर्ष पीछे एकाधिपत्य (autocratic rule) के पुनरुत्थान के कारणों पर विचार प्रकट कीजिये।

१०—नैपोलीयनीय युद्ध वास्तव में एंगल फ्रांसीय संघर्ष का अन्तिम दृश्य है। इस वाक्य की टिप्पणी कीजिये और उन कारणों को बताइये जिनसे फ्रांस की पराजय हुई।

११—जर्मनी में ऐक्य स्थापन का संक्षिप्त इतिहास लिखिये। वर्त्तमान जर्मन साम्राज्य के राजकीय सङ्गठन (constitution) का वर्णन कीजिये।

१२—प्रजातंत्र के संस्थापन के लिए जो आन्दोलन यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ है उसका संक्षिप्त इतिहास लिखिये।

१३—यूरोपीय राष्ट्रों के उपनिवेशों के फैलने से जो राजकीय प्रश्न उत्पन्न हुए हैं उनको भली भाँति समझाइये। वर्त्तमान युद्ध से पहिले यूरोपीय राष्ट्रों के उपनिवेश कहाँ कहाँ थे?

१४—१५ वीं शताब्दी के साहित्य सम्बन्धी पुनरुज्जीवन (revival of letters) और १६ वीं शताब्दी के वैज्ञानिक खोज की तुलना कीजिये। विज्ञान के महत्व पर विचार प्रकट कीजिये।

—:o:—

भारतवर्ष का अर्वाचीन इतिहास

(परीक्षक—पं० हरिमङ्गल मिश्र, एम. ए.)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

(प्रत्येक प्रश्न के साम्हने उसके पूर्णाङ्क लिखे हैं)

(१) खीष्टीय १५ वीं शताब्दी में पुर्तगाल के निवासियों का भारत से जो सम्बन्ध रहा हो संक्षेप से वर्णन कीजिये। इस विषय में हिन्दी भाषा की सब से अच्छी पुस्तक का नाम लिखिये।

(२) औरङ्गज़ेब की मृत्यु के पीछे मुग़ल राज्य के अधःपात और अङ्गरेज़ी ईष्ट इण्डिया कम्पनी की क्रमशः उन्नति का वर्णन संक्षेप रीति से लिखिये।

(३) माधवराव सिन्धिया की बुद्धिमत्ता और पराक्रम के वर्णन समेत उसके सिद्धान्तों को दिखलाइये।

(४) लार्ड क्लाइव और गवर्नर डूप्ले के कृत्यों का वर्णन लिखके उनकी योग्यताओं में भेद निकाल के क्लाइव की सफलता के कारणों की सूची बनाइये।

(५) "अङ्गरेज़ों को विवश होके भारतवर्ष विजय करना पड़ा", उक्त सिद्धान्त के अनुसार उनकी भारत के साथ सच्ची सहानुभूति और हितैषिता सिद्ध कीजिये।

(६) सिद्ध कीजिये कि अङ्गरेज़ों ने भारत को मुसलमानों से नहीं किन्तु हिन्दुओं ही से विजय किया।

(७) चेतसिंह और अवध की बेगमों के बारे में हेस्टिङ्ग्ज़ की कार्यवाहियों पर अपनी युक्ति पूर्ण सम्मति लिखिये।

(८) 'ब्रिटिश साम्राज्य' के समान शासन पूर्व में भारतवासियों ने देखा सुना नहीं था। उक्त वाक्य को सत्य सिद्ध कीजिये और प्राचीन रामराज्य से इसकी तुलना कीजिये।

(९) भारतवर्ष के तीन सच्चे हितैषियों का नाम लिख के उनकी संक्षिप्त जीवनी और कार्यवाहियाँ वर्णन कीजिये।

(१०) लार्ड डलहौसी का सिद्धान्त था कि शासक प्रजा की भलाई के लिए है। वे अपने सिद्धान्त को पूर्ण करने में कहाँ तक सफल हुए?

—:o:—

निबन्ध

(परीक्षक—प्रोफ़ेसर ताराचन्द, एम० ए०)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिये। निबन्ध चाहे बड़ा न हो किन्तु विचार गम्भीर तथा भाषा सुन्दर हो।

१—राज्य (state) के विकास में भूगोलिक (geographical) शक्तियों का प्रभाव।

२—संसार के संहतन (federation of the world) की संभाव्यता।

३—यूरोप में प्रजा तंत्र का भविष्य।

४—भारतवर्ष में राष्ट्रीयता की बाधक तथा पोषक शक्तियाँ और राष्ट्रीयता का भविष्य।

५—आधुनिक भारतवर्ष में समाज-तांत्रिक (socia listic) संस्थाओं का वर्णन।

—:o:—

हिन्दी साहित्य

बङ्गला

(परीक्षक—श्री० पं० माधवराम झा)

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क—१००

लिखे हुए पद्यों का सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

(अ) जगत पारावारेर तीरे
छेलेरा करे मेला
अन्त हीन गगनतल
माथार पर अचञ्चल
फेनिल उई सुनील जल
नाचिछे सारा बेला
उठिछे तटे की कोलाहल
छेलेरा करे मेला

(क) नाम रेखेछि बावला रानी
एक रत्ति मेये।
हासि खुसि चांदेर आलो
मुखटि आछे छेये।
फुटफुटे तार दांत क' खानि
पुट पुटे तार ठोंट।
मुखेर मध्ये कथा गुलि सब
उलोट पालोट।
छोटबधु एके दिल फोंटा
बिंदु शोभित ललाटे
आहा! तारा तव कथा
[illegible] [illegible]!

मकार के होते ह उनके नाम

(३) नीचे लिखे हुए गद्य का हिन्दी में अनुवाद

भवानी ठाकुरेर अभिसन्धि याहाइ हउक ताहार शाणित अस्त्रेर प्रयोजन छिल। ताइ प्रफुल्ल के धरिया शान दिया तीक्ष्णधार अस्त्र करिया तबे भवानी ठाकुरेर एकटा बड भूल हइया एकादशीर दिन जोर करिया माछ खाइत, एकटू तलाइया बुझिते भाल हइत।

(४) तीसरे प्रश्न में प्रफुल्ल के मछली खाने से और सम्बन्ध है? भवानी ठाकुर ने क्या भूल की

(५) "राजत्व स्त्रीजातिर धर्म नय। कठिन धर्म एइ इहार अपेक्षा कोन योगइ कठिन नय।"

बङ्किम बाबू ने स्त्रियों के लिये योग से भी कठिन बतलाया है आप उनके मत से कहां तक लिखिये।

(६) नीचे लिखे वाक्यों का बङ्गला में अनुवाद कीजिये

रघु के वंश में राजा हरिश्चन्द्र बड़ा धर्मात्मा था। जब वशिष्ठ जी ने विश्वामित्र से इसके दान और प्रशंसा की तब उन्होंने उससे सम्पूर्ण राज्य का मांगा। हरिश्चन्द्र ने बिना किसी हिचक के अपना दान दे दिया।

प्रश्नपत्र

प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा

१९७५

प्रकाशक
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

पं० सुदर्शनाचार्य्य बी. ए. के प्रबन्धसे प्रयागके सुदर्शन प्रेसमें छपी और प्रयागस्थ साहित्य-सम्मेलन-कार्यालयसे प्रकाशित हुई।

प्रथमा परीक्षा १९७५

साहित्य १

[परीक्षक—पं० रामनरेश त्रिपाठी]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. नीचे लिखे पद्यों का अर्थ लिखिये ।

(क) जिस राज्य के हित शत्रुओं से युद्ध है यह हो रहा ।
उस राज्य को अब इस भुवन में कौन भोगेगा अहा ! ॥

इस पद्य में ऐसा कौन शब्द है जिससे शिथिलता प्रकट होती है ।

(ख) इस के अनन्तर मुदित माधव कम्बुरव करने लगे ।
प्रण के विषय में पाँडवों का सोच सा हरने लगे ॥
प्रिय पाञ्चजन्य करस्थ हो मुख लग्न यों शोभित हुआ ।
कलहंस मानो कंजवन में आ गया लोभित हुआ ॥

इस पद्य में कौन अलंकार है ? "कंज" के साथ "वन" शब्द देने का क्या अभिप्राय है ?

(ग) जिस ओर सेना थी गजों की पर्वतों के सम अड़ी ।
उस ओर ही रथ ले गये हरि शीघ्रता करके बड़ी ॥
तब पार्थ बाणों से मत्तगज यों पतन पाने लगे ।
घन रविकरों से विद्ध मानो भूमि पर आने लगे ॥

इस में कौन कौन से अलंकार हैं ? लक्षण सहित लिखिये ?

(घ) नास्तिक मनुज भी विपद में करते विनय भगवान से ।
देते दुहाई धर्म की त्यों आज तुम भी ज्ञान से ॥
लज्जा नहीं आती तुम्हें उपदेश देते धर्म का ।
आती हँसी तुम पापियों से नाम सुन सत्कर्म का ॥

यह किसने किस से कहा ? इसके पहले की कथा संक्षेप से लिखिये । यह कौन छन्द है ? लक्षण सहित बतलाइए ।

२. महाराणा प्रताप को प्राण त्याग के समय किस बात का अधिक कष्ट था और वह कैसे दूर हुआ ?

३. नीचे लिखी चौपाइयों का अर्थ लिखिये—

कपट कुचाल सींव सुरराजू, पर अकाज प्रिय आपन काजू॥
काक समान पाकरिपु रीती, छली मलीन कबहुँ न प्रतीती।
राग रोष इरिषा मद मोहू, जनि सपनेहुँ इनके बस होहू॥
सकल प्रकार बिकार बिहाई, मन क्रम बचन करेहु सेवकाई।
तुम्ह कहँ बन सब भाँति सुपासू, सँग पितु मातु राम सिय जासू॥
जेहि न राम बन लहहिं कलेसू, सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू।

अंत वाली चार चौपाइयाँ किसने, किससे किस अवसर पर कही हैं।

४. नीचे लिखी चौपाइयों में कौन कौन से अलंकार हैं—

१–व्याकुल राउ सिथिल सब गाता, करिनि कलपतरु मनहुँ निपाता
२–दुइ कि होइ इक समय भुआला, हँसब ठठाइ फुलाउब गाला।
३–चारु चरन नख लेखति धरनी, नूपुर मुखर मधुर कबि बरनी।
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं, हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं॥

५. अयोध्या-काण्ड में भरत का चरित्र जितना वर्णित है वह लिखिये और यह भी लिखिये कि भरत में कौन कौन से सद्‌गुण थे, प्रत्येक का उदाहरण दीजिए।

६. नीचे लिखे छंद का अर्थ लिखिये।

कूरम कमल कमधुज है कदम फूल
गौर है गुलाब राना केतकी बिराज है।
पाँड़री पँवार जूही सोहत है चंदावत
सरस बुंदेला सो चमेली साजबाज है।
भूषन भनत मुचकुन्द बड़गूजर है
बघेले बसंत सब कुसुम समाज है।
लेइ रस एतेन को बैठि न सकत अहै
अलि नवरंगजेब चंपा सिवराज है॥

इसमें कौन सा अलंकार है ? "चंपा सिवराज है" कह कर कवि ने क्या विशेषता प्रकट की ? "राना केतकी बिराज है" में

क्या कवि का कोई विशेष आंतरिक भाव झलकता है? और वह क्या? ऊपर के छंद का नाम और लक्षण लिखिये।

७. सर्व साधारण लोग गद्य से पद्य को अधिक पसंद क्यों करते हैं?

८. पद्य रचना के लिए खड़ी बोली से ब्रज भाषा में कौन कौन सी विशेषताएँ हैं?

९. दोहा, चौपाई, कवित्त, छप्पय, सवैया के लक्षण लिखिए और ऐसे उदाहरण देकर जो इस प्रश्नपत्र में न आए हों स्पष्ट कीजिए।

साहित्य २

[परीक्षक—पं० कृष्णशंकर तिवारी, बी. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. नर की अरु नलनीर की, गति एकै कर जोय।
जेतो नीचो ह्वै चले, तेतो ऊँचो होय।

ऊपर लिखे हुए दोहे का आशय बताइये और दृष्टान्त में सेठ हीराचन्द्र के सद्गुणों का वर्णन कीजिये। १०

२. न केवल विद्या ही के कारण इनकी सब कोई प्रशंसा करते थे, किन्तु अनेक असाधारण लोकोत्तर गुणों से भी शान्ति और क्षमा के यह आधार थे।

(क) यह वाक्य किस विद्वान के लिए कहा गया है और विद्या के अतिरिक्त उनके कौन से असाधारण गुण थे। ८

(ख) ऊपर के वाक्य में "इनकी" और "गुणों से" इन शब्दों के कारक बताइये और यह भी लिखिये कि प्रत्येक पद में वह कारक किस अर्थ में आया है। ३

(ग) उपरोक्त वाक्य की पूर्ति इस प्रकार होती है, "शान्ति और क्षमा के यह आधार थे" यहाँ कर्ता और क्रिया के वचन भिन्न भिन्न क्यों रक्खे गये हैं। २

३. नीचे लिखे वाक्यों का आशय सरल भाषा में समझाइये—

(क) शनैः शनैः उदयाचल के बालमन्दार के फूलों का गुच्छा सा, अथवा पूर्व दिगङ्गना के लिलार का रोली का लाल बुँदा सा, या उसी के कान का कुण्डल सा, या आसमान गुम्बज़ पर सोने का कलश सा, अथवा देवाङ्गनाओं के मस्तक का सीसफूल सा, अथवा चराचर विश्वमात्र को निगल जाने वाले काल महासर्प का अंडा सा, कमल के वन को प्रफुल्लित करता हुआ, चक्रवाक के विरहाग्नि को बुझाता हुआ, जंगम जगत मात्र के नेत्र को प्रकाश पहुँचाता हुआ, श्रोत्रिय धर्मशील ब्राह्मणों को सन्ध्या और अग्निहोत्र आदि कर्म मेँ प्रवृत्त करता हुआ सूर्य का मण्डल पूर्व दिशा में सुशोभित होने लगा। ८

(ख) एक तो अत्यन्त दण्डायमान दिन उसमें ललाटन्तप चण्डांशु के प्रचण्ड आतप के ताप से सन्तप्त शीतलच्छाया का सहारा किये हुए यह जंगम जगत भी स्थिर भाव धारण कर मौन अवस्था से दुःखदायी ग्रीष्म के उच्चाटन का मानो मन्त्र सा जप रहा है। ६

(ग) देवता दैत्य एक ही हैं, निस्सन्देह, स्वभाव करके वे दैत्य कहलाये, वे देवता कहलाये। इसमें अपनी ही खोट है कि अहंकार करके और अपने पराक्रम के गर्व से नारायण आश्रित नहीं हैं, स्वाधीन हैं। और देवता आर्तवन्त हैं, कष्ट पाय कर नारायण की शरण जाते हैं। श्री महाराज को अपने बाने की लाज से उनकी सहाय करनी होती है। ६

(घ) न्यायपरता यद्यपि सब वृत्तियों को समान रखने वाली है, परन्तु इसकी अधिकता से भी मनुष्य के स्वभाव में मिलन-सारी नहीं रहती, क्षमा नहीं रहती। ५

४ (क) प्रश्न ३ "ख" के वाक्य में "जप रहा है" इस क्रिया का कर्ता और कर्म बताइये, और इस वाक्य में कौन सा अलंकार है? उस अलंकार का लक्षण लिखिये। ५

(ख) शीतलच्छाया, तेजोमय, निस्तार, प्राङ्मुख— इनके प्रत्येक शब्द की सन्धि का नियम लिखिये। ४

(ग) चतुर्भुज, अन्नजल, चन्द्रमुख, निर्भय, कालचक्र, लुप्तलोचन, स्वार्थचित्त, इन पदों में जो समास हैं, उनके नाम लिखिये। ७

५ (क) कहा जा सकता है कि हिन्दी नहीं थी, बाबू हरिश्चन्द्र ने उसे पैदा किया। यदि होती, तो राजा शिवप्रसाद नागरी अक्षरों के बड़े प्रेमी होकर उर्दू में क्यों उलझे रहते।

राजा शिवप्रसाद का हिन्दी के विषय में क्या मत था और यदि यह माना जाय कि उक्त महोदय हिन्दी के सेवक और नागरी अक्षरों के प्रचार के पक्ष में थे, तो यह किस प्रकार सिद्ध होगा कि "हिन्दी नहीं थी, बाबू हरिश्चन्द्र ने उसे पैदा किया।" १०

(ख) कहाँ कहाँ के चौपट चरन इकट्ठे भये हन, अस मन ह्वात है कि इन हरामखोरन का आपन बस चलत तो कालापानी पठै देतन।

इसका व्याकरण के अनुसार शुद्ध भाषा में अनुवाद कीजिये और यह लिखिये कि यह किसने किस स्थान पर किन के सम्बन्ध में कहा है। ६

६ (क) निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ लिखियेः—

स्वर्ग में रह कर कोई स्वर्ग का आदर ठीक नहीं करता।

कहाँ झगड़ा पिजावे का निकाला बाग़ का काग़ज़।

समाचार पत्र राज्य का प्रधान मन्त्री और मध्यस्थ होता है, वाणिज्य का तो जीवनस्वरूप है।

कालचक्र की गति सदा एक सी रहे तो वह चक्र क्यों कहा जाय। ६

(ख) नीचे लिखे पदों का उपयोग अपने बनाये वाक्यों में कीजियेः—

फूंक फूंक कर पाँव रखना, बाल बांकना, सठिया जाना, दांत खट्टे करना, खुत्तुर करना, कपोल कल्पना, माथे थोपना, हाँथ पर हाँथ धरे। ८

७ "वाक्य विन्यास" किसे कहते हैं ? शब्दों के क्रम तथा प्रत्येक वाक्य के उच्चारण में स्वर भेद से नीचे लिखे वाक्यों के अर्थ होते हैं ? :—

(१) वह क्या करता है ? (२) क्या ! वह करता है ? (३) वह करता है क्या ? ६

साहित्य ३

[परीक्षक—पं रामजीलाल शर्मा]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

नीचे लिखे विषयों में से किसी एक विषय पर एक ऐसा निबन्ध लिखिए जो ८० पंक्तियों से कम न हो और १०० से अधिक न हो।

१—वर्षा वर्णन।
२—दसहरे के मेले का वर्णन।
३—रेल में यात्रा।
४—व्यायाम से लाभ।
५—अतिथि सत्कार।

इतिहास

[परीक्षक—श्री वृन्दावनलाल वर्मा, बी. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[८ प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए। १२ वाँ प्रश्न आवश्यक है]

१. महाराज हर्ष के राजत्व काल का संक्षिप्त इतिहास लिखिये।
२. मुसलमानों के आने से पहले भारतवर्ष की राजनैतिक दशा का वर्णन कीजिए।
३. दास वंश द्वारा भारतवर्ष पर कहाँ तक मुसलमानों का राज्य स्थापित हुआ। मानचित्र खींच कर दिखलाइये।
४. निम्न लिखित पुरुषों की संक्षिप्त जीवनियाँ लिखिये:—
रामानन्द, चैतन्य, फ़ीरोज़ तुग़लक़, टोडरमल्ल, अलाउद्दीन, गंगू हसन बाहमनी।

५. अकबर बादशाह का हिन्दुओं के साथ कैसा बर्ताव था ? कारण सहित लिखिए।
६. पहले तीन मरहट्टे पेशवाओं का इतिहास लिखिए।
७. अङ्गरेजों और फ्रांसीसियों में जो लड़ाइयाँ हुईं उनके कारण और परिणाम लिखिए।
८. बंगाल में दवामी बन्दोबस्त के स्थापित करने के कौन कौन से कारण थे।
दवामी बन्दोबस्त के लाभ और हानि लिखिए।
९. बम्बई का प्रान्त कब कब और किस प्रकार बृटिश सरकार के हाथ आया।
१०. लार्ड विलियम बेंटिङ्क के शासन काल में जो बातें हुईं उनका वर्णन कीजिए।
११. वाइसरायों के काल में जो जो लड़ाइयाँ बृटिश सरकार को लड़नी पड़ीं उनका संक्षिप्त वृत्तान्त लिखिए।
१२. भारतवर्ष का मानचित्र खींचिए और दिखलाइये कि सम्वत् १८५६(सन् १८००)में कितना भारतवर्ष अङ्गरेजों के आधीन था।

भूगोल

[परीक्षक—श्री नन्दराम, बी. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

नोटः—केवल ८ प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल जायंगे। सब प्रश्नों में बराबर अङ्क हैं। परन्तु ७ और १२ प्रश्नों में से एक का उत्तर अवश्य देना चाहिये।

१. (अ) पृथ्वी का आकार कैसा है ? प्रमाण सहित बतलाइए।
(इ) किन परीक्षाओं से सिद्ध किया गया है कि पृथ्वी ही सूर्य्य के चारों ओर घूमती है ?

२. (अ) ज्वार भाटा किसे कहते हैं ? उसके होने के कारण लिखिए। ज्वार भाटा कब अति प्रबल होता है, और क्यों ?
(इ) तरङ्ग और धारा में क्या भेद है ?

३. (अ) वायु में किन किन कारणों से गति उत्पन्न होती है ?
(इ) मौसमी वायु किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद हैं ? ये कब, किस ओर, और क्यों चला करती है ?

४. (अ) शीतोष्ण के विचार से पृथ्वी तल के कितने और कौन से विभाग किये गए हैं।
(इ) किसी देश का जल वायु जानने के लिये किन किन बातों पर विचार करना चाहिये ?

५. (अ) यूनाइटेड स्टेट्स (अमरीका) के राज्य प्रबन्ध की यूनाइटेड किंगडम (इंग्लैंड) के राज्य प्रबन्ध से तुलना कीजिए ?
(इ) यूनाइटेड किंगडम की ऐसी विशाल उन्नति संसार में किन किन कारणों से हुई ?

६. किस किस महाद्वीप में कौन कौन स्थान बृटिश राज्य के अधीन हैं, एक तालिका बना कर लिखिए।

७. दक्षिणी अमरीका का मानचित्र खींचिए और उस पर वहाँ के देश, प्रसिद्ध नदियाँ तथा पहाड़ दिखलाइए।

८. बृटिश भारत की शासन प्रणाली वृत्तान्त विस्तार पूर्वक तथा स्पष्ट रूप से लिखिए।

९. भारतवर्ष में (१) कपड़े बनाने के कारख़ाने कहाँ कहाँ अधिक हैं ?
(२) लोहे का सब से बड़ा कारख़ाना कहाँ और किसका है ?
(३) चाय, रुई, रेशम, चावल कहाँ कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

१०. (अ) भारतवर्ष में सिंचाई का कार्य्य किन प्रयोगों द्वारा होता है ?
(इ) किन प्रान्तों में नहरें अधिक बनाई गई हैं ? उनसे क्या लाभ हुए हैं ? नहरों के सम्बन्ध में जो जानते हों सविस्तार लिखिए।

११. निम्न लिखित क्या हैं और कहाँ हैं ?
निउसाउथ वेल्स, आमेज़ान, वाशिंगटन, सहारा, एथिन्स, टेम्स, पेरीनीज़, शीराज़, बेकाल और लीना।

१२. भारतवर्ष का मानचित्र खींच कर उस पर अमृतसर, आगरा, ढाका, पूना, मैसूर, पांडिचरी, गोदावरी, सतपुरा, साँभर झील, और खंभात की खाड़ी दिखलाइए।

प्रारम्भिक विज्ञान और स्वास्थ्यरक्षा

[परीक्षक—श्री महावीर प्रसाद, बी. एस-सी., एल. टी., विशारद]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

नोट—६ प्रश्नों का उत्तर देने से पूरे अङ्क मिल सकते हैं।

१. "बड़े शीत देशों में समुद्र का पानी ऐसा जम जाता है कि पानी की जगह कोसों बरफ़ का मैदान दीखता है। परन्तु जमता है केवल सतह के ऊपर का पानी, नीचे ४°श का जल बना रहता है।" इसको सिद्ध करने के लिए किस उपकरण की आवश्यकता होगी? प्रयोग का वर्णन ब्योरेवार कीजिए।

२. गर्मी की ऋतु में प्रचण्ड सूर्य से तपी हुई सड़क को ठंडी करने के लिए पानी छिड़का जाता है। ऐसा करने से गरमी किस प्रकार निकल जाती है? उत्तर समझा कर लिखिए।

३. आपेक्षिक ताप किसे कहते हैं? ७५ तोला लोहा ९०°श तक गरम करके ६० तोले पानी में डुबाया गया तो पानी का तापक्रम २०°श से २८°श तक चढ़ गया। लोहे का आपेक्षिक ताप क्या है?

४. किसी बड़ी झील के किनारे खड़े होने पर, पूर्वाह्न में हवा किस ओर बहती हुई मालूम होगी और सूर्यास्त के पश्चात् किस ओर? कारण क्या है?

५. (१) किसी प्रयोग का वर्णन करके कैसे सिद्ध कीजिएगा कि पानी में किसी चीज़ के डूबने पर तोल में जो कमी पड़ जाती है वह डूबी हुई चीज़ के आयतन भर पानी की तोल के बराबर होती है?

(२) शीशे की एक डाट तोल में १५'२३ ग्राम है। पानी में तोलने पर वह ९'३६ ग्राम ठहरती है तो शीशे का आपेक्षिक घनत्व और डाट का आयतन बतलाइए।

६. आर्कमीदिस की रीति से किसी द्रव पदार्थ जैसे तेल का आपेक्षिक घनत्व कैसे निकालेंगे ?

७. एक टेढ़ा मेढ़ा ठोस का टुकड़ा दिया जाय तो आप उसका आयतन कैसे निकालेंगे।

८. हवा में कौन कौन मुख्य वस्तुएँ मिली हुई हैं और उनसे हमको क्या हानि वा लाभ पहुंचता है ?

९. नहाने से क्या लाभ होता है ? नहाते समय किन किन बातों का विचार रखना चाहिए ?

१०. घोल, घुलनशील, घुलित, घोलक किसे कहते हैं ? घुली हुई गंदगी से पानी कैसे साफ़ कर सकते हैं ?

११. पदार्थ और वस्तु में, धातु और अधातु में क्या भेद है ? उदाहरण देकर समझाइये ?

१२. "खौलाने से पानी जल जाता है"—यह कथन कहाँ तक ठीक है ? इसमें क्या भूल है ?

१३. ठोस, द्रव, और गैस के लक्षण बतलाइए और उदाहरण दीजिए। कोयला, कपड़ा, तेल, घी और सिरका क्या हैं ? इनकी वैज्ञानिक परीक्षा करते हुए किन बातों की जाँच कीजियेगा ?

१४. द्रव पदार्थों को शोधने के लिए अत्तार जो उपाय करते हैं उसका वर्णन दीजिए और नक़शा खींच कर समझाइए।

गणित

[परीक्षक—पं० लक्ष्मीनारायण नागर, बी. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[सब प्रश्नों में अंक बराबर हैं। ७ प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल सकते हैं]

१. सरल कीजिये—

(क) $$\frac{\left(\frac{१}{२}\right)^{२}+\left(\frac{१}{३}\right)^{३}}{\left(\frac{१}{३}\right)^{२}+\left(\frac{१}{२}\right)^{३}}+\frac{\cdot१२५ \text{ का } ५ \text{ रु० } १० \text{ आ० } ८ \text{ पा०}}{\cdot०३७ \text{ का } ७ \text{ रु० } १२ \text{ आ०}}$$

(ख) $\frac{१}{२} - \frac{१}{२} \div \frac{१}{२}$ का $\frac{१}{४} \div \frac{१}{५} \times \frac{१}{६}$

२. $९ + \cfrac{१}{१ + \cfrac{१}{७ + \cfrac{१}{६}}}$ का वर्गमूल निकालिए और इस वर्गमूल और $३ + \frac{१}{१०}\sqrt{२}$ का अन्तर तीन दशमलव के स्थान तक निकालिए।

३. एक मनुष्य ने एक घोड़ा ५० रुपये पर बेचने से ४ प्रति शत का घाटा उठाया। यदि वह उसी घोड़े को ६०) पर बेंचता तो उसको प्रति सैकड़ा क्या लाभ अथवा हानि होती।

४. एक पैसे वाले समाचार पत्र की १००० प्रतियों का आधा मन बोझ होता है। जब कागज़ पर का महसूल उठ गया तो ५ प्रति सैकड़ा का लाभ और होने लगा। बतलाइये कागज़ पर प्रति मन क्या महसूल देना पड़ता था ?

५. एक तोला सोने का मूल्य एक तोले चाँदी के मूल्य से २० गुना है और एक ही घनफल के सोने और चाँदी की तोलों में १९ : १० का अनुपात है, तो उस चाँदी की सिल का दाम बतलाइये जो उस सोने की सिल के बराबर है जिसका मूल्य ३८० गिन्नी हैं ?

६. एक कुंड में ३ नल क, ख, ग लगे हैं। क और ख उसको क्रम से २० और ३० मिनट में भर सकते हैं और ग उसको १५ मिनट में ख़ाली कर सकता है। यदि क, ख, ग नल क्रमानुसार बारी बारी से एक एक करके एक मिनट खुले रखे जायं तो कुंड कितनी देर में जल से भर जायगा ?

७. किसी धन का ब्याज १२०) है और उसी धन पर उसी समय के लिये उसी ब्याज की दर से १८०) मितीदारा है तो बतलाइये वह धन कितना है ?

८. १०००) पर सूद ५ बरस में २५०) होता है। बतलाइए कि ३५००) पर १ बरस ६ महीने में क्या सूद होगा ?

९. १०० गज़ लम्बी, १२ फुट ऊंची और २॥ फुट चौड़ी दीवाल को १७ आदमी २५ दिन में बना सकते हैं, बतलाइए कि कितने आदमी इससे दोगुनी दीवाल को इससे आधे समय में बना सकेंगे।

१०. १२७ पौंड ८ शिलिङ्ग को २ पुरुष, ३ स्त्रियों और ७ बच्चों में इस ढंग से बांटिए कि हर पुरुष को हर स्त्री से दोगुना और हर बच्चे को हर स्त्री से $\frac{१}{२}$ मिले।

मुनीमी परीक्षा १९७५

बहीखाता

[परीक्षक—श्री गौरीशङ्कर प्रसाद बी. ए., एल-एल.बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[स्वच्छता और स्पष्टता के लिए १० अङ्क हैं]

१. नीचे लिखे शब्दों से आप क्या समझते हैं स्पष्ट लिखिये—
महाजन, व्यापारी, आढ़तिया, पल्लेदार, बया, मुनीम, गुमाश्ता, पसंगा, गिरों वा गिरवीं, हुंडी। १०

२. हुण्डियां कितने प्रकार की होती हैं ? उनके भेद स्पष्ट रूप से उदाहरण के साथ लिखिये—ऊपर वाला, लिखी वाला, रखे वाला, बेंची वाला किसे कहते हैं। १०

३. मिती सावन बदी ५ को रामप्रसाद गणेशदास ने पांच पांच हज़ार रुपये लगा कर साझे में दूकान खोली, उसी दिन भगवानदास का १५५ बोरा गेहूं उनकी आढ़त में आया और उसे १०००) माल पेटे दिया गया। व्याज दर ॥=) सैकड़े और बिल्टी छोड़ा कर माल रख लिया उसका

ख़र्चा जो दिया वह उसके नाम लिखा। भादों सुदी ३ को उसका माल गोपालराम के हाथ दर (≈ के भाव में बेंच दिया। फ़ी बोरा दो मन पन्द्रह सेर की कस्ती थी और ।।।) सैकड़े आढ़त, ।) सैकड़े मुनीबी, =) सैकड़े वयायी,)। सैकड़े धर्मादा इत्यादि ख़र्चा लगा कर और ब्याज भी लगा कर व्यापारी का रुपया चुकता भेज दिया और गोपालराम से दाम मध्ये १२००) नगद पाया।

इन दोनों मितियों का जमा ख़र्च बही की रीति से पूरा पूरा लिखिये और हिसाब का पुर्ज़ा व्यापारियों को लिख भेजिये। २५

४. खाता या खतियौनी किसे कहते हैं ? इसके व्यौहार करने से क्या लाभ तथा इसके न रखने से क्या क्या हानियें हो सकती हैं, उदाहरण देकर बताइये। किस प्रकार के कारबार में लोग इस बही का प्रयोग नहीं करते और किस प्रकार के कामों में इसका रखना अत्यावश्यक है। १०

५. एक छोटी परचून की दूकान में कम से कम कौन कौन सी बहियें आप व्यवहार में रक्खेंगे और उनमें क्या क्या लिखेंगे उदाहरण देकर लिखिये। १०

६. तागपट्टी बही किसे कहते हैं उसमें क़ब और क्या लिखा जाता है और उसमें की लिखी रक़में कहां उठ कर जाती हैं और फिर वहां से कहां या कहां कहां जाती हैं। उदाहरण के साथ लिखिये। १०

७. महाजनी से प्रतिलिपि करने के लिए १५

गणित

[परीक्षक—श्री गौरीशङ्कर प्रसाद, बी. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[स्वच्छता और स्पष्टता के लिए १० अङ्क हैं]

१. नीचे लिखे सरख़त का ब्याज फैला कर ब्याज की संख्या बताइये। ब्याज दर ॥) सैकड़े के हिसाब से जेठ सुदी १५ तक का।

५००) कार्तिक सुदी १ ८००) अगहन बदी ५
११००) अगहन सुदी ६ ४००) अगहन सुदी ११
६००) पूस बदी ३ १५००) पूस बदी ७
५००) पूस सुदी ११ ७००) माघ बदी ५
३००) माघ सुदी १५ ६००) फागुन बदी ११
३५०) चैत बदी ७ ४५०) वैशाख बदी १२

कच्चा अङ्क और पक्का अङ्क में क्या भेद है। १५

२. आपके पास ११०००) रुपया है—नीचे लिखी भिन्न भिन्न रीतियों से इसे लगाने में कितना कितना ब्याज पड़ेगा—

(क) साढ़े तीन टकिया सर्कारी कागज़ दर ६४ के भाव में।

(ख) वारलोन (लड़ाई का कर्ज़ा) पाँच रुपये सैकड़े वाला दर ९४) के भाव।

(ग) वारबांड साढ़े पाँच रुपये सैकड़े वाला दर ९८) के भाव।

(घ) नया वारबांड बराबर में जिसका ब्याज दर ५॥) सैकड़े साल मिलेगा और दस वर्ष में १०५) असल का प्रति सैकड़े मिलेगा।

सबों का दस वर्ष का हिसाब लगा कर बताइये। १५

३. (क) यदि ५१ मिती की मुद्दती हुंडी का भाव दर २) बट्टे में है तो ११ मिती की दर्शनी का क्या भाव पड़ा?

(ख) यदि आप किसी कोठी में ॥) सैकड़े ब्याज पर रुपया जमा करते हैं तब तो छमाही ब्याज मिलता है और यदि उसी हिसाब से १८० मिती की हुंडी दर ३) सैकड़े बट्टे में लेते हैं तो ब्याज पहिले से कट जाता है। बताइये इन दोनों में क्या अन्तर है और कितने सैकड़े का। १५

४. (क) ११४।़५।= चावल दर ़५॥ के बदले में दर ़८।- का गेहूं कितना मिलेगा।

(ख) आपने ५५़ ५़४ मामूली सोना दर २५) तोले के दर खरीदा और उसे छनवा डाला, =) तोला छनवाई का

निथारिये को दिया । उसमें पचास तोला सोना साफ़ दर ३०॥) तोले का और पांच तोले चांदी दर १=) भरी के भाव की निकली तो बताइये इस रोज़गार में कितने सैकड़े का मुनाफ़ा हुआ । १५

५. यदि किसी काम को २५ आदमी आठ घंटा रोज़ काम करके १० दिन में समाप्त कर सकते हैं तो उसी काम को ३० आदमी सात घंटा रोज़ काम करके कितने दिनों में करेंगे । १०

६. यदि एक वर्ग गज़ सड़क बनाने में दो आना व्यय होता है तो एक मील लम्बी और ६ फुट चौड़ी सड़क की बनवाई क्या होगी । १०

७. बारह आने सैकड़े महीना के हिसाब से ५००) का छ छ महीने व्याज असल में जोड़ते जायँ तो पांच वर्ष में कितना हो जायगा । १०

आरायज़नवीसी परीक्षा १९७५

आरायज़नवीसी १

[परीक्षक—पं० लक्ष्मीनारायण नागर, बी. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

१. निम्न लिखित दस्तावेज़ों पर किस हिसाब से स्टाम्प लगेगा—

(१) दत्तक पत्र (२) पंच का फैसला (३) ६१ मिति की ५००) की हुंडी (४) ७५) का क़िबाला नीलाम (५) पट्टा ५) महीने किराये का ६ महीने के लिए (६) पट्टा दवामी अर्थात् हमेशा के लिए (७) साझा पत्र (८) मुख्तार नामा आम जो पाँच आदमी अपनी अपनी तरफ़ से अपने

दूकान के लिए एक आदमी के नाम लिखते हैं (६) हिन्दी साहित्य सम्मेलन के चन्दे की रसीद (१०) दस्त बरदारी (११) भोगबन्धक पत्र। ३०

२. एक ५००) का स्टाम्प ख़राब हो गया है इस का रुपया वापस करने के लिए एक प्रार्थना पत्र लिख दीजिये। १०

३. ५०००) और ५) के रुक्कों पर कितने का स्टाम्प लगेगा (क) जब वह इन्दुलतलब है (ख) जब लिखने के दो महीने बाद रुपया देना पड़ता है। १०

४. निम्न लिखित पर कितनी कोर्ट फीस लगनी चाहिए—
(१) नक़ल दस्तावेज़ (२) डिग्री व तजवीज़ (३) प्रबन्ध (लेटर आफ़ एडमिनिस्ट्रेशन) (४) दरख्वास्त नक़ल (५) नालिश मंसूखी फ़ैसला सालसी। १५

५. ५) मासिक के किराए दर से मालिक मकान किराया वसूल करना और मकान ख़ाली कराना चाहता है। कोर्ट फ़ीस आदि में क्या खर्च होगा बतलाइए १५

६. १६६)के रहन नामे पर इस समय ५७७) बाक़ी हैं। नालिश करने पर कितनी कोर्ट फ़ीस देनी होगी।

७. दिये उर्दू लेख को नागरी अक्षरों में लिखिये— १५

आरायज़नवीसी २

[परीक्षक—पं महेशदत्त शुक्ल बी. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[क्लिष्ट अरबी फ़ारसी शब्दों का प्रयोग उत्तरों में न कीजिए]

१. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची हिन्दी शब्द लिखिए— रहन नामा, तैयुन, चिनाय मुख़ास्मत, तमस्सुक, हिबा नामा, मुद्दई, अर्ज़ीदावा।

२. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा लिखिये—

वैबुल वफ़ा, इस्तग़ासा, इस्म नवीसी, स्याहा, विवादी का वर्णना पत्र, साक्षी, जमाबन्दी ।

३. एक भूमि का सात साल के लिए पट्टा लिख दीजिए ।

४. एक ज़मींदार काश्तकार ग़ैर दख़ीलकार को बेदख़ल करना चाहता है। दरख़्वास्त बेदख़ली अदालत माल के लिए लिख दीजिए।

५. एक माता अपने को अदालत से अपने पुत्र के शरीर तथा सम्पत्ति का अधिवाहक (वली) नियत कराना चाहती है। निवेदन पत्र लिखिये।

६. मुफ़लिसी की नालिश में किन किन बातों की आवश्यकता है। दरख़्वास्त इजाज़त मुफ़लिसी लिखिये। नालिश दाख़िल होने के लिए किसके हाथ में दी जाय।

७. एक स्त्री का पति मर गया है। उसके पति ने लाला धन्ना सेठ की १०००) की हुंडी ६१ मिती की मिती पौ० कृ० ८ सं० १९७२ को मोल ली थी, हुंडी में ब्याज १) सैकड़ा महीनेवारी था। मिति पूरी होने पर हुंडी सकारी गयी किन्तु भुगतान नहीं हुआ। अब स्त्री ब्यौहार लाना (नालिश करना) चाहती है, अर्ज़ी दावा लिख दीजिए।

८. (अ) पटवारी के कौन कौन काग़ज़ होते हैं, उनमें क्या क्या लिखा जाता है।
(इ) ज़मीदारों को कौन कौन काग़ज़ रखने चाहिएं। काश्तकार को ज़मीदार की ओर से रसीद लिखिये। इस पर कितने का टिकट लगेगा।

९. मानहानि का अभियोग लाने के लिए दोषारोपण पत्र (इस्तग़ासा) लिखिये।

मध्यमा परीक्षा १९७५

साहित्य १

[परीक्षक—लाला भगवानदीन]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. नीचे लिखे पद्यों का अर्थ इस प्रकार लिखिये कि रेखांकित शब्दों के अर्थ स्पष्ट हो जाएं— १०

(क) सकल दीप महं जेती रानी। तिन महँ कनक सो बारहबानी।

(ख) राज पाट दर परिगन सब तुम सों उजियार।
बैठि भोग रस मानहु कै न चलउ अँधियार॥

(ग) मनि कुंडल चमकैं अति लोने। जनु कौंधा लउकहिं दुइ कोने।
पहिरे खुंभी सिंहल दीपी। जानहु भरीं कचपची सीपी॥

(घ) बिछुरंता जब भेंटई सो जानै जेहि नेह।
सुक्ख सुहेला उग्गावै दुःख झरै ज्यों मेह॥

(ङ) सिंह तरेंड़ा जिन गहा पार भये तेहि साथ।
ते पै बूड़े बारहि भेड़ पूंछ जिन्ह हाथ॥

२. नीचे लिखे हुए खंडो में से कोई से पांच खंडो का अर्थ लिखिये। १५

(क) बंधन है मन ही को जहाँ अरु संयम में यम को यम नाम है।
दैत्य कथा अघ की सुनिये जहं संग्रह सों अलि राखत काम है।
ढेर विभूतिन के चहुँओर रजोगुणियै अभिराम बिराम है।
आश्रम देखि मुनीश्वर को अति पावन पुन्य कियो परनाम है।

(ख) विश्वात्मा जो परम प्रभु है रूप तो हैं उसी के।
सारे प्राणी सरि गिरि लता वेलियां वृक्ष नाना।
रक्षा पूजा उचित उनका यत्न सन्मान सेवा।
भावों सिक्ता परम प्रभु की भक्ति सर्वोत्तमा है।

(ग) भरोसो जाहि दूसरो सो करो।
मोको तो राम को नाम कलपतरु कलि कल्यान फरो॥
चाटत रहो स्वान पातरि ज्यों कबहुँ न पेट भरो।
सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेखत परसि धरो॥
स्वारथ औ परमारथ हू को नहिँ कुंजरो नरो।
सुनियत सेतु पयोधि पषानन करि कपि कटक तरो॥

(घ) अब ते खबरदार रहु भाई।
सतगुरु दीन्हा माल खजाना राखौ जुगुत लगाई॥
छिमा, सील की अलफी पहिनो जुगुत लँगोट लगाई।
दया की टोपी सिर पर दै के और अधिक बनि आई॥
तन बंदूक सुमति का सिंगरा ज्ञान का गज़ ठहकाई।
सुरत पलीता हरदम सुलगै कस पर राख चढ़ाई॥

(ङ) श्री सरजा सिव तो जस सेत तें होत हैं बैरिन के मुख कारे।
भूषन तेरे अरुन्न प्रताप सपेद लखे कुनबा नृप सारे।
साहितनय तव कोप कृसानु तें बैरि गरे सब पानिपवारे।
एक अचंभव होत बड़ो तिन ओट गहे अरि जात न जारे॥

(च) १—सुनत पथिक मुख माह निस लुवैं चलत वहि ग्राम।
बिन पूछे बिन ही कहे जियत बिचारी बाम॥
२—गनती गनिबे ते रहे छतहू अछत समान।
अब अलि ये तिथि औम लौं परे रहो तन प्रान॥
३—पावक झर ते मेह झर दाहक दुसह बिसेखि।
दहै देह वाके परस याहि दृगन ही देखि॥

(छ) जन के उपजत दुख किन काटत।
जैसे प्रथम असाढ़ के वृन्न खेतिहर निरखि उपाटत॥
जैसे मीन किलकिला दरसत ऐसे रहो प्रभु डाटत।
पुनि पाछे अघ सिंधु बाढ़िहै सूर खार किन पाटत॥

३. प्रश्न १ के खंड (ङ) में और प्रश्न २ के खंड (क), (घ), (ङ) और (च) के तीसरे दोहे में कौन अलंकार हैं? प्रत्येक की परिभाषा (चाहे पद्य में वा गद्य में) लिखिये और एक एक उदाहरण अपनी ओर से दीजिये। २०

(ङ) महापात्र श्री विश्वनाथ कविराज ने भाणिका निरूपण के समय अपने 'साहित्यदर्पण' में इतना ही कहा है कि किसी प्रसंग से किसी कार्य का कीर्तन प्रथम अङ्क में होना चाहिए और इसकी उपन्यास संज्ञा है। ३

(च) जो प्रतिमा हम लोगों के हृदय मन्दिर में विराज जाती है वह वहाँ से हटाए नहीं हटती। जो मूर्ति हम लोगों के हृदय पट पर अंकित हो जाती है वह पाषाण अङ्कित चित्र सी स्थायी रह जाती है। हम लोगों की लगन पारिजात पुष्प नहीं है कि विकसित होते ही धरा-तलशायी हो जाय।

(छ) होत मृगादिक ते बड़े बारन,
बारन बुन्द पहारन हेरे।
सिन्धु में केते पहार परे,
धरती में बिलोकिए सिन्धु घनेरे॥
लोकन में धरती यों किती,
हरि वोदर में बहुलोक बसेरे।
ते हरि, दास, बसे इन में,
सब चाहि बड़े दृग राधिका तेरे॥ ४

२. ऊपर के प्रश्न नं० १ के—

(अ) भाग (क) का सारांश कम से कम शब्दों में लिखिए। ६

(आ) भाग (घ) को प्रसंग से मिला कर लिखिए कि वह किसके विषय में कहा गया है। २

(इ) भाग (च) में कौन, किससे, किस विषय में, कह रहा है? ४

(ई) भाग (छ) का अन्वय करिए और उसके प्रधान अलङ्कार लक्षणों सहित समझा कर बतलाइए। १०

(उ) जिन शब्दों के नीचे आड़ी रेखा खींची है उनका पद परिचय लिखिए। ६

(ऊ) भाग (ङ) में विश्वनाथ कविराज को "महापात्र" करके क्यों लिखा गया है? उससे दृश्य काव्य का निरूपण है अथवा श्रव्य काव्य का? ७

३. प्रायः २५–३० पंक्तियों में "मुद्रा राक्षस" का कथानक लिखिए और उस पर अपनी सम्मति भी प्रकट करिए। १५

४. चिपलूनकर ने गर्व के जो प्रायः निर्दोष उदाहरण अपने "अभिमान" शीर्षक निबन्ध में दिये हैं उनमें से दो को अपनी सम्मति सहित समझाइए। १०

५. नीचे लिखे वाक्यों में वक्ता का जा हार्दिक भाव है उसे स्पष्ट कीजिए और बतलाइये कि क्या मानसिक अवस्था इन वाक्यों से प्रगट होती है। १०

हाँ, मेरा सुख! दुःख मुझे अच्छी तरह पीस डालने के लिए आया था; पर वह मुझे पीस न सका और न आगे ही पीस सकेगा। मैं दुःख को हिंसक जन्तु की तरह बांध कर वश में करूंगी और उससे काम लूंगी। कल्याणी, दुःख ने मेरा बहुत उपकार किया है। इतने दिनों तक मैं सुख के राज्य में रहती थी, दुःख का राज्य मुझे आँधी या कुहासे की तरह दिखाई पड़ता था। अब मैं उसी दुःख के राज्य में वास करने लगी हूं। मैंने शत्रु को जान पहचान लिया है अब वह मुझे कभी असावधान न पावेगा। इतने दिनों तक जीवन अपूर्ण था, अब वह पूर्ण हो गया।

साहित्य ३

[परीक्षक—राय साहब पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी, बी. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लेख लिखियेः—

१. सामाजिक जीवन पर विज्ञान का प्रभाव।
२. प्रजातंत्र।

३. समाज-सेवा।

४. धर्म-शिक्षा राष्ट्र-शिक्षा का अंग।

साहित्य ४

[परीक्षक—पं० शुकदेव बिहारी मिश्र, बी. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. अशोक के समय की लिपि में किस प्रकार के परिवर्तन होने के पश्चात् वह वर्तमान नागरी लिपि की स्थिति को पहुँची है? स्पष्ट रीति से दिखलाइए। १०

२. नाटक और प्रकरण के लक्षण लिखिये और उनके भेद बतलाइये। महानाटक किस नाटक को कहते हैं? ५

३. उद्घात्यक प्रस्तावना का लक्षण और एक उदाहरण दीजिये। ५

४. चारों वृत्तियों के नाम लिखिये। और भटी का लक्षण भी लिखिये ५

५. रसविरोध किसे कहते हैं? इसका प्रयोग नाटक में होना चाहिये या नहीं? कारण लिखिये। ५

६. काव्य के दशों अंगों के नाम लिखिये। इनमें प्रधान तीन कौन हैं? १०

७. हिन्दी के प्रथम मुख्य कवि, गद्यकार तथा नाटक रचयिता महाशयों के नाम लिखिये। इन तीनों के विषय में कुछ समालोचना गर्भित बातें भी कहिये। १५

८. सेनापति, बिहारी, मतिराम, सुखदेव, लल्लू जी लाल और पद्माकर के समय लिखिये और इनमें से प्रत्येक कवि के विषय में प्रायः दस पंक्तियों के समालोचना गर्भित कथन कीजिये। ३०

९. परिवर्त्तनकालिक हिन्दी का कुछ विवरण लिखिये। १०

१० वर्त्तमान हिन्दी का सबसे बड़ा लेखक कौन हो गया है? उसके काव्य सम्बन्धी गुणों का कुछ वर्णन कीजिये। १०

इतिहास १

[परीक्षक—श्री नरेन्द्र देव, एम. ए., एल-एल.बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[प्रश्न ३ और १० अनिवार्य्य हैं। केवल ८ प्रश्नों का उत्तर देना होगा। खण्ड २ से एक प्रश्न करना आवश्यक है। स्पष्टता के लिये ४ अङ्क नियत हैं।]

१

१. बौद्ध धर्म का संक्षिप्त इतिहास लिखिये। बौद्ध धर्म के ह्रास के क्या कारण हैं? ११

२. अशोक की सूचनाओं का संक्षिप्त विवरण लिखिये। ११

३. भारत का मानचित्र खींच कर अशोक के राज्य का विस्तार दिखलाइये और उन स्थानों को निर्दिष्ट कीजिये जहाँ अशोक के शिलालेख पाये गये हैं। १५

४. पुराण का क्या लक्षण है? पौराणिक काल क्या है? आप की सम्मति में सब से प्राचीन पुराण कौन है? ऐतिहासिक दृष्टि से पुराणों का क्या मूल्य है? ११

५. महाराज हर्षवर्द्धन के राजत्वकाल का संक्षिप्त इतिहास लिखिये। ११

२

६. प्राचीनकाल में पाश्चात्य देशों के साथ जो भारत का व्यापार था उसके कौन कौन मार्ग थे? ११

७. मुग़ल साम्राज्य के अधःपतन के क्या कारण हैं? ११

८. सन् १७२० ई० तक मराठा राज्य के उत्थान का वृत्तान्त लिखिये। ११

९. मार्क्विस आफ़ वेलेसली के शासनकाल का विवरण लिखिये। १

१०. गणतन्त्र, ग्रामसंस्था, तक्षशिला, भिलसा के स्तूप, जातक, कार्ली की गुफा, कुसीनगर, सुत्तपितक, वराहमिहिर,

भवभूति, हंस-संघ, आलबुकर्क, शंकराचार्य, इस्तिमरारी बन्दोबस्त, और शिवाजी पर छोटे छोटे नोट लिखिये। १५

३

११. स्थानीय स्वायत्त-शासन की व्याख्या कीजिये। ११

१२. बहुधा कहा जाता है कि भारतवर्ष में नियंत्रित शासन अथवा प्रजातंत्र कभी नहीं रहा है। इस उक्ति की विवेचना कीजिये। उत्तर सप्रमाण होना चाहिये। ११

१३. भारतसचिव की २० अगस्त सन् १९१७ ई० वाली घोषणा क्या है? इससे पहिले इस प्रकार की और कौन कौन सी घोषणाएँ हुई हैं। इनमें भारतवासियों को क्या क्या अभिवचन दिए गए। ११

१४. व्यवस्थापक सभाओं की कब सृष्टि हुई? कब कब और क्या क्या परिवर्तन व्यवस्थापक सभा के संगठन में आज तक हुए हैं? ११

इतिहास २

[परीक्षक—प्रिन्सिपल ताराचन्द एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[कोई छः प्रश्न करने से पूरे अङ्क प्राप्त हो सकते हैं। प्रश्न १ आवश्यक है।]

१. यूरोप का मानचित्र खींचिए और वर्त्तमान युद्ध से पहिले यूरोप की जो राजनैतिक दशा थी उसको दिखलाइए। जिन देश विभागों के कारण युद्ध हो रहा है उनको भी बतलाइए।

२. इतिहास के अध्ययन से क्या क्या लाभ और क्या क्या हानियां हैं।

३. युरोप की जागृति (renaissance) के कारण और उनके परिणाम लिखिये।

४. यूरोप की वर्त्तमान सामाजिक तथा नैतिक परिस्थिति की आलोचना कीजिए।

५. जेम्स प्रथम और चार्ल्स प्रथम से पार्लीमेंट से जो झगड़ा हुआ उसके कारण बतलाइए। इस झगड़े का अन्त किस प्रकार और कब हुआ ?

६. महाराणी विक्टोरिया के राज्यकाल का संक्षिप्त इतिहास लिखिए।

७. लुई चौदहवें के समय में जो सुधार हुए उनका विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।

८. फ्रांस को किस प्रकार तअल्लुक़दारों ने बांट लिया और फिर किस प्रकार फ्रांस के राजाओं ने उसे मिला कर एक बनाया ?

९. फ्रांस के तृतीय प्रजा सत्तात्मक राज्य का संक्षिप्त इतिहास लिखिए।

१०. तीस वर्ष के प्रचण्ड युद्ध के कारण, क्रम तथा परिणाम लिखिए।

११. प्रशिया के अभ्युत्थान का इतिहास फ्रेडरिक महान् की मृत्यु तक लिखिए।

१२. जर्मनी की आधुनिक अवस्था—राजनैतिक आर्थिक तथा सामाजिक—का वर्णन कीजिए।

गणित

[परीक्षक—पं० कमलाकर द्विवेदी, एम.ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[सब प्रश्नों का उत्तर देना आवश्यक नहीं। इतने ही प्रश्नों का उत्तर दीजिए जिनसे पूर्णाङ्क मिल सकते हों]

१. क्षीण कर्म किसे कहते हैं। २

अ. य + क=० इसमें मानिए कि जब य=इ₁ और य=इ₂

तो समीकरण का मान क्रम से मा₁ और मा₂ होता है;

इन इष्टमानों पर से य का मान निकालिए। ६

२. (अ) जिस द्वियुक्करणी में एक पद करणी गत और दूसरा अकरणी गत हो तो उसके वर्गमूल निकालने का प्रकार क्या है ? ६

(ब) $\sqrt{२७} + \sqrt{१५}$, इसका वर्गमूल निकालिये। ३

३. इन समीकरणों को सिद्ध कीजिए।

(अ) $(अ + य)^{\frac{१}{३}} + (अ - य)^{\frac{१}{३}} = क$ ५

(ब) $\left.\begin{array}{l} य^{२} + र^{२} = १३ \\ य^{३} + र^{३} = ३५ \end{array}\right\}$ ८

४. (अ) चलन किसे कहते हैं ? १

(ब) वे दो संख्या कौन सी हैं जिनके तुल्योत्तर, गुणोत्तर और व्यस्तोत्तर मध्यों का योग ६१ और उन मध्यों के वर्गों का योग १२८१ है। ७

५. सिद्ध कीजिए।

(अ) कोज्या ३ अ=२ कोज्या २ अ. कोज्या अ – कोज्या अ ५

(ब) ज्या क – ज्या ख + ज्या ग=४ ज्या $\frac{क}{२}$ · कोज्या $\frac{ख}{२}$. ज्या $\frac{ग}{२}$,

जहां क, ख, ग किसी त्रिभुज के कोण हैं। ६

६. (अ) किसी त्रिभुज के क, ख, ग कोणों की संमुख भुजाएँ क्रम से यदि का, खा, गा हैं तो सिद्ध कीजिए—

स्परे $\frac{ख - ग}{२} = \frac{खा - गा}{खा + गा}$ कोस्परे $\frac{क}{२}$ । ६

(ब) किसी त्रिभुज के दो भुज दिए हैं। और उन दोनों में से किसी एक भुज के संमुख का कोण भी दिया है तो

तीसरे भुज का मान कब असंभव, कब एक और कब दो होंगे। ७

७. (अ) किसी त्रिभुज के अन्तर्लग्न और वहिर्लग्न वृत्तों के व्यासार्ध क्रम से र और $र_१$ हैं तो सिद्ध कीजिए—

$$२ र. र_१ = \frac{क. ख. ग.}{क+ख+ग}$$ जहाँ क, ख और ग त्रिभुज के तीनों भुज हैं। ६

(ब) भूमि में गड़ा हुआ अ हाथ का ऊँचा एक बांस जिस के मूल के चारों तरफ़ प्रवण है और जिसका प्रावण्य समतल पर आ अंश है, वायु के वेग से किसी एक देश से टूट गया। टूटने पर उस बाँस का केवल अग्र उसके मूल से क हाथ की दूरी पर भूमि पर जा लगा तो कहिए कि मूल से वह बांस कितने हाथ की उँचाई पर से टूटा। १०

८. (अ) दो निर्दिष्ट सरल रेखाओं के अन्तर्गत एक निर्दिष्ट बिन्दु से एक ऐसी सरल रेखा उन दोनों रेखाओं तक खींचिए कि निर्दिष्ट बिन्दु इस खींची हुई रेखा का मध्य बिन्दु हो जाय। ७

(ब) समानान्तर चतुर्भुज के किसी भुज में निर्दिष्ट बिन्दु से एक सरल रेखा खींच कर उसके दो तुल्य भाग कीजिए। ५

९. जिस त्रिभुज की भुजाओं के मध्य बिन्दु दिए हैं उस त्रिभुज की रचना कीजिए। ५

१०. एक ऐसा वृत्त खींचिए जो एक निर्दिष्ट बिन्दु में होता हुआ दो निर्दिष्ट वृत्तों को स्पर्श करे। १०

दर्शन

[परीक्षक—पं० गणपति जानकीराम दुबे, बी. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. विकास सिद्धान्त का वर्णन कीजिए और इसके आविष्कर्ता

डार्विन के सिद्धान्त देकर बतलाइए कि डार्विन का विकास सिद्धान्त किस अंश में अपूर्ण है। १२

२. साक्रेटीस ने आत्मा के अमरत्व के जो प्रमाण दिये हैं उनकी भगवद्गीता में दिये हुए प्रमाणों से समानता दिखलाइए। १०

३. उपनिषद् किसे कहते हैं? क्या भगवद्गीता उपनिषद् है? यदि है तो प्रमाण देकर सिद्ध कीजिए। १०

४. कर्मसन्यास किसे कहते हैं? भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मसन्यास का उपदेश किया है या कर्मयोग का? विस्तार सहित प्रमाणित कीजिए। १५

५. जब भगवान श्रीकृष्ण ने यह कहा था कि "हे अर्जुन! निःसन्देह जब जब धर्म की ग्लानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब मैं अवतार धारण करता हूँ" तब भारतवर्ष में धर्म की ग्लानि और अधर्म की वृद्धि कैसी हुई थी? और क्या यूरोपीय महासमर में उनही कारणों का होना पाया नहीं जाता? यदि पाया जाता हो तो क्या भगवान अवतार धारण करेंगे? १३

६. श्वेताश्वतरोपनिषद् में कहा है "ईश्वर एक है, वह सब भूत मात्र में छिपा हुआ है। वह सब प्राणियों का अन्तरात्मा है, सर्वव्यापी है, वह कर्म का अध्यक्ष है, वह सब प्राणियों में निवास किये हुए है, वह सब का चैतन्यमय साक्षी है, सब से अलग और गुणों से रहित है"

(१) यदि ईश्वर भूत मात्र में छिपा है तो वह सबसे अलग कैसे है?

(२) यदि वह सब प्राणियों में निवास किये हुए है तो एक कैसे है?

(३) यदि वह सर्वव्यापी है और कर्माध्यक्षता इत्यादि गुण वाला है तो वह निर्गुण कैसे है?

प्रमाण और युक्तियों से अपना उत्तर सिद्ध कीजिए। २०

७. पूर्वीय और पश्चिमीय विद्वानों की मत की परिभाषाओं को

दिखाकर लिखिए कि आपकी समझ में कौन सी परिभाषा शुद्ध है। १०

८. स्मरण शक्ति कितने प्रकार की है? स्मरण शक्ति को बढाने के क्या उपाय हैं? क्रम से लिखिए। १०

विज्ञान

[परीक्षक—प्रोफ़ेसर गोपालस्वरूप भार्गव, एम. एस-सी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[८ प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल सकते हैं।]

१. चुम्बक की सहायता से दिशा का ज्ञान कैसे हो सकता है? चुम्बकीय याम्योत्तर और साधारण याम्योत्तर में क्या भेद है? दोनों प्रकार के याम्योत्तर कैसे जाने जा सकते हैं?

२. चुम्बक बनाने की कितनी रीतियां हैं? उनमें कौन सर्व श्रेष्ठ है? चुम्बक कै प्रकार के होते हैं? चुम्बकीय परीक्षाओं में किस आकृति के चुम्बक का प्रयोग होता है?

३. चुम्बकत्व और विद्युत् में क्या सम्बन्ध है? चुम्बक से बिजली और बिजली से चुम्बक कैसे बनाये जाते हैं? सविस्तार उत्तर दीजिये?

४. जब आकाश में बिजली जल्दी जल्दी कौंदती हो और उसके गिरने का भय हो तो, वृक्षों के नीचे न ठहर कर, मैदान में लेट जाना क्यों श्रेयस्कर है? बिजली पदार्थ का विशेष रूप है या शक्ति का? अपने कथन के समर्थन में प्रमाण दीजिये।

५. यदि आपको अपनी चांदी की अंगूठी पर सोना चढाना हो तो आप क्या उपाय करेंगे?

६. कास्टिक सोडा और विरञ्जक चूर्ण किस प्रकार बनाये जा सकते हैं? उनके गुणों का और उपयोगों का वर्णन कीजिये।

७. कढाई में घी क्यों और कब जल उठता है? यदि तेल के पीपे में आग लग जाय, तो बुझाने का कौन सा सुगम उपाय है?

डार्विन के सिद्धान्त देकर बतलाइए कि डार्विन का विकास सिद्धान्त किस अंश में अपूर्ण है ।　१२

२. साक्रेटीस ने आत्मा के अमरत्व के जो प्रमाण दिये हैं उनकी भगवद्गीता में दिये हुए प्रमाणों से समानता दिखलाइए। १०

३. उपनिषद् किसे कहते हैं ? क्या भगवद्गीता उपनिषद् है ? यदि है तो प्रमाण देकर सिद्ध कीजिए ।　१०

४. कर्मसन्यास किसे कहते हैं ? भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मसन्यास का उपदेश किया है या कर्मयोग का ? विस्तार सहित प्रमाणित कीजिए ।　१५

५. जब भगवान श्रीकृष्ण ने यह कहा था कि "हे अर्जुन ! निःसन्देह जब जब धर्म की ग्लानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब मैं अवतार धारण करता हूँ" तब भारतवर्ष में धर्म की ग्लानि और अधर्म की वृद्धि कैसी हुई थी ? और क्या यूरोपीय महासमर में उनही कारणों का होना पाया नहीं जाता ? यदि पाया जाता हो तो क्या भगवान अवतार धारण करेंगे ?　१३

६. श्वेताश्वतरोपनिषद में कहा है "ईश्वर एक है, वह सब भूत मात्र में छिपा हुआ है । वह सब प्राणियों का अन्तरात्मा है, सर्वव्यापी है, वह कर्म का अध्यक्ष है, वह सब प्राणियों में निवास किये हुए है, वह सब का चैतन्यमय साक्षी है, सब से अलग और गुणों से रहित है"

(१) यदि ईश्वर भूत मात्र में छिपा है तो वह सबसे अलग कैसे है ?

(२) यदि वह सब प्राणियों में निवास किये हुए है तो एक कैसे है ?

(३) यदि वह सर्वव्यापी है और कर्माध्यक्षता इत्यादि गुण वाला है तो वह निर्गुण कैसे है ?

प्रमाण और युक्तियों से अपना उत्तर सिद्ध कीजिए ।　२०

७. पूर्वीय और पश्चिमीय विद्वानों की मत की परिभाषाओं को

दिखाकर लिखिए कि आपकी समझ में कौन सी परिभाषा शुद्ध है। १०

८. स्मरण शक्ति कितने प्रकार की है ? स्मरण शक्ति को बढाने के क्या उपाय हैं ? क्रम से लिखिए। १०

विज्ञान

[परीक्षक—प्रोफ़ेसर गोपालस्वरूप भार्गव, एम. एस-सी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[८ प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल सकते हैं।]

१. चुम्बक की सहायता से दिशा का ज्ञान कैसे हो सकता है ? चुम्बकीय याम्योत्तर और साधारण याम्योत्तर में क्या भेद है ? दोनों प्रकार के याम्योत्तर कैसे जाने जा सकते हैं ?

२. चुम्बक बनाने की कितनी रीतियां हैं ? उनमें कौन सर्व श्रेष्ठ है ? चुम्बक कै प्रकार के होते हैं ? चुम्बकीय परीक्षाओं में किस आकृति के चुम्बक का प्रयोग होता है ?

३. चुम्बकत्व और विद्युत् में क्या सम्बन्ध है ? चुम्बक से बिजली और बिजली से चुम्बक कैसे बनाये जाते हैं ? सविस्तार उत्तर दीजिये ?

४. जब आकाश में बिजली जल्दी जल्दी कौंदती हो और उसके गिरने का भय हो तो, वृक्षों के नीचे न ठहर कर, मैदान में लेट जाना क्यों श्रेयस्कर है ? बिजली पदार्थ का विशेष रूप है या शक्ति का ? अपने कथन के समर्थन में प्रमाण दीजिये।

५. यदि आपको अपनी चांदी की अंगूठी पर सोना चढाना हो तो आप क्या उपाय करेंगे ?

६. कास्टिक सोडा और विरञ्जक चूर्ण किस प्रकार बनाये जा सकते हैं ? उनके गुणों का और उपयोगों का वर्णन कीजिये।

७. कढाई में घी क्यों और कब जल उठता है ? यदि तेल के पीपे में आग लग जाय, तो बुझाने का कौन सा सुगम उपाय है ?

डार्विन के सिद्धान्त देकर बतलाइए कि डार्विन का विकास सिद्धान्त किस अंश में अपूर्ण है । १२

२. साक्रेटीस ने आत्मा के अमरत्व के जो प्रमाण दिये हैं उनकी भगवद्गीता में दिये हुए प्रमाणों से समानता दिखलाइए। १०

३. उपनिषद् किसे कहते हैं? क्या भगवद्गीता उपनिषद् है? यदि है तो प्रमाण देकर सिद्ध कीजिए। १०

४. कर्मसन्यास किसे कहते हैं? भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मसन्यास का उपदेश किया है या कर्मयोग का? विस्तार सहित प्रमाणित कीजिए। १५

५. जब भगवान श्रीकृष्ण ने यह कहा था कि "हे अर्जुन! निःसन्देह जब जब धर्म की ग्लानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब मैं अवतार धारण करता हूँ" तब भारतवर्ष में धर्म की ग्लानि और अधर्म की वृद्धि कैसी हुई थी? और क्या यूरोपीय महासमर में उनही कारणों का होना पाया नहीं जाता? यदि पाया जाता हो तो क्या भगवान अवतार धारण करेंगे? १३

६. श्वेताश्वतरोपनिषद में कहा है "ईश्वर एक है, वह सब भूत मात्र में छिपा हुआ है। वह सब प्राणियों का अन्तरात्मा है, सर्वव्यापी है, वह कर्म का अध्यक्ष है, वह सब प्राणियों में निवास किये हुए है, वह सब का चैतन्यमय साक्षी है, सब से अलग और गुणों से रहित है"

(१) यदि ईश्वर भूत मात्र में छिपा है तो वह सबसे अलग कैसे है?

(२) यदि वह सब प्राणियों में निवास किये हुए है तो एक कैसे है?

(३) यदि वह सर्वव्यापी है और कर्माध्यक्षता इत्यादि गुण वाला है तो वह निर्गुण कैसे है?

प्रमाण और युक्तियों से अपना उत्तर सिद्ध कीजिए। २०

७. पूर्वीय और पश्चिमीय विद्वानों की मत की परिभाषाओं को

दिखाकर लिखिए कि आपकी समझ में कौन सी परिभाषा शुद्ध है। १०

८. स्मरण शक्ति कितने प्रकार की है ? स्मरण शक्ति को बढाने के क्या उपाय हैं ? क्रम से लिखिए। १०

विज्ञान

[परीक्षक—प्रोफ़ेसर गोपालस्वरूप भार्गव, एम. एस-सी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[८ प्रश्नों का ठीक ठीक उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल सकते हैं।]

१. चुम्बक की सहायता से दिशा का ज्ञान कैसे हो सकता है ? चुम्बकीय याम्योत्तर और साधारण याम्योत्तर में क्या भेद है ? दोनों प्रकार के याम्योत्तर कैसे जाने जा सकते हैं ?

२. चुम्बक बनाने की कितनी रीतियां हैं ? उनमें कौन सर्व श्रेष्ठ है ? चुम्बक कै प्रकार के होते हैं ? चुम्बकीय परीक्षाओं में किस आकृति के चुम्बक का प्रयोग होता है ?

३. चुम्बकत्व और विद्युत् में क्या सम्बन्ध है ? चुम्बक से बिजली और बिजली से चुम्बक कैसे बनाये जाते हैं ? सविस्तार उत्तर दीजिये ?

४. जब आकाश में बिजली जल्दी जल्दी कौंदती हो और उसके गिरने का भय हो तो, वृक्षों के नीचे न ठहर कर, मैदान में लेट जाना क्यों श्रेयस्कर है ? बिजली पदार्थ का विशेष रूप है या शक्ति का ? अपने कथन के समर्थन में प्रमाण दीजिये।

५. यदि आपको अपनी चांदी की अंगूठी पर सोना चढाना हो तो आप क्या उपाय करेंगे ?

६. कास्टिक सोडा और विरञ्जक चूर्ण किस प्रकार बनाये जा सकते हैं ? उनके गुणों का और उपयोगों का वर्णन कीजिये।

७. कढाई में घी क्यों और कब जल उठता है ? यदि तेल के पीपे में आग लग जाय, तो बुझाने का कौन सा सुगम उपाय है ?

८. सविस्तार लिखिये कि लोहा असंस्कृत खनिज (लोहिया पत्थर) से कैसे निकाला जाता है? भारत में लोहे का कौन सा बड़ा कारखाना है?
९. प्रतिध्वनि के नियम लिखिये। बांसुरी में शब्द-तरङ्गों का प्रत्यावर्तन किस प्रकार होता है?
१०. नीला थोथा गरम करने से सफ़ेद हो जाता है, इसका क्या कारण है? काला नमक खाते समय किस गैस की गंध आती है? उसकी गंध से उसके किसी अवयव का ज्ञान हो सकता है अथवा नहीं?
११. हिन्दुओं में तांबे के पात्र पवित्र माने जाते हैं, पर उन में खाना मना है। इसका कारण क्या है? पीतल और कांसे के पात्रों में घी रखने से घी का रंग नीला क्यों हो जाता है? कांसे के पात्र में दही शीघ्र क्यों नहीं बिगड़ता?
१२. एक मकान के किसी कोने में दो शीशे रखे हैं। एक मनुष्य उनके बीच में जाकर खड़ा होता है और अपने छः प्रतिबिम्ब देखता है। बतलाइये कि दोनों शीशे किस भांति रखे हैं?
१३. अणुवीक्षण यंत्र में कितने ताल होते हैं और किस तरह लगे रहते हैं? कांच की कुप्पी में पानी भर कर यदि किसी पुस्तक पर रख दें तो अक्षर बड़े क्यों दिखाई देते हैं?
१४. स्पिरिट का उबाल विन्दु या मोम का द्रवण विन्दु कैसे निकालते हैं?

धर्मशास्त्र

[परीक्षक— पण्डित श्रीकृष्ण जोशी]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[पहिले ६ प्रश्नों के उत्तर मनुस्मृति के अनुसार होने चाहियें]

१. "त्रिवर्ग" "पञ्चसूना" "अहुत" "प्रहुत" "पितृगण" "प्रमृत" "त्रिदण्डी" "षड्गुण" "क्षेत्रज्ञ" "भूतात्मा"— इन शब्दों के क्या अर्थ लिखे हैं? १५

२. चौथे अध्याय में दान लेने वाले और देने वाले के लिए निषेध के वाक्य क्या क्या हैं ? १२
३. मांस खाने और न खाने के विषय में विधि निषेध क्या क्या हैं ? १५
४. चतुर्थ आश्रम में प्रवेश करने के विषय में क्या क्या विधि और निषेध हैं ? और यथाविधि उस आश्रम का आश्रय करने वाले की प्रशंसा में क्या क्या वचन हैं ? १२
५. राजा में मन्त्रियों को नियत करने की और उनसे मन्त्रणा की क्या विधि लिखी है ? १०
६. माता पिता के मरने पर कई भाइयों में दाय विभाग के क्या नियम लिखे हैं ? १२
७. इस लोक में दण्डनीति प्रचलित किये जाने और राजा के नियुक्त किये जाने की आवश्यकता के विषय में शान्तिपर्व में क्या लिखा है ? १५
८. ऐहिक शिष्ट व्यवहार और पारलौकिक कल्याण की इच्छा करने वाले पुरुष के विषय में अनुशासनपर्व में भीष्म पितामह ने राजा युधिष्ठिर को दश त्याज्य कर्मों के विषय में क्या उपदेश किया है ? और इसी विषय का उल्लेख मनुस्मृति में कहां और किस प्रकार किया गया है ? ६

अर्थशास्त्र

[परीक्षक—श्री संगमलाल, एम. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[कोई ७ प्रश्न करने से पूरे अङ्क मिल सकते हैं]

१. सम्पत्ति की उत्पत्ति में भूमि का क्या भाग है ? भूमि शब्द से आप क्या अर्थ समझते हैं ?
२. श्रमजीवियों की कर्मण्यता (efficiency) किन बातों पर निर्भर है ?

३. भारतवर्ष में श्रमजीवियों की जो स्थिति है उसका वर्णन कीजिए और लिखिए कि किस प्रकार इसमें उन्नति हो सकती है।

४. हिन्दुस्थान के व्यवसायों में क्यों अधिक पूँजी नहीं लगायी जाती ? कारण लिखिए।

५. मालगुज़ारी की नीति का देश पर क्या प्रभाव पड़ता है ? किस प्रकार की नीति को आप देश के लिए अच्छा समझते हैं, क्यों ?

६. हिन्दुस्थान में दुर्भिक्ष क्यों होते हैं और किस प्रकार उनका प्रतिरोध हो सकता है ?

७. सूद का दर किन बातों पर निर्भर है, क्या क़ानून द्वारा अधिक से अधिक (maximum) दर नियत कर देना चाहिए।

८. कर कितने प्रकार के होते हैं ? देश की आयात (imports) पर कर लगाने से क्या लाभ और हानियां होती हैं।

९. किसी देश के आर्थिक जीवन में साख (credit) का क्या प्रभाव होता है ? किन रीतियों से साख बनी रहती है।

१०. यदि आपको हिन्दुस्थान में पेंसिल का कारख़ाना चलाना हो तो आपको किन किन बातों की आवश्यकता होगी ?

११. अर्थशास्त्र के अध्ययन से क्या लाभ है ? क्या यह सच है कि उसका अध्ययन मनुष्यों को निःशंस और स्वार्थी बना देता है।

१२. पूंजी किसे कहते हैं ? उसकी वृद्धि के मुख्य कारण कौन हैं ?

१३. बंधन रहित और बंधन विहित व्यापार की नीति के प्रयोग करने से देश को क्या लाभ और हानियां होती हैं ? भारतवर्ष की वर्तमान स्थिति में सरकार को किस नीति का प्रयोग करना चाहिए ?

१४. लगान किसे कहते हैं ? खेती की पैदावार के निर्ख़ का लगान से क्या सम्बन्ध है ?

१५. काग़ज़ी रुपए का क्या अर्थ है ? इससे क्या लाभ होता है ?

ज्योतिष

[परीक्षक-पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[सब प्रश्नों में समान अङ्क हैं]

१. सौरमान के अनुसार एक मनु का मूल मान कितने वर्षों का होता है ? और पूरे एक कल्प का मान कितने सौर वर्षों का होता है ?

२. ग्रहों की गतियाँ कितने प्रकार की होती हैं ? उनमें से मार्ग गतियों के नाम लिखिए।

३. सूर्य, मङ्गल, गुरु और शनि के परम मन्दफल तथा शुक्र और शनि के परम शीघ्रफल का मान लिखिए।

४. छाया और छायाकर्ण बनाने की रीति लिखिए और यह भी बतलाइये कि छायाकर्ण का अभाव कहां और क्यों होता है ?

५. सम्पूर्ण ग्रास ग्रहण में निमीलन और उन्मीलन जानने की रीति उदाहरण सहित लिखिए।

६. सूर्य ग्रहण का एक कल्पित चित्र खींचिए जिसमें छेद्यक व्यवहार के प्रायः सभी उदाहरण आ जायँ।

७. अयन, विषुव, षडशीतिमुख, इनका अर्थ लिखिए और कार्तिकादि वर्ष गणना के सम्बन्ध में जो कुछ जानते हों लिखिए।

८. जिस प्रकार सूर्य को केन्द्र करके पृथ्वी का परिभ्रमण मानकर दिन रात, ग्रहण, ऋतु आदि के होने के चित्र "ज्योतिषशास्त्र" में दिये हैं उसी प्रकार आप पृथ्वी को केन्द्र में और सूर्य का परिभ्रमण मानकर यदि दिन रात आदि के होने के चित्र खींचें तो कैसा रूप होगा और उसमें क्या कोई त्रुटि होगी ?

वैद्यक

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[परीक्षक—आयुर्वेदपञ्चानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल]

१. आयुर्वेदमें कथित सदाचार का वर्णन कीजिये, सदाचार

का स्वास्थ्य से कहां तक सम्बन्ध है, विस्तार से वर्णन कीजिये। १३

२. स्नान करने से कौन कौन लाभ हैं, यह भी बतलाइये कि स्नान किनके लिये निषिद्ध है? ऋतुभेद से स्नान के जल में कोई अन्तर करना आवश्यक है या नहीं? ११

३. बरसात में पीने के लिये किस जलका उपयोग करना आवश्यक है, कारण सहित लिखिये। १५

४. आरोग्य रक्षा के लिये उपयोगी एक आदर्श गृह और उसके आसपास के साहित्य-साधनों का वर्णन कीजिये। १५

५. किसी पदार्थ में किस रस और पञ्चमहाभूतों में से किस तत्व की अधिकता है, इसके पहचानने के लक्षण लिखिये तथा कषायरस और अग्नितत्वप्रधान पदार्थों के गुण दोष लिखिये। १६

६. संग्रहणी, क्षय और प्रसूतिका के रहन सहन और आहार विहार के विषय में शुश्रूषाकारी को किन किन बातों पर ध्यान रखना चाहिये, अलग अलग लिखिये। १५

७. शुश्रूषाकारी का स्वभाव, वस्त्र और व्यवहार आदि कैसा होना चाहिये। १०

८. एक मनुष्य को भीतरी आघात लगने से रक्त का वमन हो रहा है, दूसरा आग में जल जाने से तड़प रहा है और तीसरे को पागल कुत्ते ने काटा है, बतलाइये किसी निपुण चिकित्सक के आने के पहले इनकी सँभाल किस प्रकार करनी चाहिये। १५

संस्कृत से हिन्दी अनुवाद

[परीक्षक—साहित्याचार्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

नीचे लिखे सन्दर्भ का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

(क) न चित्राणि वितानानि स्तम्भाश्च सभां भूषयितुं प्रभवन्ति। सभाभूषणं हि षड्दर्शनीपरिज्ञानमण्डिताः पण्डिता एव भवन्ति,

सर्वे लोका अपि न सभाभूषणम् किन्तु विपश्चित एव भवन्ति। सूर्यमन्तरा न कोऽपि देशः समुद्भासितो भवति, विदुषोऽपहाय सभारञ्जका न परे दृष्टा लोके। शतमादित्याः शतमिन्दवश्चोद्यन्तु, परमाभ्यन्तरतमोविनाशकानि विदुषां वाक्यान्येव।

यशोऽर्थिभिर्बहुबोद्धव्यं भवति बहुभ्यो ज्ञानमर्जनीयं भवति, बहुकालं यावद् ज्ञानार्जनेनैव यशो बहुकल्पान्तस्थायि भवति। जात्या पाषाणोऽपि पद्मरागोऽतिरिच्यते प्रकाशगुणेन।

दृष्टिमन्तोऽपि ते जात्यन्धाः शृण्वन्तोऽपि बधिरा, रसनावन्तोऽपि मूका, यैर्विज्ञानसिन्धवो जनाः सम्यग्नाराधिताः। मनुष्यजन्मासाद्यावश्यं ज्ञानमर्जनीयम् अन्यथा मनुष्यत्वेऽपि पशुत्वमवतिष्ठत एव प्रत्यक्षं परोक्षं लभ्यमलभ्यञ्च सर्वविधमपि वस्तु सतां करगतमेव। स्थावरजङ्गममर्त्यब्राह्मणमुनिदेवप्रभृतयो भेदाः प्राणिषु ज्ञानोत्कर्षनिबन्धना एव। विद्युज्जलधरो वृष्टिश्चन्द्रार्कौ सागरा इति सर्वमेवाज्ञानामद्भुतम् परं विज्ञानां न किञ्चित्। यथा ज्ञानेन्द्रियैः शरीरस्य शोभा भवति, तथा विद्वांसो देशस्य शोभाहेतवः। तद्विरहितो देशस्त्वमङ्गल एव।

इदं ज्ञानं महाधनम्, इदममलीमसमसच्छिद्रमचौर्यमतिसुन्दरमदेयमप्रतिग्राह्यञ्च। शब्दगुम्फनशक्तिहीनानां शब्दाभ्यासे श्रमो वृथा भवति। मुग्धानि पुष्पाणि लब्ध्वा मुण्डितः किं करिष्यति। योऽर्थः शास्त्रेषु कथितः परं स गृहीतुमशक्यः स एव कविसूक्तिषु ग्रथितः स्वदते। करगतं रत्नं दृश्यं भवति, फणिमूर्धनि च तदेव दारुणं भवति। काव्यपरिश्रमो व्यवहाराणामाज्ञस्यं धियामार्जवं शास्त्रेषु पटुत्वञ्च सूते। सर्वशास्त्रविदामपि साहित्यविद्याहीनानां समाजं बुद्धिशालिनः समजं वदन्ति, काव्येष्वशिक्षितानां शास्त्राभ्यासो निरर्थक एव। अनुपनीतस्य वाजपेयादिभिर्मखैः को लाभः। विद्वज्जनैर्हीना राज्ञां सभा अन्धा, कविभिस्त्यक्ता सा मूका गायनैर्हीना च बधिरा।

६०

(ख) आङ्ग्लभाषायां बहवस्तथाविधा ग्रन्था विद्यन्ते येहि निपुणं बोधयन्ति समालोचनासरणिम्। सन्ति यद्यपि पूर्वतो विरचितास्तादृशा निबन्धाः, परं लार्ड मेकाले पुस्तकानामेवं विधानां

प्रथमः प्रचारकः कीर्त्यते । समालोचनायां न केवलं गुणा एव नापि केवलं दोषा एव विचार्यन्ते । समालोचको हि ग्रन्थहृदयं निपुणं निरूप्य प्रकाशयति । मेकालेमहोदय एतादृश एव समालोचनापक्षपाती समभवत् । तत्र साहित्यस्य यथा यथा शाखाभेदाः समुन्नतिमध्यगच्छन् तथा तथा तथाविधाः समालोचका अपि समुदपद्यन्त । अत्र जान रस्किन मैफू आर्नल्ड इत्येते महाभागाः सादरं स्मर्यन्ते, आभ्यां तथाविधाः सुन्दरा ग्रन्था निर्मिताः । इतः परं न समालोचनाविषयकाणां ग्रन्थानां बाहुल्येन प्रसारः समभवत् । नाप्यत्र प्रथितसमज्ञा विद्वांसः समभवन् । साम्प्रतं हि समाचारपत्रसम्पादककृतया समालोचनयैव स्थानं समासादितम् । एतेन समालोचनाया न तादृशी समुन्नतिराङ्गलसाहित्ये समभवद्दिति निर्विशङ्कमुच्यते ।

समालोचनया वृद्धिं याति साहित्यसागरः
साहि पोतनिभा तस्मात् पारं नयति मानवान् ।
नात्र दोषा नापि गुणा विवेच्या किन्तु यत्नतः
साहित्यसारं विबुधैः प्रकाश्यमिति पण्डिताः ॥ ४०

अंगरेज़ी से अनुवाद

[परीक्षक—पं० हरिमङ्गल मिश्र, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

निम्नलिखित का अनुवाद शुद्ध मुहावरेदार हिन्दी में कीजिए—

(क) Plato was the most distinguished disciple of Socrates, and of all ancient writers, he is one of the best known. The son of Ariston, he was born in Greece about 427 B.C. His proper name was Aristotle, after his grandfather; but he was surnamed Plato, perhaps on account of the breadth of his forehead or his chest Of a rich and noble family, he received the best education of the day, and he so excelled in gymnastics that he competed at the public games. He began his literary career by writing poetry, but when at the age of twenty he was introduced to Socrates, he burnt his compositions. During eight

years he continued the pupil of Socrates, and was separated from him only by death. He attended his beloved master during his trial; undertook to plead his cause, and pressed him to accept a sum sufficient to purchase his life. After the death of Socrates, Plato spent several years in travel. Among other countries, Egypt, famous for its learning, was visited. Returning to Athens about twelve years after the death of Socrates, he bought a house and garden about a mile to the west of the city. Here Plato opened his school of philosophy. The lectures of Plato were attended by a crowed of learned, noble and illustrious pupils. For forty years he devoted himself to their instruction and composed those dialogues which have been the admiration of every age.

(ख) Nature's methods, if they are sure are also very slow. We find no sudden leap to perfection—progress is laborious and gradual from the lower levels to the higher. This is applicable to the most familiar things of everyday use; everything that man has made equally with Nature. Trace to its beginning the house we live in to-day, and it will be found to be the result of a long series of experiments. First a cave under a hill or the protection of a tree; primitive man finds the seasons objectionable under such circumstances, he pulls the branches down and builds himself a rough bower; later, having developed skill in tool-making, he cuts the trees and builds a log hut, and so on, from the simplest beginnings to the present day.

(ग) What is the significance of the Bhakti movement? What is the speciality of the men who founded it? It is not my object to write any detailed account of the work or worth of the great poets and devotes of our land; that is a subject for master hands to handle. My purpose is a humble one. I want to find out what the movement and its apostles stand for in the evolution of Indian life and thought.

उत्तमा परीक्षा १९७५

संस्कृत साहित्य

[परीक्षक—महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा, एम. ए., डी. लिट्.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. उपनयनपद्धति का पारस्करोक्त रीति के अनुसार संक्षेप से वर्णन करो। तदनन्तर्गत तीन होममन्त्रों को लिख कर उनकी व्याख्या करो।

२. पारस्कर ने किस शाखा के गृह्य का विवरण लिखा है। और प्रधान शाखाओं के गृह्यकारों का नाम लिखो।

३. 'गृह्यसूत्र' और 'धर्मसूत्र' में क्या भेद है।

४. नीचे लिखे हुए मन्त्रों के अर्थ लिखो—इनके छन्द, ऋषि तथा विनियोग का भी निरूपण करो—

(अ) इन्द्रमिद्गाथिनो बृहत् इन्द्रमर्केभिरर्किणः इन्द्रोवाणी-रनूषत।

(क) केतं कृण्वन्त केतवे पेशो मर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः।

५. ऋक्, साम, यजुष्, मन्त्र, ऋषि—इनके शास्त्रोक्त लक्षण लिखो।

६. 'छान्दोग्य' किस वेद का 'उपनिषत्' कहा गया है और क्यों?

७. 'ऐतदात्म्यमिदं सर्वं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो'—इस वाक्य का अर्थ सविस्तर लिखो। किन किन दृष्टान्तों से किसने किसे यह शिक्षा दी?

८. छान्दोग्य उपनिषत् में मायावाद का अङ्कुर है—ऐसा कहा जाता है—प्रमाणोपन्यास पूर्वक इसका विचार करो।

संस्कृत साहित्य २

[परीक्षक—पं० दक्षिणामूर्त्ति शास्त्री, एम. ए., काव्यतीर्थ]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

मृच्छकटिके प्रश्नाः

१. किन्तावन्मृच्छकटिकप्रकरणस्य लक्षणम्, कतिविधाश्चात्र प्राकृतप्रपञ्चेषु भाषाः प्रयुक्ताः। ग्रन्थेऽस्मिन्प्राकृतपाठकेषु प्रतिपात्रं निर्दिश्यताम् कतमया भाषया प्रयोग इति॥

२. शकारवचनस्य किं लक्षणम्, विटस्य वेश्यासामान्यगतं वसन्तसेनागतं किमपि विशिष्टं कविप्रदर्शितरीत्या प्रतिपाद्यताम। दारिद्र्यस्य कः प्रभावः, आधिकरणिकस्य किं स्वरूपम इति शूद्रकोक्तरीत्या वर्ण्यताम्॥

३. तयोरिदं तत्सुरतोत्सवाश्रयं नयप्रचारव्यवहारदुष्टताम्। खलस्वभावं भवितव्यताञ्च चकार सर्वं किल शूद्रको नृपः॥ पर्यङ्कग्रन्थिबन्धद्विगुणितभुजगाश्लेषसंवीतजानोरन्तः प्राणावरोधव्युपरत सकल ज्ञानरुद्धेन्द्रियस्य। आत्मन्यात्मानमेवव्यपगतकरणं पश्यतस्तत्वदृष्ट्या शम्भोर्वः पातुशून्येक्षणघटितलय ब्रह्मलग्नः समाधिः॥ पद्ययोरनयोर्व्याख्या सरल संस्कृतेन विरच्यताम्॥

४. कस्मिन् अवसरे केन कं प्रति निम्नलिखितानां वचनानां प्रयोगः कृतः। न ह्याकृतिः सुसदृशं विजहाति वृत्तम्॥ वेश्यासि सर्वं भज॥ विद्युन्नीचकुलोद्गतेव वनिता नैकत्र सन्तिष्ठते॥ असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्निष्फलतांगता॥ इति॥

५. शूद्रककविमधिकृत्य नातिविस्तरं लिख्यताम्॥

भारवेः किरातार्जुनीये प्रश्नाः

१. नारिकेलफलसंमितंवचो भारवेस्सपदि तद्विभज्यते। स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसि का यथेप्सितम॥ इतिमल्लिनाथोक्तिं समर्थयन् उदाहियन्ताम् कनिचित्पद्यानि भारवेः॥

२. सव्याख्यानमुद्घाट्यतां निम्नलिखितानां श्लोकानामर्थः "स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संशृणुते स किं प्रभुः। सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येष्वपि सर्वसम्पदः॥ वनान्तशय्याकठिनी कृताकृती कचाचितौ विष्वगिवा गजौ गजौ। कथन्तगेतौ धृति संयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम् ॥

लघुवृत्तितया भिदां गतं बहिरन्तश्च नृपस्य मण्डलम्। अभिभूय हरत्यन्तरः शिथिलं कूलमिवापगारयः ॥

प्रसह्ययोस्मासु परैः प्रयुक्तः स्मर्तुं न शक्यः किमुताधिकर्तुम्। नवीकरिष्यत्युपशुष्यदार्द्रः सत्वद्धिना मे हृदयश्चिकारः ॥ विकचवारिरुहन्दधतस्सरः सकलहंसगणं शुचि मानसम्। शिवमगात्सजया च कृतेर्ष्यया सकलहंसगणं शुचि मानसम् ॥ शुचि भूषयति श्रुतं वपुः प्रशमस्तस्य भवत्यलङ्क्रिया। प्रशमाभरणं पराक्रमस्सनयापादितसिद्धिभूषणः ॥

३. शुचि भूषयतीति श्लोके कोऽलङ्कारः किञ्च तल्लक्षणम्।

भासस्याविमारके प्रश्नाः

१. भासकविमधिकृत्य तत्प्रणीतत्वेन प्रसिद्धानां ग्रन्थानां पर्यालोचनया किमवसीयते ॥

२. उदाहरणप्रदर्शनपूर्वकं समर्थ्यतामियमुक्तिर्बाणभट्टस्य ॥ सूत्रधारकृतारम्भैः नाटकैर्बहुभूमिकैः। स पताकैर्यशो लेभे भासो देव कुलैरिव ॥

३. नीतिमार्गप्रतिपादने अविमारकम् कथमुपयुज्यते पाठकैरिति सोदाहरणं सप्रपञ्चन्निरूप्यताम् ॥

४. कन्यापुरात् कथमपीह विनिर्गतं मे भाग्यावशेषमवलम्ब्य शरीरमात्रम्। अद्यापि तन्मम मनो न तु मामुपैति। नावेक्षते मयि तया प्रिययावरुद्धम् ॥ पद्यमेतत्कस्य सुप्रसिद्धस्य किं पद्यमनुकरोति ॥

संस्कृत साहित्य ३

[परीक्षक—व्याकरणाचार्य पं० काली प्रसाद मिश्र]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. इस ग्रन्थ का अनुबन्ध चतुष्टय लिखो और बताओ की इसकी रचना शैली आरोहण क्रम से है या अवरोहण। ६
२. व्याकरण के पढ़ने से अध्येता को क्या लाभ है और इस शास्त्र से संस्कृत-साहित्य की उन्नति है या अवनति। १४
३. पदान्त नकार के स्थान में किन किन वर्णों या शब्दों के परमें रहने से कौन कौन आदेश होते हैं उदाहरणों से स्पष्ट करो। १०
४. किन शब्दों की नदी संज्ञा होती है और उससे कौन कौन फल होते हैं उदाहरणमात्र से स्फुट करो। १०
५. धातुओं में गणकृत भेद कितने हैं और वह भेद सभी लकारों में है या यत्किञ्चित्। १०
६. रोपयति. ईर्त्सति. जेघ्नीयते-अजङ्गन. दधिस्यति. किन धातुओं से कौन कौन प्रत्यय करने से यह रूप बने हैं। १०
७. त्रा ग्ला लू दा धा. और दंह धातु से निष्ठा प्रत्यय करने पर कैसे रूप होंगे। १२
८. कारक की परिभाषा लिखो और इसे अधिकरण में और जनिष्यमाणाय विप्रायदास्यति इस सम्प्रदान में समन्वित करो। ८
९. उपहरि सुराः। कन्यया शोकः। अस्मै आत्रद्व-छिरहो भुक्ते। अधिव्याकरणे पाणिनिः इनमें किन सूत्रों से द्विती-यादि विभक्ति हुई हैं। १०
१०. अव्ययीभावादि समासों के परिचय की निर्दुष्ट रीति लिखो। ५
११. नारी. कुमारी. श्वश्रूः पङ्गुः और ब्रह्मबन्धूः की सिद्धि सूत्रों से करो। ५

संस्कृत साहित्य ४

[परीक्षक—साहित्याचार्य्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

१. पाली शब्द की व्युत्पत्ति क्या है ? इसका शुद्ध संस्कृत रूप लिखिए और कारण बतला कर यह भी लिखिए कि इस का पाली नाम क्यों पड़ा। मागधी भाषा क्या इससे भिन्न भाषा है। २०

२. "हिन्दी भाषा संस्कृत से उत्पन्न हुई है" इस वाक्य का अर्थ समालोचना सहित लिखिए, किसी भी भाषा का मुख्य स्वरूप क्या है, सविस्तर अपना विचार लिखिए। २०

३. सञ्जावांस्स, तण्डास्स, मांअं नोहेतं तुण्डस्स, पव्वतास्स।

१. इनका सन्धि विश्लेषण कीजिए और संस्कृत स्वरूप भी लिखिए। १२

४. संस्कृत के "राजन्" शब्द का स्वरूप पाली भाषा में क्या होता है और इसकी तृतीयाविभक्ति का रूप लिखिए। ८

५. मन शब्द के प्रथमा बहुबचन में, दण्डी शब्द के तृतीया बहुबचन में और चतुर्थी एक बचन चतु शब्द के प्रथमा विभक्ति के तीनों लिङ्गों में वधू शब्द के संबोधन बहुबचन में कैसे रूप होते हैं और उनके नियम क्या हैं। १२

६. कृ हन् गम् धातुओं के क्त्वा तुमन् प्रत्यया में रूप लिखिए और नियम बतलाइए। १०

अ—यो सन्निसिन्नो वर बोधिमूले
मारं ससेनं महतीं विजेत्वा
सम्बोधिमागञ्छि अनन्त ञाणो
भोकुतमो तं प्रणमामि बुद्धम्

सङ्घो विशुद्धो वरदाक्खिणेय्यो
सन्निन्द्रियो सब्ब मलप्पहीणो
गुणेहि नेकेहि समिद्धपत्तो
अनासवो तं पणमामि सङ्घं ।

ऊपर के श्लोकों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। धम्मपद की भाषा क्या शुद्ध पाली है! ६

उदाहरण के द्वारा समझाइए। वे कौन सी बातें हैं जिन से भिक्खु का महत्व बढ़ता है। श्रमण का लक्षण क्या है। क्या स्मार्त सन्यासियों को भी पहले भिक्खु कहते थे। १०

संस्कृत साहित्य ५

[परीक्षक—साहित्याचार्य्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

साहित्यदर्पण और भरतनाट्यसूत्र के प्रश्न

१. बहूर्थवाची शब्दों के अर्थ नियामक कौन है ? ६
२. विश्वनाथ के मतानुसार रसना स्वरूप लिख कर बतलाइए कि वह वाच्य है कि नहीं, यदि नहीं तो क्यों ? १४
३. किस नये रस का स्वीकार साहित्यदर्पणकार ने किया है, उसका निरूपण कीजिए। १०
४. अर्थगत दोष कितने हैं ? कथितपदता कहाँ कहाँ दोष नहीं है ?
५. श्लेष अलङ्कार का लक्षण लिख कर बतलाइए कि वह अर्थालङ्कार है या शब्दालङ्कार ? १०
६. चित्राभिनय का लक्षण और प्रकार भरत मुनि के मतानुसार लिखिए। ७
७. भरतमुनि से प्राचीन कोई नाट्यशास्त्रकार कोई था कि नहीं, यदि था तो उसका नाम लिखिए। ७

८. सब से प्राचीन नाटक कौन है, प्रमाण सहित लिखिए ११
९. भरतमुनि ने प्रवृत्ति शब्द की क्या व्याख्या की है। ११
१०. नाट्यमण्डप निर्माण का प्रकार लिखिए। १२

संस्कृत साहित्य ६ (मराठी)

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

सूचना—प्रश्न १ तथा २ के उत्तर मराठी भाषा में लिखिये; शेष प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दीजिये।

(१) अ—एक ऐसा वाक्य बनाइये जिसमें "उद्देश्य" "नामवाक्य" हो।

आ—निम्न लिखित वाक्य का "वाक्यपरिच्छेद" कीजिये।

शीघ्रकोपी दुर्वास हातीं कमंडलू धारण करुन कराव ऋषी च्या आश्रमावर आला, तेव्हां विरहाने भ्रान्तचित्त झालेल्या शकुनलेनें त्यास दुरुन पाहिलें; परंतु तिचें मन ठिकाणीं व व्हतें, यासाठी तिनें त्याचेकडे दुर्लक्ष केलें, व मुनीनें रागावून तिला कड़क शाप दिला, की तुझा प्रियपति तुला दीर्घकाल विसरेल।

इ—निम्नलिखित पद्य के संज्ञा शब्दों के कारक लिखिये। स्वर्गी इन्द्रसद्मेशि तुल्य दुसरी धात्री वरी शोभ ली"।

ई—"भावेप्रयोग सकर्मक अथवा अकर्मक दोन्ही" प्रकार च्या क्रियापदां वरुन होतो"।

मराठी व्याकरण के ऊपरोक्त नियम को उदाहरण द्वारा सिद्ध कीजिये।

(२) अ—"गोंधला" क्या है? उसका पूर्णतया वर्णन कीजिये।

आ—निम्न लिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिये। और रेखाङ्कित शब्दों पर टिप्पणी दीजिये।

"मोरेमांव च्या मोरेसरा गोंधला ये गोंधला ये।

* * * *

जाखाई जोखाई गोंधला ये।

कवद्या ची यमाई गोंधला ये।

ई—इन पदों की पूर्व कथा लिखिये।

"जायराणी ची कथा"

काल्या चाप्या ची कथा

आगन चासोळ्या चा प्रसंग।

(३) कमलकुमारी के चरित्र की आलोचना कीजिये।

(४) अ—मोरोपंत जी की जीवनी संक्षेप में लिखिये।

आ—मोरोपंत जी ने अपने महाभारत में किस प्रकार के छन्द का प्रयोग किया है? उस छन्द का क्या लक्षण है? और उस छन्द के तुकान्त में क्या विचित्रता है, उदाहरण सहित समझाइये।

(५) त्यावरि जातो उत्तर, त्याचे सारथ्य ये करायास।
सुखद इहामुत्रहि गो विप्रत्राणोत्थ जें करायास॥
देता झाला पूर्वी तुज निज सारथ्य सव्य साची हो।
सैरंध्री ची वाणी व्हाया गोवत्सभव्य साची हो॥
उठल्या उत्साहायाच्या त्या शांतश्रीमदुदधि वरिल हरी।
धरितां हनु न नु ह्मणतां प्रणताचें कां न सुदधि वरिल हरी॥

अ—ऊपरोक्त पंक्तियां किसने किसको सम्बोधन करके किस समय कहीं थीं।

आ—उनका सरलार्थ लिखिये और यदि उनमें कहीं उपमा हों तो दर्शाइये।

(६) उत्तर निज तुरगां तें ज्ञाया चरणासि कौतुक पिटाली।
तो गर्जोनि कुरु कटक कर्णी वसवी ध्वजस्थ कपिटाली॥
कृप सैन्यासि ह्मणे हो हो प्रासारिष्ट शांत न वधांचा।
राजा पार्थे सांगप सगुरू सगुरुसुत स शांतनव धावा॥

* * * *

शरपटलानें झांकी कुरु कटकालाचि तो न वासवित्या।
खचर म्हणति तेजस्वी लोपविता भेटला नवा सवित्या॥
सुरदत्त धनुर्गुण रथ नेमि-ध्वजवासि भूतनादानीं।
कोपेन चमूचि कुही, स्वकुचां च्या जेविं पूतनादानीं॥

८. सब से प्राचीन नाटक कौन है, प्रमाण सहित लिखिए ११
९. भरतमुनि ने प्रवृत्ति शब्द की क्या व्याख्या की है। ११
१०. नाट्यमण्डप निर्माण का प्रकार लिखिए। १२

संस्कृत साहित्य ६ (मराठी)

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

सूचना—प्रश्न १ तथा २ के उत्तर मराठी भाषा में लिखिये, शेष प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में दीजिये।

(१) अ—एक ऐसा वाक्य बनाइये जिसमें "उद्देश्य" "नामवाक्य" हो।

आ—निम्न लिखित वाक्य का "वाक्यपरिच्छेद" कीजिये।

शीघ्रकोपी दुर्वास हातीं कमंडलू धारण करुन कराव ऋषी च्या आश्रमावत आला, तेव्हां विरहाने भ्रान्तचित्त झालेल्या शकुनले नें त्यास ढुरुन पाहिलें; परंतु तिचें मन ठिकाणीं व व्हतें, यासाठी तिनें त्याचेकड़े दुर्लक्ष केलें, व मुनीनें रागावून तिला कड़क शाप दिला, की तुझा प्रियपति तुला दीर्घकाल विसरेल।

इ—निम्नलिखित पद्य के संज्ञा शब्दों के कारक लिखिये। स्वर्गी इन्द्रसभेशि तुल्य दुसरी धात्री वरी शोभ लीं"।

ई—"भावेप्रयोग सकर्मक अथवा अकर्मक दोन्ही" प्रकार च्या क्रियापदां वरुन होतो"।

मराठी व्याकरण के ऊपरोक्त नियम को उदाहरण द्वारा सिद्ध कीजिये।

(२) अ—"गोंधला" क्या है? उसका पूर्णतया वर्णन कीजिये।

आ—निम्न लिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिये। और रेखाङ्कित शब्दों पर टिप्पणी दीजिये।

"मोरेमांव च्या मोरेसरा गोंधला ये गोंधला ये।

* * * *

जाखाई जोखाई गोंधला ये।

कवद्या ची यमाई गोंधला ये।

ई—इन पदों की पूर्व कथा लिखिये।

"जायराणी ची कथा"

काल्या चाफ्या ची कथा

आगन चासोळ्या चा प्रसंग।

(३) कमलकुमारी के चरित्र की आलोचना कीजिये।

(४) अ—मोरोपंत जी की जीवनी संक्षेप में लिखिये।

आ—मोरोपंत जी ने अपने महाभारत में किस प्रकार के छन्द का प्रयोग किया है ? उस छन्द का क्या लक्षण है ? और उस छन्द के तुकान्त में क्या विचित्रता है, उदाहरण सहित समझाइये।

(५) त्यावरि जातो उत्तर, त्याचे सारथ्य ये करायास।
सुखद इहामुत्रहि गो विप्रत्राणेत्थ जें करायास॥
देता झाला पूर्वी तुज निज सारथ्य सव्य साची हो।
सैरंध्री ची वाणी व्हाया गोवत्सभव्य साची हो॥
उठल्या उत्साहायाच्या त्या शांतश्रीमदुदधि वरिल हरी।
धरितां हनु न नु म्हणतां प्रणताचें कां न सुदधि वरिल हरी॥

अ—ऊपरोक्त पंक्तियां किसने किसको सम्बोधन करके किस समय कहीं थीं।

आ—उनका सरलार्थ लिखिये और यदि उनमें कहीं उपमा हों तो दर्शाइये।

(६) उत्तर निज तुरगां तें छाया चरणासि कौतुक पिटाली।
तो गर्जोनि कुरु कटक कर्णी वसवी ध्वजस्थ कपिटाली॥
कृप सैन्यासि म्हणे हो हो प्रासारिष्ट शांत न वधांवा।
राजा पार्थें सांगप सगुरू सगुरुसुत स शांतनव धावा॥

* * * *

शरपटलानें झांकी कुरु कटकालाचि तो न वासवित्या।
खचर म्हणति तेजस्वी लोपविता भेटला नवा सवित्या॥
सुरदत्त धनुर्गुण रथ नेमि-ध्वजवासि भूतनादानीं।
कोपेन चमूचि कुही, स्वकुचां च्या जेवि पूतनादानीं॥

खलवल जलनिधिमग्ना धेनु उसलल्या अलावु झाल्या हो।
हांसे विजय मनिहारे कां गोप संख्या मला बुझाल्या हो॥
ऊपरोक्त पंक्तियों का भावार्थ लिखिये।

इतिहास १

राजनीति

[परीक्षक—श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन, एम. ए., एल-एल. बी.]

समय ३ घंटे
पूर्णाङ्क १००

[५ प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल सकते हैं]

१. पैत्रिक समाज (patriarchal society) के लक्षण बतलाइए।

२. Liberty स्वाधीनता की व्याख्या कीजिए। बतलाइए भारतवर्ष में हिन्दू और मुसल्मानी राज्यों में कितनी स्वाधीनता थी।

३. राज्य के क्या क्या functions हैं? क्या आधुनिक समय में इनमें कुछ वृद्धि हुई है?

४. माकियावेली (Machiavelli) के सिद्धान्त (theory) की व्याख्या कीजिए और अपना मत प्रगट कीजिए।

५. हाब (Hobbes) और लाक (Locke) के सिद्धान्तों में क्या अन्तर है? उसके कारण बतलाइए।

६. सघट्ट राज्य Federal Government क्या होती है। संयुक्त राज्य अमरीका और जर्मनी की तुलना करके बतलाइए कि Federal Government कितने प्रकार की होती है।

७. राज्य के क़ानून बनाने की शक्ति legislative function के विकास और वृद्धि का इतिहास लिखिए।

८. मार्क्स (Marx) के समष्टिवाद की व्याख्या कीजिए।

९. स्वाम्य (Sovereignty) की परिभाषा कीजिए। इंग्लैण्ड में स्वाम्य कहाँ पर स्थित है।

१०. Political obedience (राजनैतिक आज्ञापालन) किन बातों पर निर्भर है। इस प्रश्न पर जो मतभेद हैं उसको व्यक्त कीजिए।

इतिहास २

[परीक्षक—श्री ताराचन्द, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[५ प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्णाङ्क मिल सकते हैं। भाग १ में से २ प्रश्न और भाग २ में से २ प्रश्न करना आवश्यक है]

१

१. १२६५ में पार्लमेन्ट का क्या संगठन (constitution) था ? व्यवस्था विधान (legislation) और कर निर्धारण (taxation) में पार्लमेन्ट के क्या अधिकार (powers) थे ?

२. Feudalism (फ्यूडलिज़म) की परिभाषा कीजिए । इंगलैण्ड में feudalism कहाँ तक प्रचलित हुआ और feudalism का कहाँ तक विकास (development) हुआ ?

३. १५ वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में न्याय सम्पादन (administration of justice) का क्या प्रबन्ध था ?

४. ट्यूडर (Tudor) वंश के राजत्वकाल में राज्य और पार्लमेण्ट का क्या सम्बन्ध था ? इसके क्या राजनैतिक कारण थे ?

५. कर निर्धारण पर पार्लमेन्ट को जिस प्रकार अधिकार मिला उसका इतिहास लिखिए।

६. कैबिनेट गवर्नमेन्ट की उत्पत्ति का इतिहास लिखिए।

२

७. ऐंग्लो सैक्सन और नार्मन जातियों का मिश्रण (mixture) किस प्रकार हुआ ?

८. रिचार्ड द्वितीय के समय में जो सामाजिक परिवर्तन (social resolution) हुआ उसके कारण लिखिए।

९. चार्ल्स १ और उसकी प्रजा में जो युद्ध हुआ उसका कारण लिखिए। इस युद्ध में प्रजा की विजय क्यों हुई ?

१०. अमरीकन स्वतन्त्रता के युद्ध (American War of Independence

का इतिहास लिखिए। अमरीका निवासियों की क्या शिकायतें थीं। उनके विजय के कारण लिखिए।

११. औद्योगिक विप्लव (industrial rovolution) क्या था और इंग्लैएड के जीवन पर उसका क्या प्रभाव पड़ा।

१२. १८८५ से १६१४ तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति (international politics) में इंग्लैएड ने क्या भाग लिया, कारण सहित लिखिए।

इतिहास ३

प्राचीन भारत

[परीक्षक—श्री रामप्रसाद त्रिपाठी, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

[निम्नलिखित प्रश्नों में से ग्यारहवें प्रश्न का अवश्य और किन्हीं अन्य पांच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।]

१. बौद्ध धर्म की उत्पत्ति किन धार्मिक और सामाजिक कारणों से हुई ? स्पष्टतः यह बतलाइए कि बौद्ध धर्म का भारतवर्ष के तत्कालीन तात्विक (दार्शनिक) विचारों से क्या सम्बन्ध था।

२. भारतवर्ष में तथा भारत के बाहर बौद्ध धर्म के प्रचार के वर्णन कीजिए और यह दिखलाइए कि इस धर्म के आचार विभाग के कठोर होने पर भी भारत एवं इतर देश के जन-समूह ने इसे क्यों शीघ्रता से अपनाया।

३. बौद्ध धर्म के ह्रास के आन्तरिक और वाह्य कारणों का निरूपण कीजिए।

४. चन्द्रगुप्त मौर्य की शासन व्यवस्था का सविस्तार वर्णन कीजिए। इस सम्बन्ध में आप को कौटिल्य के अर्थशास्त्र से क्या पता लगता है ?।

५. भारत के प्राचीन इतिहास के मुख्य स्रोतों की विवेचना कीजिए

और प्रत्येक स्रोत से मालूम होने वाली बातों के कुछ उदाहरण दीजिए।

६. बौद्ध काल में भारत वर्ष की आर्थिक अवस्था के विषय में आप क्या जानते हैं?

७. गुप्त साम्राज्य का एक नक़शा खींचिए। यह भी बतलाइए कि इस साम्राज्य का भारत वर्ष के इतिहास में क्या महत्व है?

८. हर्ष बर्धन शीलादित्य के समय में भारतवर्ष की धार्मिक और सामाजिक स्थिति का वर्णन कीजिए; वर्तमान धार्मिक और समाजिक अवस्था से उसकी तुलना कीजिए।

९. राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में आप अपनी सम्मति युक्ति सहित लिखिए।

१०. पुराणों के विषय में विन्सेण्ट स्मिथ, रीज़डेविड्स और पार्गिटर की सम्मतियां लिखिए और ऐतिहासिक दृष्टि से उनकी आलोचना कीजिए।

११. निम्नलिखित विषयों में से छः पर टिप्पणियां लिखिए। (अ) नलन्द (उ) तक्षशिला (इ) मोलोपो (क) चाणक्य (ख) पातञ्जलि (ग) नागार्जुन (घ) महावंश (ङ) विक्रम सम्वत् (च) महायान (छ) पृथ्वीराज रासो।

इतिहास ४

[परीक्षक—श्री ताराचन्द, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

(५ प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्णाङ्क प्राप्त हो सकते हैं)

१. महमूद ग़ज़नी के भारतवर्ष पर आक्रमण करने के समय उत्तरीय भारतवर्ष की राजनैतिक तथा सामाजिक अवस्था क्या थी?

२. महमूद ग़ज़नी और मुहम्मद ग़ोरी के आक्रमणों के बीच में प्रायः दो सौ वर्षों का समय हिन्दुओं को अपनी शक्ति संगठित करने के लिए मिला। किन कारणों से हिन्दुओं ने उस समय का उचित उपयोग नहीं किया।

३. मङ्गोलों के आक्रमण भारतवर्ष पर किस समय आरम्भ हुए और कब तक जारी रहे। उनका क्या प्रभाव मुसलमानी राज्य की राजनैतिक स्थिति पर पड़ा।

४. अकबर ने किन किन कारणों से विविध प्रान्तों को विजय किया? अकबर की विजय के क्या कारण थे?

५. अकबर की मालगुज़ारी (land revenue) की प्रणाली का वर्णन कीजिए और बतलाइए कि इस प्रणाली में कहाँ तक पुराने नियम थे और उसने क्या क्या नए नियम बनाए।

६. मुग़लों के सेना-विभाग का वर्णन कीजिए। सेना के संगठन का कहाँ तक राजनैतिक शक्तियों से सम्बन्ध था? संगठन पर इन शक्तियों का क्या प्रभाव था?

७. शिवा जी के उत्थान से पहले मरहटों की क्या अवस्था थी? क्या उस समय की स्थिति को देख कर यह अनुमान किया जा सकता था कि मरहटों का इतना अभ्युदय होगा।

८. मरहटों और औरङ्गज़ेब के युद्ध का इतिहास लिखिए। औरङ्गज़ेब के निष्फलता के कारण लिखिए।

९. औरङ्गज़ेब की मृत्यु के पश्चात् कौन कौन मुग़ल सूबेदारों ने स्वाधीन राज्य स्थापित कर लिये? इस प्रान्तिक स्वाधीनता के स्थापित होने को आप किसी प्रकार देश के लिए हितकर प्रमाणित कर सकते हैं?

१०. बाजीराव द्वितीय निज़ामुल्मुल्क और दिल्ली दरबार का आपस में जो सम्बन्ध रहा उस पर दृष्टि डालिए।

इतिहास ५

[परीक्षक—प्रिन्सिपल ताराचन्द, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

(इन प्रश्नों में से पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखे जायँ)

१. पुर्तगीज़ों और वलन्देज़ों (Dutch) में जो ऐशियाई व्यापार के लिए संघर्ष हुआ उसका वृत्तान्त परिणाम सहित लिखिए।

२. योरुपीय सौदागरों को किन कारणों से सहज में भारतवर्ष पर अधिकार जमाने का अवसर मिला। सविस्तर उत्तर लिखिए।

३. वृटिश इण्डिया कम्पनी के संगठन का वर्णन कीजिए और वतलाइए कि क्यों तिजारती कम्पनियों ने देश-विजय में सफलता प्राप्त की।

४. डूपले की नीति की आलोचना कीजिए और वतलाइए कि फ्रांसीसियों की निष्फलता के क्या कारण थे।

५. वारन हेस्टिङ्ग को किन किन कठिनाइयों से सामना करना पड़ा। इनको उसने किस प्रकार दूर किया। वारन हेस्टिङ्ग के चरित्र (character) की आलोचना कीजिए।

६. 'भारतवर्ष में अंग्रेज़ों के इतिहास पर योरुपीय घटनाओं का सदा बड़ा प्रभाव पड़ा है', इस कथन का वेलेज़ली और मिन्टो प्रथम के शासनकाल से उदाहरण देकर समर्थन कीजिए।

७. ब्रह्मदेश की विजय का वर्णन कीजिए। वृटिश सेना को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

८. हस्तक्षेप न करने की नीति किन विचारों पर निर्भर थी। इससे वृटिश को क्या क्या लाभ और हानियां हुईं। ग़दर तक का इस नीति का इतिहास लिखिए।

९. भारत का स्वाम्य कहां पर स्थित है और व्यवस्थापन (legislation) के लिए वह किस प्रकार से कार्य्य सम्पादन करता है?

१०. देशी राज्यों के साथ भारत सरकार की नीति में क्या क्या परिवर्तन हुए ?

११. १९०७ में भारत सरकार की रूस से जो संधि हुई उसकी शर्तें लिखिए और बतलाइए कि उससे सरकार की सीमा की नीति Frontier policy में क्या परिवर्तन हुए।

इतिहास ६

[परीक्षक—श्री ताराचन्द, एम. ए.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लेख लिखिए।

१. इसलाम का हिन्दू सभ्यता पर प्रभाव।

२. एकता के भाव की उत्पत्ति की बाधक और सहायक शक्तियां।

३. इण्डो सारासेनिक आर्कीटेक्चर।
(Indo-Saracenic Architectiure)

४. मुग़लों के समय में हिन्दुओं की दशा।
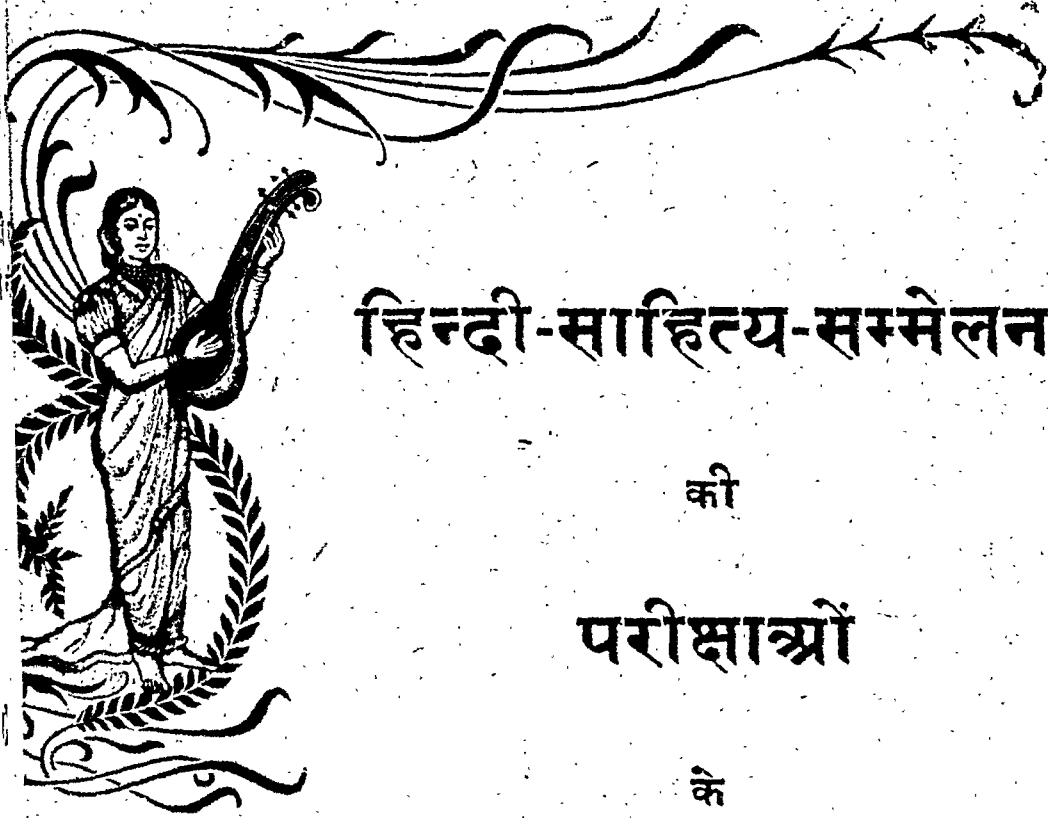
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

परीक्षाओं

के

प्रश्नपत्र

१९७१-७२

मूल्य ≡)

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की परीक्षाओं के प्रश्न पत्र

प्रथमा १९७१

पठित पद्य १

समय ३ घंटे

परीक्षक—परिडत शुकदेवबिहारी मिश्र, बी. ए.

१. महर्षि विश्वामित्र जब पृथ्वी का दान लेने गये थे, एवं जब साङ्गता की स्वर्णमुद्रा वसूल करने गये थे, तब प्रतिग्रह प्राप्ति की आशा रहते हुए भी उन्होंने महाराज हरिश्चन्द्र से क्रोध-प्रकाश क्यों किया? इससे उनका मुख्य अभिप्राय क्या था और वह अभीष्ट क्रोध-प्रकाश द्वारा क्योंकर सिद्ध हो सकता था? ६

२. निम्नलिखित प्रबन्धों का सरल हिन्दी में अनुवाद कीजियेः—

(अ) अहा! स्थिरता किसी को भी नहीं है। जो सूर्य उदय होते ही पद्मिनीवल्लभ और लौकिक, वैदिक दोनों कर्मों का प्रवर्त्तक था, जो गगनांगन का दीपक और काल-सर्प का शिखामणि था, वही इस समय परकटे गिद्ध की भाँति अपना सब तेज गवां कर देखो समुद्र में गिरा चाहता है। ८

(इ) सूरज धूम बिना की चिता सोऊ अन्त में लै जल मांझ बहाई।
बोलैं घने तरु बैठि बिहंगम रोवत सो मनु लोग लोगाई॥
धूम अँध्यार कपाल निसाकर हाड़ नछत्र लहू सी ललाई।
आनँद हेतु निसाचर के यह भूमि मसान कै राति बनाई॥ १०

३. भारतेन्दु जी ने सत्य हरिश्चन्द्र में डरावने और घृणा उत्पन्न करनेवाले वर्णनों की भी विशेषता क्यों रक्खी है? ८

४. नाटक का प्रभाव रोहिताश्व के पुनर्जीवित होने से अच्छा स्थिर रहा, अथवा उसके न जीने और शैव्या तथा हरिश्चन्द्र के भी मर जाने से ठीक पड़ता? इस प्रश्न का सतर्क उत्तर दीजिये। ११

५. गौरि शम्भु तन परिहरै अचल मेरु चल होय।
बोल्यो बोल हमीर को चलन हार नहिं सोय॥
इस दोहे का अर्थ करिये और इसका कारण लिखिये कि कवि ने पार्वती और शम्भु का वियोग असम्भव क्यों माना है? ६

६. संकट सुरेस को यथारथ निरखि देह दीन्ही है दधीचि पर-स्वारथ प्रमान कै । करुना कपोत की कहत सिविराज दये काटि काटि अंगनि तुला मैं तौल दान कै । दीन्हों सीस जगत जसीले जगदेव आजु छत्री मैं हमीर कलि कीरति अमान कै। प्रकट अकारथ मरन सबही को हमैं राखिबे सरन परस्वारथ प्रधान कै ॥

उपर्युक्त छन्द के प्रथम दो पदों में वर्णित दधीच और शिवि की कथाओं के वर्णन प्रायः दस दस पंक्तियों द्वारा कीजिये । कवि ने सबके मरण को अकारथ क्यों कहा है ? १४

७. निम्नलिखित चरणों का सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये :-
भाग्यो सुलतान जान बचत न जानि बेगि वलित बितुण्ड पै बिराजि बिलखाय कै । जैसे लगे जंगल मैं ग्रीषम की आगि चलैं भागि मृग महिष बराह बिललाय कै ।

यहां "बिराजि" शब्द का उपयोग उचित है अथवा अनुचित ? अपने उत्तर के कारण लिखिये और यह भी अनुमान कीजिये कि इस शब्द का प्रयोग क्यों हुआ ? ६

८. कहै वीर चौहान हम्मीर हट्ठी सुनौ साँच उज्जीर मोल्हन येरे । गढ़ा मण्डला आदि उज्जैन सारी जिते कोट बंके तिते जानि मेरे ॥ रहै साह राजी चहै वम्ब बाजी कहैं एक ना एक सौ आठ फेरे । पर्‌यो मीर पाछे धर्‌यो दण्ड डोला दियो जात नाहीं कहीं पास तेरे ॥

इस छन्द के तृतीय चरण में कवि ने बहुसंख्यक भाव की पुष्टि में एक सौ आठ की संख्या क्यों लिखी है ? ३

९. एक यहै रनथम्भ को खम्भ अहै चहुवान अजौं अरने को।
दण्ड भरै न हमीर हठी हर बार जुरै न मुरै मरने को ॥

जिस छन्द के उपर्युक्त दो चरण हैं उसका नाम क्या है? उसका लक्षण भी लिखिये । इन पंक्तियों के आदि में कौन गण प्रयुक्त हुआ है ? उसका देवता और फल भी लिखिये । छन्द के गणप्रयोग में कोई दूषण देख पड़ता है ? यदि हां तो कौन ? उसकी दोषशान्ति कैसे हुई है ? १६

१०. कुँवर और उमराय बने बिगरे कछु नाहीं ।
फूँक माहिं वे बनत फूँक ही सों मिटि जाहीं ॥

पै दृढ़ कृषक समाज देश को साँचो गौरव ।
नाश भये यक बार फेरि उपजन नहिं सम्भव ॥

उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ लिखिये और यह बतलाइये कि कुँअर और उमराय फूँक से क्योंकर बनते और मिटते हैं ? ७

११. निम्नलिखित चरणों में से किन किन में यतिभंग-दूषण है और किस किस स्थान पर ?

(क) मेरी लरिकाई की बैठक भूमि सोहावनि ।
(ख) काया की हानि को ज्ञान हू होन न पावै ।
(ग) मानत हो तर्कमें पादरी तिहि चतुराई ।
(घ) पास पहाड़ी ऊपर गिरिजा घर मन मोहै । ४

१२. या विधि दीन दुखीन उबारन कौ अभिमानी ।
त्रुटि हू वाकी सबै धर्म की ओर झुकानी ॥

उपर्युक्त द्वितीय चरण में कथित त्रुटियों के दो उदाहरण भारतवर्ष से दीजिये । ४

पठित पद्य २

समय २॥ घंटा ।

परीक्षक—पण्डित गंगा प्रसाद अग्निहोत्री ।

विशेष सूचना—(क) और (ख) दोनों में परीक्षार्थी को एक ही भाग का उत्तर देना होगा । दोनों मिलाकर जो उत्तर देगा, उसे दोनों में उस भाग के अङ्क मिलेंगे जिसमें उसने कम अङ्क पाये हों । तीनों में (ग) भाग करना सबके लिए आवश्यक है ।

(क) रामचरितमानस ।

१. इन पद्यों के सरल भावार्थ गद्य में लिखिये—

(अ) केकयसुता सुमित्रा दोऊ । सुन्दर सुत जन्मत भइँ ओऊ ॥
सो सुख सम्पति समय समाजा । कहि न सकहिं सारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहइ यहि भाँती । प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी । तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥
अगरधूम बहु जनु अँधियारी । उड़इ अबीर मनहुँ अरुनारी ॥

मन्दिर-मनि-समूह जनु तारा । नृप-गृह-कलससोइन्दुउदारा ॥
भवन-वेद-धुनि अतिमृदुबानी । जनुखगमुखरसमयरससानी ॥
कौतुक देखि पतङ्ग भुलाना । मासदिवस तेइ जात नजाना ॥२०

(इ) उदित उदय गिरि मञ्च पर रघुवर बाल पतङ्ग ।
बिकसे सन्त सरोज सब हरषे लोचन भृङ्ग ॥ ८

(उ) राम साधु तुम साधु सुजाना । राममातु तुम भलि पहिचाना ॥
जस कोसला मोर भलताका । तसफलदेउ उन्हें करिसाका ॥ ३

(ऋ) लता भवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ ॥
निकसे जनु युग बिमल विधु जलद पटल बिलगाइ ॥ ८

(ऌ) लषन उतर आहुति सरिस भृगुपति कोप कृसानु ।
बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुल भानु ॥ ६

(ए) नाथ कृपा मूरति अनुकूला । बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
जो पै कृपा जरैं मुनि गाता । क्रोध भये तनु राखु विधाता ॥ ७

२. ऊपरके पद्योंमेंजो शब्दालंकार हों उनका नामोल्लेख कीजिए। ८
३. ऊपरके पद्योंमें जो अर्थालंकार हों उनके सकारण नाम लिखिए।२०

(ख)—विनय पत्रिका ।

१. नीचे के पदों का भावार्थ सरलहिन्दी में लिखिये—

(अ) जन्म गयो बादिहिं बर बीति ।
परमारथ पाले न परो कछु अनुदिन अधिक अनीति ।
खेलत खात लरिकपन गोचलियौवन युवतिन लिये जीति ॥
रोग वियोग सोक स्रम संकुल बड़ी वयस वृथाहि गई बीति।
राग रोग ईर्षा विमोह वस रुची न साधु समीति ॥
कहे न सुने गुनगन रघुपति के भई न रामपद-प्रीति ।
हृदय दहत पछिताय अनल अब सुनत दुसह भवभीति ॥
तुलसी प्रभुते होय सो कीजिय समुझि बिरद की रीति । २०

(इ) ऐसेहि जन्म समूह सिराने ।
प्राननाथ रघुनाथ से प्रभु तजि सेवत चरन बिराने ।
जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने ॥
सूखत वदन प्रसंसत तिन कहं हरिते अधिक करि माने ।
सुख हित कोटि उपाय निरन्तर करत न पाँय पिराने ॥
सदा मलीन पन्थ के जल ज्यों कबहुं न हृदय थिराने।

यह दीनता दूर करिबे को अमित यतन उर आने ॥
तुलसी चितचिन्ता न मिटै बिनु चिन्तामणि पहिचाने । २०

(उ) कलिकाल अपर उपाय ते अपाय भये जैसे तम नासिबे को चित्र के तरनि । ४

(ऋ) तोहिँ मांगि माँगनो न माँगनो कहायो,
सुनि स्वभाव सील सुजस जाचक जन आयो,
पाहन पसु विटप विहग अपने कर लीन्हे,
महाराज दसरथ के रंक राव कीन्हे । १०

२. इन पदों में जो अलंकार हों उनका सकारण नाम लिखिये । १६

३. (ऋ) में अन्तिम दो पदों में, पाहन, पसु, विटप, विहग, कौन हैं तथा किस 'रंक' के 'राव' किये जाने की चर्चा है ? ८

(ग)—शिवाबावनी ।

(अ) इस पद्य का हिन्दी में सरलार्थ लिखिये ।

जिन फन फुतकार उड़त पहार भार
कूरम कठिन जनु कमल बिदलिगो ।
विष जाल ज्वालामुखी लवलीन होत जिन
भारन चकारि मद दिग्गज उगलिगो ॥
कीन्हो जेहि पान पय पान सो जहान कुल
कोलहू उछलि जल सिन्धु खल भलिगो ।
खग्ग खगराज महाराज सिवराज जू को
अखिल भुजङ्ग मुगल दल निगलिगो ॥ ८

(इ) उक्त पद्यमें जो अलङ्कार हो उसका नाम कारणसहित लिखिये । ७

सूचना—सुन्दर और सुवाच्य लिपिके लिए ५ अङ्क दिये जायंगे ।

पठित गद्य

समय ३ घन्टे

परीक्षक—पं० मधुमंगल मिश्र, बी० ए०

१. पहिले ४ भागों (क ख ग घ) अथवा पिछले ५ भागों (ङ च छ ज झ) का आशय बोलचाल के शब्दों में स्पष्ट करके लिखिये ।

(क) सरस्वती भी धन्य है ! जो इनके मुखकमल के सम्पर्क का

सुख अनुभव करती हुई, ऐसे महात्मा के प्रसन्न गंभीर मानस में राजहंसी सी वास करती है। ४

(ख) बाहर तो तूमतड़ांग और लिफाफे से रहते थे; पर भीतर मियां के सिवाय तीन सनहकी के और कुछ न था। ३

(ग) पञ्चानन में कसौटी के समय चालचलन की शिष्टता भी चन्दू ही के टक्कर की थी। इसी से दोनों की पटती भी थी। ४

(घ) कहीं उस आलवाल के चारों ओर कटीले पौधे न ऊग आये हों ? जब तक उन्हें उखाड़ न फेंके तब लों चतुर माली की सराहना ही क्या। ५

(ङ) कलकत्ते में वङ्गभाषा के आजकल जो नामी पत्र कहलाते हैं वे उस समय भविष्य के गर्भ में निहित थे। २

(च) सब से अधिक सामयिक 'बातों का समावेश और उन पर आलोचना है। चाहे राय कुछ ही हो, पर उसमें वह मसाला तो होना चाहिये जो एक दैनिक पत्र को चाहिये। ४

(छ) ब्राह्मण लोग हिन्दू जाति के अगुए हैं। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि बहुत से ब्राह्मणों ने पढ़ना लिखना छोड़ दिया है। परन्तु यह समय की गति है। उनका प्रभुत्व ज्यों का त्यों बना है। ३

(ज) खूब फक्कड़बाजी की नौबत आई थी। उर्दू के तूतियेहिन्द और अवधपञ्च में जैसी नोकझोंक हुई थी उसी का नमूना इन दोनों की छेड़छाड़ में था। ४

(झ) अकेली गङ्गा हैं। लम्बी चौड़ी वासनाओं का निवास उस स्थान में नहीं। आकाश पाताल को एक करने वाले विचारों का वहाँ प्रवेश नहीं होता। ३

२. नीचे लिखे शब्दों का उपयोग अपने बनाये वाक्यों में करिए:–
जँगरैतिन टोह; तरल; अठखेली चाल;लटके; नितान्त; उद्धृत; संवाददाता; चिट्ठा; तड़ितसमाचार। ५

३. नीचे लिखे शब्द किस आशय को प्रकाशित करते हैं :–
आलोचना; समालोचना; प्रत्यालोचना; पण्डिताइन; पण्डिता; सठिया जाना; गदहपचीसी; घुणाक्षरन्याय। ४

४. इन कहावतों का आशय समझाइए :—
आठ वार नौ त्यौहार; कालाअक्षर भैंस बराबर; हाथी का खाया कैथ; रुपयों का ठिकरी करना; उलटे छुरा मूँडना;

रँडड़ी के लिये मसजिद ढहाना। ६

५. अनुप्रास किसे कहते हैं? यदि वह गद्य में आता हो तो उसके दो तीन उदाहरण कण्ठ ही या बना के दीजिए। ६

६.(क) पहले प्रश्न के (घ) भागमें आशय को सीधे २ न कहके व्यञ्जना से प्रकाश किया है। उस वाक्य में उपमान, उपमेय, साधारण धर्म और वाचक शब्द सब खोल२ कर अलग२ लिखिए। यदि लुप्तोपमा हो तो लुप्त अङ्गों को कोष्ठक में लिखिए। ८

(ख) उत्प्रेक्षालङ्कार किसे कहते हैं? उदाहरण दे कर समझाइए। ४

७.(क) इन शब्दों के समास बताइए और लक्षण लिखिये :—
सप्ताह; मुखकमल; यथाशक्ति; निरक्षरभट्टाचार्य; संवाददाता। १०

(ख) इन तद्धित वा कृदन्त शब्दों के प्रकार बताओ :—पढ़ना-लिखना; फक्कड़-बाजी; नोकझोंक; कतरनी; सनहकी; दयालु; सरहना, पातञ्जल, दौर, पढ़ी लिखो। ५

८.(क) हिन्दी में कर्त्ता का चिन्ह 'ने' कहाँ २ नहीं आता? ५

(ख) क्या विशेषणों का रूप विशेष्य के अनुसार बदलता है? उदाहरण देके अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए। ५

९.(क) जिन ७ शब्दों के नीचे रेखा खींची हैं उनकी व्याख्या कीजिए। ७

(ख) विसर्ग के स्थान में श, ष वा स आदेश किन २ दशाओं में होता है? ३

१०. नीचे लिखे वाक्यों में अशुद्धियाँ हों तो सुधारिए:—
पण्डितमानी लोग अपना भूल स्वीकार नहीं करते।
पण्डितजी आसन में बैठे हैं।
पण्डित ने लाठी को सीधी किया।
पण्डित कलुआ का बच्चा प्यार करता है।
पण्डित! घास, पेड़, बूटी, लता, वल्ली वनस्पति कहाती हैं।
पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की कृपा उस सम्बन्ध का कारण हुई थी। ६

सूचना—सुन्दर अक्षर और शुद्ध लिखने के लिए १० अङ्क रक्खे गये हैं।

अपठित गद्य और पद्य

समय २॥ घन्टा

परीक्षक—बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, एम. ए. एलएल. बी,

(क) मेरे हृदय-गगन में अन्धकार छा लिया। मेरे मनरूपी *नन्दन कानन का *पारिजात पुष्प मालती थी। किन्तु दैत्य-विशेष ने उसे अपहरण किया।

(ख) सन्ध्या हो गयी। कोकिल बोलउठा। पर उसको भी चुप हो जाना पड़ा। एक सुन्दर कोमल कंठ से निकली हुई रसीली तान ने उसे भी चुप कर दिया। मनोहर स्वर-लहरी उस सरोवरतीर से उठ कर तट के सब वृक्षों को गुंजरित करने लगी। मधुर *मलयानिल-ताड़ित जललहरी उस स्वरके ताल पर नाचने लगी। हरएक पत्ते ताल देने लगे। अद्भुत आनन्द का समावेश था। शान्ति का *नैसर्गिक राज्य उस छोटी रमणीय भूमि में मानों जम कर बैठ गया था।

(ग)१–हिन्दू जाति एवं हिन्दुस्तान की महानता का प्राण भारत-वासियों का आधार सूत्र हिन्दी भाषा ही है।

२–यह चिट्ठी लिंकन की महनीयता का अच्छा परिचय देती है।

३–वह घटना जितनी कारुणिक है उतनी ही महत्वपूर्ण भी है। इसी से उसके महत्व की महिमा बहुत अधिक है।

४–पद्यकाव्य की ओर कवियों की रुचि तथा उनकी शक्ति की प्रवृत्ति ऐसी हो गयी है कि गद्य-काव्य की महत्ता को समझना उनके लिए *दुरूह हो गया है।

(घ) कह्यो है पचायो अन्न पंडितपुत्र पतिव्रता स्त्री सुसेवित राजा विचारि करि कहिबो इनते बिगार कबहूं न उपजै। तृषावन्त असन्तोषी क्रोधी सदा सन्देही जो और के भाग की आश करै अति दयावन्त ये छहौं सदा दुःखी रहैं।

१. (क), (ख) और (ग) में जिन शब्दों के नीचे रेखा खिची हुई है उनके मुहाविरे और प्रयोग पर अपने विचार प्रकट कीजिए। ३

२. जिन शब्दों के पूर्व यह * चिन्ह लगा है उनमें प्रत्येक की व्याख्या कीजिए। ५

३(ग) में 'महानता', 'महनीयता', 'महत्व', और 'महत्ता' इन

पांचों की अलग अलग व्याख्या कीजिए और साथ ही इनके रूपों पर और दिये हुए वाक्यों में इनके प्रयोगों पर अपने विचार प्रकट कीजिए। ३

३. ऊपर दिये हुए (क) से (ङ) तक के वाक्यों में जिन जिन अलंकारों का प्रयोग हुआ है उनके नाम लिखिए और अनलंकृत साधारण भाषा में उन्हीं वाक्यों को लिखकर उनका आशय प्रकट कीजिए। २०

पद्य

(क) पत्रों पुष्पों रहित विटपी विश्व होवे न कोई,
कैसा ही हो सरस-सरिता वारिशून्या न होवे,
ऊधो, सीपी सदृश न कभी भाग फूटे किसी का,
मोती ऐसा रतन अपना आह! कोई न खोवे।

(ख) सतत शब्दित गेह समस्त में,
विजनता परिवर्द्धित थी हुई,
कुछ विनिद्रित हो जिनमें कहीं,
झनकता इक झींगुर भी न था।
वदन से तज के मिस धूम के,
शयनसूचक श्वास-समूह को,
झलमलाहट-हीन-शिखा लिये,
परम निद्रित सा गृहदीप था।

(ग) रतन अनेक शैल उपजावत, नहिं छवि तासु तुषार घटावत।
थोरे दोष कोटि गुन माहीं, शशि महँ अङ्क सरिस दबि जाहीं।
धातु विचित्र शिखर सोइ धारत, जो लहि तन अपसरा सँवारत।
परत जासु मेघन महँ जोती, साँझ अकाल मनहुं नित होती।

ऊपर की कविता में प्रत्येक का भावार्थ सरल भाषा में लिखिए। १६

जितने अलंकार इन पद्यों में आये हों उनके नाम और लक्षण लिखिए। [illegible]

खड़ी बोली और पड़ी बोली दोनों की कविताओं के विषय में अपनी युक्तिपूर्ण सम्मति लिखिए, परन्तु लेख [illegible] से अधिक न हो। [illegible]

(क) जगदीश, मधुकर, गौरीश, मनोरथ, [illegible], इनका

सन्धि बताइये और नियम लिखिए। ५

(ख) धर्मात्मा, प्रजापति, गौरीशंकर, विद्यावारिधि, इनका समास लिखिए। ५

(ग) राम ने सीता को ग्रहण किया। लक्ष्मण ने राम की सेवा की विभीषणका भाई बड़ा दुष्ट था। राजा भूखोंको अन्न देता है लड़का गाड़ीसे गिर पड़ा। इन वाक्यों में रेखाङ्कित पदों में कौन कारक है? लक्षण सहित लिखिए। १२

(घ) खाना, पीना, सोना, पढ़ना धातु के परोक्षभूत, वर्त्तमान और सामान्य भविष्यत् काल के मध्यम पुरुषके रूप लिखिए। १२

गद्य-लेख-रचना

समय ३ घंटे

परीक्षक—पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी, बी० ए०

१—निम्नलिखित चार विषयों में से किसी एक पर गद्य लेख और चाहो तो पद्य लेख लिखिए:— १०

(क) रामायण में आचार या व्यावहारिक नीति।

(ख) मितव्ययता या किफ़ायत।

(ग) हिन्दुओं के तेवहार।

(घ) प्रातःकाल की शोभा।

भूगोल

समय ३ घंटा।

परीक्षक—पं० कृष्णशंकर तिवारी, बी. ए.

१. दिन क्योंकर घटता बढ़ता है और वर्षमें वह कितनी वार और कब कब रात्रि के बराबर होता है? १२

२. ऋतु के बदलने का क्या कारण है? ८

३. जलाशयों का जल क्यों सूख जाता है और उसकी क्या क्या गति होती है? ८

४. एशिया की पश्चिमी सीमा क्या है और इस महाद्वीप के किन किन भागों में घनी बस्ती है? १२

५. तिब्बत से कौन कौन सी नदियाँ निकलती हैं और कहाँ कहाँ गिरती हैं ? — ८
६. एशिया के प्रधान पहाड़ों और झीलों के नाम लिखिए। — ८
७. एक जहाज़ कराँची से रंगून जाता है। उसके रास्ते में किन किन नदियों के मुहाने और कौन कौन बन्दर पड़ेंगे ? — १४
८. नीचे लिखे स्थान भारतवर्ष के किस भाग में हैं :—
हरद्वार, मुलतान, राजकोट, अहमदाबाद, जबलपुर, पटना, शिलाँग, पुरी और रामेश्वर। — ५
९. राजपूताना और मध्य भारत के प्रथम रजवाड़ों के नाम लिखिए। — ५
१०. भारतवर्ष का एक मानचित्र (नक़शा) खींचिए जिसमें सहायक नदियों के सहित गङ्गा और सिन्धु तथा अर्वली, विन्ध्या और नीलगिरि एवं दिल्ली, लाहौर, अजमेर, मुम्बई, हैदराबाद, मद्रास, कलकत्ता और बनारस का स्थान दिखलाइए। — २०

इतिहास

समय २॥ घंटा

परीक्षक—पं० हरिमङ्गल मिश्र, एम. ए.

१. रामायण का इतिहास संक्षेप-रीति से लिखिए और यह भी बतलाइए कि लोगों को रामायण से क्या शिक्षा मिलती है ? — ८
२. महाराज विक्रमादित्य के विषय में आपकी क्या सम्मति है ? प्रमाणपूर्वक लिखिए। — ७
३. कालिदास भारतवर्ष में क्यों प्रसिद्ध हुए ? उनके रचित ग्रन्थों की नामावली लिखिए। — ५
४. मेगस्थनीज़ के वर्णनानुसार चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य-प्रबन्ध का विवरण लिखिए। — ८
५. अशोक, मौर्य और हर्षवर्द्धन का संक्षेप वर्णन कीजिए। — १२
६. अकबर के राज्य की स्थिरता और औरङ्गज़ेब के राज्य के विनाश के मुख्य मुख्य कारण बतलाइए। — १०
७. मरहठों ने और सिक्खों ने किस प्रकार से भारतवर्ष में अपनी उन्नति की ? उनके अधःपात के कारण लिखिए। — १४

८. मार्क्विस आफ् हेस्टिङ्ग अथवा लार्ड विलियम बेंटिङ्क की कारग्वाइयों का संक्षिप्त वर्णन लिखिए। १२

९. लार्ड डेलहौज़ी के क्या सिद्धान्त थे? उनसे भारतवर्ष तथा इँगलैंण्ड-निवासियों को क्या क्या लाभ हुए? १२

१०. ब्रिटिश-राज्य से भारतवर्ष को जो जो लाभ हुए उनको संक्षिप्त रीति से दिखलाइये। १२

आरम्भिक विज्ञान और स्वास्थ्य-रक्षा

समय २॥ घंटा

परीक्षक—पं० गोमतीप्रसाद अग्निहोत्री, बी. एससी.

१. चाँदी की एक छोटी सी जँजीर का आयतन जानना है। कोई युक्ति बताइए। १२

२. पदार्थ की तीनों अवस्थाओं के लक्षण बताइए। क्या वही पदार्थ तीनों अवस्थाओं को प्राप्त हो सकता है? प्रमाण दीजिए। १२

३. (क) सीसे के एक टुकड़े का वज़न १ तोले ५ माशे है। पानी में तौलने से वह ८ तोले ७ माशे उतरता है तो बताओ कि सीसे का आपेक्षिक घनत्व क्या होगा। ५

(ख) यदि वही टुकड़ा शर्बत में तौलने से ८ तोले ६ माशे आवे, तो शर्बत का आपेक्षिक घनत्व बताइए। ४

४. किसी प्रयोग का वर्णन कीजिए जिससे यह सिद्ध हो कि वायु गरमी पाकर फैल जाता है। १२

५. भोजनसम्बन्धीय किन किन नियमों का पालन करना स्वास्थ्य-रक्षा के लिए आवश्यक है? १५

६. पानी के शुद्ध करने की रीतियाँ कौन कौन सी हैं? उनका संक्षेप में वर्णन कीजिए और बताइए हर एक से किस किस प्रकार की अशुद्धियाँ दूर होती हैं? १५

७. श्वास के द्वारा ली गई वायु का शरीर में क्या उपयोग होता है? शुद्ध वायु के मुख्य अवयवों के नाम लीजिए और बताइए कि निःश्वास वाली वायु में कौन कौन सी अशुद्धियाँ रहती हैं? १०

८. 'व्यायाम से लाभ' पर छोटा सा लेख लिखिए। १५

प्रथमा १९७२

साहित्य १

[परीक्षक—पं० मन्नन द्विवेदी गजपुरी, बी. ए.एम. ए. एस्. बी. एफ़.बी. एस्. एस]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१० प्रश्नों में किसी ८ के लिए पूरे नम्बर दिये जायँगे

१. सवैया, सुन्दरी छन्द, सोरठा, मन्दाक्रांता, शिखरिणी और वसंततिलका के लक्षण लिखिए और उदाहरण भी दीजिए। स्वरचित उदाहरणों पर विशेष ध्यान दिया जायगा।

२. अलंकार, उपमा, रूपक और व्याजस्तुति की परिभाषा और उदाहरण लिखिए।

३. निम्न लिखित पदों के अर्थ लिखिए और यह भी बतलाइये कि इनमें कौन से छन्द और अलंकार हैं :—

(क) बदल न होहि दल दक्षिण घमंड माहिँ, घटा जू न होहिँ दल सिवाजू हँकारी के। दामिनी दमक नाहिँ खुले खग्ग बीरन के, बीर सिर छाप लख तीजा असवारी के।

(ख) अपने बल सो लावहीं, यद्यपि मार शिकार।
तदपि सुखी नहिं होत हैं, राजा सिंह कुमार॥

(ग) सोहत जनु युग जलज सनाला।
शशिहिं सभीत देत जयमाला॥

(घ) उवै भानु पच्छिम प्रतच्छ दिन चन्द्र प्रकासै।
उलटि गंग बरु रहै कामरति प्रीति विनासै।
तजै गौरि अरधंग अचल-ध्रुव आसन चल्लै।
अचल पौन बरु होय मेरु मंदर गिरि हल्लै।
सुरतरु सुखाइ लोमस मरै मीर संक सब परिहरौं।
मुख बचन, बीर हम्मीर को बोलि न यह बहुरो टरौं।

४. पिंगल में कितने गयागण दग्धाक्षर बतलाये गये हैं? उन का वर्णन कीजिए और यह भी लिखिए कि आपकी राय में उनके नियमों का पालन कविता के लिए कहाँ तक आवश्यक है।

५. निम्न लिखित पदों में यदि कोई दूषण हो तो लिखिए।

(क) या विधि दीन दुखीन उबारन कौ अभिमानी।

(ख) नृपनन्द काम समान चातक नीति जर जर जर भयो।

(ग) तहँबाग डोलहिं कुमुद बासित गंधवंती वात सो।

६. गोस्वामी तुलसीदास, चन्द्रशेखर कवि, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र और अंगरेज़ी कवि गोल्डस्मिथ के संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखिए।

७. मुद्राराक्षस की संक्षिप्त कथा लिखते हुए चाणक्य और अमात्य राक्षस के चरित्र की तुलना कीजिए।

८. राम चरित मानस से, भरत और लक्ष्मण, कौशल्या और सुमित्रा, जनक और दशरथ के चरित्र की तुलना कीजिए।

९. निम्न लिखित पदों का अर्थ लिखिए और यह भी बतलाइये कि ये किसके और कहाँ के वचन हैं।

कानन कठिन भयंकर भारी। घोर घाम हिम वारि बयारी।
कंदर खोह नदी नद नारे। अगम अगाध न जाहिं निहारे।
भोग रोग सम भूषण भारू। यम यातना सरिस संसारू।
कोक शोक प्रद पंकज द्रोही। औगुन बहुत चन्द्रमा तोही।
नहिं असत्य सम पातक पुञ्जा। गिरि सम होहिं कि कोटिक गुञ्जा।
जाकर जापर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कुछ संदेहू।

पति देवता सुतीय महँ, मातु प्रथम तुव रेख।
महिमा अमित न कहि सकहिं, सहस शारदा शेष॥

कहइ करहु किन कोटि उपाया। इहाँ न लागहि राउर माया।

१०. भूषण कवि और महाराज शिवाजी के विषय में जो कुछ जानते हो लिखिये। शिवा बावनी का सर्वोत्तम पद जो याद हो लिखिये।

साहित्य २

[परीक्षक—पं० शुकदेव विहारी मिश्र, बी ए.]

समय तीन घंटे

१. ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। चार ऐसे ईकारान्त शब्द लिखिये जो स्त्रीलिंग न हों। ८.

२. कृत और कृदन्त शब्दों के लक्षण लिखिये और कृदन्त शब्दों के चार उदाहरण दीजिये। ८

३. निम्न वाक्योंका सरल हिन्दी में अनुवाद कीजिये :— १२

(अ) जिसे छुओ, वही अंगारेसा गरम बोध होता है। मानो त्वगिन्द्रिय शीत स्पर्श से निराश हो जलमें शैत्यगुणका निर्देश करने वाले कणाद मुनि की बुद्धि का भ्रम मान बैठी हो। १४

(आ) उस शुभ्र ज्योत्स्नापूर्ण विभावरी में सुधाधर अंशुमाली से प्राप्त किरणों द्वारा अभ्रंलिह उच्च शाखोगण की शाखिकाओं को भी धवलित कर रहा था।

४. ग्रन्थ चुम्बक और पंडित में क्या भेद है ? ग्रन्थ चुम्बक किसे कहते हैं और ऐसे लोगोंमें कौनसे दोष प्रायः पाये जाते हैं ? १२

५. तोपों से गोले और शत्रु शरीरों से प्राण साथ ही निकलेंगे, वरन् तोपों का नाम सुनकर ही शत्रुगण युद्धस्थल में हहर हहरकर मर जावेंगे। तोपोंकी गरज तो युद्धस्थलमें पीछे सुन पड़ेगी और शत्रुगण हमारे प्रतापानल से सन्दग्ध होकर पहिले ही मर जावेंगे।

उपर्युक्त वाक्यों में कौन कौन अलंकार हैं सो समझाकर लिखिये। उन अलंकारों के लक्षण भी कहिये। ८

६. बनारस में यह जो बनारस गज़ट है। १२
इबारत सबिसकी अजब ऊट पट है।
मोहर्रिर बिचारा तो है वासलीका।
चले क्या करे यह कि तहरीर भट है।

इस पत्र का ठीक नाम क्या था ? कविने उपर्युक्त पद्य में भट शब्द क्यों लिखा ? यह पत्र किसकी सहायता से कब निकला और इसका सम्पादक कौन था ? इसकी भाषा कैसी थी ?

७. कवि बचन सुधा नाम्नी पत्रिका के विषय में कुछ मुख्य २ बातें लिखिये। १४

साहित्य ३

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

[परीक्षक—अध्यापक श्यामसुन्दर दास, बी. ए., एफ. वी. एस. एस.]

निम्न लिखित विषयों में से किसी एक विषय पर एक निबन्ध लिखिए जो उत्तर पुस्तक की कम से कम १०० और अधिक से अधिक २०० पंक्तियों में हो :—

१. किसी पुष्पवाटिका की संध्या समय की शोभा का वर्णन।
२. तुलसीदासकी रामायणका भारतवासियोंके सामाजिक जीवन पर प्रभाव।
३. जो सबको प्रसन्न करना चाहता है वह किसी को भी प्रसन्न नहीं कर सकता।

गणित

[परीक्षक—अध्यापक ज्योति प्रसाद बेजल, एम. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१. एक मनुष्य ने ४९ मन २५ सेर चना एक रुपये में १४$\frac{१}{४}$ सेर की दर से मंडी में ख़रीदे। गोदाम में लाने के लिये उसको २=)॥। तुलाई, ३।=)॥ चुंगी और १।) मज़दूरी देनी पड़ी बतलाइये कि उस को चना किस भाव गोदाम में पड़ा। १२
२. उसी चने को वह ६ महीने के बाद बेचता है, कुल क़ीमत पर उसको १०॥) फ़ी सैकड़ा सूद देना पड़ा और फ़ी सेर एक छटांक

घुनसे कमी हुई। बतलाइये कि अगर वह १३ सेरकी दरसे चना वेचे तो उसको फ़ी सैकड़ा क्या लाभ या घाटा होगा। १२

३. दो मनुष्योंने एक महाजनसे बीस बीस रुपये उधार लिये, एकने साल भरके बाद महाजन को २२ रुपये चुकाए और दूसरे ने दो रुपये महीनेके हिसाबसे बाईस रुपये अदा किये। बतलाइये कि महाजनको किसने अधिक दिया। सूदकी दर दस रुपया सैकड़ा सालाना है। १६

४. बतलाइये कि

$$\frac{\cdot१ \times \cdot१}{२५ \times \cdot२५} \times \frac{३\cdot२५ \times ३\cdot२५}{\cdot४ \times \cdot६३} + \frac{१\cdot२५ \times २}{६\cdot५ \times \cdot७} \text{ का } \frac{५२६ \times \cdot३१५६}{२७\ ४५ \div \cdot६२५} \text{ रुपया}$$

तीन रुपये चार आने का कौन सा भाग है। १६

५. सरल रूपमें लाइये

$$\frac{\frac{३}{७} - \frac{२}{९}}{\frac{३}{७} + \frac{२}{९}} \text{ का } २\frac{११}{२६} \div \frac{४}{१३ - ३\frac{८}{९}} + ३\frac{११}{१६} - \frac{३}{३ - १\frac{१०}{१३}}$$

१०

६. व्यापारिक रीतिसे ४९ मन ३९ सेर १५ छटाँक ४ तोले गेहूंकी क़ीमत रुपये पीछे १० सेर $४\frac{१}{२}$ छटाँक की दरसे निकालिए। १०

७. एक मनुष्यने एक दीवार ८० फुट लम्बी दस फुट ऊंची और एक फुट दो इञ्च चौड़ी बनवाई। दो राज आठ आने रोज़पर और दो मज़दूर चार आने रोज़पर लगाये। ५० फुट दीवार रोज़ तैयार होती है। कितने रोज़में दीवार तय्यार हो जावेगी? इस मकानमें ९ इंच लम्बी $४\frac{१}{२}$ इंच चौड़ी और ३ इंच मोटी ईंट लगायी गयी और $\frac{१}{४}$ इंच गारा हर ईंट के जोड़ने में लगाया गया, बतलाइये कि कितनी ईंटें इसमें लगीं और अगर सात रुपये हज़ार ईंटकी क़ीमत है तो कुल ईंटों की क्या क़ीमत होगी? अगर हज़ार पीछे सवा रुपये ढुलाई दी जाय, और दो आने गिनवाई लगे तो सारी दीवारकी क्या लागत होगी? २८

इतिहास

[परीक्षक—पं० हरिमंगल मिश्र, एम. ए. एस. सी.]

समय ३ घंटे, पूर्णाङ्क १००

१. आर्य जातिके धर्म और आचार व्यवहारके विषयमें जो कुछ जानते हो लिखिये। ८
२. रामायण और महाभारतसे विद्यार्थियोंको क्या शिक्षा मिलती है? १०
३. भगवद्गीता कौनसा ग्रन्थ है? उसकी शिक्षाका निचोड़ लिखिये। ८
४. वर्द्धमान महावीरके क्या सिद्धान्त थे? उसने कौनसा नया मत चलाया? १०
५. फ़ाहियान कौन था? भारतवर्षके राज्यप्रबन्धका जो कुछ वर्णन उसने लिखा हो संक्षेपसे लिखिये। १०
६. राजपूत जाति भारतवर्षमें कहाँसे आयी? उसके अभ्युत्थानका संक्षिप्त वर्णन लिखिये। १२
७. मुहम्मद तुग़लक़के राज्यकालका संक्षिप्त वर्णन लिखिये। १०
८. क्या शाहजहां सचमुच एक नेक बादशाह होगया है? इस विषयमें अपनी सम्मति युक्ति पूर्वक लिखिये। ९
९. मार्कुइस वेलेज़लीकी कार्यवाहियोंका संक्षेपमें वर्णन कीजिये। ११
१०. निम्न लिखित पुरुषोंका संक्षिप्त वर्णन लिखियेः—हर्षवर्द्धन, बख़ियारख़िलजी, अबुलफ़जल, शिवाजो, राघोबा और लार्ड लेक। १२

भूगोल

[परीक्षक—पं० कृष्णशङ्कर तिवारी, बी. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१. भूगोल किसे कहते हैं और उसके कितने भेद हैं? प्रत्येक भागके सीखनेसे क्या प्रयोजन है? ८

१. पृथ्वी कैसे बनती है और गरम पानीके सोतोंके पाये जानेका क्या कारण है ? १०

३. ओस क्या है और किस तरह बनती है ? जब आकाशमें बादल होते हैं तब ओस क्यों नहीं गिरती ? १२

४. वायुके भौतिक पदार्थ कैसे समझ सकते हैं और पृथ्वीको वह किस प्रकार घेरे हुए है ? १०

५. एक मनुष्य प्रयागसे पूरबकी तरफ़ रवाना होकर पृथ्वीकी परिक्रमा कर फिर प्रयाग आना चाहता है। लिखिये कि उसके मार्गमें स्थल और जलके कौनसे प्रसिद्ध भाग क्रमसे पड़ेंगे ? १६

६. (क) पृथ्वीके किसी टुकड़ेका नक्शा किस प्रकार बनाया जाता है और नदी और पहाड़ किस भांति दिखाये जाते हैं ? १२

(ख) संयुक्त प्रान्तका एक नक्शा खींचिये और उसमें उसके प्रसिद्ध नगर और नदियोंके स्थान दिखलाइये ? १२

७. भूमण्डलके विभिन्न महाद्वीपोंकी कोई मुख्य नदियाँ और उनके बहनेकी राह बतलाइये ? १०

८. द्वीप, अन्तरीप, डेल्टा, खाड़ी, और डमरूमध्य इनकी परिभाषा और प्रत्येक के दो २ उदाहरण लिखिये ? १०

प्रारंभिक विज्ञान और स्वास्थ्य-रक्षा

[परीक्षक—अध्यापक गोमती प्रसाद अग्निहोत्री, बी. एस सी]

समय ३ घंटे, पूर्णाङ्क १००

१. नमक और गंधकको संग पीसकर एक बुकनी बनायी गयी अब इन दोनोंको अलग अलग करनेकी कोई युक्ति बतलाइए। १२

२. 'रवा' किसे कहते हैं ? फिटकरीके अच्छे बड़े बड़े रवे बनाने की रीति क्या है ? १०

३. (१) तांबा और (२) पानी—इन पदार्थोंकी जाँच करनेसे उनके विषयमें आपको कौन कौन सी बातें मालूम हुई ?

४. (क) १० तोले चाँदीका घनफल यदि ११ घन-सेंटीमीटर हो, तो ५ तोले सोनेका घनफल कितना होगा ? ८

{ आपेक्षिक घनत्व : चाँदीका = १०·६ }
{ सोनेका = १६ }

(ख) एक शीशेके टुकड़ेका वज़न तारपीनके तेलमें यदि ४ माशे हो,तो उसका मामूली वज़न क्या होगा ? १२

{ आपेक्षिक घनत्व : शीशेका = २·५ }
{ तारपीनके तेलका = ·५ }

५. मनुष्यको अपने जीवन तथा स्वास्थ्यकी रक्षाके लिए क्या क्या आवश्यक है ? ८

६. पचन क्रियाका संक्षिप्त विवरण लिखिए। १०

७. हमारे घरोंकी हवा किन किन कारणोंसे बिगड़ा करती है और उसे शुद्ध बनाए रखने का क्या क्या उपाय है? १०

८. 'निद्रा' पर एक छोटा सा लेख लिखिये। १२

मध्यमा १९७२

साहित्य १

[परीक्षक—पं० श्याम विहारी मिश्र, एम. ए· एम. आर. ए, एस]

समय ३ घंटे पूर्णांक १००

१. निम्न लिखित छन्दोंका अर्थ और आशय लिखियेः—

(क) ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यन्त पुनीत तिहू पुर मानी।
राम युधिष्ठर के बरने बलमीकिहु व्यास के अंग सोहानी॥
भूषण यों कलि के कविराजन राजन के गुन पाय नसानी।
पुन्य चरित्र सिवा सरजै बर न्हाय पवित्र भई पुनिबानी॥४

(ख) सीता संग सोहत सुलच्छन सहाय जाके भूपर भरत नाम भाई नीति चारु है॥
भूषण भनत कुल सूर कुल भूषन हैं दासरथी सब जाके भुज भुव भारु है॥
अरि लंक तोर जोर जाके संग बानर हैं सिंधुर हैं बाँधे जाके दल को न पारु है।

तेगहिकै भेंटै जो नराकस मरद जानै सरजा सिवा जी
रामही को अवतारु है ॥

(ग) मोललहि जस नोललरि बहलोतिलय धरि ।

(घ) कैसो ज्यों धरि सीरे सुभाय को चाय महाँ चित में धरि चोखे ।
संग सरोज सखानि लये दये भेष बनाय नछत्रन ओखे ॥
गोकुल जानि कमोदिनी सी हमको ब्रज चन्द बिना परिपोखे ।
पानिप प्रान पिपई सो लेत सखी यह सूर सुधाधर धोखे । ४

(च) ऊंचे अवास बिलास करै अँसुवान को सागर कै चहुं फेर्यो
ताहू ते दूरि लौं अंग की ज्वाल कराल रहै निसि बासर घेर्यो ॥
दास लहै वह क्यों अवकास उसास रहै नभ ओर अभेर्यो ।
है कुसलात इतो इहि बीच जु मीचु न आवन पावत नेर्यो ॥ ४

(छ) वर्ण्य वस्तु बर्णि कै अवर्ण्य को अनादरै सु तीसरो प्रतीप
कवि दूलह गनायो है ।
विष भरे कैवर नसैवर गरब ऐसे तेरे तुल्य बचन प्रपंचिन
को गायो है ॥ ३

२. प्रश्न १ (क) के तीसरे चरणमें भूषण जी किस बातपर कटाक्ष
करते हैं ? इसकी विस्तार पूर्वक विवेचना कीजिए. ५

३. भूषणमें जातीयताका भाव कैसा था ? उदाहरणोंके साथ
अपने मतका समर्थन कीजिए । ६

४. प्रश्न १ में दिये हुये छन्द (क), (ख), (घ) और (च) में कौन
कौन प्रधान अलंकार हैं ? उन्हें व्याख्या सहित समझाइये । १२

५. (क) प्रश्न १ में दिये हुए छन्दोंके नाम लिखिये और उनके
रूप बतलाइए । ८

(ख) मुख्य गण कितने होते हैं ? उनके नाम, लक्षण, रूप, देवता,
फल और उदाहरण सूक्ष्म रूपमें लिखिए । १२

(ग) खंड मेरु किसे कहते हैं ? उसके बनाने की रीति लिखिए । २

(घ) "पसु वसु भंता डिल्ला जानहु ।" इसका क्या आशय है ?
इसे भली प्रकार समझाइये और उदाहरण दीजिए । ३

६. (क) निम्न लिखित छन्दका तात्पर्य मात्र लिखिये और उसकी
नायिका बतलाइये ।
एकै चलें रस गोरस लै अरु एकै चले मग फूल बिछावत । ६

त्यौँ पदमाकर गावत गीत सु एकै चले उर आनंद छावत ॥
यौँ सँद नन्द निहारिबे को नँदगाँव के लोग चले सब धावत।
आवत कान्ह बने वन ते बर प्रान परे से परोसिनि आवत ॥

(ख) पद्माकरकी कविताके मुख्य गुण और दोष क्या हैं। उनकी गणना किस कोटिमें है? भूषण और पद्माकर में क्या अन्तर है? ७

(ग) संचारी भाव किसे कहते हैं? उनमेंसे ५ के नाम लिखिये, और एकका उदाहरण दीजिए। ३

७. नीचे दिये हुए पद्योंकी टीका कीजिए—

(क) कहलाने एकत फिरत अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ ॥
दीठि वरत बाँधी अटनु चढ़ि धावत न डरात।
इत ते उत मन दुहुन के नट लौँ आवत जात ॥ ५

(ख) पायो नाम चारु चिन्तामणि उर करते न खसैहौँ।
श्याम रूप शुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौँ॥
परबस जानि हँस्यो इन इन्द्रिन्ह निज बश ह्वै न हँसैहौँ।
मन मधुकर प्रण करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहौँ॥ ५

(ग) हे वीर! देखो तो तुम्हें यों देखकर रोते हुए।
हैं हँस रहे सब शत्रुजन मन में मुदित होते हुए॥
क्या इस महा अपमान का कुछ भी न तुम को ध्यान है?
क्या ज्ञानियों को भी बिपद में त्याग देता ज्ञान है? २

८. निम्न लिखित अवतरणों से जायसी के विषय में क्या क्या बातें विदित होती हैं:—

चार मीत जो महमद ठाऊँ। जेहिं क दीन्ह जग निरमल नाऊँ॥
सेर शाह दिल्ली सुलतानू। चारहु खंड तपा जस भानू।
जायस नगर धर्म अस्थानू। तहाँ जाय कबि कीन्ह बखानू॥
जग सूझा एकै नयनाहा। उवा सूकु जस नखतन माहा॥ ४

साहित्य २

[परीक्षक—पं० शुकदेव बिहारी मिश्र बी. ए.]

समय ३ घंटे पूर्णांक १००

१ हिन्दी भाषामें संस्कृत व्याकरणकी दृढ़ता स्थापित होनेसे हिन्दी की स्वतन्त्रताके विषयमें क्या दूषण आरोपित होते हैं और उससे और क्या क्या दोष हैं ? ८

२ आदिम, माध्यमिक, अलंकृत और वर्त्तमान हिन्दीमें मोटे मोटे क्या अन्तर हैं ? उत्तर प्रायः ३० पंक्तियोंमें हो । १२

३ वैष्णवता और मानुष जीवन होड़के प्राबल्यसे हिन्दीको क्या क्या हानि लाभ हुए ? उत्तर प्रायः २० पंक्तियोंमें हो ।

४ निम्न लिखित पंक्तियोंमें कमसे कम तीन अर्थालंकार बतलाइये, और अपने बताये हुए अलंकारोंके रूप सूक्ष्मतया उनमें दिखला दीजिये । १२

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिनहिं नाग सुरनगर सिहाहीं ॥
केहि सुकृती केहि घरी बसाये । धन्य पुन्यमय परम सुहाये ॥
जहं जहं राम चरन चलि जाहीं । तहं समान अमरावति नाहीं ॥

५ समालोचनासे क्या क्या लाभ होते हैं ? उत्तर चिपलूणकर महाशयके मतानुसार प्रायः २० पंक्तियोंमें दीजिये । १२

६ हिन्दी अंकों वाले वर्त्तमान रूपोंके बननेके कारणोंमें त्वरा लेखन एवं बिना लेखनी उठाये लिखनेकी इच्छा भी प्रधान है । इसके दो उदाहरण अंकोंके भूत और वर्त्तमान रूपोंसे दीजिये । ८

७ यदि सौन्दर्य्योपासकको उपन्यास मानें तो गद्य काव्य मीमांसा में लिखे हुए नव विभागोंमें वह किसमें पड़ता है ? उत्तरके कारण प्रायः १० पंक्तियोंमें लिखिये । १२

८ इस ग्रंथके उपन्यास माननेसे इसमें एवं इसके नायकमें मोटे मोटे गुण दोष क्या हैं ? १२

९ वर्त्तमान कालमें नाटक कैसे होने चाहियें ? ८

१० निम्न वाक्योंके शुद्ध रूप लिखिये— ८

(अ) उसने रामको गालीदी और कहने लगा कि मैं तुझे कुछ भी नहीं समझता।

(आ) उसकी मृत्यु परसों हो गयी।

(इ) उसने मुझे एक किताब लादिया।

(ई) मैं क्या तेरे आधीन हूं?

साहित्य ३

(परीक्षक—अध्यापक श्यामसुन्दर दास बी. ए., एफ. बी. एस, एस.)

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

निम्न लिखित विषयों मेंसे किसी एक विषय पर निवन्ध लिखिये जो उत्तर-पुस्तककी कमसे कम १०० और अधिक से अधिक २०० पंक्तियोंमें हो —

१. मनुष्य ईश्वरकी सृष्टिका मुकुट है।

२. प्राचीन कालके राज-दर्बारोंमें कवियोंकी उपयोगिता और आवश्यकता।

३. किसी प्राचीन नगरका वर्णन जहाँ पुराने खंडहर बहुत हों। उस स्थानके संबन्धमें लेखकके विचार।

साहित्य ४

[परीक्षक—पं० रघुवर प्रसाद द्विवेदी, बी. ए., एफ़. बी. एस. एस.]

समय तीन घण्टे, पूर्णाङ्क १००

सब प्रश्नोंमें समान अंक हैं

१. हिन्दी साहित्यका काल विभाग किस प्रकार किया गया है और प्रत्येक विभाग किस सम्वत् तक माना गया है लिखिए। यह भी बतलाइए कि किस विभागमें न्यूनाधिक कितनी कविता मिलती है। प्रत्येक विभागकी कविताके क्या क्या लक्षण हैं और भाषाका क्या रूप है?

२. श्रेणी-विभाग और उसका प्रयोजन क्या है खोल कर लिखिए।

३. (क) हिन्दी भाषापर एक लेख लिखिए जिसमें उसके प्रचार, उत्पत्ति, विकासादि विषयोंका समावेश हो।

(ख) गद्य और पद्यकी हिन्दीमें क्या अन्तर रहा है और अब उसके दूर करनेके लिए क्या प्रयत्न किया जा रहा है ?

(ग) किन २ प्रधान कवियोंने किस प्रकारकी हिन्दीका उपयोग किया है ?

४. अष्ट-छाप वाले कवि-गण कौन २ हैं ? उनके विषयमें जो कुछ जानते हों, लिखिये।

५. (क) महाकवि विहारीलालजी कब हुए ?

(ख) इनके मुख्य काव्य-ग्रन्थमें क्या २ विशेषताएँ हैं ?

(ग) उसकी भाषा किस प्रकार की है ?

(घ) हिन्दीके अन्य महाकवियोंके नाम बतलाइये और उनके मध्य इनका स्थान-निरूपण कीजिये।

६ (क) वर्त्तमान नागरी-लिपि वा नागराक्षरोंकी उत्पत्ति कब से और किस प्रकार हुई।

(ख) निम्न लिखित अक्षरोंके रूपान्तर कैसे २ होते गये लिखिए---

ण, थ, व

इतिहास १

(परीक्षक---श्री जनार्दन भट्ट, एम. ए.)

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

[केवल १० प्रश्न करना चाहिये। प्रत्येक प्रश्नके लिये १० अंक]

१. प्राचीन समयमें योरुप और एशिया के बीच में कौन कौन व्यापारिक मार्ग थे और वे किस तरह से बन्द हो गये।

२. प्राचीन समय में पूरब के व्यापार की बागडोर मुसलमानों के हाथ कैसे पहुंची और उसका क्या परिणाम संसार के इतिहास में हुआ ?

३. "हंस संघ" का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये।

४. "जिसके अधिकार में समुद्र है उसी के अधिकार में व्यापार रहेगा, इसी तरह जिसके हाथमें संसार का व्यापार है उसी

के अधिकार में संसार की संपत्ति रहेगी तथा स्वयं संसार उसके आधीन रहेगा।"

इस कथन को ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा पुष्ट कीजिये।

५. हिन्दुस्तान में पोर्तगीज़ अधिकारकी स्थापना कैसे हुई और उसका अन्त किन कारणों से हुआ? इसका उत्तर संक्षेप में परन्तु सब आवश्यक बातोंके साथ दीजिये।

६. ऋग्वेद के समय में आर्यों के सामाजिक जीवन का वर्णन कीजिये।

७. चन्द्रगुप्त मौर्यके समय में भारतवर्षकी सभ्यता का संक्षिप्त हाल लिखिये।

८. जिस समय बुद्ध भगवान्ने अपने धर्म का उपदेश करना प्रारम्भ किया उस समय भारतवर्ष की क्या अवस्था थी?

९. फ़ाहियानकृत भारतवर्ष का वृत्तान्त संक्षेप में लिखिये?

१० गुप्तकालमें "हिन्दू धर्म और संस्कृत साहित्य के पुनरुद्धार" विषय में आप क्या जानते हैं?

११ राजपूतों और जाटोंकी उत्पत्ति के बारे में पश्चिमीय इतिहासों का क्या मत है?

११ (१) सिकन्दर (२) सेल्यूकस (३) मार्कोपोलो (४) वास्को डि गामा (५) आलबुकर्क (६) समुद्रगुप्त (७) कनिष्क (८) पुराण (९) ह्वेनत्सांग (१०) अलबेरुनी

इनपर छोटे छोटे नोट लिखिए।

इतिहास २

[परीक्षक — अध्यापक रामदास गौड़, एम. ए.]
समय ३ घंटे

प्रश्नों के अंक बराबर हैं। किसी ७ प्रश्न के पूरे उत्तर देनेसे १०० अंक मिल जायँगे। ७से अधिक लिखने वालोंके अंक कट जायँगे।

१. 'इतिहास' किसे कहते हैं? इसके अध्ययन से क्या क्या लाभ हो सकते हैं? संक्षेपमें लिखिये।

२. रोमके विस्तृत साम्राज्य के अधःपतन के क्या कारण हुए ? रोम साम्राज्यसे वर्त्तमान किसी साम्राज्यकी तुलना हो सके तो कीजिए।

३. माध्यमिक कालके धर्म्मयुद्ध तथा साम्प्रदायिक संघर्षों का संक्षिप्त वर्णन करते हुए बतलाइये कि युरोपकी सभ्यतापर इनका क्या प्रभाव पड़ा।

४. जागृतिकाल और माध्यमिककालमें क्या अन्तर समझना चाहिए। वह कौन कौनसे राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्त्तन हुये जिनसे जागृतिकालने युरोपमें युगान्तर उपस्थित कर दिया ?

५. फ्रांसकी राज्यक्रान्ति और नेपोलियनके चरित्रसे जर्म्मन-अभ्युदय और वर्त्तमान कैसर के चरित्र की तुलना कीजिये।

६. यूनान, मिस्र और वेल्जियमकी स्वतंत्रता प्राप्ति का संक्षिप्त इतिहास लिखिए। कौन सी घटनाएं इसमें साधक हुईं ?

७. विस्मार्ककी कूटनीतिकी विस्तृत समालोचना कीजिए।

८. उपनिवेशोंका इतिहास देते हुए यह दिखलाइये कि विविध पैतृक राज्योंका व्यवहार और नीति अपने २ उपनिवेशोंके प्रति कैसी है।

९. 'युरोपमें साम्प्रदायिक विरोध तथा अन्ध परम्परा'' इस विषय पर एक छोटा सा लेख लिखिये जो १०० पंक्तियोंसे अधिक न हो।

१०. अर्थशास्त्र, समष्टिवाद और विकास सिद्धान्तका युरोपीय आचार विचार पर कैसा प्रभाव पड़ा ?

११. वाणिज्य व्यापार तथा शिल्पकलाकी युरोपीय जन साधारण में किन उपायों से उन्नति हुई तथा इस उन्नतिमें शासकवर्ग किस प्रकार सहायक हुए ?

गणित

[परीक्षक—श्री कमलाकर द्विवेदी एम. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

सब प्रश्नों का उत्तर किये बिना भी पूर्णांक प्राप्त हो सकते हैं

---

१. (अ) समानान्तर रेखाओंकी क्या परिभाषा है और अनन्त

दूरी पर ये रेखाएं मिलती हैं अथवा नहीं ? ३

(ब) किसी निर्दिष्ट विन्दुसे दो दिये हुए समानान्तर सरल रेखाओं तक ऐसी दो सरल रेखाएं खींचिए कि वे आपसमें तुल्य हों और उनके बीचका कोण समकोण हो। ७

२. एक ऐसी सरल रेखा खींचिए जिसमें किसी विन्दुसे यदि दो स्पर्श रेखाएं दो दिये हुए वृत्तोंपर खीची जायं तो तुल्य हों।

इस सरल रेखा का नाम विशेष क्या है ? २

३. किसी त्रिकोणकी तीनों भुजाओंपर समत्रिबाहु त्रिभुज बनाये जाय तो सिद्ध कीजिये कि इन समत्रिबाहु त्रिभुजोंके बहिर्गत वृत्तोंके केन्द्रोंको मिला देनेसे एक समत्रिबाहु त्रिभुज बन जायगा। १०

४. $क^{२^{न+१}} - ख^{२^{न+१}}$ को $क^{२^न} + ख^{२^न}$ से भाग दीजिए

बतलाइए कब

$य^३ + प\,य^२ + क\,य + र$, में, $य^२ + अ\,य + ब$, का भाग पूरा लग जायगा। ४

५. (अ) $४\,य^४ + ३२\,य^२ + ९६ + \frac{६४}{य^४} - \frac{१२८}{य^२}$ का वर्गमूल निकालिये

(ब) सिद्ध कीजिए कि $य^४ + प\,य^३ + क\,य^२ + र\,य + स$ वर्ग तब होगा जब कि $\left(क - \frac{प^२}{४}\right)^२ = ४\,स$ और $र^२ = प^२\,स$। ४

(स) $\sqrt{१७५ - \sqrt{१४७}}$ का वर्गमूल क्या है ?

६. (अ) यदि क और ख अतुल्य हों तो

$क^२ + ख^२ > २\,कख$

(ब) यदि $क + ख + ग = ०$ ४

तो $क^३ + ख^३ + ग^३ = ३\,क\,ख\,ग$

७. एक दो स्थानका संख्या ऐसी बतलाइये जो स्थानांकके योग ५ का वर्ग हो और यदि उस संख्याके स्थानांकको बदल दें तो विपरीत संख्या स्थानांकके योगकी दूनी हो। १०३

८. (अ) कोण मापनेकी रीति कितने प्रकारकी होती है ?
यदि य किसी कोणका चक्रीय माप हो तो $\frac{\text{ज्याय}}{\text{य}}$ = १ जब कोण बहुत न्यून कर दिया जाय। ३

(ब) सिद्ध कीजिये कि वे सब कोण जिनकी ज्या, य के ज्या के तुल्य है $\{ म \pi + (-१)^{म} य \}$ में अन्तर्गत है जिसमें म कोई अभिन्न पूर्णाङ्क है।

(स) घात प्रमापक (लघुरिक्त) क्रियासे क्या लाभ होता है ?

यदि घा ज्या २१° ३′ = ६.५५५ ३१ ५२
घा ज्या २१° २′ = ६.५५ ४ ६८ ६८
तो घा ज्या २१° २′ २५″ क्या है ? ४

६. (अ) निम्न लिखित समीकरणमें से य और फ को निकाल कर एक दूसरा समीकरण बनाइए

ज्याय = म को ज्याफ – न ज्याफ
को ज्या = म ज्याफ – न को ज्याफ ३

(ब) सिद्ध कीजिए :—

स्प ५ य – स्प ३ य – स्प २ य = स्प ५ य स्प ३ य स्प २ य और

$स्प^{-१}\frac{३}{५}$ – को $स्प^{-१}\frac{७}{२}$ = को $स्प^{-१}\frac{१३}{१२}$ ३

१० (अ) किसी त्रिकोणके तीनों भुज ज्ञात हैं तो कोणका मान कैसे निकाला जायगा ? २

(ब) किसी वृत्तार्द्धका व्यास जिसकी लम्बाई २र है किसी बिन्दुपर दो भागमें किया जाता है इनको व्यास मानकर दो वृत्तार्द्ध खींचे जाते हैं इनके व्यासर्द्ध $र_१$ और $र_२$ हैं यदि एक ऐसा वृत्त खींचा जावे कि तीनों वृत्तार्द्धोंको स्पर्श करें तो इस का व्यास = $२\frac{र र_१ र_२}{र^२ - र_१ र_२}$

संस्कृतसे हिन्दी में अनुवाद

[परीक्षक—पं० चन्द्रमौलि शुक्ल, एम. ए. एल. टी.]

समय ३ घन्टे

निम्न लिखित गद्य पद्य मय संस्कृत का अनुवाद सरल हिन्दी में लिखो —

(क) ६० अंक

ततः द्वारपालः प्राह, 'देव, श्री शैलात् आगतः कश्चित् विद्वान् ब्रह्मचर्य्यनिष्ठः द्वारिवर्त्तते' इति। राजा 'प्रवेशय' इति आह। ततः आगत्य ब्रह्मचारी 'चिरंजीव' इति वदति। राजा तं पृच्छति 'ब्रह्मन्, बाल्ये एव किं नाम व्रतं ते? अन्वहं उपवासेन कृशः असि। कस्यचित् ब्राह्मणस्य कन्यां तुभ्यं दापयिष्यामि, त्वं चेत् गृहस्थधर्म्मं अँगी करिष्यसि' इति। 'ब्रह्मचारी प्राह, 'देव, त्वं ईश्वरः, त्वया किं असाध्यम्; परन्तु शान्तिः एव मम गृहिणी, अतः विवाहं न करिष्यामि'। इति श्रुत्वा राजा उत्थाय पादयोः पपात आह च, 'ब्रह्मन्, मया किं कर्त्तव्यम्' इति। स आह, 'देव, अहं काशीं गन्तुमिच्छामि। ततः त्वत्सदने ये पंडितवराः तान् सर्व्वान् अपि काशीं प्रति प्रेषय' राजा तथा एव चकार। ततः सर्व्वे पंडितवराः तदाज्ञया प्रस्थिताः। कालीदासः एकः न गच्छतिस्म। तदा राजा कालिदासं प्राह, 'सुकवे, त्वं कुतः न गतः असि' इति। ततः कालिदासः राजानं प्राह, देव, सर्व्वज्ञः असि।

ते यान्ति तीर्थेषु बुधा ये शंभोर्दूर वर्तिनः।
यस्य गौरीश्वरश्चित्ते तीर्थं भोज परं हि सः॥

एतत् श्रुत्वा राजा भोजः अतीव संतुष्टः॥

(ख) ४० अंक

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥
किं करिष्यन्ति वक्तारो यत्र श्रोता न वर्त्तते।
नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति॥
धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पंचमः।
पंच यत्र न विद्यन्ते वासं तत्र न कारयेत्॥

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि ।
मंगलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ॥
भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥

ज्यौतिष्

[परीक्षक—ज्योतिर्विद् पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी]

समय तीन घन्टे, पूर्णाङ्क १००

स्वच्छ और सुवाच्य लेखनके लिये १० अङ्क

१. खगोल विद्या किसे कहते हैं और उसमें प्रधान विषय कौन हैं ? ५

२. (अ) आकर्षणशक्ति और सामान्यगुरुत्व केन्द्र का सम्बन्ध क्या है ?

(इ) एक पिण्डपर दो शक्तियों का प्रभाव कैसा पड़ता है ? ५

३. (अ) ग्रहोंकी कक्षायें अण्डाकार क्यों होती हैं ?

(इ) ग्रह और उपग्रह की परिभाषा लिखिये ?

(उ) क्या कोई उपग्रहव की भी है (पूर्वसे पश्चिमको जाता है) ? यदि है तो वह किस ग्रहका उपग्रह है।

४. (अ) चन्द्रग्रहण के समान सूर्यग्रहण, पृथ्वी के सभी भागों में समान रूप से क्यों नहीं दिखलाई देता ?

(इ) उपच्छाया और प्रच्छाया में क्या अन्तर है ?

(उ) ज्वारभाटे के कारण और उनके प्रकार लिखिये। ८

५. (अ) इस समय १ सौर वर्ष कितने दिन, घण्टे और मिनट का होता है ?

(इ) प्रतिवर्ष सौर वर्षमें वृद्धि होती है कि ह्रास और उस ह्रास या वृद्धि का मान क्या है ?

६. सूर्यसिद्धान्त में प्रधान प्रधान विषय कौन हैं ? और त्रिप्रश्न किन तीन प्रश्नों को कहते हैं ?

७. सूर्यसिद्धान्त की रचना उसके अनुसार कब हुई, उसको किसने बनाया और फिर उसका प्रचार किसके द्वारा हुआ ? ५

८. कल्पादि और सृष्ट्यादि में क्या अन्तर है। एक कल्प कितने दिव्य वर्षों का होता है ?

९. सूर्यसिद्धान्तानुसार अयन की वार्षिक गति क्या है ? और उसका संस्कार कहाँ कहाँ होता है ?

१०. मध्य और स्पष्ट ग्रह में क्या अन्तर है ? और मेष के आदि में पात और मन्दोच्च के बिना मध्यमग्रह और शीघ्रोच्च एक समान अन्तिमवार कब हुये थे ?

११. विषुवच्छाया, वलन और तिमिनारेखा किसे कहते हैं और मध्यलग्न को दशम लग्न क्यों कहते हैं ?

१२. (अ) सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी के व्यासों का पृथक् २ मान क्या है ?

(इ) सूर्यसिद्धान्त में व्यास से जो भूपरिधि का मान निकाला गया है उसमें क्या स्थूलता है ?

(उ) सूर्यसिद्धान्तानुसार पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है अथवा सूर्य पृथ्वी के ?

१३. स्वयम्वह-यन्त्र के सम्बन्ध में जो कुछ जानते हों लिखिये ? ७

अंग्रेज़ीसे अनुवाद

[परीक्षक—मोहनलाल मिश्र]

समय ३ घन्टे, पूर्णाङ्क १००

स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों के १० अङ्क मिलेंगे

निम्नलिखित का सरल हिन्दी अनुवाद करो :—

No slavery is greater and more harmful than that of mind and no sin is greater than that of attempting to keep human beings in a state of perpetual bondage. It is bad enough to enslave people but to create circumstances and perpetuate them, which prevent them from breaking their chains and becoming free, is intolerably so ——infamous beyond measure and galling to the very soul of man.

No man or a number of men have a right to do so, and, if there be any, they deserve the severest condemnation at the hands of all who have a conscience and do not want to lose it, It is my firm conviction, gentlemen, that injustice and oppression of fellowmen attempt to stifle legitimate human ambition, desire to keep people down to profit by their misfortune, is as sure to react on those who are the authors and agents thereof, as night follows day, that nothing can save them from a similar fate sooner or later except perhaps a timely consciousness of the gravity of their sin and a vigorous attempt to atone for it by undoing the mischief wrought thereby.

The laws of nature are inexorable and under those laws no expiation short of the same fate is ordinarily adequate for those whose sin consists in deliberate and persistent degradation of men and women and in deliberate and persistent misuse of powers and faculties which have been given them for the betterment of self and for the service of others and not for keeping people down and reducing them by brute force or by religious and social duplicity to the level of beasts.

Those who brutalise themselves in this way do a great wrong to their own nature, which has to be put right by making them go throuh the same ordeal at some stage or other of the life of their souls; unless it be that they awake in time and with their own hands set to undo the mischief wrought by them under the intoxicating influence of power and under a mistaken presumption of their right to do so.

धर्मशास्त्र

[परीक्षक—पं० श्रीकृष्ण जोशी]

समय तीन घन्टे, पूर्णांक १००

[इन १२ प्रश्नोंमें से पहिले ४ प्रश्नों के उत्तर अवश्य लिखने चाहिये। शेष ८ में ५ के उत्तर देने चाहिये, चाहे कोई ५ हों। इस प्रकार इनमें से ९ प्रश्नों के उत्तर देने हैं। प्रत्येक प्रश्न में बराबर अङ्क हैं]

१. मनुस्मृति के प्रत्येक अध्याय के मुख्य विषयों को संक्षेप से लिखिए।

२. अच्छी सन्तति उत्पन्न होनेकी दृष्टि से जो विवाह के नियम रक्खे गये हैं उनको लिखिए।

३. मनुके अनुसार विवाहों के भेद और प्रत्येक के लक्षण लिखिए और लिखिए कि कौन कौन विवाह किस किस वर्ण के लिए शास्त्रोक्त हैं।

४. उत्तम कुलों को अधम करने वाले और नाश करने वाले काम कौन कौन लिखे हैं?

५. 'अपांक्तेय' और 'पंक्तिपावन' शब्दों के अर्थ लिखिए और अपंक्तियों के १० उदाहरण और 'पंक्तिपावनोंके' ५ उदाहरण लिखिए। जो नाम लोक प्रसिद्ध न हों उनके शास्त्रोक्त लक्षण लिखिए।

६. मांस भक्षण के विषय में मनुस्मृति के विधि निषेध के मुख्य वचनों का सार लिखिए।

७ (क) ब्राह्मणादि वर्णों के साक्षियों से प्रश्न पूछने की और उनको शपथ देने की क्या विधि लिखी है?

(ख) किन किन ब्राह्मणों को शूद्र के समान वर्तना लिखा है?

८. (क) पुत्रों के कै भेद लिखे हैं?

(ख) उनमें जो दायाद और बान्धव माने हैं उनके नाम अर्थ सहित लिखिए।

(ग) ऐसे पुत्र पिता के धनके अनधिकारी किन कारणों से हो जाते हैं?

९. ब्रह्महत्या, सुरापान और सुवर्णकी चोरी इन तीन महापातकों में एक एक के समान जो पातक कहे हैं उनके नाम लिखिए।

१०. "कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र" नामक पुस्तक के ऊपर अपनी समालोचना लिखिए अर्थात् उसके गुण दोषों की परीक्षा कीजिए।

११. किसी कार्यके सदसद्विवेकमें मुख्य हेतु उस ग्रन्थ में कौन माना गया है और उस हेतु के समर्थन में क्या उदाहरण दिये गये हैं? उनके अतिरिक्त एक उदाहरण अपनी कल्पना से दीजिये।

१२. (क) 'परिणामदृष्टि' इस पदका अर्थ "कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र" पुस्तकमें क्या लिखा है?

(ख) उस अर्थ का वाचक कोई उपयुक्त शब्द अपनी रुचि से लिखिए।

(ग) 'परिणामदृष्टि विषयक निर्णय' और "सदसदाचार विषयक निर्णय" में जो भेद पुस्तक में दिखाये हैं उनको संक्षेप से लिखिए।

दर्शन

[परीक्षक—अध्यापक दीवान चन्द एम. ए.]

समय ३ घंटे, पूर्णांक १००

१. "कर्म्मयोग गीताका सार है और इसका सम्बन्ध मनुष्यके समस्त जीवनसे है।" १२
इस वाक्यकी व्याख्या कीजिए।

२. (१) जीवात्माके अमर होनेमें क्या प्रमाण हैं?
(२) आचारादर्शके विषयमें कृष्ण और काएटकी शिक्षाकी तुलना कीजिए।

३. सृष्टिके निमित्त-कारणके विषयमें श्वेताश्वतर उपनिषदमें क्या शिक्षा दी गयी है। १२

४. श्वेताश्वतर उपनिषदमें ज्ञान और कर्म्मका मेल कैसे किया गया है? १२

५. वाक्यके भेद लिखिए। वाक्योंके विरोध और अविरोधके नियम क्या हैं? १२

६. लक्षण क्या है? अच्छे लक्षणके नियम लिखिए। १२

७. प्लेटोके तर्कका सार क्या है? तर्कके विषयमें प्लेटो और अरस्तुमें मुख्य भेद क्या हैं? १४

८. बाह्य वस्तुओंके सम्बन्धमें बर्कलेका सिद्धान्त क्या है? परमात्माकी हस्ती वह कैसे सिद्ध करता है? १४

विज्ञान

[परीक्षक—अध्यापक विनायक गणेश साठे, एम. ए.]

समय तीन घण्टे, पूर्णाङ्क १००

१ जानदार और बेजान चीज़ोंमें क्या अन्तर है ? इसी प्रकार वनस्पतियों और प्राणियोंमें क्या क्या भेद और कहाँ कहाँ समानताएं हैं ? १०

२. जड़ों (roots) के सामान्य लक्षण दिखाकर उनके भेद और उप भेद आदिका वर्णन कीजिए। जड़ोंकी उपयोगिता दिखलाइये।

३. रीढ़दार जानवरोंके जो मुख्य विभाग हैं उनको उदाहरणों सहित बतलाइये और इनमेंसे किसी विभागके किसी परिचित प्राणीका उदाहरण लेकर सविस्तर वर्णन कीजिये। जहाँ तक हो सके इन विभागों में ज्ञान तन्तु जालका (nervous-system) अथवा अन्न नालिकाकी (alimentary canal) जैसी जैसी उन्नति होती गयी है उसका संक्षेपमें वर्णन कीजिए। १५

४ आपेक्षिक घनता, वायुका दबाव, विशिष्ट ताप, विलीन ताप और शतांशिक तापमानपर संक्षेपमें नोट लिखिए। १२

५. वायु-पम्पका समग्र रीतिसे चित्र सहित वर्णन कीजिए और उसके उपयोग बतलाइये। ११

६. बैटरी (battery) किसे कहते हैं ? किसी एक बैटरीका चित्र सहित वर्णन कीजिए। ११

७. ब्रामा-प्रेसका चित्र देकर वर्णन कीजिए। ११

८. मुख्य मुख्य अम्ल और क्षारोंके नाम लिखिए और हरिण गैस बनानेकी विधि वर्णन कीजिए। 8

६. रेलका इञ्जिन, मोटर गाड़ी, बिजली उत्पन्न करनेका यन्त्र, एक्स किरण अथवा, टेलिफ़ोन इनमेंसे किसी एकका वर्णन कीजिए जिससे इनके मुख्य तत्वों सम्बन्धी आपका ज्ञान प्रकट हो जाय। ११

अर्थशास्त्र

[परीक्षक—अध्यापक बालकृष्ण एम. ए.]

समय ३ घंटे पूर्णाङ्क १००

[निम्न लिखित १३ प्रश्नोंमें किसी सात प्रश्नोंके पूरे २ उत्तर देनेसे १०० अंक मिल सकेंगे । प्रश्नों में बराबर अंक हैं ।]

१. अर्थशास्त्रमें सम्पत्ति, परिश्रम, लगान तथा राष्ट्रीय समष्टिवादसे क्या अभिप्राय है ?

२. क्रमागत ह्रास नियम और भौमिक लगानकी उत्पत्ति के सिद्धान्तकी व्याख्या कीजिए ।

व्याज और व्यवसायपतियों के लाभोंका निश्चय करनेवाले सिद्धान्तोंकी व्याख्या कीजिए ?

३. सिद्ध कीजिए कि श्रमी लोग व्यवसायपतियों (कारखाने वालों) की अपेक्षा बलहीन हैं। इस निर्बलताको हटानेके लिए समाज और राष्ट्रकी ओर से कौन कौन साधन प्रयुक्त किये जाते हैं ?

४. बीमेके हानि लाभोंका वर्णन कीजिए ।

या

मानवजातिमें पूंजी संचयके भिन्न भिन्न उद्देश्यों तथा शक्तियोंका वर्णन कीजिए ।

५. भारत और इंग्लैण्डकी तुलना करते हुए बतलाइए कि देशोंकी उत्पत्तिको घटाने बढ़ाने वाले कौन साधन हैं ?

६. देशोंके अन्तर-राष्ट्रीय व्यापारके खुलनेपर क्या २ हानि लाभ होते हैं ?

७. (क) अर्थशास्त्रको राष्ट्रीय अर्थशास्त्रनाम देनेमें क्या गुण दोष हैं ?

(ख) अर्थशास्त्रका शुद्ध लक्षण लिखिए ।

८. आजकलके व्यवसायिक जगतकी झंझट एक गर्मकोटकी बनावट से सिद्ध कीजिए।

या

"मानवजातिको अर्थशास्त्रकी आवश्यकता है" इस पर ४० पंक्तियोंका एक निबन्ध लिखिए।

९. (क) उत्पत्तिके कितने आवश्यक साधन हैं और क्यों ?

(ख) नहरोंके हानि लाभ क्या हैं ?

(ग) भूमिकी उत्पादक शक्ति किन साधनोंसे बढ़ाई जा सकती है ?

या

"भारतीय कृषिकी अपूर्णता" पर ४० पंक्तियोंका एक निबन्ध लिखिए।

१०. (क) भारतमें पशु पालनकी विधियोंमें किन किन बातोंकी आवश्यकता है ?

(ख) भूमिकी हत्याके सिद्धान्तपर प्रकाश डालिए।

११. सहकारी बैंकोंके हानि लाभ लिखिए।

१२. (क) मनुष्यको आर्थिक उन्नति करनेके लिए किन किन बातों की आवश्यकता है ?

या

भारतकी अन्य देशोंके साथ भिन्न भिन्न प्रकारकी विद्याओंमें तुलना कीजिए।

(ख) श्रम विभागकी हानियाँ प्रकट कीजिये।

या

बड़ी मात्राकी उत्पत्तिकी हानियां बतलाइए।

१३. भारतमें शिल्पकी दशापर एक निबन्ध लिखिए।

ओ३म्

अमृत

जिस में

कविविनोद श्री पं० ठाकुरदत्त

शर्म्मा वैद्य की

आविष्कार की हुई सुप्रसिद्ध

औषधि अमृतधारा का भली भान्ति

वर्णन किया गया है ॥

—:·:○:·:—

" कार्य्यालय अमृतधारा " के कार्य्य कर्त्ताओं

ने लोकोपकारार्थ संग्रह करके

अमृत प्रेस में छपवाया

पत्र व्यवहार तथा तार का इतना पता काफी है:—

अमृतधारा लाहौर

॥ अमृत प्रेस लाहौर में छपा ॥

आवश्यक निवेदन।

पाठक गण! हजारों रुपया खर्च करके यह सुन्दर सूची आप के भेंट की जाती है, हमारा सविनय निवेदन है कि आप इसको एक वार अवश्य अवलोकन करें। फुरसत के समय थोड़े २ पृष्ट पढ़ने से थोड़े दिनों में आप समाप्त कर लेंगे। जिस से हमारा परिश्रम सफल होगा। सब पढ़ने के बिना सर्व गुण ध्यान में नहीं आसकते हैं, इस के साथ ही दूसरा निवेदन यह है, कि इसको पढ़ने के पश्चात् संभाल कर रखिये और अपने किसी मित्र को देकर हमें कृतार्थ कीजिये॥

सूचीपत्र ॥

इसके पश्चात यह आवश्यक मालूम होता है, कि छांट कर लिख दिया जावे कि "अमृतधारा सम्बन्धी जो २ प्रशंसा पत्र अंकित किए गए हैं, उनमें किन २ रोगों का वर्णन है प्रत्येक महाशय जिस रोग सम्बन्धी प्रशंसापत्र देखना चाहें, देख सकता है। इसमें आप देखेंगे, कि साधारण रोग सम्बन्धी बहुत ही प्रशंसापत्र हैं और बड़े रोगों सम्बन्धी कम, इसका कारण यह है, कि जो महाशय लिखने लगता है तुरन्त लिख देता है, कि आप की अमृतधारा वास्तविक रसायन है, इसने बहुत से चमत्कार दिखलाए, सिर दर्द, जुकाम, कान दर्द, आदि पर लगाते ही आराम आ जाता है, इत्यादि २, अतः इस प्रकार लिखते समय बहुत से केवल साधारण रोग ही लिखे जाते हैं उनके पत्र में

झूठे पर ईश्वर की फिटकार।

विज्ञापन बाज़ों में इतना झूठ बढ़ गया है, कि विज्ञापन को देखते ही
साशंक हो जाते हैं। हम हैरान हैं कि एक अद्वितीय वस्तु को जिसकी उदाहरण अ
तक संसार में उत्पन्न नहीं हुई, किस प्रकार सर्वसाधारण पर प्रगट करें। जो लोग
बार भी इस औषधि को मंगवा चुके हैं, वह कभी हमारे एक शब्द को मिथ्या न
समझ सकते। परन्तु हमारी तो इस औषधि को प्रत्येक घर और प्रत्येक पाकट
पहुंचाने की इच्छा है। सच जानिए कि हम अपने विज्ञापनों में किसी औषधि की
प्रशंसा में कभी वह शब्द नहीं लिखते, कि जिनको हम मिथ्या समझें। या जो मिथ्या
हों। सत्य २ लिखना ही हमारा धर्म्म हमको सिखलाता है। हमारे पास इस औषधि के
[illegible] १५ हमारे प्रशंसा पत्र अयाचित आचुके हैं, और उन में से कुछेक हम अगले
पृष्ठों में प्रकाश करेंगे॥ आप देखें कि जो लोग इसका सेवन करते हैं, वह हम से
बढ़कर इसकी प्रशंसा करते हैं।

ईश्वर जानता है कि,

यह सर्वथा सत्य है कि,

" अमृतधारा "

[illegible]

की पीड़ाऐं आन्तरिक और वाह्यक सिर से लेकर पांव तक की, हैज़ा, वमन, ज़ुकाम, नज़ला, सब प्रकार के विषैले डंक, इत्यादि २ इनको सेवन करते ही दूर कर देती है। मानों दुःख को दूर कर देना इसका पहला काम है। **सच्चा मित्र यह अमृत धारा है।** हजारों मनुष्य प्रतिदिन अनेक स्थानों पर सेवन कर रहे हैं। और सब कृतकार्य्य हो रहे हैं। प्रतिदिन कई प्रशंसा पत्र प्राप्त होते हैं। मैं चाहता हूं कि जिन महानुभावों ने "अमृतधारा" को नहीं आज़माया वह अवश्य ही आज़मावें, हमारी "अमृतधारा" की पूरी प्रशंसा जानने के लिए सर्व सर्टीफिकेट पढ़ने आवश्यक हैं। क्योंकि उन में विविधि रोगों पर सेवन करने की विधियां भी जो ग्राहक महाशयों ने स्वयम तजुर्बे किए वह अंकित हैं। स्मरण रहे कि कभी किसी मनुष्य को किसी विशेष रोग में लाभ न हो यह बहुत ही कम सम्भव है। हम भी कभी ऐसा दावा नहीं कर सकते हैं कि प्रत्येक रोगी इससे अच्छा हो जावेगा, यह दावा सिवाय ईश्वर के और कोई नहीं कर सकता। प्रत्येक रोग दूर करने का हमारा दावा है, नाकि प्रत्येक रोगी को अच्छा करने का, जो दवाई सौ में ८० मनुष्यों को आराम देवे वह अकसीर से बढ़कर मानी जाती है। "अमृतधारा" तो सौ में ६६ को राजी करने की सामर्थ्य रखती है :—

कीमत २॥) पूरी शीशी,

आधी शीशी १।)

नमूने की छोटी शीशी ॥)

—:o:—

ईश्वर कृपा से मनोकामना पूरी हुई।

"अमृतधारा" को जब मैं ने जगत् के लिये अत्यन्त लाभदायक समझ लिया तो मेरी इच्छा हुई कि "अमृतधारा" से बच्चे २ को विज्ञिस कर दूंगा, यदि ऐसी रचना किसी और देश में होती तो वहां के रहने वाले निर्म्माता को सिर पर उठालेते, परन्तु मैं अपने पाओं उड़ूंगा, और यदि ईश्वर ने सहायता की तो एकबार तो

"अमृतधारा" का डङ्का बजा दूंगा, जानने पर जो लाभ न उठावें यह फिर उनकी भूल होगी। मैं संतुष्ट हूं कि ईश्वर ने मनोकामना पूरी करदी और पंजाब में तो कोई पढ़ा लिखा बालक भी ऐसा न होगा, जिसने "अमृतधारा" का नाम और प्रशंसा न सुनी हो। शेष प्रान्तों में भी अब वैसी ही तेजी से प्रसिद्ध हो रही है दिन प्रतिदिन बिक्री बढ़ती जाती है। मैं प्रसन्न होता हूं जब बाजार से मेरी गाड़ी गुजरते हुये देखकर लोग आपस में इशारे करते हैं कि :—

यह "अमृतधारा" जाता है।

मैंने "अमृतधारा" के नाम के आगे अपने नाम को भी दबा दिया। "अमृतधारा" इस समय इतनी प्रसिद्ध है, कि कोई हकीम अपने आप को पूर्ण नहीं समझता जब तक कि ऐसे ही गुणों की कोई औषधि विज्ञापन में नहीं लिखता है। वर्षों से इसी काम में लगे हुये विज्ञापक भी नकल करने से न रुके, अब उनकी पहिली औषधियां उनको संतुष्टी नहीं देती :—

यह सर्वथा मिथ्या है

कि कोई भी मनुष्य "अमृतधारा" का योग जानता है—"अमृतधारा" का सैकड़ों तजर्बों के बाद मैं ने निर्माण किया और मेरे बिना उसको कोई नहीं जानता है (जैसा कि आगे लिखेंगे)। तो भी लोग विज्ञापन देते हैं, पुस्तकों वाले अपनी पुस्तकों की बिक्री का बड़ा वसीला यही समझते हैं, कि वह लोगों को जितलावें कि इसमें "अमृतधारा" का नुसखा दिया है—जो कि कभी सत्य नहीं होता। प्रायः विज्ञापन वाले चूंकि यह "अमृतधारा" नाम तो रख नहीं सकते क्योंकि:—

अमृतधारा सरकार में रजिस्टरी हो चुकी है।

यह किसी न किसी प्रकार से शब्द "अमृत" या "धारा" को लाकर लोगों को यह दर्शाना चाहते हैं, कि उनके पास वैसी औषधि है, क्योंकि इसके बिना वह अन्य औषधियों को नहीं बेच सकते—गली २ कूचे २ में "अमृतधारा" की

चर्चा हो रही है। अनपढ़ औरतें भी अपनी सहेलियों को " अमृतधारा " वर्तने की सलाह देती हैं। उर्दू में एक गणित की पुस्तक छपी है, जो सरकारी स्कूलों में पढ़ाई जाती है, जिसमें एक प्रश्न है कि बतलाओ ३१/२ सेर अमृतधारा में कितनी २ वस्तु पड़ती है? मित्रो! क्या अब भी मैं न कहूं कि मेरी इच्छा पूर्ण हुई। क्या गणित के भीतर किसी और भी औषधि का नाम आया है? मैं ईश्वर का किस मुख से धन्यवाद कर सकता हूं, उसकी दया से मुझसे ऐसी औषधि निर्म्माण होकर जगत् प्रसिद्ध हो रही है॥

अमृतधारा (रजिस्टर्ड)

ने जितना नाम पाया है इसकी पूरी २ प्रशंसा करना लेखनी की शक्ति से बाहर है। बाहर से जब मेरे पास बहुत से श्रीमान् आकर अमृतधारा के चमत्कारों का और अपनी कामयाबियों का वर्णन किया करते हैं तो मैं प्रसन्न हुआ करता हूं, कि ईश्वर ने मुझे ऐसा पदार्थ प्रदान किया है कि जिसके द्वारा परमात्मा की सृष्टि को इतना लाभ पहुंच रहा है, और मैं भी मालामाल हो रहा हूं।

अमृतधारा— उन सब रोगों की जो साधारणतः बूढ़ों, बच्चों, जवानों, पुरुषों या स्त्रियों को होते रहते हैं रामबाण इलाज है। सैंकड़ों बोझदार बकस इस छोटी सी शीशी के सामने तुच्छ हैं।

वह लोग जो घरों में या सफ़र में औषधियों के बकस रक्खा करते थे, अब ज़रा सी शीशी जेब के कोने में रखते हैं, और समय समय पर जो काम यह देती है उसका अनुमान दैनिक डाक से हो सकता है।

अमृतधारा—जिस घर में वर्तमान है एक सिद्ध वैद्य वर्तमान है, कोई भी बीमारी हो इसको दे दो और तमाशा देखो।

अमृतधारा—जिसकी जेब में वर्तमान है वह रोगों के भय से निर्भय है।

अमृतधारा—को जिसने मित्र बनाया रोगों को दूर भगाया, जो इसको सदैव पास रखता है आप को, इष्टमित्रों को, सम्बन्धियों को और पड़ोसियों को दुःख दर्द से बचाता है।

अमृतधारा—जो सेवन करता है हकीमों की फ़ीस और डाक्टरों के बिल से बचा रहता है।

अमृतधारा—की शीशी जिस वैद्य के पास है उसको और औषधियों की क्या आवश्यकता है। उसका हमेशा मान है।

अमृतधारा—उन सब रोगों को जो अचानक मनुष्य को आदबाते हैं अचानक ही दूर करती है। यथा सब प्रकार के सिर से लेकर पांव तक की आन्तरिक व बाहरी पीडाएं, हैज़ा, ज़ुकाम, ताऊन, सांप, बिच्छू, आदि के डंक, किसी भी तेजाब या आग या ज़हर का लग जाना, ज़हर का खाजाना, जो पुराने रोग हैं वह तो धीरे २ दूर होंगे।

अमृतधारा—में प्रत्येक रोग को दूर करने का एक विशेष प्रभाव है। कोई भी कठिन से कठिन रोग हो इसकी बूंदें अवश्य ही दूर होजायगा या कम से कम कुछ तो अवश्य घटेगा। और वैद्य के आने तक भय जाता रहता है॥

नाम रोगों के जो अमृतधारा दूर करती है :—

सर्व प्रकार का शिरदर्द, खांसी, नज़ला, दमा, जुकाम, खुश्कखांसी, पार्श्वशूल (जातुलजंब वा नमूनिया) पेटदर्द, पेटफूलना, मन्दाग्नि, विषूचिका (हैज़ा) परिणाम-शूल, (दर्द कौलंज), अरुचि, पेट का गुड़ गुड़ाना, गरमी आमाशय, आमाशय का फोड़ा, वमन (कय), अतिसार (दस्त मरोड़ा), अपस्मार (मृगी), दन्त पीड़ा, दाढ़-दुखना व मसूढ़ों का फूलना। दाढ़ के भीतर दर्द वा कृमि, दांत से खून जाना, दांतों को पानी लगना, जी मचलाना, रक्तवमन (खून की कै), आमाशय का सूजना (वर्म मेदा), कर्णपीड़ा (दर्दकान), कानों में खुजली, कानों में फुन्सी, कान में कृमि, नासार्श (बवासीर नाक) और नाक में फुन्सियां, नाक में दुर्गन्ध, छींकें, फोड़ा फिन्सी, जखमघाव, कान का पकना, रान का लासना, पित्ती, दाद, चम्बल, गला बैठ जाना, मुख में छाले, मुख सूजना, विषैलेडकं, सुज़ाक, उपदंश (आतशक), बद्ध, गिलटियां वा वरम, आभ्यान्तर पीड़ा, वाह्यपीड़ा, सन्धिवात (गंठिया), अरकउलनसा (रींघन वाय), चोट, वाई गोला, हज़ीरां (कण्ठमाला), स्त्रियों का शिरदर्द, अर्श (बवासीर), दिक्क (विषम ज्वर क्षय), राजयक्ष्मा (सिल), प्रसूत रोग, कामला (पीलिया यर्क़ान,) गुदभ्रंश (कान्च निकलना), बालकों के रोग, बच्चों को दूध न पीना, डब्बा, सरसाम, सिरघूमना, सन्यास, आर्दितवात (लकवा), फ़ालिज (पक्षाघात, अधरंग), दिमाग में खुजली, घ्राणशक्ति नाश, नकसीर, ओष्ठों का सूजना, ओष्ट शोथ, गले पड़ना, स्तन शोथ, जलोदर, यकृत पीड़ा, आमवात, प्लीहोदर (तिल्ली), भगन्दर, दर्द गुर्दा, मूत्र पीड़ा या मूत्राशय की सोज, अण्ड शोथ, अण्डवृद्धि, गर्भाशय की पीड़ा, कमरदर्द, पिंडलियों का फूलना, नासूर, जलना, पसीना आना, क़ब्ज़, सर्वप्रकार के ज्वर, हृदय के रोग, दिमाग की कमज़ोरी, नपुंसकत्व, अफ़ीम छुड़ाना, बिजली गिरना, म्लेरिया, प्लेग ताऊन, महामारी, तेजाब से जलना, मूत्र बन्द, आंख का दुखना वा शिरदर्द, खारिश, अस्वप्न, नींद कम आना, तम्बाकू, मस्सा (मोहका), गोधा हुआ दाग, ऋतु कष्ट से आना वा थोड़ा आना, शोथ रोग इत्यादि ॥

लोग कहते हैं कि कैसे सम्भव होसकता है कि एक ही औषधि सर्व रोगों का इलाज होसके।

पाठक वृन्द ! प्रथम तो मैं आप से यह निवेदन करना चाहता हूं, कि मैं ही
ीं कहता कि "अमृतधारा" लग भग सर्व रोगों में हित कर है, प्रत्युत जो सेवन
ता है वही कहता है कि कदाचित दुनिया में कोई औषधि न होगी कि एक बार
वाकर सारी आयु मनुष्य मंगवाता रहे। परन्तु यह **"अमृतधारा"** है कि जिसको
बार कोई मंगवाता है सदा के लिए मित्र बनाता है। और इस से दिन प्रति दिन
ी बढ़ती ही जाती है। आज कल लग भग दो हज़ार शीशी मासिक की बिक्री
। कुछ मास पीछे इससे भी अधिक होगी। हम उत्तरोत्तरम् ऐसे महाशयों के नाम
ेंगे जो सैकड़ों शीशियां वार्षिक मंगाते हैं। बहुत से श्रीमान् ऐसे हैं कि पचास
ों शीशी से कम उनका कोई आर्डर नहीं होता। कई दानी लोग दर्जनों शीशियां
ाते रहते हैं और मुफ़्त रोगियों का इलाज करके पुण्य लाभ करते हैं। **"अमृत-
ा"** अनेक रोग का इलाज ही नहीं :—

प्रत्युत विचित्रता तो यह है

कि इसका प्रभाव भी तुरन्त ही प्रगट होता है। बहुत से रोग जो अचानक
ष्य को आदबाते हैं या वह पीड़ाएं जो अकस्मात मनुष्य को हो जाती हैं ५ मिनट
ीतर ही तुम इसके भाग जाती हैं।

अभी एक मनुष्य सिर पीड़ा से तड़पता आया खाने को दे लगादी, मानो
ादू की तरह सिर पीड़ा को दूर कर दिया।

अभी एक आदमी पेट दर्द से [illegible] आए हैं उनके "अमृतधारा"
५ बूंद पिलाई। ५ मिनट में दर्द काफूर।

अभी एक आदमी को बिच्छू या भिड़, या सर्प, या कुत्ता, या कोई
विषैला जीव काट गया है, आप ने "अमृतधारा" की चन्द बूंदें मल
और ३ बूंद घी में खिलादीं, १० मिन्ट के भीतर उस की जान बच गई।

अभी एक आदमी कान दर्द से लाचार चला आता है और आपक
"अमृतधारा" की आधी बूंद उसको आराम करती है ॥

अभी एक आदमी एक आदमी दाढ़ पीड़ा से व्याकुल है, २ मिन्ट के भीत
"अमृतधारा" का मर्दन उसको अच्छा करता है ॥

अभी एक आदमी आपके पास आकर कहता है कि अमुक मनुष्य को न
जाने क्या होगया, उसने कोई विष खालिया कि वह बेहोश पड़ा है, आपने
दो चार बूंद घी में डालकर उसके पेट में पहुंचादी और एक बूंद नाक में
डालदी वह होश में है और बातें करता है ॥

अभी एक आदमी को बुखार चढ़ रहा है, आपकी "अमृतधारा" की ३ बूंद
उसको उसी जगह रोक देती है। यदि चढ़ गया है तो इसके देने से पीछे
पसीना आता है और वह राजी होजाता है ॥

अभी एक आदमी को हैजा होगया है, दो चार बार २,२, बून्द मिश्री पर
देने से दो घण्टा के भीतर आराम होता है, पेचिश है दस्त होते हैं, वमन
है शूल है, कोई अचानक दर्द आरम्भ होगई है, तुरन्त इसको दो और आराम
लो। यदि बाह्य दर्द वा चोट है या कोई दाहकारी वस्तु लगने से जलन है,
या घाव होगया है, या आग वा तेजाब से जल गया है, चाहे कुछ भी
हो, आप अमृतधारा को लगा दीजिए ईश्वर की कृपा से आराम पावेंगे ॥

अमृतधारा— जितनी डिसनफिक्टैंट (Disinfectant) अर्थात् कृमी नाशक
औषधियां हैं उन सब से बढ़ कर तेज है। एक दो बूंद हाथ पर
मलकर किसी रोगी को देखलो, पानी में मिलाकर छिड़को, खाओ
और भय से अपने आप को बचाओ। कहां तक वर्णन किया

आवे हमने कोई रोग नहीं देखा जो "अमृतधारा" से आराम न होगया हो, अथवा बहुत कठिन होने से रुक न गया हो। किसी एक रोग पर आराम न आवे तो इसके यह अर्थ नहीं कि "अमृतधारा" उस रोग को लाभ दायक नहीं है। किसी विशेष कारण से उस अवस्था में लाभ नहीं कर सकी है॥

आगे पृष्ठों में सैकड़ों सर्टीफ़िकेट (प्रशंसा पत्र) आपके दृष्टिगोचर होंगे जिनसे आपको ज्ञात होगा, कि इतने भद्र और प्रतिष्ठित जनों का अनुभव कोई साधारण बात नहीं "अमृतधारा" निःसन्देह ऐसी ही है॥

हाथ कङ्गन को आरसी से क्या

सत्य के सन्मुख सब को सिर झुकाना होगा। प्रत्यक्ष के वास्ते प्रमाण की आवश्यकता क्या? प्रश्न यह है, कि यदि इतने मनुष्यों को इसने इतना महान् लाभ प्रदान किया तो क्या कारण है, कि यह दूसरों को लाभ न दे; और इस पर सन्देह किया जावे कि यह कैसे सम्भव होसकता है? वाचक वृन्द! यह सम्भव है दुनिया कहती है:—

हिन्दू, आर्य्य, सिक्ख, जैनी, सनातनी, ईसाई, मुसलमान

प्रत्येक इसकी प्रशंसा करते हैं। ऐसे श्रीमानों के पत्र भी आप पढ़ेंगे, कि वह "अमृत धारा" से इतना प्रसन्न हैं, कि वह लोगों को प्रेरणा करते हैं, कि लोग "अमृतधारा" मंगावें, यदि हितकर न हो तो दाम उन से वापस लेलें।

तथापि ऐसा क्यों होता है?

इसलिये कि इसकी बनावट में हम ने अनेक ऐसी औषधियों का संग्रह किया है, कि जिन को संसार के सम्पूर्ण वैद्य मान चुके हैं कि वह रोगनाशक हैं। रोगनाशक [illegible]

अभी एक आदमी को बिच्छू या भिड़, या सर्प, या कुत्ता, या कोई भी विषैला जीव काट गया है, आप ने "अमृतधारा" की चन्द बूंदें मल दीं और ३ बूंद घी में खिलादीं, १० मिन्ट के भीतर उस की जान बच गई।

अभी एक आदमी कान दर्द से लाचार चला आता है और आपकी "अमृतधारा" की आधी बूंद उसको आराम करती है ॥

अभी एक आदमी एक आदमी दाढ़ पीड़ा से व्याकुल है, २ मिन्ट के भीतर "अमृतधारा" का मर्दन उसको अच्छा करता है ॥

अभी एक आदमी आपके पास आकर कहता है कि अमुक मनुष्य को न जाने क्या होगया, उसने कोई विष खालिया कि वह बेहोश पड़ा है, आपने दो चार बूंद घी में डालकर उसके पेट में पहुंचादी और एक बूंद नाक में डालदी वह होश में है और बातें करता है ॥

अभी एक आदमी को बुखार चढ़ रहा है, आपकी "अमृतधारा" की ३ बूंद उसको उसी जगह रोक देती है। यदि चढ़ गया है तो इसके देने से पीछे पसीना आता है और वह राज़ी होजाता है ॥

अभी एक आदमी को हैज़ा होगया है, दो चार बार ३,३, बून्द मिश्री पर देने से दो घण्टा के भीतर आराम होता है, पेचिश है दस्त होते हैं, वमन है शूल है, कोई अचानक दर्द आरम्भ होगई है, तुरन्त इसको दो और आराम लो। यदि वाह्य दर्द वा चोट है या कोई दाहकारी वस्तु लगने से जलन है, या घाव होगया है, या आग वा तेज़ाब से जल गया है, चाहे कुछ भी हो, आप अमृतधारा को लगा दीजिए ईश्वर की कृपा से आराम पावेंगे ॥

अमृतधारा— जितनी डिसनफ़िक्टेंट (Disinfectant) अर्थात् कृमी नाशक औषधियां हैं उन सब से बढ़ कर तेज़ है। एक दो बूंद हाथ पर मलकर किसी रोगी को देखलो, पानी में मिलाकर छिड़को, खाओ और भय से अपने आप को बचाओ। कहां तक वर्णन किया

जावे हमने कोई रोग नहीं देखा जो "अमृतधारा" से आराम न होगया हो, अथवा बहुत कठिन होने से रुक न गया हो। किसी एक रोग पर आराम न आवे तो इसके यह अर्थ नहीं कि "अमृतधारा" उस रोग को लाभ दायक नहीं है। किसी विशेष कारण से उस अवस्था में लाभ नहीं कर सकी है॥

आगे पृष्ठों में सैंकड़ों सर्टीफ़िकेट (प्रशंसा पत्र) आपके दृष्टिगोचर होंगे जिनसे आपको ज्ञात होगा, कि इतने भद्र और प्रतिष्ठित जनों का अनुभव कोई साधारण बात नहीं "अमृतधारा" निःसन्देह ऐसे ही है॥

हाथ कङ्गन को आर्सी से क्या

सत्य के सन्मुख सब को सिर झुकाना होगा। प्रत्यक्ष के वास्ते प्रमाण की आवश्यकता क्या? प्रश्न यह है, कि यदि इतने मनुष्यों को इसने इतना महान् लाभ प्रदान किया तो क्या कारण है, कि यह दूसरों को लाभ न दे; और इस पर सन्देह किया जावे कि यह कैसे सम्भव होसकता है? वाचक वृन्द! यह सम्भव है दुनिया कहती है :—

हिन्दू, आर्य्य, सिक्ख, जैनी, सनातनी, ईसाई, मुसलमान

प्रत्येक इसकी प्रशंसा करते हैं। ऐसे श्रीमानों के पत्र भी आप पढ़ेंगे, कि वह "अमृत धारा" से इतना प्रसन्न हैं, कि वह लोगों को प्रेरणा करते हैं, कि लोग "अमृतधारा" मंगवावें, यदि हितकर न हो तो दाम उन से वापस लेलें।

तथापि ऐसा क्यों होता है ?

इसलिये कि इसकी बनावट में हम ने अनेक ऐसी औषधियों का जौहर डाला है, कि जिन को संसार के सम्पूर्ण वैद्य मान चुके हैं कि यह योगवाही है। योगवाही संस्कृत शब्द है, इसके अर्थ हैं कि अमुक औषधि में यह प्रभाव है कि जिस औषधि

के साथ मिलाई जावे, उसकी शक्ति को वह बीसों गुणा अधिक कर देती है। योगवाही को एक घोड़े से उपमा दी है, कि उस पर जैसा सवार हो वैसा ले जाता है। परन्तु " अमृतधारा " तो योगवाही से भी बढ़कर है, और उचित अनुपान से इस का प्रभाव वहुत वढ़ जाता है। किन्तु विना अनुपान भी विचित्र चमत्कार दिखाती है।

" **अमृतधारा** " में सुगन्धी से जो वस्तुएं पूर आदि आप पहचानते हैं, यह कई रसायनिक विधियों से पहले योगवाही बनाई जाती हैं, और फिर उन को इसके योगों में सम्मिलित किया जाता है। कई वह औषधियां जिनको वैद्य व हकीम सर्व रोगनाशक लिखते हैं प्रविष्ट की जाती हैं। प्रभाव इसका ऐसा रक्खा जाता है, कि प्रत्येक रोग को हितकर हो, और प्रत्येक स्वभाव वाले को लाभ दे।

" **अमृतधारा** " म यह गुण है, कि तुरन्त उस जगह पहुंचती है कि जहां रोग हो, और सारे तत्त्वदर्शी इस वात पर आरहे हैं, कि रोग वास्तविक एक है जो दूषित अप्रकृत पदार्थों से उत्पन्न होता है। अनेक रूपों और अनेक स्थानों पर प्रगट होने से उसके नाम भिन्न २ हैं। अस्तु ! "अमृतधारा" **रोग** मात्र का इलाज है और इस वास्ते उसके हरेक नाम का भी।

पाठक ! क्या आपने नहीं देखा कि सन्यासी लोग केवल एक विल्व अपने पास रखते हैं और उसकी एक दवाई अनेक अनुपान से प्रत्येक रोगी को देते हैं। और सर्व रोग दिनों के घण्टों में और घण्टों के मिण्टों में दूर होते हैं। "अमृतधारा" उस से भी बढ़कर है। यह हफ़्तों के रोग दिनों में और दिनों के घण्टों में और घण्टों के मिण्टों में दूर करने की शक्ति रखती है। जो एकवार आज़माता है उसके सारे संशय निवारण होजाते हैं और वह भी अमृतधारा के प्रशंसकों की पवित्र मण्डली में प्रविष्ट हो जाता है।

तार

अमृत धारा

की लोकप्रियता इस से भी मानी जासकती है, कि जो माननीय इसके ग्राहक हैं यथा आवश्यक इस को तार द्वारा मांगते हैं । यदि आप सब तारें देखें तो हैरान होजावें, एक शीशी नहीं बरन् कई शीशियां तार द्वारा मंगाई जाती हैं, इस वास्ते तार घर में हमनें अपना नाम रजिस्टर्ड करवा छोड़ा है, ताकि जो सज्जन तार दें, केवल दो शब्द पते में आवें, यथा "अमृतधारा" और लाहौर लिखना यथेष्ट है । हम किंचित तारों के मज़मून स्थालीपुलाकन्याय के तौर पर अंकित करते हैं ।

यथा

श्रीमान् डी० ऐन० रैना साहब श्रीनगर से तार देते हैं "६३ शीशिया अमृतधारा भेजदें"

बाबू चन्दूलाल साहब सरायकला से तार देते हैं:— "अमृतधारा, दवाई प्लेग फौरन भेजदें"। बाबू देवकीनन्दन साहिब सीवान से तार देते हैं "एक शीशी अमृत धारा भेजदें" । हाजी सरदारखां साहब मण्डला से तार देते हैं "अमृतधारा की आठ शीशियां भेज दीजिए" बाबू ज्योति प्रसाद साहब लखनऊ से तार देते हैं "एक शीशी अमृतधारा भेजें", जनाब हाजी सरदारखां साहब फिर तार देते हैं "अमृतधारा की आठ शीशियां भेजें", जनाब फरेदूं जी मेहरबान जी हैदराबाद से तार देते हैं "तीन शीशी अमृतधारा भेजदें" मियां अबदुल क़दूस साहब मेडीकल प्रकटिश्नर पट्टी से तार देते हैं "२ शीशी अमृतधारा बहुत जल्द भेजें" सय्यद अबदुल क़ासिम साहब भरतपुर से तार देते हैं "अमृतधारा की १० शीशियां जल्द भेजें" मेडीकल प्रकटिश्नर चन्दौर से तार आई, "१२ शीशी अमृतधारा हैजा के रोगियों में बांटने के वास्ते भेजदें" । बाबू गणेश प्रसाद साहिब तहसील रसड़ा से तार देते हैं "४ शीशियां अमृतधारा शीघ्र भेजदें", बाबू ज्योति प्रसाद साहिब लखनऊ से तार देते हैं "२शीशी अमृतधारा भेजदें" बाबू लोकनाथ साहब क्वेटा से तार देते हैं "३ बोतल अमृतधारा

जल्द भेजदीजिए" । इत्यादि २ ! ! ! इस प्रकार की असंख्य तारें आती रहती हैं । यह अमृतधारा की लोकप्रियता और शीघ्र प्रभावशीलता का कारण है ।

पाठक !

क्या मुझे किसी और भी प्रमाण देने की आवश्यकता बाकी है, यदि मैं आप को एक मास की बिक्री अमृतधारा की दिखला दूं। आप विचार करें कि एक २ श्रीमान जो दर्जनों शीशियां न केवल एक बार में वरन् कई२ बार मंगवाता है, तो इस में कुछ खूबी पाता है जो मंगवाता है । भारत वर्ष भर में आपको किसी जगह इस की उदाहरण न मिलेगी, कारण यह है कि **अमृतधारा की स्वस्थ और रोगी हर एक को हर समय आवश्यकता रहती है** । कौन जाने किस समय क्या अवस्था हो, अतः इसकी एक शीशी हमेशा पास रखनी जरूरी है । यही कारण है जो एक बार आज़मा लेता है सदैव मंगवाता रहता है । और दिन प्रति दिन इसकी बिक्री बढ़ती जाती है । यह बिक्री मास फरवरी १९०८ की है, आज कल इस से अधिक है । परन्तु "अमृत" के वास्ते उस समय यही सूची तय्यार की थी, सुगमता के वास्ते उसी को यहां दे दिया है ।

नाम ग्राहक मै पता	कितनी शीशियां मंगवाई
फ़ज़ल हक़ साहब क़ुरान	२
ला० काका राम साहब राजपुरा	२
बाबू शिवसहाय साहब सनात	३
मरकीय साहब सिन्देरा	४
शेख फर्जन्दअली साहब डेराइस्माइलखां	४
महम्मद अशरफ़ साहब रामपूर	४

नाम ग्राहक मैं पता	कितनी शीशियां मंगवाई
पैरेप्रिसाद साहब पंतरा	५
पं० कृष्णदत्त साहब डूंगर	४
बखतावर सिंह साहब महेन्द्रगढ़	८
जयदयाल साहब मियांवाली	३
दबरुिद्दीन साहब पटवाटोली	३
खननलाल साहब खानेवाल	३
दलीपसिंह साहब मैसूर	६
रलाराम साहब एबटाबाद	४
जगत् सिंह साहब रामपुर जोरी	३
फ़ैज़ महम्मद साहब कोट मीरूखां	३
शिवदयाल साहब रावलपिण्डी	६
नानकचंद साहब कटनी	४
महम्मद अताउल्लाखां साहब पुलगांव	४
शम्भू दयाल साहब दतकौर	८
आर० ऐम० कम्पनी नागपुर	६
अबदुलहुसैन साहब कोहाट	१०
चिरागउद्दीन साहब लसबेला	३
करोड़ीसिंह साहब ब्राह्मनवारा	४
सांईदास बंगाला	३
बद्रीनाथ साहब गोंगीरा	३
अफ़ज़ल हुसैन साहब जबलपुर	३
न्यामत हुसैन साहब हरसूद	३
महम्मद अबदुल करीम साहब कमलपुर	४

नाम ग्राहक मै पता	कितनी शीशियां मंगवाई
चाकर खां साहब कन्दकोट	४
बिसनाराम साहब स्याहर	५
कर्मचंद साहब अहमदपुर लम्मा	४
गलगा खां साहब चक नं० ३७	३
सय्यद अली साहब बजगांव	४
अबदुल रहमन साहब बैनी	३
बृजलाल साहब मनपुर	३
कृपासिंह साहब भम्बली	३
बाबा काहन दास साहब लाहड़ी	४
शेख अहमद साहब मसलपिट्टम	१०
महम्मद अहमदशाह साहब भरतपुर	६
गेंदनलाल साहब नरखेड़ा	४
नीलकण्ठराव साहब कोहा	१०
दीवान कक्कूराम साहब मीरपुर	४
बलदेव प्रसाद साहब बिहानी	३
लालचन्द साहब संजावी	४
अबदुल रहमान साहब सेवपुर	४
ला० जैदयाल साहब धनाबाद	३
रामचन्द साहब मंडला	३
शेखगफूर साहब खड़कीपुर	६
बांकेलाल साहब सियाना	४
ख्वाजा अहमद शाह साहब लदाख	४
रलाराम साहब रावलपिंडी	३

नाम ग्राहक मै पता	कितनी शीशियां मंगवाई
इन्द्रराज सिंह साहब सांबी	४
जुगुलकिशोर साहब अन्ता	६
मोहनसिंह साहब अलाउल्दीनपुर	५
बिहारीलाल साहब नृसिंहपुरा	६
हरगुलालासिंह साहब गजीबाबाद	
भगवानदास साहब सरगोधा	५
सलेकचंद साहब बटालखुर्द	१२
कृष्ण बिहारीलाल साहब कानपुर	४
कृपाराम साहब अम्बाला	३
फीरोज हुसैन साहब ऐंडको दिल्ली	१०
जुगलबिहारी लाल साहब पटना	१०
अमीरसिंह ऐण्डको मुरादाबाद	३
मोलवी मदेशमहम्मद साहब ऐगपट	४
दुनीचन्द साहब राजगढ़	४
घनश्यामदास साहब खोड़	५
निगाहियामल साहब लदाख	८
राजकिशोर साहब टांक डवीजन	४
महम्मद इबराहीम साहब जैकबाबाद	३
नियादर मल साहब खानपुर	४
हरस्वरूप साहब जहलू	४
नूरउल्दीन शमसउल्दीन साहब सूरत	१२
शेख अहमद साहब पैडोना	७
[illegible] साहिब [illegible]	१२

नाम ग्राहक मै पता	कितनी शीशियां मंगवाई
महम्मद मसऊदउलहक्क साहिब मेजरा	३
शिवनारायण प्रसाद खलीलाबाद	४
खुशीराम साहिब कारक	६
विष्णुदास साहिब दीपालपुर	३
जवाहरसिंह साहिब क्वैटा	४
मुमताजअली साहिब होडल	४
लाजपतराय साहिब कैथल	३
महम्मदहुसैन साहिब गंदावा	२०
निहालचन्द साहिब सुनपत	३
बखतावर सिंह साहिब महेन्द्रगढ़	१०
बाबूराम साहिब बांसबरेली	४
लालबिहारी साहिब दरभंगा	४
कर्तारबख्श साहिब बस्ती	५
सुलेमानखां साहिब अदन	५
लालचन्द साहिब मुलतान	५
कृपाशंकर साहिब सहेबर	५
सीताराम साहिब डीह	३
सैयद आबाद हुसैन साहिब अनूपपुर	४
रामसिंह साहिब कोट सुलतानसिंह	३
चन्दा साहिब श्रीनगर	४
जुम्मा खां साहिब किलासनी वाला	४
महता जगत् सिंह साहिब रामपूरराजोरी	४
धनीराम साहिब बिलासपुर	१२

योग——५१०

सर्वयोग १५२१ हुई इस में सैकड़ों नमूने शामिल नहीं हैं।

ईश्वर तेरी कृपा है, मैं कोई अभिमान नहीं करता, केवल पबलिक को सत्य दिखाता हूं।

"अमृतधारा" और प्लुरोग !!

घोड़ा आदि पशुओं के रोगों पर

अमृतधारा और प्लेग ।

प्लेग हमारे देश में सत्यानाश कर रही है । कोई दवाई हितकर प्रमाणित नहीं होती । अमृतधारा प्लेग के वास्ते भी रामवाण है । परन्तु जैसे और रोगों पर यह ९९ सैकड़ा फ़ायदा करती है; वैसे इस पर नहीं । मेरे पास ५०० के लग भग पत्र आये हैं, कोई साहिब लिखते हैं ६० फ़ी सदी रोगी अच्छे हुए, कोई कहते हैं ७० फ़ीसदी, और कोई ८० फ़ीसदी बताते हैं । ९० फ़ीसदी से अधिक किसी ने नहीं लिखा, हां जिन्हों ने दो चार रोगियों पर बर्ता वह सब के सब स्वस्थ होगए । परन्तु हम को अधिक से अधिक संख्या से अनुमान लगाना है । प्लेग के विषय में किञ्चित् आगम पत्र हम आगामी पृष्ठों में पृथक अंकित करेंगे, उन को देखें और आप को निश्चय होगा, कि अमृतधारा प्लेग की सर्व ज्ञात हुई औषधियों मेंसे किसीसे न्यून नहीं है ।

इसकी खूबियां ।

"अमृतधारा"—रक्षक प्लेग में भी काम देती है । प्लेग के दिनों में यदि २ बूंद सायम् प्रातः पानी या घी के साथ खाई जाय तो ईश्वर की कृपा से मनुष्य सुरक्षित रहता है ॥

"अमृतधारा"—अव्वल दर्जे की शोधक (Disinfectant) भी है । फ़िनायलादि से अधिक प्रबल है । प्रत्येक रोग के कीटों (जर्म्ज़) को मार देती है । हां उन से महंगी अवश्य है । फ़िनायलादि जो कीट नाशक वस्तुऐं हैं, वह यदि खाई जावें तो मृत्यु का भय है । शरीर को लग जावे तो शरीर को खराब करती हैं । उनकी दुर्गन्धि बहुत बुरी है । यदि अमृत धारा खाई जावे तो भी लाभ है, लगाने से भी लाभ है, दुर्गन्धि के स्थान में इस में सुगन्धि है ॥

"अमृतधारा"—को प्लेग के दिनों में तैल में मिला के शरीर पर मला जावे; तो रोग कृमी शरीर को लगते ही मर जाते हैं। जब किसी प्लेग ग्रस्त के पास जावो, 'अमृतधारा' २ बूंद हाथों को मल लो। कोई भय नहीं रहता। कपड़ों को लगाई जावे कपड़ों की शुद्धि होती है। यदि गरम पानी पर डाल कर अग्नि पर रक्खा जावे, तो उड़कर कमरे को सुगन्धित कर देती है। और कमरे को शुद्ध कर देती है॥

"अमृतधारा"—को शोधकारी (डिसइन्फेक्टेंट) मैं ही नहीं कहता, वरन् बड़े बड़े डाक्टर इसको सब से तेज़ मानते हैं। एक बूंद हज़ार बूंद पानी में डालदो ५ मिण्ट में रोग कृमी को नष्ट करती है। पानी में मिलाकर छिड़कना बहुत गुणकारी है। जहां तक होसके इस को ही सेवन करें। यह हर प्रकार से लाभ दायक प्रमाणित होगी, आगे ईश्वर मालिक है॥

"अमृतधारा"—को प्लेग ग्रस्त पर दिया जाता ह, यदि शिर पीड़ा आदि लक्षणों के प्रगट होने पर ही दिया जाय, तो एक घण्टे में आराम आ-जाता है। यदि ज्वर आरम्भ होते ही दी जावे, तो पसीना आकर कृमी मर कर २, ४ घण्टों में या एक दिन में आराम आता है॥

यदि गिलटी प्रगट होने लगी है, तो अमृतधारा की मालिश वहीं की वहीं बैठा देती है। यदि निकल चुकी है, तो और औषधियों के साथ इस को लगाया जाता है, उसको यह फोड़ देती है। यदि ज्वर को देर होगई हो तो ७० फ़ीसदी आराम ही होता है। परन्तु जितना शीघ्र दिया जाय उतना ही आराम जल्दी आता है॥

मित्रो ! सोचो

क्या अमृतधारा किसी समय भी आप की जेब से पृथक् होनी चाहिए ?

लाला रामचन्द साहिब सरवे अफ़ीसर कानूं (इन्दौर) से लिखते हैं :—

अमृत धारा से भस्में ।

प्रवाल भस्म विधिः—

चांदी भस्म विधिः—

करता ह सन्तान उत्पत्ति के योग्य बनाता है, शीघ्रपात को नष्ट करता है। पुरुषार्थ बढ़ जाता ह। धातु सम्बन्धी कोई ऐसा रोग नहीं, जिस का यह इलाज नहीं॥

छिलका कुक्कटाण्ड भस्म विधिः—

कुक्कट के अण्डे का छिलका नमक के पानी में भिगोकर भीतर का छिलका दूर कर दो, १ तोला छिलका ६ माशा अमृतधारा में खरल करके टिकिया बनावें, और मिट्टी के प्यालों में रखकर दस सेर ऊपलों की अग्नि दें, भस्म होजायगी पीसकर रख छोड़ें। मात्रा १ रत्ती, सब प्रकार के प्रमेह के लिए मक्खन के साथ हितकर है। वीर्य्य उत्पादक है। चालीस दिन तक स्त्री को खिलावें तो नवयौवना बनावे ॥

हड़ताल भस्म विधि:—

हड़ताल १ तोला, अमृतधारा ३ तोला, मिट्टी के कूज़ा में रख कर मुंह बन्द करके आध सेर ऊपलों की अग्नि दें और ठण्डा होने पर पीस कर रख छोड़ें, मात्रा २ चावल दूधादि से, सर्व ज्वरों की इलाज है। स्त्री को भी हितकर है। चर्म रोग, रक्त-राग, कुष्ट रोग भी दूर हो जाता है॥

नोट—इस प्रकार की भस्म आग पर रखने से उड़ जाती है, यद्यपि असंख्य लाभ हैं। यदि न उड़ने वाली बनानी हो; तो अमृतधारा में ही खरल करें फिर २ तो० आक (मन्दार) के दूध में खरल करें, फिर १० तो० चोलाई के रस में, फिर ५ तो० रस थवकल में खरल करके टिकिया बना कर अमृतधारा के बीच रख कर इसी प्रकार अग्नि दें।

गोदन्ती हड़ताल भस्म विधि :—

डली को अमृतधारा में तर करके कुज्जी में बन्द करके ५ सेर उपलों की अग्नि दें निकाल कर पीस कर रख छोड़ें, मात्रा २ रत्ती, ज्वरों के वास्ते रसायन है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक को दी जासकती है॥

संगयहूद भस्म विधि

संगयहूद १ तो०, शोरा ६ माशा, अमृतधारा यथावश्यक के साथ खरल करके टिकिया बनावें, १० सेर की अग्नि दें, यदि सफ़ेद न हो तो एक आंच इसी प्रकार और दें। दर्द गुरदह, और मूत्राशय के वास्ते रसायन है। रेग गुरदह को भी हितकर है। पथरी को तोड़ देती है। मात्रा १ रत्ती बकरी के दूध या ताज़ा पानी के साथ खावें तो उपर्युक्त रोग दूर होवें ॥

संगजराहत भस्म विधि

संगजराहत को अमृतधारा के साथ खरल कर, टिकिया बना, १० सेर ऊपलों की आंच दें, फिर दूसरी आंच घीकुवार के गूदे में खरल करके दें, भस्म हो जायगी। ख़ूराक १ रत्ती से ३ तक, सिल और रुई के लिए हितकर है। खांसी को दूर करती है। मधु या दूध के साथ देवें तो सोज़ाक को शीघ्र आराम आता है ॥

अक़ीक़ भस्म विधि

अक़ीक़ को अग्नि में लाल करें, अमृतधारा में बुझावें, इस प्रकार तीन बार करें, भस्म तैयार होगी। यदि सर्वथा सफ़ेद न हुई हो, तो और भी बुझाव दे सकते हैं। १ से २ रत्ती तक ख़ूराक है। हृद रोग, यकृत की ऊष्मा, प्रमेह आदि के लिए मक्खन में मिला कर खिलावें अनुभूत है। मुनक्का में डाल कर दें तो वातज और कफज रोगों को दूर करती है। दांतों पर मलें तो दांतों को दृढ़ करती है और दांत चमकने लगते हैं ॥

शिंगरफ़ भस्म विधि जो अत्यन्त पौष्टिक है

पहले शिंगरफ़ को पाव भर बहरोजा के बीच प्याला में रक्खें, और नीचे तेज़ आंच करें, थोड़ी देर के पीछे प्याले के भीतर अग्नि लगा दें, १५-२० मिन्ट के अंदर

सारा बहरोजा जल जाएगा, डली को अलग निकाल लें । लौंग १ तोला अमृतधारा में खरल करके १ तोला शिंगरफ की डली पर लेप करें, और ६ तोला फिटकरी ऊपर नीचे देकर मिट्टी के कूजा में बन्द कर दें, फिर ४ सेर उपलों की अग्नि दें भस्म सफेद रंग की निकल आवेगी, खुराक एक चावल मक्खन के साथ, सात दिन में वह शक्ति आवे जो खाने वाला ही जान सकता है, एक मास में नामर्द मर्द बन जाता है, शिंग्रफ के बराबर पौष्टिकर औषधि कोई ही होगी ॥

फौलाद शिंगरफ़ी भस्म विधि

फौलाद १ तोला, शिंगरफ १ तोला, दोनों को अमृतधारा यथावश्यक में खरल करके टिकिया बनावें, कूजा मिट्टी में बन्द करके ४ सेर ऊपलों की अग्नि दें, फिर निकाल कर पुनः वैसा ही करें, अधिक अच्छी बनानी हो तो ७ अन्यथा ४ पुट इसी प्रकार देवें भस्म लाल रंग की प्राप्त होगी खुराक १ रत्ती, शीघ्रपतन, धातुक्षीण, शुक्र मेह, स्वप्नदोष, को दूर करके बल को बढ़ाती है, दूध घी माखन के साथ खावें तो उपरोक्त सारे रोग एक दम दूर करे ॥

अमृतधारा के द्वारा दूसरी सर्व भस्में भी होसकती हैं

लेख वृद्धि के भय से यहां किंचित् आवश्यक भस्मों का ही वर्णन किया गया है ॥

नोट आवश्यक—कुज्जी या प्यालियों में जब दवाई बन्द करनी हो तो ऊपर मिट्टी लगा कर सुखा लेनी चाहिए। जो उड़ने वाली वस्तुएं हैं यथा हड़ताल, शिंगरफ, इन्हें अच्छी तरह बंद कर देना चाहिए, यदि जरा भी छिद्र रह जावे तो उड़ जाती हैं जो वस्तु न बनें स्पष्ट लिख कर हम से भूल ठीक करा लें। भस्मों की विद्या कठिन है भूल रह जाए तो भस्म नहीं बनती ॥

ठाकुर दत्त शर्मा वैद्य

लाहौर ॥

सावधान

ध्यान से पढ़ें धोखे से बचें

"अमृत धारा,, ने जितना नाम पाया है, उस को आप सब लोग जानते हैं, इसका कारण केवल इसकी अति प्रभावशालिता है, क्योंकि कोई औषधि आज तक इतनी जल्दी दुनियां में प्रसिद्ध नहीं हुई है। इस के विज्ञापन के पहिले किसी भी ऐसी औषधि का विज्ञापन न था, यदि कोई साबित करदे तो हम एक हजार रुपया इनाम देंगे। हिन्दोस्तानी बेचारे कोई नवीन आविष्कार तो कर नहीं सकते, जो कोई भूले भटके ईश्वर की कृपा से करता है तो सब के सब हाथ धोकर उस के पीछे पड़ जाते हैं। अतएव बहुतेरों ने अपना लक्ष्य बना रक्खा है, कि अखबारों में काफूर अजवायन लिख कर लोगों को भ्रमाते रहें, कि यही **"अमृतधारा"** का नुसखा है। वह ईर्षा से जलते हैं कि मैं इतनी उन्नति क्यों कर रहा हूं। मैं उन सब ईर्षालुओं को जानता हूं। उनकी ईर्षा का कारण केवल मेरी उन्नति है। ठाकुरदत्त क्यों बढ़रहा है यह बात उनको चैन नहीं लेने देती। बाज़ ऐसे भी होते हैं जो दूसरों का बुराही ताकते हैं, परन्तु ईश्वर की कृपा सब से प्रबल है, इतना तूफान मचने पर भी कार्य्यालय **'अमृतधारा'** की दिन प्रतिदिन उन्नति होरही है, और लोग सत्यासत्य की पहचान कर रहे हैं। **अमृतधारा** सेवन के पीछे निश्चय कर लेते हैं कि असल और नकल बराबर नहीं होतीं। और सदा के लिए **अमृतधारा** के गाहक बनजाते हैं। **अमृतधारा की इतनी लोक प्रसिद्धता झूठे विज्ञापकों को चौंका देने को यथेष्ट थी और लगे खोज निकालने कि किसी प्रकार "अमृतधारा" का योग मालूम होजावे,** यहां तक कि मेरे पन्सारियों से जाकर पूछा करते कि पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा कौनसी दवाई अधिक खरीदता है। परन्तु मैं कोई दवाई लाहौर से लेता हूं तो कोई **अमृतसर** से, कोई बम्बई और कोई जापान से, और इस के अतिरिक्त यदि किसी को योग मालूम भी होजावें और तोल व विधि ज्ञात न हो तो खाक कोई बनावेगा।

हवाई गोला और अनारादि के बारूद में केवल तोल का ही अन्तर होता है, इस
ध्यान में लाईए। दृष्टान्त के लिये, काफूर कोही लीजिए जोकि "**अमृतधारा**" क
देखते ही प्रत्येक बता सकता है कि इस में सम्मिलित है, परन्तु वह कई दिन की मेहनत
से हम तैयार करते हैं। काफूर में कई औषधियां मिलाई जाती हैं फिर उसको उन से
पृथक् किया जाता है, जिसका यह उद्देश्य होता है, कि वह उन औषधियों के प्रभाव
अपने भीतर खींच लावे। यह औषधियां ऐसी होती हैं और उनका योग ऐसा बना है
कि कपूर में हर रोग पर चलने की विशेष शक्ति उत्पन्न होजाती है। और अब हम
इसे कपूर नहीं कह सकते, वरन अमृत, और केवल इसको हम १०) तोला पर बेचते हैं
इसी प्रकार दूसरी औषधियों में भी कई बखेड़े करने पड़ते हैं। मैं सत्य कहता हूं कि
एक औषधि मुझे ऐसी भी डालनी पड़ती है जिसको बनाते हुए छैः मास लग जाते
हैं। और झूठे विज्ञापकों के ख्याल में भी नहीं आसकती। विलक्षण प्रभाव जो बड़े ब
वैद्यों को भी अचम्भे में डाल देते हैं इस में उत्पन्न करना कोई खाला जीका घर नहीं
है, वर्षों के परिश्रम के पश्चात् मैंने इस को निर्म्माण किया है। और उस के पीछे
कितनी देर तक इस में अदल बदल करता रहा। जिस रोग पर अहितकर प्रमाणित
हुई तुरन्त संशोधन किया। और इस प्रकार चिरकाल के संग्राम को ईश्वर ने सुफल
किया। वह दिन धन्य था जब ईश्वर की कृपा से यह मुझे प्राप्त हुई॥

परन्तु झूठे विज्ञापक न टले

और लगे इस औषधि के गुण लिखकर अनेक नामों से धड़ा धड़
विज्ञापन देने। बाजों ने तो हमारी सूची और सेवन विधि पत्र की अक्षर प्रत्यक्षर
नक़ल की और पबलिक को धोखा दिया। इस समय तक लगभग ४०
विज्ञापन ऐसे निकल चुके हैं। जिन में से २०, २५, बरसाती कीड़ों मकोड़ों की
तरह मर भी चुके हैं। क्योंकि काठ की हंडिया कब तक चढ़ सकती है। लोग विचारे
क्या जानते हैं कि उनको क्या भेजा जावेगा। विज्ञापन दिया और जो जी में आया
भेजदिया। कपूरादि होने से साधारण रोगों पर तो कभी लाभ होजाता है और कभी

नहीं होता। तब हमें पत्र पहुंचने लगे कि हमने मूल्य कम देखकर अमुक आदमी से अमुक दवाई जिस के गुण "**अमृतधारा**" जैसे वर्णन किय जाते थे मंगाई, परन्तु शोक कि दाम नष्ट किए। मैं देशोपकारक के पाठकों को तो पहले ही से सावधान करता रहता हूं और कदापि कोई विश्वास करने के लिए तैयार नहीं। अब पबलिक की अवगति के लिए विज्ञापन द्वारा प्रगट करता हूं, कि आप सत्य जानें, मै धर्म्मानुसार कहता हूं कि **अमृतधारा** का नुसखा किसी के पास नहीं है। मेरा निम्मार्ण किया हुआ है और मैंही इसको इस प्रकार बनाता हूं, कि कोई इसकी विधि को देख नहीं सकता। फिर बहुत से हमारे नौकरों ने जो यह जाकर कहना आरम्भ कर दिया था, कि हम वहां नौकर रह आए हैं इसलिए हम जानते हैं कदापि ठीक नहीं है। पबलिक को चाहिए कि धोखे से बचे और कभी झूठी नकलों को न खरीदे। जब कि असल जितनी उन को चाहिए मिल सकती है। इसकी इतनी जो नकलें निकल रही हैं और प्रत्येक चाहता है कि **अमृधारा** का मालिक हो जावे, यह भी इस के प्रभावशाली होने का प्रमाण है। निश्चय कर लीजिए कि "**अमृतधारा**" कार्य्यालय **अमृतधारा** ही की बनी हुई ऐसी महौषधि है जो हर घर में रहने के योग्य है। और हर रोग को दूर कर सकती है। और किसी अवस्था में हानि करती नहीं देखी गई। यदि आप इसे आजमावेंगे तो अवश्य इस से आप लाभ और नकलों से हानि उठावेंगे। दृष्टान्त स्वरूप आप देखते हैं कि "**अमृतधारा**" ने संखिया, अफीम, हड़तालादि बिषों को दूर किया नकली इन को कदापि दूर न कर सकेगी॥

अमृधारा ने बहु काम किए हैं कि यदि आप छपे हुए प्रशंसा पत्रों का विचार पूर्वक अध्ययन करेंगे तो आप को ज्ञात होगा कि जहां बड़े से बड़े डाक्टर भी अकृतकार्य्य रहे इस ने फायदा किया। वर्षों की बीमारियां महीनों में, और महीनों की दिनों में दूर कीं। दिनों की घण्टों में घण्टों की मिन्टों में उड़ा दीं। जिस ने एक बार आज़माया सदा के लिए यार बनाया, लाखों शीशियां बिक चुकी हैं। और आज तक वाह २ हो रही है। जिस गांव में चली जावे गांव प्रसन्न हो जाता है। इस के द्वारा लोग रोगियों

का इलाज करके पुण्य लाभ करते हैं। और निकट व दूर प्रसिद्ध हो जाते हैं। हकीम, डाक्टर, वैद्य, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, ब्रह्मो, आर्य्य, सब इस को वर्तते हैं ॥

नक़ली असली का फ़र्क़ ॥

दिखलाने के लिए हम ने स्वयम नकली **अमृतधारा** तैयार कर रक्खा है। जिस का नाम "**आबहयात**" है। इस का मूल्य ॥|) शीशी है। इतनी ही बड़ी शीशी "**अमृतधारा**" की २॥) की है। मेरा दावा है कि झूठे विज्ञापक मेरी नकल का भी मुकाबला नहीं कर सकते ॥

इस विषय में हम कुछ सम्मतिया यहां पर लिख देनी उचित समझते हैं ॥

कहते थे हमारी अपनी बनाई हुई 'अमृतधारा' है।

"मैंने नमूना "**अमृतधारा**" सिर दर्द के वास्ते एक शीशी ली, परन्तु मुझे शीशी का आठवां हिस्सा लगाने से ४ मिण्ट में आराम हो गया, फिर मुझे दर्द दाढ़ का दुःख हो रहा था, मैंने बाजार से बहुत दवाई लगाई और एक मनुष्य यह भी कहता था यह "**अमृतधारा**" है हम ने अपनी बनाई है मुझे आराम न हुआ, मैं पंडित जी के पास स्वयम् गया और मैंने "**अमृतधारा**" लगाई, तुरन्त लाभ हुआ ॥

सांईदास सराफ़ कूचा कट्टा सहगल लाहौर"

बतौर नीलाम दवाई बेचता है ॥

जनाब पंडित साहिब ! हाल यह कि बाबू........से जो गाड़ी पर बतौर नीलाम दवाई बेचता है एक शीशी दवाई नकली "**अमृतधारा**" खरीद की, कुछ लाभ न हुआ। भागसिंह, पत्तोकी ध्यार तहसील चूनिया जि० लाहौर" ॥

गला पकड़ लिया ॥

"मान्यवर श्रीम पंडित जी! पवलिक की विज्ञप्ति के लिये मैं सहर्ष लिखता हूं कि ११ नवम्बर १६०६ को मैं अपने आफ़िस में काम कर रहा था, अकस्मात मुझे दस्त आरम्भ हो गए, उस समय मेरे पास आप की "**अमृतधारा**" मौजूद न थी जिस के सेवन से मैं रोग से बचसकता, पर हमारे आफ़िस में एक साहिब ने एक दवाइ रंगत आदि सर्वथा आप की तरह की तैयार की थी, और जिस के विषय में उसका दावा था कि यह वही नुसखा है जो कि पंडित ठाकुरदत्त शर्मा साहिब की "**अमृतधारा**" का है और इसके सत्य होने का वह निश्चय दिलाता था, मुझे उस समय और क्या चाहिए था, मिसरी पर डाल कर ५, ४ बून्द खा गया, परन्तु परिणाम उलटा निकला दस्त तो बन्द न हुए, उलटा मुझे इस नकली "**अमृतधारा**" ने गले से पकड़ा, मेरे गले में अत्यन्त तीव्र कष्ट प्रतीत हुआ, न मालूम कौनसी खुश्क दवा इस में शामिल थी, कुछ देर पीछे इस दुःख से छुटकारा मिला, अब मैंने प्रण कर लिया है कि थोड़ी सी "**अमृतधारा**" आप से लाकर दफ़तर में भी रख छोड़ूं ताकि कष्ट के समय काम आसके। मूलचन्द उपमन्त्री आर्य्य समाज, दफ़तर रेलवे प्रेस लाहौर" ॥

बहुतों ने "अमृतधारा" की नक़ल की है ॥

और "**अमृतधारा**" की तरह सर्व रोगों के दूर करने में अपनी औषधियों को बड़े २ लच्छेदार शब्दों में प्रगट किया है, पर मैं इन सब का तजरुबा कर चुका हूं, इस शेर के मुताबिक पाया, "बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिलका । जो चीरा तो इक क़तरा खून निकला" महम्मद इबराहीम मथुरा" ॥

नक़ल नक़ल है और असल असल है ॥

"जनाब पंडित साहिब........अर्ज यह कि मियाद बीतने के पश्चात् फिर उसी कृपा का चाहना सभ्यता के विरुद्ध है, तथापि आप की उदारता और दयालता को सन्मुख लाकर मैंने साहस किया है कि आपका ध्यान रियायत की ओर दिलाऊं।

निस्सन्देह आपकी **"अमृतधारा"** ने वह नाम पाया है कि दूसरी दवाएं कदाचित् ही पासकेंगी, यद्यपि आपकी नकलें की गईं परन्तु असल २ है और नकल २ है, **"अमृतधारा"** असली की बूंदों ने वह काम दिखलाया कि नकली पूरी शीशी भी नहीं कर सकी। अतः आपसे ६ शीशी **"अमृतधारा"** की रियायती मूल्य पर प्रार्थना करता हूं:— वी०पी० द्वारा भेजकर कृतज्ञ करें। सय्यदग़ुलाम सफ़दर अहमदी मुदर्रिस हाई स्कूल मुल्क उड़ीसा जि० पुरी" ॥

श्रीमान् कुंवर नवरत्नसिंह साहिब लिखते हैं :—

कोई १० शीशियां **"अमृतधारा"** मंगवा चुका हूं, जिनकी प्रशंसा की आवश्यकता नहीं, संसार जानता है। और इसी कारण से और लोगों ने नक़ल बनानी आरम्भ करदी, एक तो बटाला से मेडीकल हाल ने यह विज्ञापन में लिखकर भेजा कि "अमृतधारा" से ज़रूर मुकाबला करें, और इसी प्रकार आबहयात का जवाबी कार्ड प्राप्त हुआ, नमूना मंगवाया खुशबू और स्वाद **"अमृतधारा"** से कुछ मिलता है परन्तु गुण कदापि नहीं मालूम होते" ॥

जनाब बाबू महम्मद इस्माइलखां

साहिब कीरतीपुर से लिखते हैं :—चन्द जगह से इस तारीफ़ की शीशियां मंगवाईं, जैसी मुफ़ीद आपकी **"अमृतधारा"** है, किसी में भी वह असर नहीं। एक साठ वर्ष के बूढ़े को कै और बुखार के दुख से प्राण तजते हुए को इसने बचाया" ॥

सोने के आगे पीतल !

मियांवाली से भक्त मोतीराम जी मंत्री आ० स० मियांवाली अपना डेढ़ वर्ष का तजुर्बा **'अमृतधारा"** के विषय में लिखते हैं :—

"विज्ञापनों को पढ़ कर मुझे यह विश्वास नहीं आता था कि **"अमृतधारा"** सच मुच वैसी होगी, मैंने नमूना मंगा कर सेवन करना आरम्भ किया, और **अमृतधारा** के सच्चे गुणों ने मुझे और मेरे शहर को अपना प्रेमक बना लिया; फिर क्या था

एजन्सी की भान्ति दुकान खोली गई, और हर मास चार पांच पार्सल बीस२ शीशियों के मंगवाए गए और हाथों हाथ बिकते गए, बिच्छू का डंक, दर्द सिर, हर तरह का दर्द पेट, दर्द आंख, हर तरह का फोड़ा घाव, बदहजमी, दिल की गरमी बेचैनी, खांसी, बुखार इन सब रोगों पर मैंने अपनी दुकान पर कई रोगियों का अपने हाथ से इलाज किया औ करामात की तरह लाभ हुआ, एक दो जगह तो शर्तिया इलाज पर इनाम भी पाया, मेरी एजन्सी की तारीफ सुनकर अमृतसर से तिरयाक, पिंडी बहाउद्दीन से आवहयात, और अपने शहर से इसी तरह की नकली "अमृतधारा" के नमूने आये परन्तु असली "अमृतधारा" के मुकाबिल में जैसे सोने के सामने पीतल फेल होती है सब गिर गये, लोग महंगाई की शिकायत करते हैं जो पण्डित जी से कम करने की प्रार्थना की जाती है मेरे शहर में प्रायः समझदार घरानों में एक शीशी असली "अमृतधारा" हर समय रहती है और रहनी चाहिये। और दूसरी औषधियां भी पण्डित साहिब की अति गुणकारी हैं, जिनमें खांसी की गोलियां सबसे बढ़कर हैं । मैंने काम काज के कारण एजन्सी का काम कम कर दिया तथापि अपना डेढ़वर्ष का तजर्बा पबलिक में रखकर अपने कर्तव्य से उऋण होता हूं" ॥ ०

सम्पादक सनातन धर्म प्रचारक १५ जून १९१०

में लिखते हैं "एक मुफीद मशहूर "अमृतधारा" पण्डित ठाकुरदत्त साहिब की निर्माण की हुई अद्वितीय औषधि है, यद्यपि कई लोगों ने इसकी धड़ाधड़ बिक्री को देखकर कई औषधियों के विज्ञापन दिए परन्तु कृतकार्य्य न होसके, "अमृतधारा" एक शीशी हमने स्वयं सेवन की है इसलिये हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं। कि यह औषधि सचमुच अद्वितीय है, सफर में कोई बीमारी आजाने पर पूरा प्रभाव दिखाती है कबज बदहज़मी, बुखार, कई एक रोगों की जड़ उखेड़ती है, ३० जुलाई तक पबलिक हितार्थ इसका मूल्य आधा कर दिया है, अस्तु प्रत्येक महाशय को इसकी एक २ शीशी मंगवा कर अपने घर रखना चाहिये ताकि समय पर लाखों रुपये की जान को लाभ देसके, यह इश्तिहारी दवाई नहीं वरन् यथा नामा तथा गुणः है" ॥

अमृतधारा सचमुच अमृत है ॥

संसार में आज तक ऐसी औषधि आविष्कृत नहीं हुई। यह ईश्वरीय दान है। वैद्यक औषधियों का चमत्कार है। सच्चा मित्र, सहायक, शुभचिन्तक यही है। जिसने आज़माया सदा यार बनाया, मात्रा इसकी २–३ बूंदें हैं, परन्तु विलक्षणता यह कि दो के स्थान में दस वीस बूंदें भी खाई जावें तो किसी प्रकार की हानि का भय नहीं, क्योंकि इसमें कोई विषैली वस्तु नहीं है। किसी भी रोग में, किसी भी समय, किसी भी आयु में दीजावे, गुण करेगी। और उत्तमता यह है, कि यदि किसी विशेष कारण से प्रकृति के अनुकूल न आवे, तो हानि भी कदापि न होगी। अमृतधारा सैकड़ों हज़ारों के व्यय को बचाती है। और कुटुम्ब की सच्ची रक्षक है। ऐसी अनुपम अमृतधारा को हर समय घर और जेब में रक्खो॥

सत्यासत्य की पहिचान ॥

आजकल विज्ञापनों में सत्यासत्य की पहिचान एक कठिन काम है। झूठे सच्चे सम्पूर्ण विज्ञापनों में अपने आपको सच्चा और दूसरों को झूठा लिखा जाता है। जिस विज्ञापन को उठाओ यही लिखा होता है, कि झूठे इश्तहारबाज़ बहुत होगए हैं, और हमारे जैसों का विश्वास भी गंवा दिया है, इन से बचो और हमारी औषधि खरीदो। अब प्रश्न यह है कि जब प्रत्येक ऐसाही लिखता है, तो

फिर झूठा कौन हुआ

सम्पूर्ण विज्ञापन ऐसी सुन्दरताई से लिखे या लिखवाए जाते हैं, कि पढ़ने वाले को मिथ्या का सन्देह ही नहीं होसकता। किसी को तो संन्यासी औषधि देजाता है, किसी के बाप दादा की अनुभूत होती है, और किसी को हस्त लिखित पुस्तक का योग मिल जाता है ॥

परन्तु विचित्रता यह—

कि संन्यासी, बाप दादा, या हस्त लिखित पुस्तक के योग सोज़ाक, उपदंश, नपुंसकता आदि के ही मिलते हैं। शोक कि जिनको चिकित्सा विद्या का कुछ भी ज्ञान नहीं, वह सिद्ध वैद्य बने हुए वैद्यक के नाम को कलंकित कर रहे हैं। वैद्य के हाथ में दूसरे का जीवन होता है, और क्या वह लोग जो दूसरों के जीवन की परवाह नहीं करते ईश्वर के दरबार में अपराधी न होंगे? और क्या कभी वह दण्ड से बच सकते हैं? कदापि नहीं ॥

इधर हमारे भारतवासी जन्म रोगी हैं, कि बारम्बार ठोकरें खाकर भी नहीं समझते। औषधियों का मूल्य पहिलेही।) के स्थान में रुपया रख लिया जाता है फिर लम्बे चौड़े विज्ञापन दिये जाते हैं, कि मित्रों ग्राहकों के मजबूर करने पर हम अपना नुकसान उठाकर भी सर्वसाधारण के उपकारार्थ अर्द्ध, तिहाई, चौथाई, मूल्य करते हैं ॥

सज्जनगण! विचारिए, क्या यह कभी सम्भव होसकता है, कि केवल परोपकार के लिये आज कल का कोई इश्तहारबाज़ हज़ारों रुपयों की हानि उठावे?

हा भारतवर्ष तुझे क्या होगया !

विज्ञापनबाज़ी के ऐसे २ ढंग प्रचलित किये जा रहे हैं कि आश्चर्य्य आता है। ऐसे लेख आरम्भ किए जारहे हैं कि किसी को विज्ञापनका सन्देह भी न हो सत्य तो यह है, कि बुद्धिमानों को यह बातें

और भी संदिग्ध कर देती हैं ॥

पाठक ! उपर्युक्त लेख से मेरा यह मतलब नहीं कि मैं ही सिद्ध वैद्य हूं, और शेष सव झूठे हैं, सच्चे और झूठे दोनों वर्त्तमान हैं क्लेश केवल यह है कि पहिचानना कठिन होगया है, आप के सन्मुख कुछ

गुर उपस्थित करता हूं ध्यान पूर्वक पढ़िये ॥

आप स्वयम् भी सोचें और आप को ज्ञात होगा कि यह गुर विना रियायत शुद्ध भाव से पेश किए गए हैं (१) विज्ञापन की सुन्दरता और इवारत का लच्छेदार होना औषधियों के प्रभावशाली होने का कोई प्रमाण नहीं है। विज्ञापक के हार्दिक अभिप्राय को जानने का प्रयत्न करना चाहिये, और कि विज्ञापन से सत्यता टपकती है या नहीं। (२) विज्ञापक की योग्यता मालूम करनी चाहिये। औषधियां अपनी प्रशंसा स्वयम् करें। (३) विज्ञापक गुप्त नाम न हो, जैसे कि बाज़े लिख छोड़ते हैं मैनेजर अमुकादि। ऐसा भी होता है, कि विज्ञापनदाता वैसे तो योग्य मनुष्य है, किन्तु औषधियां बनाने का कष्ट सहन नहीं कर सकता, क्योंकि प्रभावशाली औषधियों पर परिश्रम भी खूब करना पड़ता है, वह इधर उधर से कुछ अंग्रेज़ी औषधियां इकट्ठी करके काम चलाता है। ऐसे मनुष्य की कलई उसकी औषधियों पर खुलती है। अब

अपने विषय में—

बहुत कुछ कह सकते हैं, परन्तु हम चाहते हैं कि आपही उन बातों को न लिखें आप स्वयम् शनैः २ जान लेंगे। इतना कहे देते हैं कि हिन्दी तथा उर्दू देशोपकारक वैद्यक पत्र हमारी लेखनी से निकलते हैं, दो दर्जन से अधिक वैद्यक पुस्तकें हम लिख चुके हैं ॥

यदि आपने उपर्युक्त लेखको पढ लिया है तो अब मैं

किञ्चित् माननीय पुरुषोंकी संमतियां

अंकित करूंगा, इनका लिखना विशेष कर इसलिये उचित और

आवश्यक है

कि यह प्रशंसापत्र प्रगट करते हैं कि 'अमृतधारा' अधिक तर किन रोगों पर गुणकारी हुई, किस प्रकार पाठकों ने अपनी अनुमति से ही इसको वर्ता और कैसी गुणकारी हुई। किन २ विशेष अवसरों पर जिनका सेवनविधि पत्र में भी वर्णन नहीं है इसने आशा से बढ़कर गुण किया, इत्यादि। कृपया आप यह सब की सब अवश्य किसी फ़ुरसत के समय अवलोकन करें। आशा है कि यदि आप आरम्भ करेंगे तो रोचक होने के कारण बिना पढ़े कदापि न छोड़ेंगे

साधारणतः

लोगों को कई विज्ञापन बाजों ने संशय में डाल दिया है, और यह बात बहुधा सुनी जाती है, कि लोग योंही गलत मलत नाम लिखकर और कुछ इष्ट मित्रों के नाम अंकित करके प्रशंसा पत्र लिख देते हैं। जैसा कि मैं पहिले भी निवेदन कर चुका हूं, हमारे यहां इस प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं होती, हमको सत्य से प्रेम है और हम कभी कोई ऐसी बात विज्ञापन में नहीं लिखते जिसको हम मिथ्या समझते हों। हम चाहते हैं कि आप इन श्रीमानों में से किसी को एक पैसे का कार्ड लिखकर

फिर एक बार दरियाफ्त करलें

हमारा विश्वास है, कि जो कुछ यहां लिखा है उससे कहीं बढ़कर आप पर प्रगट करेगा, क्योंकि इस समय तक वीसों अन्य रोगों पर उसने सेवन करके रामवाण पालिया होगा। हमारी सच्चाई का प्रमाण इससे भलीभान्ति होता है

जब कभी आप लाहौर आवें ॥

तो हमारे यहां पधारें, और जिस किसी का चाहें, असल पत्र हम आप को दिखा देंगे, यदि एक प्रशंसा पत्र भी कल्पित हो तो हम एक सहस्र मुद्रा दण्ड देने को तैयार हैं। हां सूची में सिवाय उनके जिनके पते पहिले सूचीपत्रों में दिये जाचुके हैं स्पष्ट पते मैंने नहीं दिए हैं, क्योंकि झूठे विज्ञापकों ने इस से लाभ उठाकर पवलिक को वहुत धोखा दिया आप जिन श्रीमानों को लिखना चाहें उनके नाम हमको लिख दें हमने क्रम के साथ प्रत्येक का असल पत्र रक्खा हुआ है। उसका स्पष्ट पता आपको लिख दिया जावेगा, उनको लिख कर पूछलें और यह भी सम्भव है, कि कोई नाम ऐसा हो जो आपका मित्र हो उसको पत्र लिखकर तो सहज में पता लगसकता है। जिन श्रीमानों के प्रशंसापत्र हमारे पास मौजूद हैं, उनसे प्रार्थना है कि कष्ट सहन करके हमको और पाठकों को उत्तर से कृतार्थ किया करें ॥

सभ्यगण !

मैं जो कुछ लिखता हूं सत्य लिखता हूं, और हर प्रकार से आपको मेरी सत्यता जांचने का अधिकार है। प्रसिद्ध पदाधिकारियों के पते भी लिख दिए हैं क्योंकि उनके पते गुप्त नहीं होते ॥

ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य लाहौर

अमृतधारा के चमत्कार ॥

पृष्ठ ६४ से ११२ तक सब अमृतधारा के चमत्कार अङ्कित हैं और और पृष्ठों पर भी हैं, जिन से अमृतधारा ने एक जगत् को आश्चर्य में डाल दिया है, जब आप उन को ध्यान पूर्वक पढेंगे अवश्य प्रसन्न होंगे, कि ऐसी दवाई भी आप के एक हिंदोस्तानी भाई ने निर्माण की है। यहां मैं चूंकि अमृत-धारा की श्लाघा अङ्कित कर रहा हूं, इस लिये कुछ आवश्यक चमत्कारों का संक्षिप्त वर्णन नीचे लिखता हूं। एक दृष्टि से सारा पढ जावें। विस्तार से जिसको देखना चाहें, वह २ पृष्ठ निकाल कर पढें ॥

अमृतधारा के यथार्थ गुण जानने के

वास्ते एक वार अवश्य पढ जावें ॥

पृष्ठ ४० पंक्ति ८ एक तहसीलदार ने रात्री के समय हा हा का शब्द सुना। जाकर देखा तो एक युवा कन्या पृथवी पर मारे दर्द के सर्प की भांति लोट रही थी। अमृतधारा ने १५ मिन्ट में सुला दिया ॥

पृष्ठ ४० पंक्ति १४ श्रीमान् राय दीवानचन्द्र साहिब एम. ए. एल. एल. बी. डिस्टरिकट जज का अनुभव और उन की सम्माति है कि पाकैट केसों का काम अमृतधारा ही देती है ॥

पृष्ठ ४२ पंक्ति २४ रेल में एक साहिब को बहुत ही सखत दर्द आरंभ हुआ। किसी साहिब ने जरा सी दवाई दी कि फौरन आराम आया ॥

पृष्ठ ४३ पंक्ति ४४–४ वर्ष से ऋतु आगमन आदि कष्टों का दूर होना ॥

पृष्ठ ४६ से ४८ तक। अङ्गरेज साहिबान के सारटीफिकेट ॥

पृष्ठ ४९ पंक्ति २० ब्रह्मा का बोद्ध भिक्षू बुद्ध की अमारत देखने आया हुआ था। ज्वर और खांसी से पडित था। अमारतों के इन्सपेकटर ने अमृतधारा दी। झट आराम आरम्भ हुआ ॥

पृष्ठ ५१ पंक्ति १० नायब तहसीलदार का विचित्र सरदर्द जो किसी इलाज से दूर न हुआ इस से अच्छा हो गया ॥

पृष्ठ ५२ पंक्ति ८ जिह्वा पर मधुमक्षि का डंक। विश्वथु का वढना। अमृतधारा से झट आराम ॥

पृष्ठ ५३ एक हकीम साहिब को अमृतधारा से इलाज करने पर ५००) रुपया का पारितोषक ॥

पृष्ठ ५५ पंक्ति १४ एक बूटी का अर्क निकाला। हाथों पर जलन ऐसी हुई कि बन्द न होती थी। अमृतधारा लगाते ही दूर ॥

पृष्ठ ५५ पंक्ति २१ एक शिष्य गुरु से पढने गया एक रोगी दर्द कौलञ्ज को जो दवाई दी जाती कै कर देता। शिष्य के पास अमृतधारा थी। कुछ बून्दें देने से दर्द और कै झट बन्द। चमत्कार हुआ ॥

पृष्ठ ५६ पंक्ति २० पुराना दर्द सिर और १२ साल के चट्टों की खारश एक वार लगाने से दूर। विचित्र चमत्कार। दोनों रोगी दूर दूर से अलाज करा चुके थे ॥

पृष्ठ ५८ पंक्ति ८ नौ दिन के पश्चात् अमृतधारा ने सुलाया ॥

पृष्ठ ६१ पंक्ति ३–४ मास से कान में दर्द वा पीप। दो बून्द से बन्द ॥

पृष्ठ ६४ एक पुरुष दर्द सर, चेहरा वा जबडों वा हलक में अति रुग्ण दो दिन तक कुछ नहीं खाया, अमृतधारा ने ५ मिन्ट में आराम दिया, और बीमार ने खाना मांगा ॥

पृष्ठ ६५ एक स्त्री का औलाद के वास्ते एक वैद्य ने अलाज किया; मुख सूज गया, हलक और जबडों में दर्द १० दिन में आराम ॥

पृष्ठ ६५ पंक्ति २५ एक हकीम साहिब प्रतिज्ञा करते हैं, कि यदि किसी को अमृतधारा से आराम न आवे और उस को निश्चय न होवे, तो मूल्य उन से वापिस लेवे ॥

पृष्ठ ६७ पंक्ति २१ रक्त की कै, शीघ्र काम पर लग गया ॥

पृष्ठ ६८ पंक्ति ३ एक पुरुष आठ दिन से जो खाता कै कर देता था, दो दिन अमृतधारा देने से बच गया ॥

पृष्ठ ६९ पंक्ति ३ एक स्त्री को पौड़ी से गिरने से कान के परदे के अन्दर ज़ख़म, १५ दिन से अति कष्ट, डाकटर हकीम ने १०) रुपया गरीब से मांगे, अमृतधारा ने छू मंत्र कर दिया ॥

पृष्ठ ६९ पंक्ति २२ एक मनुष्य के दर्द सर होती थी, लगाते ही जादू का प्रभाव डाला ॥

पृष्ठ ७० पंक्ति १९ एक महाशय के अनुभव जिन्होंने ३२ शीशियां अपने हाथों से रोगियों पर खर्च कीं ॥

पृष्ठ ९६ पंक्ति १५—६ मास की लड़की को सांप ने काटा, झट बेसुध हुई, अमृतधारा देने और लगाने से आंखें खोल कर दूध पी लिया, और आरोग्यता को प्राप्त हुई ॥

पृष्ठ ९७ पंक्ति १६ एक स्त्री पर बिजली गिरी, सारा शरीर झुलस गया, मुख और गाल लाल बनात समान् होगया। बीनाई जाती रही। अमृतधारा से झट, चेहरे तथा गालों को आराम हुआ और लाली और जलन सब जाती रही ॥

पृष्ठ ९८ पंक्ति ३ एक पुरुष के भारी दर्द आरम्भ हुआ, बेहोश हो कर गिर पड़ा अमृतधारा से होश आगया, दर्द भी जाता रहा ॥

पृष्ठ १०० पंक्ति १० सरदार मलसिंह साहिब इन्सपैकटर पोलीस के लड़के का हलक सूजा, कोई वस्तु अन्दर न जाती थी, जीवन से निराश, अमृतधारा देने से झट दूध मांगा और पेट भर कर पी लिया, विचित्र प्रभाव ॥

पृष्ठ १०१ पंक्ति १३ एक पुरुष संखिया खा चुका था, मरने वाला था, हकीमों ने जवाब दे दिया था, परन्तु अमृतधारा ने आराम कर दिया ॥

[-] ११ दिन तक सरसाम रहा, अन्तिम शरीर ठंडा था, और नब्ज़ बे ठिकाना, ५ मिन्ट में रोगणी ने होश संभाला ॥

पृष्ठ १०२ पंक्ति ११ एक रोगी के एक ओर चेहरे तथा सिर पर पूरा दो फुट चर्म हो गया, भयानक अवस्था तथा विचित्र चिकित्सा ॥

पृष्ठ ८८ पंक्ति ८ तप से मूर्च्छा आ गई। जिह्वा तथा शरीर की गती बन्द हो गई। अमृतधारा सुंघाने और खिलाने से एक मिन्ट में आराम॥

पृष्ठ ७८ पंक्ति १५ गफूर महमद रङ्गरेज को प्लेग होकर ग्राम से बाहिर कर दिया गया। आंखें फिर गई थीं। गिलटी आध पाव के बराबर थी। एक घंटा में आराम हुआ॥

पृष्ठ ८६ पंक्ति १-३ सात साल के बच्चे के ऋतु ज्वर से एक दिन पैर कुहनियों तक अकड कर रह गए, बडा दर्द था, ५ कतरा ने डाकटर की फीस से बचा लिया॥

पृष्ठ ८० पंक्ति ११ ज्वर हो कर संन्निपात हो गया, जिह्वा बाहिर निकालने लगा। बकने लगा किसी को न पहचानता था, तीन। पुरुष न पकड़ सकते थे, १० मिन्ट में कमी और दो घंटे में आराम हुआ॥

पृष्ठ ८ पंक्ति ८-५ साल का अंधराता था, अकस्मात् अमृतधारा वाली अंगुली लग गई पानी निकला और अंधराता जाता रहा॥

पृष्ठ ८१ पंक्ति १७ लाहौर से कोयटा की ओर जा रहा था, विषूचिका हो गया, अमृतधारा पास थी, और दवाई के बिना देनी आरंभ की, सक्खर तक आराम आते ही खरीदार देशोपकारक हो गया॥

पृष्ठ ८२ पंक्ति ४ एक यात्री रेलकी पटरी पर आरहा था, उसे सांप ने काटा, स्टेशन पर पहुंचते मतली और सूजन आरम्भ थी, स्टेशन मास्टर के अमृतधारा खिलाने और लगाने से ऐसा जलद आराम हुआ कि सब कर्मचारी देखकर आश्चर्य्यित हुए॥

पृष्ठ ८३ पंक्ति १० एक स्त्री को बिच्छू ने काटा, फिर यात्री की, जिह्वा सूज गई, नाक, पेशाब, पाखाना, पसीना, सब बन्द, बेसुध ५ दिन पड़ी रही, गुलाब क्योंडा देते रहे, जबकि एक साहिब ने आकर गुलाब क्यूडा में अमृत-धारा डालदी और उस समय से आराम आरम्भ हुआ॥

पृष्ठ ८६ पंक्ति ८ दीवना गीदड के विष से जीवन से निराश हो चुकी थी अमृतधारा ने ज़खम को भी अच्छा किया और विष भी दूर किया॥

पृष्ठ ८६ चंद्र प्रकाश साहिब लिखते हैं, विषूचका हुआ शीतल जल दिया गया, लडका ऐंठ गया मुरदा समझ कर रोने लगे, अपनी भगनी को अमृतधारा की शीशा दी हुई थी, उसने दो बून्द दे दी, दो मिन्ट में लडका गर्म हो गया, आंखें खुल गईं, चमत्कार हो तो ऐसा हो आपका धन्यवाद प्राकृतक जिह्वा से नहीं किया जा सक्ता ॥

पृष्ठ ८७ पंक्ति १४ एक लडके को खेलते खेलते क्या हो गया कि आंखें बाहिर निकल आई और बेसुध हो गया, ५ मिन्ट के अन्दर समाप्त होने वाला समझा गया अमृतधारा के देने से झट आराम हुआ ॥

पृष्ठ ८७ पंक्ति १—६ एक धोबी एक मास से गला सूजा हुआ सखत बीमार था, अमृतधारा दो बून्द देने से चलने फिरने और खाने लगा, दूसरे दिन अपने काम पर लग गया कि कपडे धोकर सब ओवरसीयर साहिब को दिये, एक पढ़ने योग्य पत्र है ॥

पृष्ठ ८८ पंक्ति १६ दो तीन मास के मरोड तीन दिन में जाते रहे, दूध पान करने वाला बच्चा ३ दिन से कै पर कै करता था, ३ खुराक से पूरा आराम हुआ ॥

पृष्ठ ९० पंक्ति ११ एक पुरुष की आंखों में असह्य दर्द आरम्भ हुआ रात बारा बजे तक अमृतधारा का खयाल न आया मगर जब लगाई उसी समय आराम आगया ॥

पृष्ठ ९१ पंक्ति १५ एक अफीमची को दस्त थे, जो बन्द न होते थे, मृत्यु के समीप था, अमृतधारा सौंफार्क से देने से एक खुल कर दस्त हुआ, जिस से उसे चैतन्यता आई, फिर अनारदाने के रस से दस्त सदैव के लिए बन्द हो गए, और सात मास के कठिन मरोड चार मात्रा में जाते हैं ॥

पृष्ठ १०७ पंक्ति ४ एक मनुष्य को निमोनिया हुआ, कठिन ज्वर मूर्च्छा, घोरशूल, संकीर्णश्वास । अमृतधारा ६ विन्दु से दर्द बन्द हुआ । रोगी का कथन है, कि वह अपने आप को थोडे मिण्ट का पाहुन समझता था, और सम्बन्धी रोते थे ॥

पृष्ठ १०७ पंक्ति १७ एक बालक डब्बा रोग में ग्रस्त हुआ, मुर्दह ख्याल किया गया, सुख, नाक में अमृतधारा मालिश करने से थोडा ओष्ठ हिलाया एक बिन्दु सुख में डालने से अधिक मुख खोलने लगा, एक घण्टा में ४ बिन्दु १५–१५ मिण्ट पश्चात् दिए गए, चौथी मात्रा के पश्चात् माता का ॥

पृष्ठ १०८ पंक्ति १७ बाबू विश्वनाथ साहिब को एक जन्तु बम्बई ओष्ठ पर काट गया, जो बताया गया; कि गन्दी जगह होता है, और ४ दिन तक उस के काटे का कष्ट रहता है, दर्द, शोथ, दाह, अरम्भ थी जो अमृतधारा लगाते ५ मिन्ट पश्चात् और सायम तक सर्वथा आराम। देखिए ना मालूम विषों को भी किस प्रकार अमृतधारा दूर करती है ॥

पृष्ठ ९४ पंक्ति ४ हडताल के विष से म्रियमाण मनुष्य को सर्वथा आराम किया ॥

पृष्ठ ९४ पंक्ति २१ अफीम का अभ्यास यहां तक बढ़ा था, कि १५–१५ मिन्ट आवश्यकता पड़ती थी; अमृतधारा ने पहिले ही दिन चमत्कार दिखलाया, देखने योग्य पत्र है ॥

पृष्ठ १२३ पंक्ति ११ चोरों के साथ लड़ने के कारण चोटें आई, हड्डी टूट गई, रक्त प्रवाहित हुआ, अमृतधारा लगाने से ही रुधिर और पीड़ा बन्द हुई, निन्दा आगई, क्या यह कम चमत्कारा है ॥

पृष्ठ १२५ पंक्ति १ एक हाथ पर फूल गोंदवाया हुआ था, जैसे स्त्रियां हरे रंग का मुखादि पर गोंदवाती हैं. हंसी में अमृतधारा को लगाते रहे; वह भी दूर हो गया ॥

पृष्ठ १२६ पंक्ति २० घोड़े के घाव के सब क्रमि एक ही बार सप्ताह में अच्छा ॥

पृष्ठ १२७ सारा पृष्ठ पढ़ने योग्य है ॥

पृष्ट १२८ पंक्ति ८ कौड़ी उतर गई, आमाशय शूल था, अतिव्याकुलता, केवल अमृतधारा मलने से जाती रही ॥

पृष्ठ १३० पंक्ति १ ६ वर्ष से बहता हुआ दन्त का रुधिर बन्द ॥

पृष्ठ १३० पंक्ति ७ कठिन वृकूद्वय शूल लगाते ही बन्द ॥

पृष्ठ १६४—कई प्राण बचाए ॥

इसी प्रकार एक नहीं हज़ारों चमत्कार अमृतधारा ने दिखलाए हैं ॥

२० सहस्र प्रशंसापत्र ॥

प्रगट करते हैं, कि सब जगह अमृतधारा अपने लाभ दिखलाती रहती हैं। निवेदन है, कि सूची को पढ़ें ताकि जो प्रशंसापत्र अंकित हो चुके हैं, वह तो आप की दृष्टि से गुजर जावें ॥

वह चमत्कार जिन में डाक्टरी चिकित्सा से रोगी थक चुके थे और अमृतधारा ने तुरन्त आराम दिया ॥

पृष्ठ ४३ पंक्ति १९ एक बालक का चोट से नख उचर गया, १ मास इलाज हुआ आराम न आया, अमृतधारा से तुरन्त आराम आगया ॥

पृष्ठ ४४ पंक्ति २१ एक स्त्री की भग में खाज थी, अत्यन्त व्याकुल होता था, आर्तवक्रम, उदरशूल, मूत्रातिसार आदिक कष्ट चिरकाल से थे चौथाई शीशी अमृतधारा से तुरन्त आराम आगया ॥

पृष्ठ ५३—एक शोथ रोगी डाक्टरी इलाज करते थक गया था, एक हकीम साहिब ने अमृतधारा से इलाज करके सौ रुपया लिया, एक पढने योग्य पत्र ॥

पृष्ठ ५६ पंक्ति २० दर्द शिर पुराना और १२ वर्ष का चड्डों का दर्द अमृतधारा ने एक दिन में दूर किया विचित्र चमत्कार। रोगी दूर २ से इलाज करा चुके थे ॥

पृष्ठ ५७ पंक्ति २२ एक रोगी जो वर्षा में भीगता रहा था, ९ दिन से कटिशूल में ग्रस्त, बीसियों इलाज से न अराम हुआ, और ९ दिन के पश्चात् अमृतधारा ने सोलाया। विचित्र घटना ॥

पृष्ठ ६६ पंक्ति २० दो प्लेगकेस डाक्टरी इलाज कर चुके थे, हालत रद्दी था, अमृतधारा ने तुरन्त पीडा बन्द करके २ दिन में आराम किया ॥

पृष्ठ १०२ पंक्ति ७ एक रोगणी इधर खाती उधर वमन कर देती, कई डाक्टरी इलाज किए, आराम न आया, २१ दिन में अमृतधारा से पूरा आराम आया ॥

पृष्ठ १०४ पंक्ति १८ एक मनुष्य को ३ दिन नासार्श रहा, अमृतधारा की एक २ बून्द नथनों में डालने से तुरन्त बन्द हुई। एक गर्भिणी स्त्री के शिखा स्थान पर दर्द था, कई दिन तक डाक्टरी इलाज रहा, खाना पीना बन्द था, एक वार लगाने से निद्रा आगई ॥

चिरकाल से प्रतिश्याय खांसी थी, डाक्टर लोग गले में घाव बतला कर चिरकाल से इलाज कर रहे थे, थोडे दिनों में अमृतधारा ने गुण किया, और डेढ सौ रुपया किस प्रकार बचाया, पढने योग्य पत्र ॥

पृष्ठ ८४ पंक्ति २३ मैशीन का एक पुरजा उड कर काली पुतली में गिर गया, घोर पीडा, घाव, लाली, डाक्टरी दवाई दृष्टि शक्ति भी कम होने लगी, ४ दिन के पश्चात् अमृतधारा लगाई पहिले ही दिन रोगी को निद्रा आ गई २ दिन में आंख अच्छी हो गई ॥

पृष्ठ ८५ पंक्ति १४ कई रोग डाक्टर व हकीम इलाज कर चुके थे, अमृतधारा ने आराम दिया ॥

पृष्ठ ९२—एक मनुष्य के माथे का चर्म काला हिलना जुलना बन्द, आंखें खुली हुई, आंसू बन्द, धडकनादि विचित्र लक्षण थे, कई डाक्टरों, हकीमों का इलाज हुआ आराम न आया, अमृतधारा से पहिले दिन सोया ॥

पृष्ठ १०९ पंक्ति १८ अधराता २ वर्ष का २ वार अमृतधारा लगाने से जाता रहा। एक कन्या का ज्वर था इलाज से नहीं उतरता था, अमृतधारा देने से दूसरे दिन स्वस्थ हो कर तालाब पर बैठी मुख धो रही थी ॥

[१२] एक मनुष्य की आंख जाने वाली थी, कठोर परदह आंख पर

आगया, पहिले पहिल अमृतधारा डालने से ज़रा भी न लगती थी। थोड़े दिनों में आराम आगया ॥

पृष्ठ १११ पंक्ति १२ बधिरता का बहुतेरे हकीमों, डाक्टरों का इलाज कराया था, अमृतधारा से आराम हुआ ॥

पृष्ठ ११७ पंक्ति ४ अवयवों का दर्द अंग्रेज़ी डाक्टरों का इलाज कराया अच्छा न हुआ, अमृतधारा एक बार लगाने से अच्छा हुआ ॥

पृष्ठ १२७ पंक्ति ३ फुप्फुघाव के कारण कठिन पीडा अरम्भ हुई, टिंकचर-आयोडीन ने कुछ आराम न दिया। अमृतधारा ने तुरन्त आराम दिया ॥

पृष्ठ १३१ पंक्ति १४ अंग्रेज़ी इलाज से न मूत्र न मल जारी हुआ, अमृतधारा से जारी हुआ ॥

अमृतधारा का लाभकारी होना.

केवल इसी बात से मान लेना चाहिये कि यह **सर्व प्रिय है ॥**

औषधि वही है जिस को एक बार मंगवा कर फिर बार २ लोग अवश्य मंगावें, अर्थात् उस के रोगघ्न होने का उन को विश्वास हो, अमृतधारा के ग्राहकों में २ चार नहीं सैकड़ों ऐसे सज्जन शामिल हैं जो सदा एक दो नहीं बीसियों शीशियां एक दम मंगवाते रहते हैं। बहुत से दानी उपकारार्थ बहुतसी शीशियां मंगवाकर अपने पास रखते और मुफ्त बांटते रहते हैं। कई अपने दोस्तों मित्रों को नज़र करते हैं। बहुत से नेक दिल चिकित्सक कई शीशियां मंगवा कर अपने रोगियों की चिकित्सा करके नाम व इनाम पाते हैं ? कई महाशय हम से रियायत लेकर सैकडों शीशियां इकट्ठी मंगवाते हैं और बेचते हैं। प्रशंसा पत्रों में आप को कई ऐसे पत्र मिलेंगे जो इन बातों को प्रकाशित करेंगे। यहां मैं कुछ नाम लिखना चाहता हूं उन सज्जनों के जो एकदम बहुत ही शीशियां पत्र या तार द्वारा मंगवाते हैं ॥

(१) गङ्गाराम, रामजीलाल तावडा, दर्जन से कम कभी नहीं मंगवाते ॥

(२) हाजीमुहम्मदखां, सरदारखां, सैंकड़ों सालम तथा हजारों नमूना हर साल ॥

(३) हाजी ज़हीरुद्दीन सौदागर जमालगंज, २० से कम कभी नहीं मंगवाते ॥

(४) मैनेजर पापूलरआरटस् ऐजन्सी, चालीस से कम कभी नहीं मंगबाते ॥

(५) सरदार भगवानसिंह, दीवान कृपाराम ७ दरजन सालम और २२५ नमूना मंगवा चुके हैं ॥

(६) अहमदअली साहिब करीमुद्दीनपुर, ५० नमूना से कम कभी नहीं मंगवाते ॥

(७) व्रजभूषणदास, मास में दरजनों अमृतधारा मंगवाते हैं ॥

(८) सैयद अवदुलहमीद कारा, हर मास में क़रीवन एक दरजन मंगवाते हैं ॥

(९) मुहमदअवदुल्ला, मुहम्मदअवूवकर जनरैल मरचैंट, २० सालम और २५० नमूना से कम कभी नहीं मंगवाते ॥

(१०) जगतवहादुरसिंह जेठा, दरजनों मंगवाते हैं ॥

(११) अनीकाटाराम चेटीटिपटोर, २० अमृतधारा से कम कभी नहीं मंगवाते ॥

(१२) अवदुलवहाव कसवा सरया । हर मास में दो तीन दरजन मंगवाते हैं ॥

(१३) चिकोटी वैरोना सिकंदरावाद १०० नमूना से कम कभी मंगवाते ही नहीं ॥

(१४) चोलाराम अमीनुद्दीन मदरास ५० नमूना से कम कभी नहीं मंगवाते ॥

(१५) मुहमदअली महबूब साहिब ठेकेदार मरयालगड़, हर मास में सैंकड़ों नमूना अमृतधारा जाते हैं ॥

(१६) राधाकृष्णसिंह -मांडले । २० सालम और ५० नमूना से कम कभी आरडर नहीं आता ॥

(१७) बिन्दरावन, वासुदेव, सरायमीर । दो दरजन नमूना से कम का आरडर आज तक नहीं आया ॥

(१८) एच० ए० टरकी हैदरावाद । हजारों नमूने और सैंकड़ों हर साल जाते हैं ॥

(१९) ज़ाकरअलीखां जखा, कई दरजन साल में मंगवाते हैं ॥

(२०) बूंदीलाल मुखतार मोंगर । हजारों नमूने हर साल मंगवाते हैं॥

(२१) महम्मदकासम जनरल मरचैंट चक मंगलौर, दरजनों हर साल का आरडर देते हैं ॥

(२२) अबदुलकादर ताजुरकुतुब हैदरावाद । हजारों नमूने और सैंकड़ों सालम हर साल ॥

(२३) महुमदहुसैन जनरैल मरचैंट सकंदरावाद । हजारों ननूने और सैंकडों सालम हर साल ॥

[२४] टी० सरमान्या गन्टूर । सैंकडों सालम और हजारों नमूने हर साल ॥

[२५] मौलवी अज़ीज़मुहम्मद मुनजम कटक । सैंकडों सालम तथा हजारों नमूने हर साल ॥

[२६] महतावसिंह शर्म्मा हैदरावाद । सैंकडों सालम तथा हजारों नमूने हर साल ॥

[२७] बन्दीप्रसाद फलौरिया । ३ या ४ दरजन ननूना से कम का अरडर नहीं देते ॥

[२८] सैयदहुसैन विनहार्जा सैयदअली । ५० सालम का आरडर देते हैं ॥

[२९] सैयदमुहमद इसमाईल पत्थर घेटी बाज़ार । सैंकडों रुपया पेशगी भेजकर हजारों नमूने और सैंकडों सालम मंगवाते हैं ॥

[३०] अबदुलअज़ीज़ मवाड़ । सैंकडों नमूने मंगवाते हैं ॥

[३१] रामराव, वनीकाटाश । २० से कम का कभी आरडर नहीं देते ॥

[३२] ठाकुर गयावखश कालाकङ्कर । दरजन से कम का आरडर नहीं आता, सैंकडों रुपए की मंगवाते हैं ॥

[३३] मुहम्मद अज़हर हफीजुद्दीन भङ्गा ॥ ३० सालम और ३० नमूना से कम का आरडर कभी नहीं आता है ॥

आवाज़ये खल्कको नक्कारये खुदा समझो

श्रीमान् राय अमरीलाल साहिब सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलीस, सिटी मजिस्ट्रेट व जज्ज अदालत खफ़ीफा राज्य उदय पुर मेवाड़ लिखते हैं :—

"मैं अपने दो साल के लगतार तजुर्बे के बाद पवलिक को इस बात का निश्चय दिलाता हूं, कि "अमृतधारा" में वे सब लाभ निस्सन्देह वर्त्तमान हैं, कि जिनको "देशोपकारक" ने अपने विज्ञापन में प्रकाशित किया है, सच मुच कोई गृहस्थ और बालबच्चों वाला घर ऐसा नहीं होना चाहिये, कि जिस में "अमृतधारा" हर समय मौजूद न रहे। समय पर यह सब प्रकार के रोगों से पूरी रक्षा करती है। यदि मैं अपने तजुर्बों को प्रगट करूं तो एक भारी ग्रन्थ होजाय, इस लिये इतना ही लिखना यथेष्ट है; कि हमको इस विश्वास के साथ एक शीशी "अमृतधारा" की अपने घर में मौजूद रखनी चाहिये, कि मानो एक चतुर वैद्य और डाक्टर घर में मौजूद है" ॥

जनाव मीरहुसेन शाह साहिब नायबतहसीलदार बांडीपुर कश्मीर

लिखते हैं "जनाव पण्डित साहब तसलीम। जहां तक मैंने घर और बाहर में "अमृतधारा" का तजुर्वा किया है हितकर पाया है, अचानक होने वाले रोगों को विशेपतः और अन्य रोगों को भी यह औपधि रसायन का काम देती है। ईश्वर परमात्मा आप को बदला देवे ॥

मियां गुलमहम्मद व ताजमहम्मद साहिबान सौदागर अमरावती

लिखते हैं:—"जनाब पण्डित साहिब तसलीम ! निवेदन है कि "अमृतधारा"

की एक सौ शीशियां वी०पी० द्वारा मेरे पास भेज दीजिये । हमारे इतस्ततः के ग्रामों में प्लेग आरम्भ हुआ है । मैंने भी "अमृतधारा" का तजुर्बा किया है । शिर दर्द, दाढ़ दर्द, कानदर्द, नेत्रपीड़ा, आई हुई आंख पर जादू का प्रभाव किया, अब प्लेग पर आज़माता हूं ॥

(२) श्रीमान् लाला नन्दगोपाल साहिब नायब तहसीलदार कैथल

लिखते हैं:—"आप की अमृतधारा ने वास्तविक एक विचित्र चमत्कार दिखाया है, लगभग दस बजे रात्रि के मेरे कानों में हाय २-का शब्द सुनाई दिया, और ज्ञात हुआ कि एक कन्या को कठिन उदर शूल होरहा है । मैं अमृत धारा लेकर वहां पहुंचा तो क्या देखा कि बेचारी कन्या सर्प की तरह भूमि पर लोट रही है, उस समय एक छोटे से ग्राम में सौंफ का अर्क मिलना तो कठिन था, मैंने उसकी हथेली पर चार बूंद डाल दिये वह चाट गई, तत्पश्चात् एक बताशा मिलगया, और उसमें चार बूंद "अमृतधारा" डालकर खिलाई गई, सचमुच १२ मिंट में उसे पूर्णतयः आराम आगया, दर्द जाती रही । उस लड़की को जो थोड़ी देर पहिले तड़प रही थी वायु के शीतल झोकों ने वैसाही गहरी निंद्रा में सुला दिया; जैसा कि उसके पड़ोसियों को । आप की "अमृतधारा" सन्मान के योग्य और प्रत्येक घर में होने के लायक है" ॥

(३) श्रीमान् राय दीवान चन्द साहिब ऐम.ए.एल. एल. बी.

डिस्ट्रिक्ट जज्ज होशियारपुर लिखते हैं:—"अमृतधारा" को मैंने निम्नलिखित रोगों पर वर्ता है (१) कानदर्द, (२) सिरदर्द (३) विच्छू का डंक (४) भिड़ का डंक (५) दर्द घुटना (६) दर्दवायु (७) दर्द दांत (८) ज्वर (९) पेटदर्द (१०) भीतर से पका हुआ गला (११) आंखदर्द (१२) कान पकना (१३) रान का लासना (१४) हाथ की चोट (१५) यहां यह लिखना मुनासिब समझता हूं कि मैं हर जगह केवल "अमृतधारा" को वर्तता हूं । और जो अन्य दवाइयां आप की विज्ञापन में अंकित हैं उनको मैंने कभी नहीं वरता मेरा तजरबा निम्न लिखित है:—

कान का दर्द—पहिली वार एक या दो बूंद डाली गई तुरन्त आराम होगया ६ दिन तक लगातार आराम रहा । फिर दर्द आरम्भ हुआ, ३ या ४ बूंद डाली गई

एक या दो घण्टे के पीछे आराम होगया, फिर दर्द नहीं हुआ। रोगिणी स्त्री थी और कानदर्द वहुत पुराना था ॥

सिर दर्द—कई एक स्त्री पुरुषों पर आज़माया गया, तुरन्त आराम आजाता रहा। "अमृतधारा" १ या दो बूंद या अधिक मलदी जातीं थीं, जहां सिरदर्द होता था। एक स्थान पर आराम होना वर्णन नहीं किया गया। शेष सब पर मैंने तुरन्त आराम होता पाया ॥

विच्छू से काटना—दस वारह मिंट में आराम होजाता रहा है, स्त्री पुरुष दोनों पर तज़र्वा किया गया है अमृतधारा उस जगह लगाई थी जहां विच्छू ने काटा था, और उस जगह पर कि जहां पर वलैं चढ़ी हों ॥

भूंड से कटना—एक अवसर पर आज़माया गया है, तुरन्त आराम हुआ ॥

दर्द घुटना—दो रोगियों पर आज़माया गया, तुरन्त आराम हुआ। परन्तु दवाई कई वार लगानी चाहिये ताकि फिर दर्द उत्पन्न न हो ॥

दर्द वायु—एकरोगी पर वर्ती गई तुरन्त आराम होगया ॥

दर्द दांत—लगाते ही आराम होगया। दवाई कई वार लगानी चाहिये ताकि फिर उत्पन्न न हो ॥

ज्वर—एक अवस्था में ३ बूंद "अमृतधारा" पिलाई गई ८ या दस घण्टा में आराम होगया। दूसरी अवस्था में शीघ्रही पसीना आगया ॥

भीतर से पका हुआ गला—गले के वाहर एक दो वार दिन में मली जाती है गला थोड़े दिनों से पका हुआ था, ३ दिन में सर्वथा आराम होगया ॥

आंखदर्द—दवाई आंख के भीतर नहीं डाली जाती वरन् आंख के नीचे गालपर लगाई जाती है। और आंख पर प्रभाव करती है। पानी निकलना आरम्भ हो जाता है और आंख शांत होकर सुख में होजाती है ॥

सोने की मुरकियों से कान पकना—दवाई तैल की तरह चोपड़ी जाती है और केवल एकही दिन में आराम होजाता है ॥

चट्टों का लासना—दवाई लासी हुई जगह पर लगा दीजावे तो एक ही दिन में आराम होजाता है ॥

हाथ चोट—यह चोट दरवाजा में हाथ के पिसने से आई थी । अमृतधारा के मलने से तुरन्त आराम होगया ॥

'खां साहिब' जनाब कोतवाल रहमतुल्लाह खां साहब कोतवाली शहर लाहौर लिखते हैं:—" जनाब वन्दगी " अमृतधारा " रियायती मूल्य पर दूसरीवार आपके कारखाने से मंगाया । अनेक समयों में स्वयम् तथा इष्ट मित्रों को अजीर्ण आदि के लिये खिलाई, बड़ी पाचक और शीघ्र गुणकारी दवाई है ॥

श्री पण्डित रामभजदत्त साहिब बी. ए. वकील चीफ़कोर्ट पंजाब व मालिक अखबार " हिन्दोस्तान " लाहौर लिखते हैं:—मैंने "अमृतधारा" को जुकाम, कफ, दर्द सिर, जोड़ों के दर्द, पट्ठों के दर्द पर सेवन किया और इस को बहुतही हितकर पाया है " ॥

श्रीमान् बाबा गुरादित्त सिंह साहिब बी. ए. मुन्सिफ अजनाला "से लिखते हैं:—" मैं बड़े साहस से यह कहने को तैयार होगया हूं कि हर घर में अमृतधारा मौजूद रहना चाहिये । प्रायः रोग जो घरों में होजाते हैं, यदि डाक्टर मौजूद न हो तो डाक्टर का ही काम देगी । यह एक अत्यन्त ही मूल्यवान् दवाई है" ॥

मुन्शी शिवकुमार लाल साहिब मार्फत हिज़हाईनेस उज्जैनी महारानी साहिबा—" इस पत्र के देखतेही दो शीशी " अमृतधारा " वेल्यूपेवल पार्सल द्वारा प्रेषित करें । इस पत्र के द्वारा आपको अधिकार देता हूं, कि मुझको हर मास में एक या दो शीशी वी०पी० द्वारा मेरे पत्र की प्रतीक्षा के बिना अवश्य प्रेषित कर दिया करें ॥

श्रीमान् बाबू दया शंकर साहिब बी० ए० बिजनौर से लिखते हैं :— श्रीमान् पण्डित जी साहिब ! एक सप्ताह हुआ मैं लखनऊ से बिजनौर वापिस आरहा था, तो मेरे पेट में कठिन पीड़ थी, यहां तक कि मैं व्याकुल था, हमारे दर्जा में एक साहिब बैठे हुए थे, उन्होंने एक छोटी सी

शीशी अपने टरंक में से निकाल कर उसमें से ३-४ बिन्दु पानी के साथ मुझको दिए। सत्य जानिये कि कण्ठ से उतरते ही औषधि ने अपना प्रभाव किया। और दस मिंट के भीतर उदर शूल जाती रही। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह औषधि आप की रचित 'अमृतधारा' थी मैंने उनसे कुछ औषधि मांगी, उन्हों ने एक और छोटी शीशी मुझको देदी, मैंने आग्रह पूर्वक उनको २।।) शीशी के दाम देदिये। अब मैंने इसको और रोगों में आज़माया सर्वथा रामवाण प्रमाणित हो रही है" ॥

सैयद विशारत अली साहिब रईस बुनियादगंज—

लिखते हैं:—"पण्डित जी तसलीम। निःसन्देह मैंने आप की "अमृतधारा" को विज्ञापन के अनुसार पाया। मैंने स्वयम् भी वरता और दूसरों को सेवनार्थ दिया सब ईश्वर की कृपा से स्वस्थ होगए "**प्रतिश्याय, कोष्टवद्धता, सिरदर्द, खांसी शुष्क स्निग्ध, आमाशयशूल, ज्वर, सर्व प्रकार की पीड़ाएं,** तो इसके निकट कुछ भी नहीं हैं। दो चार मात्रा जहां सेवन किया यह सब दूर होगए। मैं दो वर्ष से सम्पूर्ण शरीर की पीड़ा से व्याकुल रहता था। प्रत्येक अंग में पीड़ा और कफ रहता था दो मास तो प्रति वर्ष व्याकुल होजाता था। इससे इलाजादि बहुत कराया लाभ न हुआ। जब से आप की "अमृतधारा" का सेवन करने लगा हूं, ईश्वर की कृपा से स्वस्थ रहता हूं। अभी तक इसको सेवन किए जाता हूं। यह शीशी समाप्त होने पर फिर अवश्य मंगवाऊंगा ॥

मेरे एक ४ वर्ष के बालक के खेल कूद में पांव की उंगली में चोट लगगई, उसका नख उखड़ गया "एक मास तक निरन्तर इलाज कराया कुछ लाभ न हुआ वरन् एक घाव होगया। रक्त पीव वहता रहा। "अमृतधारा" सेवन से लाभ हुआ॥

श्रीमान् राय गोवर्धनसिंह साहिब स्पेशल आनरेरी मजिस्ट्रेट बदायूं—लिखते हैं "श्रीमान् पण्डित साहब, प्रणाम! आपकी निर्मित "अमृत धारा" अद्भुत गुण वाली दवा है। मैंने चार पांच वर्ष में जितने रोगियों पर आजमाया लाभदायक पाया, जो कोई इसका चमत्कार देखता है, हज़ारजान से इसका प्रेमी बन जाता है। मेरे बहुत से इष्ट मित्रों ने इसका जादू भरी तासीर देख

कर मेरी प्रेरणा से मंगवाया और बराबर ग्राहक बन रहे हैं। मैंने खुद सैकड़ों रोगों पर परीक्षा की और हितकर पाई। बाज़ कठिन रोग ग्रस्तों को तो आशा से बढ़कर लाभ हुआ, जिसका वर्णन पत्र द्वारा करदिया गया। बड़ा सुख यह है कि किसी रोगी ने भूल से अधिक दवाई खाली तो कुछ हानि नहीं हुई। "अमृतधारा" की प्रशंसा लेखशक्ति से बाहर है मेरे विचार में तो अबतक किसी वैद्य हकीम ने ऐसी "अद्भुत प्रभावशाली दवा जो सर्व रोगों में लाभदायक हो **निर्म्माण नहीं की परमात्मा आप को सदा आनन्दित रक्खें ॥**

मैं प्रत्येक गृहस्थ को यह सलाह देता हूं कि वह अवश्य इस अद्भुत अमृत दवा "यथा नामा तथा गुण" को हर समय अपने घर में रक्खें"॥

श्रीमान् लाला ज्ञानचन्द साहिब महबूबराय मुन्सिफ दर्जा अव्वल बअख्तियारात जज्ज खफीफ़ा लाहौर लिखते हैं:—श्रीमान् पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा साहिब! जब मैं अमृतसर में मुन्सिफ़ था तो राय दीवानचन्द साहिब जज्ज खफीफ़ा अमृतसर के मुख से आप की आविष्कृत "अमृतधारा" का हाल सुना, और आप से औषधि मंगाई और सेवन की वास्तविक यह एक अनुपम वस्तु है, और प्रत्येक परिवारिक गृह में इसकी एक शीशी रखना आवश्यक है। मैंने स्वयम् इसका तजुर्बा किया है। और मैं कहसक्ता हूं कि निम्नलिलिखित रोगों पर जादू का प्रभाव रखती है:—

सिर पीड़ा, उदरपीड़ा, कर्ण पीड़ा, दन्तपीड़ा, फोड़ा फुन्सी, विच्छू का डंक, मुख पीड़ा,—इस समय तक जो कुछ तजुर्बा में आया है वह आप की सेवा में लिख दिया गया है" ॥

जनाब लाला युगुलबिहारीलाल साहिब सिरसा से लिखते हैं:—

"एक स्त्री जिसके गुप्तांग में अत्यन्त खाज होती थी, यहां तक कि खुजाते २ मूर्छित होजाती थी, और मतली मालूम होती थी। पेट दर्द किया करता था, मासिक खुलकर नहीं होता था, औषधि आदि से कुछ दिनों के लिए स्वस्थ हो जाती थी, इसबार रोग का वेग था। यहांतक कि मूत्र भी थोड़ा और बड़ी कठिनता से होता था, एक दिन सर्वथा न हुआ, कष्ट बढ़ गया कोई दवा

गुणकारी न हुई, उसके सम्बन्धी वहुत चिन्तित थे, संयोग से उसके पति को जो एक प्रतिष्ठित जमींदार है बोलायाथा, उसका मुख उदास था। कारण पूछा, तो सब उपर्युक्त वृत्तान्त मालूम हुआ; कि ४ वर्ष से है, परन्तु कोई औषधि गुणकारी नहीं मालूम हुई। मैंने उसे धैर्य देकर चौथाई शीशी "अमृतधारा" देदी और सेवनविधि भी बतादी। ईश्वर की कृपा से अब स्वस्थ है। और मासिक भी खुलकर होगया, कोई कष्ट भी बाकी नहीं, आशीशें देती है ॥

याद रक्खो—पीने के लिये सौंफार्क के साथ तीन २ बूंद, नाभि के नीचे मालिश को गाय के घृत १ तोला में ११ बूंद, मालिश यथावश्यक ॥

भीतर रखने के लिए एक तोला मीठे तेल में ३ बूंद डालकर कपड़ा भिगो कर यथावश्यक ॥

(२) साधारण ज्वर, शीत, शिरःशूल, प्रतिश्याय, कासादि के रोगी एकही मात्रा में स्वस्थ होगए ॥

(३) नेत्र रोग से दूर की चीजें स्पष्ट नहीं दिखाई देती थीं, और एक श्वेत झिल्ली सी स्याही पर चढ़ती हुई दिखाई देती थी, कि जो अब आधी से अधिक कट चुकी है, आंख वहुत साफ़ है। और दिखाई अच्छी तरह देता है। सप्ताह दो सप्ताह में सर्वथा स्वस्थ होजावेगी, सुर्मा जो वर्ता जाता था उसमें दो बूंद मिलाकर लगाता था" ॥

राय गंगाराम साहिब रायबहादुर सुपरिण्टेंडेंट पुलीस, कसूर लिखते हैं:—"जनाव पण्डित साहिब तसलीम, आपकी दवाई "अमृतधारा" को मैंने अपने ऊपर और अपने कुछ मित्रों पर वर्ता है, सचमुच अद्वितीय औषधि है। मैं यह लिखे विना नहीं रहसकता कि कोई घर इस दवाई से खाली न रहना चाहिये, जहां वैद्य या डाक्टर की सहायता शीघ्र न मिलसके, या रात का समय हो, या ऐसा अवसर हो कि दवाई शीघ्र न प्राप्त होसके वहां इस दवा से बहुत लाभ होता है। और इस अवस्थाओं में और भी हितकर प्रमाणित होगी। क्योंकि तुरन्त गुणकारी है। और शीशी सहजही पाकिट में रहसकती है, जितनी प्रशंसा इसकी कीजावे थोड़ी है। सच तो यह है "सिन्धु बिन्दु में बन्द है" ॥

प्रतिष्ठित अंग्रेज़ साहिबान के

सार्टीफ़िकेट

अमेरिका में कई घर "अमृतधारा" सेवन करके इस पर मोहित हो रहे हैं ॥

मिसज़ एच. एच. पैटरसन १४२ फट ओ, आई, ओकलैण्ड अमेरिका से लिखती हैं :—

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) 'अमृतधारा' को मैंने अपने कुटुम्ब में वर्ता है, मैं दिल व जान से तसदीक करती हूं, कि जिन रोगों के वास्ते आपने सूर्चा में लिखा है, यह गुणकारी प्रमाणित हुई ॥

श्रीमान् मिस्टर डबल्यू. आर. टरनर साहिब लाइनज़ पानियर लिखते हैं :—

"३शीशी अमृतधारा वी॰ पी॰ द्वारा भेज दें यह बहुत उत्तम औषधि है" ॥

जनाब मिस्टर ऐफ़ टेलर साहिब अटेचड् शिकशन विनोरी बैंकस पूना लिखते हैं :—

"मैं आप का धन्यवाद करता हूं, कि "अमृतधारा" ने मेरे मतलब को ठीक तौर पर पूरा किया । मैं इसको नहीं भूलूंगा" ॥

जनाब आर. ऐस. ए. वालार्ड साहिब जी. आई. पी. रेलवे लेनवली लिखते हैं :

"मैंने आप की "अमृतधारा" को अपने लड़के पर वर्ता जो कि सन्निपात से बीमार था, इससे उसको बहुत लाभ हुआ है, कृपा करके २ शीशी मूल्य ५) की वी॰ पी॰ द्वारा भेज देवें" ॥

जनाब डबल्यू ए. मेकरेडी साहिब लारन्स टेरिअस लखनऊ से लिखते हैं :—

" आपका नमूना "अमृतधारा" मिला, मैंने अपने बाजू के दर्द पर मला है। आराम अभी नहीं हुआ, मगर मालूम होता है कि इससे आराम होगा, इस वास्ते दो शीशी और भेज देवें ॥

श्रीमान् मिस्टर सी फ़रेम्पटन साहिब लोको सुपरिण्टेण्डेण्ट आर. ऐस. आर. पंजाब सिरसा से लिखते हैं :—

"मैंने आपकी "अमृतधारा" को परीक्षा के लिए अपनी नौकरानी को दिया, जिसको कण्ठमाला (हजीरां का) रोग है ॥

इसके सेवन से शोथ जाती रही। कृपया अमृधारा की एक शीशी भेज दें ॥

श्रीमान ई० जे० वेस्टवड साहिब मैनवल सिविल हास्पिटल रोड मदरास से लिखते हैं :—

"मेरी लड़की के दांत के भीतर कठिन पीड़ा हुई। वह सो नहीं सकती थी, मैंने झट 'अमृतधारा' लगाया, झट आराम होगया। और इस समय तक आराम है। जिसको कुछ सप्ताह बीत गए हैं। मैं आशा करता हूं, आप की अमृतधारा सब को हितकर होगी ॥

जनाब ए., जी. हापकन्सन साहिब टरमलगढ़ी दक्खिन से लिखते हैं :—

'अमृतधारा' बहुतही बढ़िया औषधि है। मैं इसका एक चमत्कार सुनाता हूं, के० ऐस० ऐल० इन्फिन्टरी फौज़ का एक सिपाही बहुत ही पीड़ित था, उसको कठिन दन्तपीड़ा थी, मैंने उसके दान्त के छिद्र में थोड़ी सी रुई पर "अमृतधारा' लगाकर रख दी निस्सन्देह पांच मिण्ट के भीतर सारी पीड़ा जाती रही ॥

सायंकाल को फिर थोड़ी आरम्भ होगई, वह मनुष्य फिर मेरे पास आया, मैंने अमृतधारा लगाई और दर्द इस प्रकार दूर हुई कि मानों जादू कर दिया है ॥

मेरे एक नौकर के गुप्तांग में दाह थी, किसी प्रकार मुझे मालूम हुआ, मैंने उस को "अमृतधारा दिया और उसने कहा, लगाई है आराम आगया ॥

मेरा भतीजा अमृतसर से आया है, और दो शीशियां अपने साथ लाया है। एक उसने मुझे हर समय रखने को दी हैं। वह इसकी बड़ी प्रशंसा करता है" ॥

श्रीमान् मिस्टर जे विन्सण्ट साहिब ५५ फोर्टरोड पेशावर से लिखते हैं :—

"एक शीशी "अमृतधारा" भेज दें, मुझे दर्द सिर के वास्ते अवश्य चाहिये। मैंने इसको पहिले लगाया है और मैं इस मतलब के वास्ते इसको अक्सीर औषधि समझता हूं" ॥

श्रीमान् मिस्टर ऐस कैम्बल साहिब कैम्प व्यलटन इस्टेट नियरकण्ड डिस्ट्रिक्ट सलेम लिखते हैं :—

" एक मनुष्य को मोच आगई थी, उस पर "अमृतधारा" को आजमाया, एक और फोड़े में लगाया, दोनों रोगों में बहुत हितकर प्रमाणित हुई। कृपया २ शीशी 'अमृतधारा' और भेज दें" ॥

अमृतधारा सम्बन्धी पदाधिकारियों के प्रशंसापत्र ॥

श्रीमान् ऐम. अमीन साहिब डिस्ट्रिक्ट जज्ज बहादुर मण्डला (मुमालिक मुतवस्सित) से लिखते हैं :—

"मैंने आप की "अमृतधारा" एक सन्धिवात के रोगी पर आजमाई और अत्यन्त गुणकारी पाया, मुझे मालूम हुआ है, कि इस औषधि की बड़ी विक्री है और दिन प्रति दिन प्रसिद्ध होरही है। मैं सब प्रकार से इसको कृतकार्य्य देखना चाहता हूं" ॥

श्रीमान् टी ब्रह्मपाटेवले पनानूर सौदागर दवानगर से लिखते हैं:—

"अमृतधारा" के विषय में हम आप को सहर्ष सूचना देते हैं, कि बहुत से रोगों में यह बहुत हितकर प्रमाणित हुई है। सार यह, कि हम इस दवाई को बड़े ज़ोर से सिफ़ारिश करते हैं। बहुतों ने इसके सेवन से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ की है॥

श्रीमती खुशहाली देवी मारवाड़ी हैदराबाद सिन्ध से लिखती हैं:—

"आप की "अमृतधारा" जिसकी एक शीशी आप से मंगवाई थी, वास्तविक बड़ी बढ़िया औषधि है। कृपया दो बोतल और एक नमूना, और वी० पी० द्वारा रवाना करें"॥

श्रीमान् ए. जी. श्री निवास राघवाचार्य्य बी. ए. बी. ऐल. हाई कोर्ट वकील माइलापुर से लिखते हैं :—

'मैं आप की 'अमृतधारा' के प्रभावों को देखकर बहुतही प्रसन्न हुआ हूं। कृपा करके अपनी 'अमृतधारा' की सूची प्रेषित करें"॥

श्रीमान् पण्डित हीरानन्द जी शास्त्री एम. ए. एम. ओ. एल. इनचार्ज सुपरिण्टेण्डैण्ट आरकीलोजीकल सरवे डिपार्टमेण्ट लाहौर लिखते हैं :—

"मुझे आप की अमृतधारा की तसदीक करने में खुशी है, मैं इसको बढ़िया औषधियों में से जो कभी आविष्कृत हुई हैं मानता हूं। सफर में यह बहुत ही गुणकारी है। क्योंकि बहुत से रोगों की सिद्ध औषधि है। मैंने अपने लोगों और दूसरे लोगों पर भी इसको वर्ता है। और कभी अकृतकार्य्य नहीं हुआ हूं। मैंने एक बार इसको एक ब्रह्मा के भिक्षुको जो बुधदेव की पुरानी इमारतें देखने आया था, और मैं वहां खोदवाई करा रहा था, दिया। वह घोर ज्वर व खांसी में ग्रस्त था, औषधियों से तंग आचुका था, उसको तत्काल आराम होना आरम्भ हुआ,

और उसने मुझसे आप से शीशी मंगवा देने की प्रार्थना की। इसके अतिरिक्त मैंने इसको शिर दर्द, विशूचिका, अजीर्ण, भिड़ के डंक पर गुणकारी पाया है। मैं सर्वसाधारण और विशेष कर मेरे जैसे सफ़र में रहने वालों के वास्ते विशेष रूप से प्रेरणा करता हूं, जब दूर स्थानों में जहां न हकीम मिलसके न औषधि मिल सके, 'अमृतधारा' को साथ रखना हितकर प्रमाणित होगा ॥

श्रीमान् विनाम आयर साहिव ओटापलम से लिखते हैं :—

"मैंने "अमृतधारा" को खुजली रोग पर आज़माया है और बहुत हितकर पाया है। मैं निश्चय करता हूं, कि अन्य रोगों पर भी वैसेही लाभदायक प्रमाणित होगी"॥

सय्यद मुनीरउद्दीन साहिब इन्स्पैक्टर कस्टम गोंडेगांव ज़िला खानदेश लिखते हैं:—

"तसलीम। वास्तविक "अमृतधारा" के गुणों और उसके प्रभावों में आप ने जितने शब्द लिखे हैं सर्वथा सत्य हैं वरन् उससे भी अधिक प्रभावशाली है। और जितने रोगों के नाम आप ने बतलाए हैं उनके अतिरिक्त और रोगों पर भी सेवन करने के लिये सिद्धबाण औषधि है। यह ईश्वरीय दान है; जो आप को प्राप्त हुआ है ॥

पण्डित बनवारीलाल शर्म्मा साहिब ट्रैवलिंग इन्सपैक्टर आफ़ अकाउण्टस् बी. बी. ऐण्ड सी. आई रेलवे अजमेर लिखते हैं:—

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) "मैंने दो तीन अवसरों पर "अमृतधारा" का सेवन किया और हितकर पाया है। मेरी सम्मति में प्रत्येक घर में इसका रहना आवश्यक है" ॥

जनाब आग़ा शुजा हुसेन साहिब मजिस्ट्रेट दर्जा अव्वल व सिवल जज्ज पिपलोधा (मालवा) लिखते हैं:—

(अंग्रेज़ी से अनुवाद) "मैंने आपकी अमृतधारा को अपने परिवार में सेवन किया है, शिरदर्द और ज़ुकाम को गुण किया, इससे तत्काल आराम होता है" ॥

राए. ऐस. सी. नारक साहिब बहादुर कटक से लिखते हैं ।
(अंग्रेज़ी से अनुवाद)

"आपकी "अमृतधारा" को मैंने वर्ता है, आश्चर्यजनक लाभ करते देखा है । आप की "अमृतधारा" से जिन २ केसों का इलाज कर रहा हूं, उनके नोट रख रहा हूं, थोड़े दिनों के पश्चात् आप को लिखूंगा" ॥

मियां विशेशर सिंह साहिब बी० ए० नायब तहसीलदार अजनाला
(अंग्रेज़ी से अनुवाद) लिखते हैं :—

"मैंने आपकी "अमृतधारा" एक से अधिक वार सेवन की है । अतः उसकी प्रशंसा करने से रुक नहीं सकता, दुर्भाग्य से कुछ अर्सा से मुझको विचित्र प्रकार की सिरदर्द थी, मैंने युनानी व अन्य बहुत सी औषधियां सेवन कीं, परन्तु आराम नहीं हुआ था ॥

एक दिन मेरे एक दोस्त ने "अमृतधारा" उस रोग पर आज़माने और सदैव आवश्यकता के लिए इस औषधि को अपने पास रखने की प्रेरणा की ! मैंने उसकी आज्ञा पालन की, और मैं प्रसन्न हूं, कि इस चमत्कारिक औषधि से मुझे आराम हुआ । उसके पश्चात् मुझे कई रोगों पर इस अमृत को सेवन करने का अवसर हुआ, और मुझे इसके फलों से आनन्द हुआ, अब मेरी सम्मति है, कि कोई घर इस औषधि से खाली नहीं होना चाहिये । क्योंकि यह बहुत से रोगों पर गुणकारी है" ॥

सरदार अमरसिंह साहिब नयाबा सूबेदार मेजर पलटन नं० २
ग्वाला लिखते हैं :—

मैं आप से अनेक वार "अमृतधारा" मंगा चुका हूं, मैंने 'अमृतधारा' को बहुत से रोगों पर आज़माया, हितकर पाया । एक स्त्री के कान में घोर पीड़ा

थी, मैंने दो तीन बूंद कान में डाल दिए उसी समय दांतों को आराम आगया। और आप को आशीष देने लगी। और रोगों में आजमाया सविस्तर व्याख्या लिखनी व्यर्थ है" ॥

श्रीमान् चण्डी प्रसाद साहिब महाफ़िज़ दफ़्तर कौंसल भरतपुर लिखते हैं :—

श्रीमान् पण्डित जी! नमस्ते आप की "अमृतधारा" को मैंने आज़माया जैसी इसकी प्रशंसा है वैसी पाई गई। एक दिन मेरी पोती की जिह्वा में शहद की मक्खी ने डंक मारा, जिससे जिह्वा पर शोथ होगया। मुझे आप की 'अमृतधारा' का ध्यान आया, मैंने शीघ्र उसकी जिह्वा पर उसको लगा दिया, रात्रि भर में उसकी जिह्वा असली हालत पर आगई और कष्ट जाता रहा, दाढ़ दर्द में भी मैंने इसकी परीक्षा की, लाभदायक पाया" ॥

श्रीमान् मास्टर आत्माराम (भूतपूर्व उपमन्त्री आर्य्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब) ऐजूकेशनल इन्स्पेक्टर बड़ौदा राज्य से लिखते हैं

"अमृतधारा" का मैंने अपने घर में पेट के दर्द और पुराने अतिसार में सेवन किया, और क्लोरोडायन का प्रतिनिधि पाया। उदररोगों को इसने दूर किया" ॥

श्रीस्वामी ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी सरस्वती राजउपदेशक शान्ति कुटी शिमला से लिखते हैं :—

आप की बनाई "अमृतधारा" औषधि को मैंने और अन्य सज्जनों ने सेवन करके देखा है। सचमुच रामबाण औषधि है। जिन रोगों का आप ने वर्णन किया है, उनमें से कुछ पर सेवन किया, तो जैसा कि लिखा है वैसाही पाया। मेरी सम्मति में प्रत्येक मनुष्य के पास अमृतधारा अवश्य रहनी चाहिए" ॥

ओ३म

अब यहां से चिकित्सकों के पत्र दरज होते हैं

हमारे देश के

चिकित्सकों में प्रायः उदार भाव नहीं है वह अपने भाई की बनी हुई औषधि को न वरतेंगे, चाहे विदेश की किसी भी औषधि को वरत लेवें ॥

अमृतधारा ने सैंकड़ों **हकीमों, वैद्यों, डाक्टरों** को अपना चमत्कार दिखलाया है और वह सदा अपने रोगियों पर अमृतधारा को वरतते हैं, परन्तु प्रशंसापत्र भेजने का साहस नहीं करते, कि लोग कहेंगे दूसरे की दवाई वरतता है, कैसा तुच्छ विचार है, जिन महानुभावों ने पत्र भेजे हैं दर्ज किये जाते हैं ॥

इस से आगे

किंचित् वैद्यों, हकीमों, डाक्टर श्रीमानों के प्रशंसा पत्र पृथक् लिख दिए हैं, पाठक समझ सकते हैं; कि "अमृतधारा" ने कितनी सर्वप्रियता प्राप्त करली है; जबकि चिकित्सक लोग भी इसको सब जगह अपने रोगियों पर वर्त कर नाम प्राप्त करते हैं ॥

"अमृतधारा" ने सौ रुपया दिलाया

निवेदन है कि श्रीयुत दीवान ताराचन्द साहिब हैदराबाद सिन्ध इस्तिस्काय-ज़की (शोथ भेद) में ग्रस्त थे, डाक्टरी इलाज करते २ थक गये, परन्तु आराम न हुआ, मैंने उनको पूरे तौर पर शान्त्वना दी कि आराम आजावेगा, परन्तु इस शर्त पर कि राजी होने पर एक सौ रुपया लूंगा। यह इकरार होने पर स्मरण आया कि पहले "अमृतधारा" को खिलाकर देखूं। परमात्मा का नाम लेकर अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार इस तरह आरम्भ कर दिया, पहिले प्रातःकाल ५ तोला ऊंटनी के दूध में ३ बूंद "अमृतधारा" मिलाकर पिलाया, और ५ बजे सन्ध्या को शर्बत शिकंजवीन, बजूरी ३ तोला "अमृतधारा" ३ बूंद मिलाकर पिलाया। और गन्धक आमलासार ४ तोला गाय का गोबर ताजा ३० तोला खूब खरल करके पेट पर लेप करता रहा, चार रोज के पश्चात् लाभ प्रतीत हुआ, और रोगी को भी विश्वास होगया कि इस औषधि से आराम होगा, दीनता से कहा कि यही दवा देते रहें। फिर क्या था, जब कुछ आराम देखा तो मैं भी जानगया कि इस अकसीर से आराम होगा। चार दिन के पश्चात् दूध ८ तोले "अमृतधारा ३ बूंद कर दी। बारहवें दिन "अमृतधारा" ५ बूंद दूध ८ तोले कर दिया। १६ वें दिन दूध २० तोला "अमृतधारा" ६ बूंद कर

दिया ! इस काल में उनका तीन भाग रोग जाता रहा। यह देख कर उनके सम्बन्धी बहुत प्रसन्न हुए और शहर के सब लोग उनको देखने आये, और पूछते थे कि यह असाध्य रोग किस महोषधि से अच्छा हो रहा है। मैंने स्पष्ट कह दिया कि श्री पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मावैद्य लाहौर की निर्म्मित है। उनकी बदौलत आपका लड़का अच्छा होता है। वह लोग सुनकर हजारों आशीशें देने लगे। और धन्य २ कहते रहे। आज कल प्रत्येक के मुख पर आपही का नाम रहता है। ईश्वर आपको सकुशल रक्खे ! फिर तो मैंने इसी बिधि से पूरे ३२ रोज तक "अमृतधारा खिलाई और ईश्वर की कृपा से रोगी पहिले की तरह निरोग्य हो गया। रोग का कोई नाम न रहा। शहर के लोग यह चमत्कार देखकर चकित रह गये, कि रोगी का नया जीवन मिला है।

लेखकः—सय्यद गुलाम अलीशाह कराची

देखिए एक डाक्टर साहिब क्या लिखते हैं:—

" तसलीम मिजाज मुबारक "अमृतधारा" इस जगह बहुत से रोगों में वर्ती गई और निम्न लिखित रोगों में बहुत लाभदायक प्रमाणित हुई है :—शिर की पीड़ाओं में, और विशेष कर मस्तिष्क की निर्वलता की पीड़ा में, जो बारी से होती है रामबाण प्रमाणित हुई। कान के दर्द, बहरापन, दन्त पीड़ा, मसूढ़ों की शोथ, वृक्कों की पीड़ा (दर्द गुर्दह) सन्धिवात, छपाकी, ववासीर, खाज, इन रोगों में मैंने इस दवाई को बरता प्रत्येक रोग में हितकर पाया॥

इस औषधि की जितनी प्रशंसा की जावे उचित और यथार्थ है। निःसन्देह यह दवाई घर का वैद्य कहलाने के योग्य है। जिस मनुष्य की जेब में यात्रादि के समय यह दवाई है वह अवश्यही इस से सफरी वैद्य का काम ले सकता है। संक्षिप्ततः अद्वितीय महौषधि है॥

लेखकः—रामसेवक शर्म्मा डाक्टर डिस्पैन्सरी सोनमियानी
रियासत लसबेला

देखिये वैद्य साहिब क्या लिखते हैं।

"अमृतधारा" की मैंने बहुत से रोगों पर परीक्षा की है। और विचित्र प्रभाव पाया है। "अतः मैं दावे से कह सकता हूं कि दुनिया में कोई रोग ऐसा न होगा जो अमृतधारा से दूर न हो। "क्योंकि मैंने ऐसे २ कठिन अवसरों पर इसको वरता है, कि जिनमें रोगी के वचने की आशा टूट चुकी थी। परन्तु "अमृतधारा" अमृतवत प्रमाणित हुई। इस वास्ते दुनिया के लोगों से निवेदन है कि "अमृतधारा" हर समय अपने पास रक्खें क्योंकि प्रत्येक रोग को विना अनुपान के तुरन्त दूर कर देती है'

लेखकः—रघुनाथ सहाय शर्म्मा वैद्य स्थान धनपुर"

गुरू से शिष्य कैसे बढ़ गया॥

प्रियवर पण्डित जी! "अमृतधारा" निःसन्देह औषधियों की भण्डार, अद्भुत प्रभावशाली रोग नाशक है। यथा खाज, व्रण, वमन, मन्दाग्नि, नेत्रों की ललाई, ज़ुकाम, खांसी, कफ़, अफ़ारापेट, मुख की लार, सन्धिवात की अचूक औषधि है। एक दिन मैंने एक बूटी का पानी निकाला, उससे हाथों पर ऐसी खाज होनी आरम्भ हुई, मानों किसी ने चिनगारियां लगादीं। पाहिले घृत लगाया, पुनः दही व सिरका मला कुछ आराम न हुआ, तो झट ५ बूंद अमृतधारा के मले, तुरन्त ऐसा आराम आया कि मानो खाज हुई ही न थी। एक दिन दास के पास कोई औषधि तैयार न थी, और नाहीं कोई गांव समीप था, कि एक दर्द गुर्दे का रोगी मेरे पास आया, उस समय "अमृतधारा" मेरे पास थी, तुरन्त छैः सात बूंद डालकर पिला दिए और इतने ही बूंद दर्द स्थान पर मल कर आक के पत्ते बंधवा दिए, दास शिक्षा प्राप्ति के निमित्त उस्ताद जी के पास गया और वहां एक रोगी मरोड़ वाला वर्तमान था वमन भी होती थी, और दवाई देते ही निकल जाती थी, अनेक यत्न किए पर

लाभ कुछ भी न हुआ। मैंने झट जेब से शीशी "अमृतधारा" निकाल कर अनुपान के साथ पिला दी, सबहानअल्लाह तुरन्त आराम होगया। इसी प्रकार कई तजुर्बे हुए, लेख वृद्धि के भय से समाप्त करता हूं॥

लेखकः—हकीम मुहम्मद जैनुल आबदीन ग्राहक देशोपकारक नं०१९०३

ग्रीष्म ऋतु में

पित्ती बहुत दुखी करती है। अमीर गरीब हर समय खुजाते ही दिखाई देते हैं। चाहे कैसी कठिन खाज होती हो, थोड़ी सी "अमृतधारा" मल दीजिए तुरन्त खाज बन्द हो जायगी और ठण्ढक पड़ जावेगी॥

"मैं एक दिन पण्डित जी के पास आया, उस समय पित्ती ने मुझे व्याकुल कर रक्खा था, बाहों पर इतनी खाज हो रही थी कि त्राहिमान्। मुझे खुजलाते देख कर पण्डित जी ने कहा लीजिए आज आप को वैद्यक औषधियों का चमत्कार दिखाते हैं और "अमृतधारा" थोड़ी सी लगादी, मैं चकित होगया कि अर्द्ध मिण्ट के भीतर २ सम्पूर्ण खाज जाती रही। कोई भी डाक्टरी दवाई इसका मुकाबला नहीं कर सकती॥

लेखकः—डाक्टर गुलजारी लाल बारामूला॥"

मैं ईमान से कहता हूं

"जनाब पण्डित साहिब! तसलीम निम्न लिखित पंक्तियों को अखबार में अंकित करें। "सेहर कहूं या जादू" सज्जन गण, मैंने मास फरवरी में एक शीशी "अमृतधारा" मंगवाई, जिस दिन शीशी पहुंची उसी दिन मेरे चिकित्सालय में एक पुराना दर्द शिर का रोगी और दूसरा जिसे चड्ढों में १२वर्ष से खाज थी बैठे थे। दोनों रोगी बहुत दूर २ के नामी वैद्यों से चिकित्सा करा चुके थे। इन में से एक दिल्ली के प्रसिद्ध हकीमों से भी इलाज करा चुका था, और लाभ कुछ न हुआ था।

मैंने सेवन विधि पत्र के अनुसार दवाई आरम्भ की। मैं हैरान और निराले दर्जे का

चकित रह गया, कि दवा लगाते ही दोनों मनुष्यों को तत्काल स्वास्थ्य प्राप्त हो गया।

इसी प्रकार अनेक समयों में अनेक रोगियों पर "अमृतधारा" का तजुर्बा किया, इसने वर्षों के रोगों पर मिण्टो में लाभ दिखाया। किसी दवा का प्रभाव वर्षों निरन्तर दवा सेवन करने से होता है, किसी का महीनों में, किसी का दिनों में, किसी का घण्टों में, परन्तु मैं ईमान से शपथ पूर्वक कहता हूं, कि इसका प्रभाव क्षण मात्र में होता है। मैं नितान्त विस्मित हूं कि पण्डित साहिब ने शीशी में क्या जादू भर दिया है। इसमें किसी प्रकार की मिथ्या न समझियेगा। सत्य २ और ठीक २ कहता हूँ, कि दवाई अत्यन्त हितकर और शीघ्र गुणकारी है। हर प्रकार के रोग पर तुरन्त लाभ देती है। मैंने अपनी आयु में ऐसी कोई दवाई नहीं देखा है: जैसी कि "अमृतधारा"! प्रत्येक घर में इस दवाई की कम से कम पांच छः शीशियां मौजूद रहनी चाहिए। इस दवाई का मूल्य इसके लाभों की तुलना में एक दुनिया भी थोड़ी है। और मेरी तो सायम् प्रातः यह दुआ है कि खुदावन्द करीम पण्डित साहिब को उनके सम्बन्धियों समेत कुशल और आनन्द से रक्खे, और औषधालय को दिन दूनी रात चौगुणी उन्नति दे"॥

लेखकः—हकीम दोस्त मुहम्मद खां उड़ मुड़॥

९ दिन के पश्चात् अमृतधारा ने सुलाया

तसलीम मिजाज शरीफ! "अमृतधारा" के तजुर्बे नीचे अंकित हैं। एक मनुष्य शेख कल्लन जर्राह एक दिन रात को वर्षा के पानी में लग भग २ घण्टे मकान की छत ठीक करने में भीगता रहा, और प्रभात उसे ज्वर आया। ११, १२ दिन तक बराबर उसे ज्वर आता रहा। इसी दशा में पहिले कमर में दर्द हुआ, फिर बाईं ओर पेड़ू से आरम्भ हो कर अण्डकोशों में दर्द होने लगा, ऐसा कि किसी पहलू चैन नहीं पड़ता था। बहुत कठिन पीड़ा में ग्रस्त हो

गया था। डाक्टरों और हकीमों से इलाज कराया, लेपादि लगाये, परन्तु कुछ आराम होता हुआ दिखाई न दिया, इसी दशा में ९ दिन बीत गये। पश्चात् मुझको बुलाया, और सब वृतान्त वर्णन किया, मैंने तुरन्त अर्क सौंफ में ३ बूंद "अमृतधारा" की डाल कर पिलाई, और २ भाग तैल मालकंगुनी में १ भाग "अमृतधारा" मिलाकर मालिश कराई, और पुरानी रूई गरम कराके बंधवादी, थोडी ही देर के पश्चात् पीडा बन्द हो गई। रोगी को जो कि ९ दिन से नहीं सोया था, और चीखता चिल्लाता था, (जिसके कारण से पडोसी भी व्याकुल थे) निद्रा आगई। ९ बजे रात्रि से १२ बजे तक खूब सोया, बारह बजे रात्रि के पीछे फिर दर्द होने लगा, फिर मालिश करा के गरम रुई बंधवाई, थोडी ही देर के पीछे फिर दर्द जाता रहा, और नींद आगई। जब प्रातः काल शौच (पाखाना) गया और रुई खोल डाली तो वायु के लगने से फिर दर्द आरम्भ होगया, किन्तु मालिश करने से फिर बन्द होगया, प्रातः मुझे बुलाकर रात्रि का हाल सुनाया, तब मैंने पेडू से अण्डकोश तक दो २ घण्टे के पश्चात् सन्ध्या पर्यन्त खालिस "अमृतधारा" की ही मालिश कराई और बराबर अर्क सौंफ २ तोला में ३, ३ बूंद डालकर पान कराया, अल्लाह के फ़ज़ल से रातभर सुख से सोया। ३ दिन में पूरा स्वस्थ हो गया। दर्द ज्वर दोनोही जाते रहे। ३ मास बीत चुके हैं अभी तक कोई कष्ट उत्पन्न नहीं हुआ॥

दूसरा तजुर्बा

मेरे भाई को जिसकी आयु ४० साल की है ७-८ वर्ष से रक्तार्श (खूनी बवासीर) थी और खाज भी बहुत होती थी। अमृतधारा सेवनविधि पत्र के लेखानुसार रसौंत के पानी में पिलाई गई, और नवनीत में मिलाकर लगाई गई, ईश्वर की कृपा से २५ दिन में सब दुःख दूर होगया॥

तृतीय तजुर्बा

एक स्त्री को ढाई वर्ष से यह रोग था, कि नाक में खुरण्ड जम जाया करता था, और जब पृथक् कर देती थी तो खून बहता था, "अमृतधारा" २० बूंद, रोगन गुल ४० बूंद में मिलाकर लगाने के वास्ते दी, १०, १२ दिन में यह दुःख दूर होगया। दो मास होचुके हैं अब अल्लाह का फ़ज़ल है ॥

इसके अतिरिक्त सब प्रकार का दर्द, शिरदर्द, कानदर्द, कान में फिंसी, दांत और दाढ़दर्द, पेटदर्द, पेटका फूलना, कोष्ठबद्ध, वमन, ज्वर, खांसी, सब प्रकार का जुकाम बन्द, श्वास (दमा) इन सर्व रोगों पर सेवन विधि के अनुसार तजुर्बा कर चुका हूं, अल्लाह के फ़ज़ल व करम से मिण्टों में आराम होकर घण्टों में रोगियों को स्वास्थ्य प्राप्त होती है। मेरी हार्दिक कामना है कि अल्लाहताला "अमृतधारा" में और आप के हाथ में सौ गुणा अधिक प्रभाव उत्पन्न करे। निःसन्देह आप को यह ईश्वरीय दान प्राप्त हुआ है। मैंने आज तक ऐसी कोई औषधि नहीं देखी। सुभानअल्लाह एक दवा वीसियों रोगों को तुरन्त दूर कर देने में अचूकवाण और सब प्रकार की प्रकृति वाले रोगियों के अनुकूल। निःसन्देह अकसीर है डाक्टरों, हकीमों की फीस और दसगुणा औषधियों के मूल्य से वचें और हानि न उठावें, और श्रीमान् पण्डित जी को इस परोपकार के बदले आशीर्वाद दें ॥

लेखकः—हकीम मौलाना मुहम्मद इबराहीम
अद्दम अकबराबादी मथुरा ॥

मैं कहां तक लिखूं

श्रीमान् पण्डित जी! तसलीम एक शीशी "अमृतधारा" आप के औषधालय से मंगाया, बहुत ही प्रभावशाली पाया, जिसका अन्त नहीं, मैं कहां तक लिखूं, अवर्णनीय है। चालीस पचास प्रकार के कठिन रोग दूर हुए, अतः प्रार्थना है कि कृपा करके ३ शीशी "अमृतधारा" शीघ्र प्रेषित करें ॥

लेखकः—हकीम मुहम्मद अबदुल हकीम चिश्ती ॥

मान करो

"तसलीम मिज़ाज शरीफ़! मैं आप का हृदय से धन्यवाद करता हूं, कि मैंने आप से एक शीशी "अमृतधारा" की मंगाई, उसका इस्तामाल रोगियों पर मुफ्त किया, नितान्त हितकर पाया, इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि यह बड़ी दुर्लभ वस्तु है। पबलिक को उचित है, कि इस अद्भुत वस्तु का मान करे। ईश्वर से प्रार्थना है, कि आप के कार्य्यालय की दिन प्रतिदिन उन्नति हो"॥

लेखकः—अली अकबर खां वैटरनरी असिस्टेण्ट पिन्शनर॥

गले आना आदि

"आप की भेजी शीशी "अमृतधारा" प्राप्त हुई, थोड़ेही दिनों में मुझको दो तीन रोगों में वर्तने का अवसर मिला, पहिले तो मैंने अपने ऊपरही परीक्षा की, मेरे गले आगए, और नरम तालू साफ़्ट् पैलेट भी बढ़गया, निगलने में बड़ी कठिनता थी। दिन में दो तीन बार लगाने से तुरन्त आराम होगया। उस समय मैं सफ़र में था, अब तीन मास का अवकाश लेकर घर पर आया हूं। श्रम से शिर में दर्द होगया, दो बूंद माथे पर मलने से कुछ देर में आराम आगया। घर पर मेरे पिता जी के कान में दर्द था, मीठे तैल में दो बिन्दु "अमृतधारा" के कान में डालने से तत्काल आराम होगया, और अब तक आराम है"॥

लेखकः—अबदुल हबीब वैटरनरी असिस्टेण्ट सहना॥

सोज़ाक, सन्निपात, गुदभ्रंश

" जनाबमन तसलीम! दुनिया के लोगों पर आप ने बहुत ही दया की है। अर्थात् "अमृतधारा" संसार में अमृत का काम दे रही है। मानो मुर्दे जीवित

होते हैं। निम्न लिखित रोगों में बहुत ही शीघ्र लाभ दिया। सोज़ाक पुराना एक सप्ताह के सेवन में जड़ से उखाड़ डाला। सरसाम में दो बार माथे पर मलने से, दन्तदर्द, कानदर्द, तत्काल दूर होगया। गुदभ्रंश लगाने व खाने से सप्ताह के भीतर छू मन्त्र होगया"॥

लेखकः—हकीम मुहम्मद अवदुल जब्बार
रियासत अलवर॥

बड़ी भारी अक्सीर दवाई है

"श्रीमान् वैद्यराज जी महाराज! प्रणाम आप ने जो "अमृतधारा" भेजी थी, उसका सेवन किया गया। जिस प्रकार आप ने उसके लाभ लिखे हैं, वास्तव में सत्य हैं। जिस २ रोग पर दी गई, ख़ाली नहीं गई। दस्त, उल्टी, हैज़ा, खांसी, विषमज्वर पर भी इसका प्रयोग किया, बराबर लाभ हुआ। दर्द शिर, दर्दपेट, पेचिश, शूल, ज़ुकाम पर बहुत ही फ़ायदा हुआ। यह बड़ी भारी अक्सीर औषधि है, जिस के लाभ का कुछ अन्त नहीं"॥

लेखकः—भागमल हकीम नौशहरा मजासिंहवाला
तहसील बटाला, ज़िला गुरदास पुर॥

क्षुद्र रोगों में हितकर पाया॥

"तसलीम। इससे प्रथम आप के कारख़ना से नमूना "अमृतधारा" की शीशी मंगवाई थी। यद्यपि बड़े २ रोगों पर आज़माने का अवसर नहीं मिला, परन्तु शिर दर्द और ऐसे ही अन्य क्षुद्र रोगों में हितकर पाया। इसी से अनुमान होता है, कि अन्य रोगों में भी गुणकारी होगी"॥

लेखकः—मोलवी हकीम अहमद हुसैन अज़ मुन्शी पाढा
शहर दीनाजपुर बंगाल॥

दो विन्दु डालने से पूरी स्वास्थ्य ॥

"पालागन के पश्चात् विदित हो, कि "अमृतधारा" की जो कुछ प्रशंसा की जावे कम है। एक मनुष्य के कान में ४ मास से दर्द होता था, और पीप भी आती थी। केवल ३ बार दो २ बूंद कान में डालने से आराम होगया। दूसरे मनुष्य को ज्वर से आराम होगया, कई औषधियां की गईं, कुछ लाभ न हुआ। "अम्रतधारा" २ बूंद की मालिश मस्तक पर कराई गई, उसी क्षण पूरी स्वास्थ्य होगई। दूसरे दिन फिर मालिश कराई, ज्वर भी दूर होगया। तीसरे एक मनुष्य की पसली में दर्द और ज्वर था, तिल के तैल में "अमृतधारा" मिलाकर मालिश कराई गई, तीन दिन में रोग जाता रहा। यह विचित्र औषधि है; कि प्रत्येक रोग को तुरन्त दूर करती है। प्रत्येक हकीम को "अमृतधारा" अपने पास अवश्य रखनी चाहिए, अत्यन्त गुणकारी है" ॥

लेखकः—मुन्शी माता प्रसाद मुदर्रिस व हकीम

मदरसा महोनी ज़िला एटा ॥

प्रत्येक रोग में गुणकारी ॥

"जनाब पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा साहिब! निवेदन है, कि मैंने आप के यहां से "अमृतधार" चन्दवार मंगाई, अत्यन्त गुण किया, प्रत्येक रोग में हितकर पाया, इसकी प्रशंसा लिखने में असमर्थ हूं" ॥

लेखकः—हकीम अबदुल रशीद खां, साकिन

फकराला, ज़िला बदायूं ॥

जनाब हकीम मुहम्मद फ़ीरोज़उद्दीन साहिब मुन्शी फ़ाज़िल एडीटर हिकमत लाहौर ॥

लिखते हैं:—"अमृतधारा" निःसन्देह अमृत की तरह अजर अमर नहीं करती, परन्तु निःसत्व रोगियों के सम्बन्ध में अमृत का प्रभाव दिखाना, और उन रोगियों को जो चारपाई पर पड़े हुए मृत्यु की वाट देखा करते हैं, मिण्टों में स्वस्थ वनाना अमृत से कम नहीं है । मैं इसे प्रायः रोगों पर वर्तता हूं और विस्मित होता हूं । मुझे वर्णित रोगों में से लग भग आधे पर वर्तने का अवसर हुआ है, और रामवाण पाया है । ईश्वर पण्डित साहिब को इस हितकर आविष्कार के वदले में अवश्य कोई रंग दिखलावेगा, और हम लोगों का कर्तव्य है कि पण्डित साहिब के निर्म्माण का आदर करें, और हाथों हाथ खरीदें" ॥

मुरदह शरीर में प्राण डाले ॥

"अमृतधारा" को मैं गत वर्षों में मंगा कर सेवन कर चुका हूं । मैं ज़िला अम्वाला में वैकसी नेटर हूं । ग्रीष्म ऋतु में वास्ते कार्य्य वैकसीनेसन और शीत ऋतु में वास्ते किताव "मौत पैदायश" ज़िला अम्वाला के ग्रामों में जाना पड़ता है । सहस्रों की संख्या में रोगियों से वास्ता पड़ता है । वाजे २ ऐसे रोगी कि जो अपने जीवन से हाथ धो बैठे थे, इसने उनको नवजीवन प्रदान किया, "अमृतधरा" मानो एक मन्त्र है । स्वास्थ्य प्राप्त रोगी आपको आशीष देते हैं, जिन्हों ने इस "अमृतधारा" को पिया और इसने उनके शरीर में प्राण डाले, मैं जोर से यह कहे विना न रहूंगा, कि "अमृतधारा" सचमुच एक योग्य वैद्य का काम देरहा है । आज तक इस प्रकार की औषधि देखी तो क्या सुनी भी नहीं है ॥

लेखकः—गंगाराम वैक्सीनेटर ॥

ओ३म्

इस के आगे देखिए ॥

' अमृतधारा '

के वह चमत्कार जिन्हों ने दुनियां को अचम्भे में डाल दिया है ।

प्रत्येक पत्र ध्यान से पढ़ने के योग्य है ॥

'अमृतधारा' जब अनुकूल आती है, सैंकड़ों और हज़ारों रुपयों की औषधियों से बढ़ कर लाभ करती है ॥

आज़माओ और लाभ उठाओ ।

सविनय फिर निवेदन करते हैं, कि एक बार इन सर्टीफिकटों को अवश्य पढ़ें, इसी वास्ते हमने हज़ारों रुपये खर्च किए हैं । यह केवल चन्द प्रशंसापत्र हैं, बहुत से अभी बाकी हैं ॥

जिस श्रीमान् से आप अपने तौर पर पूछना चाहें, सहर्ष पूछ सकते हैं ॥

दूसरा तजुर्बा

"एक साहिब चिर काल से धातुजाना रोग में ग्रस्त हैं। १८ वर्ष विवाह को हुए, सिवाय एक कन्या के फिर कुछ नहीं हुआ। दिसम्बर मास में यहां पर एक वैद्य आए, जो बहुत बूढ़े थे, और अपने को जम्मू का निवासी बताते थे। उन्हीं साहिब से मिले और कहा कि मैं एक दवा दूंगा उससे तुम्हारी व तुम्हारी स्त्री की सब बीमारियां दूर होजांयगी, और बालक होगा। खैर उनके घर में इलाज आरम्भ कराया, वैद्य साहिब ने गोलियां खिलाई, तीन दिन के पश्चात् पहिले हलक और जबड़ों में दर्द होना आरम्भ हुआ, जो प्रति क्षण अधिक होता चला गया। तीसरे दिन मुझ से कहा कि घर में ऐसा हाल है। खाना तक नहीं खाया जाता है, मैंने इनसे कहा कि जिन वैद्य साहिब ने तुम्हें दवा दी है, उन्हीं से कहो कि यह क्या हुआ, और यह कष्ट उन्हीं वैद्य साहिब की औषधि का है, चौथे दिन प्रातः काल बहुत उदास और व्याकुल मेरे पास आकर कहा, कि रात्रि से बहुत बुरी दशा है। सम्पूर्ण चेहरे और गर्दन पर शोथ होगया है, महा पीड़ा है, मुख भी नहीं खुलता है, पानी आदि तक नहीं पिया जाता है। यह सुनकर मैंने तुरन्त "अमृतधारा" की जबड़ों पर मालिश आरम्भ करादी। और चमचे के द्वारा कोसे पानी में डालकर पिला दी। दिन भर में ८ बार मालिश कराई, सन्ध्या के समय तक थोड़ा दर्द और शोथ भी कम हुआ, और मुख भी खुलने लग गया। अल्लाह के फज़ल व करम से और आप के फ़ैज़ से तीसरे दिन पूर्णतः आराम हो गया, और सब कष्ट जाता रहा। इसके पश्चात् उनके चचा साहिब की पसली में दर्द हुआ, लग भग ३, ४ घण्टे में बुरी दशा होगई। मैंने तुरन्त तीन बूंद कोसे पानी में डालकर पिलाए और पीड़ा स्थान पर मालिश कराई। मालिश कराते ही पीड़ा जाती रही और आराम होगया, मैं बहुत ज़ोर के साथ पबलिक को प्रेरित करता हूं, कि प्रत्येक साहिब "अमृतधारा" खरीद करके लाभ उठावें और शर्त करता हूं, कि यदि "अमृतधारा" सेवनविधिपत्र के अनुसार सर्व रोगों में प्रभाव न दिखावे और उस रोग को न दूर करे, तो मूल्य मुझ से वापिस कर

लीजिये । इसको रात दिन प्रत्येक रोग पर बरतता हूं । और अल्लाह के फ़ज़ल से कामियाब होता हूं । यदि तत्काल लाभ होता हुआ न दिखलाई दे तो हिम्मत हार कर निराश न होजाया करें । बारम्बार कुछ न कुछ काल तक सेवन करते रहा करें । ईश्वर अवश्य आराम देगा । परन्तु मैं यह भी निवेदन करता हूं, कि बहुतों ने "अमृतधारा" की नकल की है, और "अमृतधारा" की तरह सर्व रोगों के दूर करने में अपनी औषधियों को बड़े लच्छेदार शब्दों में प्रकाशित किया है। परन्तु मैं इन सब का तजुर्बा करचुका हूं । और इस शेर के अनुसार पाया है:—

बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिलका ।
जो चीरा तो इक कतरये खून निकला ॥

लेखकः—हकीम मौलाना मुहम्मद इब्राहीम साहिब अकराबादी मथुरा ॥

देखिए एक हकीम साहिब क्या लिखते हैं:—

अमृतधारा के चमत्कार अर्थात् दो प्लेग केस कि जिनको डाक्टर असाध्य कहचुके थे :—

"आप की "अमृतधारा" यथा नामा तथा गुणः,—दर्द शिर, आधा शीशी अतिश्याय, दर्दनाक, नासाशी, दर्द आमाशय, दर्द जिगर, दर्द पसली, दर्द कटि, जोड़ों का दर्द, दांत दर्द, गले का दर्द, दाद, पित्ती, अग्निदाह, वद्ध, भगन्दर आदि के लिए अत्यन्त हितकर है । विशेषतः बिच्छू के डंक व मोतिया प्लेग के लिए रसायन है ॥

मोतिया प्लेग के दो केश मेरे चिकित्साधीन थे, एक मनुष्य को ज्वर होकर गिल्टी बगल में निकल आई, और उसी ओर के मोंढे अर्थात् कन्धे पर फफोले पड़ गए, और इन फफोलों से एक फफोला जो फूटा तो उसमें तारकोल डामर की तरह काला खून

निकला और दाह व वेदना उत्पन्न हुई, इस दशा में ९ दिन बराबर बीत गए थे। पहिले वह किसी डाक्टर का इलाज करते थे, मैंने ईश्वर के भरोसे पर उन्हें कहा, यदि तुम मुझ से इलाज करवाते हो तो और सब औषधियां आदि बन्द करदो। अब उन्होंने प्रतिज्ञा की, तो मैंने "अमृतधारा" का फाहा भिगोकर रोगी के फफोलों पर रख दिया और गिल्टी पर थोड़ी सी "अमृतधारा" की मालिश की ५ मिण्ट में ही रोगी को आराम प्रतीत हुआ। खुदावन्द के फ़ज़ल से तीसरे दिन वह सम्पूर्ण फफोले, दर्द, दाह, घाव, तप, व गिल्टी आदि सब से मुक्ति होगई। और दूसरे रोगी को भी पिंडली पर फफोले पड़गए थे, ज्वर व गिल्टी रान में निकल आई थी। उसका भी "अमृतधारा" से उपरोक्त विधि से इलाज किया इसके पिण्डली में घाव था, रुधिर काला न था। खुदावन्द करीम के फ़ज़ल से वह भी चार दिन में स्वस्थ होगया। मुझे इन दोनों तजुर्वों से नितान्त हर्ष प्राप्त हुआ। माशा अल्लाह यह खुदा की दाद है। जिसे चाहे बख़शे। यह सब कुछ आप की निर्मित "अमृतधारा" का चमत्कार है। इससे पहिले किसी ने भी ऐसी गुणकारी औषधि निर्म्माण न की थी। मैं आशा करता हूं, कि इस हितकर निर्म्माण का दयालु ईश्वर आपको वाञ्छित बदला देगा। और हमारे देशीय भाई इस औषधि का सन्मान करेंगे। प्रार्थना है कि ईश्वर आपकी औषधि में असंख्य लाभ भर दे"॥

लेखकः—हकीम साईं अब्दुलग़नी सूफ़ी, शहर कराची

दो असाध्य रोगी घण्टों में राजी हुए॥

"मैंने आपकी "अमृतधारा" बहुत जगह सेवन की है। जिस रोग पर वर्ती कृतकार्य हुआ। एक बढ़ई जो काम करता था, और दोपहर के समय उसके हृदय पर अत्यन्त व्याकुलता उत्पन्न हुई। और उसे रक्त की वमन हुई। उसका हृदय और भी डरा वह अपने डेरे पर आगया, और चारपाई पर लेट रहा, उसका हृदय बहुत व्याकुल था। व्याकुलता से वह चारपाई पर टिक न सकता था। मैंने उसे धैर्य्य दिया। और आप की "अमृतधारा" पानी में

मिलाकर एक २ घण्टा के पश्चात् देना आरम्भ किया। कर्तार की दया से अगले दिन वह राजी होकर काम पर चला गया। और वह पूर्णतयः स्वस्थ होगया॥

एक जमीदार हैदर नामक का पुत्र जिसकी आयु ८, १० वर्ष के लगभग थी एक कठिन रोग में ग्रस्त था। अर्थात जो कुछ वह खाता था, उसी क्षण वमन कर देता था। यदि वह एक ग्रास भी किसी वस्तु का खाता तो वमन कर देता। मैंने जाकर देखा कि वह आठ दस दिन से उसी दशा में है, मैंने जाते ही खाण्ड में "अमृतधारा" की ३ विन्दु मिलाकर उसको दे दीं। उसने उसी क्षण वमन करदीं, दूसरी वार उसी क्षण फिर वही दी तो वह भीतर पच गई। फिर दस मिण्ट के पीछे उसे एक ग्रास दलिया दिया, वह उसके भीतर पच गया। फिर एक घण्टा के पश्चात् "अमृतधारा" की ३ बूंदें खाण्ड में मिलाकर दे दीं फिर तो जो कुछ वह खावे पच जावे। फिर घण्टा २ पश्चात् औषधि देनी आरम्भ की, और थोडा २ आहार भी। थोड़े दिनों में वह अच्छा होगया। बहुत से रोगों पर भी आजमाया है। सब पर विजय पाया है। "अमृतधारा" वास्तव में अमृत है। जो कि सब जगह काम आती है॥

लेखकः—सब ओवरसियर ऐबटाबाद॥

कान के परदे का घाव

"जनाब वैद्य साहिब! तसलीम मैंने कई शीशियां "अमृतधारा" की आप से मंगवाकर विविध रोगों पर तजुर्वा किया, यथा शिर दर्द आदि सब रोगों में हितकर पाया। एक विशेष कान के रोग के वास्ते जो उसने जादू का प्रभाव किया। मुझे आश्चर्य है। एक दीन स्त्री अपने घर के जीना पर से उतरती हुई गिरपड़ी और इस आघात से कान के परदे में घाव होगया। पहिले रुधिर उसके पश्चात् पीव १५ दिन आती रही और वह रात दिन मारे दर्द के चिल्लाया करती थी। यह साधारण सा कसबा है। इससे कोई योग्य वैद्य वा डाक्टर नहीं है। और जो वैद्य वा डाक्टर है, वह इस दीन से १०)

कान की चिकित्सा के मांगते थे। एक दिन इस ओर जो मेरा जाना हुआ, तो यह स्त्री मारे दर्द के चिल्ला रही थी। मुझे "अमृतधारा" याद आई, और मैंने नीम के पानी से पिचकारी द्वारा कान साफ़ कराकर "अमृतधारा" ३ विन्दु आठ दस विन्दु अर्क़ पियाज़ में मिलाकर दिन में दोवार डलवाया। और दो रोज तक यह औषधि देने से ईश्वर की कृपा से राज़ी होगई, दीन स्त्री और उसके सम्बन्धी सैंकड़ों आशीशें देते रहे। और वेचारी दीन के दस रुपये वच गए। अब मेरे पास "अमृतधारा" समाप्त होगई है। इस प्रकार ईश्वर के नाम पर मैं आप की इस औषधि को वितरण करता हूं॥

लेखकः—मुहम्मद फ़ाज़िल खां क़स्वा मोर

एक वर्ष की शिर दर्द एक मिण्ट में जाती रही

" निवेदन यह है, कि अर्सा एक वर्ष का हुआ, कि मेरा शिर दर्द करने लगा। कई प्रकार के तैल मर्दन किए गए, परन्तु शिर दर्द वन्द न हुआ। अन्त में ऐसे वेग से पीड़ा आरम्भ हुई, कि आंख नहीं खुलती थी, और मैं अपने पद का कार्य्य करने से असमर्थ्य होगया। और अधिक पीड़ा होने के कारण ज्वर भी आने लगा। जिस तहसील में मैं नियत हूं, उसके तहसीलदार साहिब ने मुझको दो शीशी तैल कहीं से मंगवा दिया। उसकी मालिश से शिर दर्द में कमी हुई, और ज्वर भी जाता रहा, परन्तु जव तैल की मालिश करने छोड़ दिया जाता था, तो फिर दर्द आरम्भ होजाता था। दोनों शीशियां मैंने सेवन करडालीं परन्तु पीड़ा जड़ से न गई। निदान मेरे परम् मित्र सय्यद शरफ़ अलीशाह साहिव ने जो आपके देशोपकारक पत्र के ग्राहक हैं, मुझको एक शीशी 'अमृतधारा' मंगवाकर दी और सेवन विधि पत्र के अनुसार मैंने तैल के साथ जो माथे पर मर्दन किया तो मैं विस्मित हो गया, कि हे परमेश्वर यह दवाई है, या जादू है! शिर दर्द तत्काल जाता रहा। और केवल ५, वा ६ वार मैंने सेवन किया। किन्तु अर्सा ६ मास का हुआ है जैसा कि दर्द होताथा आज तक नहीं हुआ। बाकी सव शीशी दास ने मुफ्त बांट दी। जिस

मनुष्य को जिस रोग पर अनुपान विधि के अनुसार दिया गया, इस औषधि ने जादू का सा कौतुक दिखाया। शीशी के समाप्त होने पर फिर मैंने एक शीशी आप के औषधालय से मंगवाई, यद्यपि अब मुझे कोई कष्ट शिर दर्द का नहीं है, परन्तु वैसे ही स्नानके पश्चात् दो तीन बूंद माथे पर मर्दन करता रहा, जिससे दिनभर दिमाग में हर्ष रहता है॥

एक मास व्यतीत हुआ, कि एक मनुष्य को विच्छू ने डंक मारा, और जिस जगह डंक लगा था, उस जगह से पसीना निकलता रहा, जिस समय मुझे खबर हुई, तो मैंने जाकर देखा और "अमृतधारा" की मालिश करादी, तुरन्त दर्द बन्द होगया, और पसीना रुक गया॥

इस "अमृतधारा" की जो कुछ प्रशंसा की जावे, सब उचित है। मैंने बहुधा विज्ञापन देख कर औषधियां मंगवाईं, परन्तु कोई लाभदायक प्रमाणित न हुई। जिस प्रकार से विज्ञापनिक औषधियों ने सर्व साधारण को साशंक करदिया है, उसी प्रकार यह "अमृतधारा" आशा है कि पब्लिक को बढ़कर लाभ पहुंचावेगी। और वास्तव में यह "अमृतधारा" अमृत ही है॥

लेखक:—देवीदयाल पेशकार
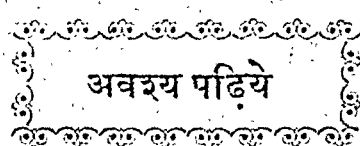
अवश्य पढ़िये

बाबू राम लुभाया साहिब ठेकेदार गुजरांवाला, व सरगोधा से लिखते हैं:—

"श्रीमान् पण्डित ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य जी! नमस्ते। सर्व साधारण की सूचनार्थ निवेदन किया जाता है, कि आज से २ वर्ष पूर्व मैंने आप से "अमृतधारा" ३२ शीशियां विविधि तिथियों पर मंगवाकर मुफ्त तकसीम की, "जो कि मैंने अपने हाथों से निम्न लिखित रोगों पर वर्ती॥

(१) कान दर्द ऐसा कठिन कि भीतर से पीव आती थी, और कान हर समय भीतर से घूं २ की आवाज़ देता था, तारामीरा के तैल में डालकर डाली गई, लाभ हुआ, ख़ाली कान का दर्द जिसमें पीव न बहती हो केवल पीड़ा हो, कई रोगियों को लाभ हुआ ॥

(२) शिर दर्द—के असंख्य रोगियों पर सेवन की गई जिनमें ९० फ़ी सदी का शिर दर्द अच्छा होगया ॥

(३) बिच्छू का डंक—दो तीन वार के लगाने से आराम होगया ॥

(४) भिड़ का डंक—दो वार के लगाने से सर्वथा सोथ उतर गई, और दर्द से आराम आगया, ऐसाही मधु मक्खी के डंक पर ॥

(५) दर्द वाई—दन्तपीड़ा, उदर पीड़ा चाहे किसी कारण से हो, मिश्री पर या केवल पानी में ३ बूंद मिलाकर देने से आराम हुआ ॥

(६) ज्वर—चाहे किसी प्रकार का हो, अर्क़ गावज़ुवान, अर्क़गुलाव, या केवल पानी में दीगई ७०, ८० फ़ी सदी को आराम हुआ ॥

(७) भीतर से पका हुआ गला—चार रोगियों को दी गई, उंगली में लगा कर दो तीन वार गले में लगा दी, चारों को ही लाभ हुआ ॥

(८) नेत्र पीड़ा—आंख से पानी जाना, लग भग ५० मनुष्यों पर वर्ती, आंख के इर्द गिर्द थोड़ी सी लगादी, किसी को दो वार और किसी को ३ वार लगाने से आराम आजाता रहा ॥

(९) मुरकियों से कान का पकजाना—और पीव से दर्द होना—केवल "अमृतधारा" लगाते रहने से चार पांच दिन में सर्वथा आराम होजाता है॥

(१०) रान का लासना—केवल "अमृतधारा" दो वार लगाने से आराम होगया ॥

(११) अपाचन—अर्थात् पेट फूल जावे, और खट्टे डकार आते हों, २ बूंद किसी प्रकार पिलादी गई, २ मिण्ट में आराम होगया ॥

(१२) **सर्प का डंक**—दो रोगियों पर वर्ती गई, एक स्त्री और दूसरा मर्द था, बारम्बार डंक स्थान पर ३ दिन तक लगाई गई, और घृत में मिलाकर पिलाई गई, दोनों अच्छे होगए ॥

(१३) **विशूचिका**—के तीन रोगी अच्छे होगए, केवल मिश्री पर २, २ बूंद डाल कर २, २ घण्टे पीछे देत रहे, और कोई दवाई सेवन नहीं कराई गई ॥

[१४] **एक नव युवक अराई**—हमारे ग्राम में ६ मास से रोग ग्रस्त था, रोग यह था, कि जिस समय कोई वस्तु मुख में डालना चाहे, पानी अथवा कोई खास पदार्थ, २ मिण्ट पश्चात् वमन होकर निकल जाता। दीन का केवल पिञ्जर दिखाई देता था। संयोग से मैं अपने ग्राम में पिता जी को मिलने गया, तो मेरे पिता जी ने उसके विषय में पूछकर कहा, यह बेचारा मरने को तैयार है तुम्हारे पास "अमृतधारा" है; वह इसको दे दो, कदाचित् इसको आराम आजावे, मैंने उसी समय "अमृतधारा" की एक शीशी जेब में से निकालकर दो बूंद मिश्री पर डालकर देदी, फिर दो घण्टे के पश्चात् दी। पूछने से ज्ञात हुआ कि कुछ आराम मालूम देता है। पश्चात् लगातार ४ दिन तक दीगई, और वह पूर्णतया स्वस्थ होगया। अब एक मास से बराबर खेती का काम करता है, और औषधि बनाने तथा देने वाले को आशीशें देता है ॥

[१५] सोज़ाक—दो रोगी सोज़ाक वाले अच्छे हुए, दूध की लस्सी में प्रातः समय दो बूंद डालकर देते रहने से एक को ५ दिन में और दूसरे को १२ दिन में आराम होगया। सोज़ाक दोनो का नया था ॥

[१६] उपदंश—वाले एक रोगी पर वर्ता गया, उसके केवल इन्द्रिय पर फोड़े थे और "अमृतधारा" लगाते रहे, १५ दिन के पश्चात् घाव सूख गए ॥

[१७] अग्नि से—जले को ३ दिन में आराम हुआ ॥

[१८] ववासीर—वाले रोगियों पर वर्ती गई, मस्सों पर लगाने से तीन और पांच रोज़ में आराम हुआ ॥

एक स्त्री को उदर शूल था, अत्यन्त व्याकुल थी, सौंफ के अर्क एक छटांक में उक्त दवाई ५ बूंद दीगई और तीन मात्रा में ही स्वस्थ हुई। ज्वर व ... के लिये भी इसी अनुपान से हितकर प्रमाणित हुई, अर्थात् एक तोला नीम की पत्ती और ६ माशा तुलसीपत्र, काली मिर्च ११ संख्या आध सेर पानी के साथ पीस छान कर ५ बूंद "अमृतधारा" डाल कर पिलाया था तीन बार के देने से दो रोगी अच्छे हुए इसके अतिरिक्त शिर शूल और बिच्छू दंशादि के लिए भी हितकर व रसायन है" ॥

लेखक—तसद्दुक हुसैन अत्तार बलिया ॥

उपदंश के वास्ते रसायन प्रमाणित हुई

"श्रीमान् जी नमस्ते ! बिच्छूदंश पर मलने से दो मिण्ट में आराम होगया, ज्वर में दो तीन बूंदें पानी में डाल कर देने से आराम होगया । घावों को जो उपदंश के कारण से थे, मोम में मिलाकर मरहम की तरह सेवन किया, सचमुच जादू का प्रभाव दिखाया, दुर्भाग्य से शीशी औंधी होगई, औषधि जाती रही, इस लिए इन्हीं रोगों पर आजमाई गई, और हितकर प्रमाणित हुई। मैं आशा करता हूं, कि और रोगों पर दी जाती, तो निसन्देह हितकारक होती" ॥

लेखक—हीरा लाल, कन्हैयालाल उदय पुर ॥

'अमृतधारा' ने रंडवा होने से बचा दिया

"श्री पण्डित जी साहिब नमस्ते ! "अमृतधारा" का एक चमत्कार नीचे लिखता हूं, प्रथम जनवरी को मेरी स्त्री को अकस्मात १० बजे दिन के सर्दी लगकर जाड़ा सा आगया, मैं यह देख कर चला गया कि कदाचित् मामूली जाड़ा आया है उतर जावेगा, जब सन्ध्या को घर पर पहुंचा तो नितान्त खुश्की जिह्वा में प्रतीत

मालूम होने लगा, और १४ वें दिन सम्पूर्ण दुःख दूर होगए, ६ मास बीत चुके हैं, परन्तु उसको सोज़ाक सम्बन्धी किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ, वह बेचारा सच्चे मन से आप की और "अमृतधारा" की बहुत २ प्रशंसा करता है। ईश्वर दिन दूनी आप के हाथ में आरोग्यता और आयु में वृद्धी और "अमृतधारा" में प्रभाव प्रदान करे और इस उपकार (जो आपने पब्लिक के ऊपर किया है) के बदले में ईश्वर आप का कल्याण करे"॥

लेखक—मौलाना हकीम मुहम्मद इब्राहीम अदम
अकबराबादी मथुरा॥

तीन ग्रामों के मनुष्य केवल "अमृतधारा" से इलाज करवाते हैं॥

"मैंने एक शीशी "अमृतधारा" रघुनानाथ सहाय शर्म्मा साहिब वैद्य ग्राहक देशोपकारक धनपुर निवासी से खरीद की, और प्रतिश्याय उदर शूल, शिरशूल, अतिसार, आमतिसार, पार्श्वशूल, दन्त शूल आदि रोगों पर वर्ती, लाभ हुआ। मैं पटवारी पद पर नियत हूं, तीन गांव मेरे सपुर्द हैं, आपकी "अमृतधारा" ने ऐसा जादू का सा काम किया है, कि मुझ से प्रशंसा नहीं हो सकती, तीन ग्रामों के मनुष्य मेरे पास आते हैं और हर रोग में सेवन करते हैं, इस लिए बहुत शीघ्र खर्च होजाती है"॥

लेखक—भगवान दास पटवारी ग्राहक नं० ११३३॥

खुनाक तुरन्त दूर

"मित्रवर जनाब पण्डित साहिब! आपकी "अमृतधारा" के असंख्य लाभ हैं, उनमें से एक तजुर्बा प्राप्त हुआ है, कि दो स्त्रियों को खुनाक रोग हुआ और "अमृतधारा" के सेवन से ही दोनों को लाभ हुआ, भीतर बाहर एक २ फाहा लगाया गया था, तीन दिन में ईश्वर की कृपा से दोनों को आराम होगया। इसी

अमृतधारा बढ़िया 'पेन क्योर' है ॥

"यद्यपि "अमृतधारा" प्रत्येक रोग का प्रबल शत्रु है, किसी रोग का इससे बचाव नहीं। पर सब प्रकार की पीड़ाओं में चाहे आन्तरिक हों व बाह्यक, इस का सेवन नितान्त हितकर है कोई भी पीड़ा हो। व्याकुलता से तड़फ रहा हो, लगाते ही आराम होता है। चाहे गले में हो, अथवा ओष्ट पर, चोट का हो, वा वायु का। विषैले जीवों में से किसी ने डस लिया हो, ५ मिण्ट से अधिक आराम को नहीं लगते। गर्दन में वाय, नस पर पीड़ा, गले की खराश, दाढ़ दर्द, शिरदर्द, पेट दर्द, पसली और कान की पीड़ा में रसायन पाचुका हूं, और प्रत्येक पीड़ा में भी काम आती है, क्या मजाल कि देर लगे। मैं पुनः लिखता हूं, कि दर्दों में इस औषधि से बढ़कर आज तक कदाचितही कोई दूसरी औषधि बनी हो। दो परस्पर विरोधी दशाओं में प्रभाव दिखलाकर अचम्भे में डाल देती है। यथा दस्त आने या कोष्ट बद्धता दोनों में रसायन है। किन्तु न जाने किस वास्ते अन्य लोग ऐसे समय में भी जब कि प्लेग का कोप है, कम से कम एक शीशी मंगा कर प्राण रक्षा के लिए अपने पास नहीं रखते। परमात्मा इसमें असंख्य लाभ उत्पन्न करे" ॥

लेखकः—चन्द्रप्रकाश साहनपुर ॥

सोज़ाक और कुरह १४ दिन में दूर ॥

एक मनुष्य किशनलाल चित्रकार जयपुरी जो यहां मथुरा में ५ वर्ष से रहता है, इसको ढाई वर्ष से सोज़क होगया था, और कुरह भी होगया था। इस लिए बहुत ही व्याकुल था, और यहां के सम्पूर्ण वैद्यों और हकीमों से इलाज करा चुका था, पेशाब के समय अपनी जाघें पीटा करता था। पीव हर समय बहती रहती थी। बहुत रुपये बरबाद कर चुका था, मेरे पास आया, मैंने "अमृतधारा" सेवन विधि पत्र के अनुसार सेवन कराई, हुकम खुदा से दूसरे दिन उसको लाभ

[१९] पित्त—जब ग्रीष्म ऋतु में पित्त ने बहुत सताया, तो 'अमृतधारा' की मालिश करने से तुरन्त आराम होगया । मैंने कई वार शरीर पर भी लगाया है ॥

[२०] जुकाम—वार वार सूंघने और नसवार लेने से आराम होजाता है, केवल दो मनुष्यों के जुकाम को लाभ न हुआ, शेष सब मनुष्यों को लाभ हुआ

[२१] दाढ़ दर्द-या दांतो को पानी लगना, जिसको सेवन कराई लाभ हुआ ॥

[२२] खांसी वाले—कई रोगियों को दीगई, एक के अतिरिक्त शेष सब को लाभ हुआ ॥

[२३] दस्त व पेचिश-वालों को केवल एक वार के देने से लाभ हुआ ॥

[२४] वमन वालों—को किसी को दूसरी और किसी को तीसरी वार आराम होगया ॥

[२५] फोड़ा फुन्सी—तिलों का तेल गरम करके दो वूंद "अमृतधारा" डालकर लगाते रहने से आराम होगया ॥

[२६] गले पड़ना—भीतर और वाहर दो वार के लगाने से आराम होगया ॥

"अमृतधारा" की शीशी क्या है; मानो जादू की शीशी है । जब मैंने पहले एक शीशी आप से मंगवाई थी, और वहुत हितकर पाई थी तो मैंने इसका नाम जादू की शीशी रक्खा । और तब से न कोई अन्य दवाई सेवन की, और नाहीं आज तक ईश्वर महाराज ने डाक्टर वा हकीम की आवश्यकता पड़ने दी। जब घर में वा अपने नाते या किसी अन्य को भी किसी प्रकार की व्याधि होती है तो तुरन्त "अमृतधारा" जेब से निकाल कर एक दो बूंद सेवन करा देता हूं, और आनन्द यह कि जो अनुपान आपने साथ की पुस्तक में लिखा है वहुत ही कम वर्तता हूं । मेरी सम्मति में कोई घर इस रक्षाकारी से खाली नहीं रहना चाहिये । मैं प्रत्येक मित्र को इसके खरीदने की प्रेरणा करता रहता हूं" ॥

होरही थी, और जाड़ा वढ़ता जाता था, और प्यास भी थी, और पावों में नितान्त वेदना थी, पूछने पर ज्ञात हुआ कि सर्दी लगी है, जिसको सर्वसाधारण शीत में आना कहते हैं, उसी समय शीशी निकाल कर ५ वूंद मिश्री पर डालकर उष्ण जल से देदिया, और २० मिण्ट के पश्चात् उसी प्रकार फिर दे दिया, और दोनों पावों पर दस २ वूंद "अमृतधारा" की मालिश की, ईश्वर की कृपा से पावों और सर्व शरीर को स्वेद आया। मालूम करने से ज्ञात हुआ कि पीड़ा कुछ भी नहीं है। तृषा और रुक्षता भी कम परन्तु कुछ मूर्छा है, जैसे मनुष्य नशे में पड़ा रहता है। प्रातःकाल शीत का योग रघुनाथ सहाय धनपुर का जो देशोपकारक ४ अप्रैल सन् १९०६ पृष्ठ११ पर दर्ज है वनाकर "अमृतधारा" ५ वूंद मिलाकर पिला दिया, और पावों पर भी मालिश की, रोग लग भग अर्द्ध के जाता रहा। संयोग की वात देखिये कि दूसरी रात्रि को १२ वजे के लग भग गले में कफ़ रोध होकर वोला न गया, और छाती में पीड़ा होने लगी, वोली कि मेरा दम निकला अव कुछ कसर नहीं। मैंने तुरन्त ईश्वर का नाम लेकर १ रत्ती नवाखार असली हाथ का निकला हुआ और एक माशा मिश्री और ७ वूंद "अमृतधारा" देकर ऊपर से २ घूंट उष्ण जल पिला दिया, एक मिण्ट पीछे कफ़ गले से उतर गया, अच्छी तरह वोलने लगी, छाती की पीड़ा भी जाती रही, कफ़ निकलने लगा, सारे दिन निकलता रहा, तीसरी सायं को अपने आप वन्द होगया। पीड़ा, रुक्षता, शीतादि सव जाता रहा। मोठ की दाल का पानी दो चार वूंद पिया और प्रातः समय पूर्णतयः आराम होगया, अव तक दोनों समय "अमृतधारा" दीजाती है"॥

और दो वूंद रोगावस्था में ललाट पर मली जाती थी, अव किञ्चित निर्वलता शेष रहगई है, आहार दालमोठ और फुलका दिया जाता है। एक और आश्चर्य होता था कि जिस समय औषधि खिलाई जाती थी एक दो दस्त पानी की तरह दुर्गन्धित अवश्य होते थे, कि जिनसे सर्व दोष निकल गया। श्रीमान् जी मुझे आनन्द आता है, जब कि हमारे ग्राम के वालकों के मुख पर हर समय हर रोग में "अमृतधारा" का नाम सुना जाता है, और मुझे सहसा हंसी आती है जब कि स्त्रियां कहती हैं "मंगा दो "अमृतधारा"॥

लेखकः—करोड़ी सिंह मुकाम ब्राह्मण वाला

एक मिण्ट में मूर्छा जाती रही ॥

"जनाव मन तसलीम ! ईश्वर की विचित्र लीला है, और यह वात आप
हिस्से में आई है । "अमृतधारा" प्रत्येक रोग पर चलती है । मैंने कई
शीशियां आपके कारखाने से मंगवाई हैं, सुनते ही लोग दौड़े और ले
मेरा लड़का सैयद मुहम्मद रज़ा चार मास तक ज्वर व सन्धिवात में
रहा, सार्टीफ़िकेट डाक्टरी द्वारा छावनी मुरार से घर आया "अमृतधारा" से
कर ईश्वर की कृपा से निरोग्यता पाई । इन्हीं दिनों मेरी स्त्री को ज्वर हो
और एक दिन ऐसी मुर्छा हुई कि मृत की न्याई होगई । "अमृतधारा" सुं
और खिलाने से १ मिण्ट में आराम होगया । मेरे परिवार और इष्ट
"अमृतधारा" का सेवन वरावर प्रत्येक रोग में करते हैं, ईश्वर स्वास्थ्य देता है
मैं सर्व रोगों का इलाज इसी से करता हूं, और दूसरी औषधि पास नहीं आने दे
जनाव मौलवी सैयद मुहम्मदनवाज़ साहिव पेश्कार तहसील नरोल
नासूर दाढ़ में चिरकाल से था, "अमृतधारा" से ही आराम हुआ, प
वरावर सेवन करते रहना चाहिये रोग निवृत्ति तक, और मैंने कुछ प्लेग
मनुष्यों का कानपुर में इलाज किया, और सव अच्छे होगए । नरोलखास में
मुहम्मद रंगरेज़ प्लेग रोग में ग्रस्त था और ग्राम से वाहर कर दिया गया था, अ
फिर गई थीं, गिल्टी आध पाव के लग भग रान में निकल आई थी । "अमृतधा
अद्रख के रस में मिलाकर कपड़े में डालकर गिल्टी पर रक्खी व पिलाई
और सेवन विधि पत्र अनुसार नासिका में डाली गई और एक घण्टा में स्
हुआ । गिल्टी ६ घण्टे में जाती रही । अधिक प्रशंसा नहीं करसकता, ईश्वर
प्रार्थना है कि इसमें और प्रभाव प्रदान करे । आपकी नसवार भी अनुपम वस्तु
तुरन्त सन्निपात और मूर्छित रोगी चैतन्य होता है" ॥

लेखक—सय्यद गुलाम मुस्तफ़ा हुसैन अहलमद माल नरोल

आश्चर्यजनक घटना

प्रतिष्ठा के योग्य श्रीमान् पण्डित जी ! नमस्ते। "अमृतधारा" चिरकाल तक मेरे तजुर्वे में आती रही, जिसका वृतान्त निम्न लिखित है। शिरशूल में समय पर वहुत लाभ पहुंचाती है, लगाते ही शिरदर्द जाता रहता है, किन्तु पश्चात् फिर होजाता है, जड़ से नहीं चला जाता, (परन्तु यह कभी दुःसाध्य वेदना में हुआ, होगा)॥

(२) जूड़ी ज्वर—इस रोग की शत्रु है, दो तीन दिवस मेंही जड़ मूल से जाती रहती है, पानी के साथ दो वूंद देनी चाहिये ॥

(३) सब प्रकार के ज्वर—सब प्रकार के ज्वरों को सप्ताह के भीतर जड़ से उखाड़ फैंकती है, अर्क गावजुवान व गिलोय के साथ दो वूंद ॥

[४] जुकाम व नज़ला——वहुत शीघ्र दूर होता है, पानी के साथ दो वूंद ॥

(५) कफ़ज कास—पीपल का चूर्ण व काकड़ासिंगी के साथ देने से शीघ्रही आराम होजाता है, २ या ३ वूंद ॥

(६) खांसी शुष्क——लुआव ईसवगोल, या विहीदाना, या अलसी के क्वाथ मिश्री युक्त के साथ देने से ऐसा लाभ करती है कि अवर्णनीय है। गुलवनफ़शा के क्वाथ या फांट के साथ भी वहुत लाभ पहुंचता है । मात्रा २ वूंद ॥

(७) अतिसार रक्तातिसार—दोनों रोगों में अत्यन्त लाभ पहुंचता है मिश्री व अर्क सौंफ़ के साथ। मात्रा एक वा २ वूंद ॥

(८) सोज़ाक—इसको कुछ दिन सेवन करने से उखाड़ देती है पानी या अर्क वा गुड़हल या शीरा कोंपल वरगद के साथ ॥

(९) दाद खाज——इसमें योंही लगाने से २, ३ दिन में आराम आजा ता है ॥

(१०) दन्त पीड़ा—में तो केवल लगाने ही की देर है । लगाया और दर्द छू मन्त्र हुआ । रुई के फ़ाहे से ज़रा सा लगाना चाहिये ॥

(११) वमन या अतिसार—इसमें मात्रा देने की देर है, बस फिर क्या है आराम। मिश्री के साथ वा अर्क पोदीना के साथ वा अर्क सौंफ के साथ केवल दो बूंद ॥

(१२) सन्धिवात और शोथ—सरसों के तैल में दो बूंद या राई के आधपाव तैल में रूमीमस्तगी ६ मासा मिलाकर "अमृतधारा" ३ बूंद डालकर मालिश करने से दर्द शोथादि सब दूर होजाते हैं ॥

(१३) सन्निपात—माथे पर मलने से और क्वाथ मोथा, सुगन्धवाला, रक्त, चन्दन, मुनक्का, के साथ देने से विशेष कर चितभ्रम सन्निपात की मूर्छा दो घण्टे में दूर होजाती है"॥

विचित्र घटना और अमृतधारा का आश्चर्य प्रभाव

"मेरे भाई को ज्वर आया और कुपथ्य से सन्निपात होगया, जिह्वा बाहर निकालने लगा, नेत्र लाल होगए, और आन तान बकने लगा, किसी को पहचानता नहीं था। तीन मनुष्य उसको पकड़ कर दबाते और ह सब को फेंक देता। हाथ और उंगलियां ऐंठ गईं, नेत्र धंस गए, जीवन आशा जाती रही। सहसा मुझे "अमृतधारा" का ध्यान आया मैंने झट पट ललाट पर मलना आरम्भ किया, १० मिण्ट के पश्चात् कुछ कमी देखी, मैंने फिर दो एक बार और मल दिया बस फिर क्या था, दो घण्टे में सन्निपात जाता रहा। तत्पश्चात् सागूदाना दूध मिश्रित पकवाकर दिया, और पूर्ण स्वस्थ होगया" ॥

लेखक—ठाकुर बलदेव सहा य, पिंडरा

लाला मोहनलाल साहिब सरिश्तेदार डवीज़नल जज्ज लाहौर

लिखते हैं:—"श्रीमान् पण्डित जी! नमस्ते। पूरा तजुर्बा करने के पश्चात् मैं दिल से मानता हूं कि "अमृतधारा" शिरशूल, ज्वर, विशूचिका, उदरशूल, अजीर्ण, घाव, नासूर आदि में अत्यन्त हितकर है। मेरे घर के सब मनुष्य

आप की इस महौषधि को हर समय अपनी जेब में रखते हैं । मैंने अपनी आयु में ऐसी औषधि नहीं देखी है। और मैं ख्याल नहीं करता कि कोई दवाई और भी दुनिया में ऐसी हो, जो इतना शीघ्र और इतने अधिक रोगों को लाभ दे सके। "अमृतधारा" जादूवत प्रभाव करती है, मेरा दृढ़ विश्वास है, कि आप की औषधियां उच्च प्रभाव रखने वाली हैं" ॥

पांच वर्ष का अंधराता एक दिन में कैसे दूर हुआ

"दास को ५ वर्ष से रतौंध था, परन्तु श्रावण या भादों मास में हुआ करता था, एक दिन का वृत्तान्त है, कि संयोग से "अमृतधारा" की उंगली आंख में लग गई, सो आंख में से कुछ थोड़ा सा पानी निकला, और उसी दिन से अन्धराता जाता रहा" ॥

लेखक—देशोपकारक का एक ग्राहक ॥

मेरी जान बचा दी

"मैंने अपने मित्र के द्वारा एक शीशी "अमृतधारा" की मंगवाई थी, और मैंने उसे दर्द सिर, दांत दर्द पर आजमाई। रामबाण का काम किया। सच मुच प्रशंसा के योग्य है। अन्य बहुत से रोगों पर आज़माई, अत्यन्त गुण किया, समझो तो मेरे प्राण ही बचा दिए, क्योंकि लाहौर से सवार होकर कोयटा को आरहा था, ज्यों ही गाड़ी खानपुर पहुंची तो मुझे हैज़ा ने आन घेरा, दो स्टेशन तक तो मैं बहुतही दुःखी रहा, फिर मुझे याद आया कि मेरे पास तो दवाई भी है सेवन तो करें, परन्तु अनोपान नहीं था, कूजे की मिश्री थी थोड़ी देर पश्चात् दो २ बूंद डालकर खाकर ऊपर से थोड़ा २ पानी पीने लगा, और सक्खर तक जाते२सर्वथा आराम होगया। मेरी जिह्वा अधिक प्रशंसा नहीं करसकती । मैं समझता हूं कि इसकी एक २ शीशी घर के प्रत्येक मनुष्य के पास होनी चाहिए" ॥

लेखक—मिस्त्री किशन सिंह फेटा

प्राण बचाए

"श्रीमान् पण्डित जी नमस्ते! २ अगस्त १९०६ ई० का वृत्तान्त है, कि रात्रि के ६ बजे ३ मुसाफ़िर जींद की ओर से पैदल रेल की पटरी २ चले आते थे, जिस समय वह सिगनल के समीप पहुंचे तो उनमें से एक को सर्प ने डस लिया, जिससे स्टेशन तक पहुंचते २ दीन का जी मतलाने लगा, और दाह होने लगी, यहां तक कि पांव सूज गया, मैं और स्टेशन मास्टर साहिब और गुड्स क्लर्क साहिब बातें कर रहे थे, कि उन्हों ने आकर हाल सुनाया, जिससे मुझे तुरन्त ध्यान आगया, और घर जाकर उस्तुरा और "अमृतधारा" की शीशी उठा लाया। बस फिर क्या था, लगाते ही शोथ का बढ़ना बन्द होगया, और घृत में मिलाकर देने से जी ठिकाने आगया, इस सब प्रभाव को देखकर नितान्त हर्ष और आश्चर्य प्राप्त हुआ, स्टेशन का सम्पूर्ण अमला विस्मित रह गया, और सब वाह २ करने लगे। और आप की अत्यन्त प्रशंसा होने लगी। मैंने, इस दवाई को स्टेशनमास्टर साहिब की लड़की के कान में जिसको दर्द कोई २ मास से था, डाक्टरी इलाज भी कराया था, परन्तु आराम न हुआ था, यह दवाई सेवन कराई, केवल तीन चार तैल में मिलाकर डालने से आज ६ दिन होगए हैं, दर्द सर्वथा बन्द होगया है, और स्वस्थ होगई है। मैंने कई जगह वर्ती है, इस दवाई को प्रत्येक घर में रखने के लिए मेरी सब से प्रार्थना है, ताकि हकीम की आवश्यकता न रहे" ॥

लेखक—बालकराम असिस्टंट स्टेशनमास्टर टोहाना ॥

१५० रुपया बचा दिया

"नमस्ते! धन्यवाद पूर्वक "अमृतधारा" के तजुर्बे के पश्चात् प्रशंसा पत्र प्रेषित करता हूं। सचमुच "अमृतधारा" ही है। मैं प्रत्येक मनुष्य से इसके मोल

लेने के वास्ते प्रार्थना करता हूं (१) मुझको किञ्चित् वर्षों से सर्दी लगकर जुकाम खांसी होगई। जिस से वहुत ही कष्ट होता था। डाक्टर लोग बतलाते थे, कि ताल में घाव होगए हैं, और ख़राश है, छाती तक वेदना भी घाव के तुल्य ही होती थी, इस रोग का इलाज करने के लिए मैंने आपको विशेष रूप से बुलाने की इच्छा की थी, और मेरे पत्र के उत्तर में आपने १५०) लेकर इलाज करने को लिखा था, परन्तु मैंने आपके यहां से "अमृतधारा" मंगाकर जो सेवन करनी आरम्भ की, तो आपका उत्तर आने तक मुझको बहुत कुछ आराम होगया, जिसके कारण आप का बुलाना बन्द होगया, मैं आपको धन्यवाद देता हूं आप ने यह अद्भुत प्रभाव-शाली औषधि निर्म्माण की है, जिससे मुझको न्यून से न्यून १५०) का व्यय सहन करने से बचत होगई, और आराम होगया है॥

(२) एक पार्श्वशूल—रोग ग्रस्त पर आज़माया गया, तत्काल प्रभाव दिखलाया॥

(३) फोड़ा फुन्सी—पर लगाने से बहुत शीघ्र प्रभाव दिखलाती है। सारांश यह है कि बहुत बढ़िया औषधि है। इसके मोल लेने में शंका न करनी चाहिये। मैं प्रत्येक घर में इसका होना अच्छा समझता हूं" ॥

लेखकः—बाबू शम्भूनाथ सबओवरसियर नहर राजपुर

अमृतधारा के ३ चमत्कार

(१) एक स्त्री को बिच्छू ने काटा, वही बिच्छू मारकर पीस कर उसके डंक पर लगा दिया, दुर्भाग्य वश २० मिण्ट पश्चात् ख़बर आई कि उसके भ्राता की मृत्यु होगई है। उसके पेके उस स्थान से ३ कोसकी दूरी पर थे, मार्ग रेत का, समय दुपहर का था, वह स्त्री अपने पेके को रवाना हुई, वहां जाकर कष्ट साध्य दशा होगई अर्थात जिह्वा सूज गई, बहरी व अन्धी होगई, मवाद किसी मार्ग से भी नहीं निकलता था, अर्थात् नाहीं नाक, नाहीं पाखाना, और न पसीना आता था।

वहां से डोली में चढ़ा, ससुराल में लाए। गुलाब और केवड़ा देते रहे, परन्तु कुछ लाभ न हुआ, ५ दिन तक यही दशा रही, कि श्वास का गुज़र हुआ, मैंने गुलाब, केवड़े में "अमृतधारा" ८-८ बूंद करके दो बार पिलादी, रात ही ३ दस्त आये जिह्वा का शोथ भी कम है, और निकट के मनुष्य को पहिचान लेती है, पसीना भी खूब आता है। आशा है कि शीघ्र आराम होगा। (२) एक कन्या ८ मास की थी और १५ दिन से **अतिसार, वमन, मरोड़, और ज्वर था।** "अमृतधारा" एक बूंद वनफ़शा और कद्दूगिरी को पीस कर एक चमचा पानी में डालकर दिया गया तुरन्त आराम होगया, सब प्रकार से स्वस्थ और सुकुशल है॥

(३) एक मनुष्य को ज्वर आता था, वनफ़शा और कद्दू की मिंगी के क्वाथ में दो विंदु "अमृतधारा" डालकर देने से वमन होगई, परन्तु क्वाथ नहीं निकला ८ तौला के लग भग खालिश कफ़ निकला, और स्वास्थ्य प्राप्त होगया। आनन्द यह कि खांसी सर्वथा नहीं थी, और कफ़ छाती में प्रतीत नहीं होताथा॥

४-भिड़ वृश्चिक-आदि के डंक पर सहस्रों बार लगाया है, जिससे ना तो शोथ हुआ, नाहीं पीड़ा हुई, पूर्णतयः आराम हुआ, और अन्य आन्तरिक वाह्यक पीड़ाओं पर भी अक्सीर प्रमाणित हुई है॥

ऐसी औषधि प्रत्येक घर में और विशेष कर प्रत्येक मनुष्य को यात्रा में अपने पास रखनी चाहिये, अत्यन्त बढ़िया औषधि है"॥

लेखक-दीनानाथ नायब मुदर्रिस गढ़दीवाल॥

फूटी आंख व अमृतधारा का चमत्कार

श्री पण्डित साहिब! आपके पारसल नं० १०० से दो शीशियां "अमृतधारा" १६ मार्च को प्राप्त हुईं, उसी दिन कारखाना में मेरे एक मित्र की आंख में मैशीन पर काम करते हुए लोहे का टुकड़ा आंख की पुतली में गड़ गया, और उसी समय हस्पताल में जाकर टुकड़ा निकलवाया गया, परन्तु आंख में पीड़ा बहुत हुई, और घाव होगया था, डाक्टर की औषधि दो दिन तक डाली गई, परन्तु

लाभ कुछ न अनुभव हुआ, उल्टा दृष्टि शक्ति कम होगई थी, और ललाई उसी प्रकार से थी ॥

"अमृतधारा" प्रत्येक रोग में गुणकारी है यह पहिले मैं कहचुका था, परसों रोगी मेरे पास आया, और कहा देखें तुम्हारी "अमृतधारा" में क्या चमत्कार है, मैंने एक शीशी खोलकर थोड़ी सी "अमृतधारा" दी और कहा कि सोते समय आंख के नीचे थोड़ी सी लगा देना इसी की भाप से आंख से पानी वह कर निकलेगा, और पीड़ा कम होजायगी उसने इसी प्रकार से दो दिन तक किया, पहिली ही रात को आराम होगया, तीन चार दिन का जागा हुआ भली भान्ति सोगया, अव उसकी आंख पूर्णतया अच्छी होगई है, लाली आदि जाती रही है, आप के निर्म्माण पर बहुत चकित हुआ, और हार्दिक अशीसें देता रहा" ॥

लेखकः—मिरज़ा गुफ्फ़ारवेग बम्बई फरगूसन रोड ॥

क्षईरोग
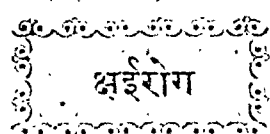
"जनाव मन तसलीम ! विदित हो कि मेरे पिता मुन्शी कमरुद्दीन साहिब मास्टर टेलर ने जो आप से ३ शीशी "अमृतधारा" मंगवाई थी, वह अक्सीर का हुक्म रखती है । क्योंकि मेरे पिता को कई साल से क्षई होगई थी, और रोग दरजा दो पर पहुंच गया था । कई एक डाक्टरों और हकीमों का इलाज किया गया, परन्तु कुछ लाभ न हुआ, जिस समय आप की "अमृतधारा" गिलोय के अर्क में डालकर पिलाई गई, तुरन्त ज्वर जाता रहा, और आरोग्यता प्राप्त होगई । अब केवल खांसी शेष रहगई है । खांसी के लिये अर्क काजुबान में "अमृतधारा" डालकर पिलाई जाती है । खांसी को लाभ देती है" ॥

लेखकः—मुहम्मद यासीन, छावनी म्हो ॥

बावले गीदड़ का विष-विचित्र घटना

"श्री पण्डित जी ! आप की "अमृतधारा" के गुण कहां तक वर्णन क
"अमृतधारा" यथा नाम तथा गुणा मानो ईश्वर ने आप के द्वारा सच्चा अ
भेजा है। ताकि हम लोग लाभ उठावें। यों तो बहुत से रोगों में सेवन कि
तत्काल लाभ प्राप्त हुआ, विशेषतः गिल्लड़ और कण्ठमाला में अमृत के समान
विशूचिकादि में अक्सीर का प्रभाव रखती है॥

"**आमातिसार**—के लिए भी आज़माया, बहुत ठीक उतरी, पर
आश्चर्य की वात यह है कि जेष्ठ मास में मेरी माता को बावले गीदड़ ने का
और हम लोग उनके जीने से सर्वथा निराश होगए, क्योंकि इसी प्रकार बाव
लोमड़ी के विष से मेरे पिता की मृत्यु हुई थी। इसी कारण से हम लोग
जानते थे, कि ये भी असाध्य है, परन्तु आपकी "अमृतधारा" दो शी
इस समय मेरे घर में विद्यमान थीं। सेवनविधि देखी और कुछ आशा हुई, मा
जी को उसका सेवन कराने लगा। और घाव पर लेप करता रहा। अब ई
की कृपा से घाव सर्वथा अच्छा है, माता जी अच्छी हैं, अब कुछ भय की बा
नहीं है, आप की बनाई हुई औषधि का चमत्कार लिखता हूं, ताकि आप
आनन्दित हों, पबलिक को भी पता लगे और "अमृतधारा" से लोग ला
उठाते रहें"॥

लेखक—मोलवी अबूउमर मुहम्मद अब्दुल रहीम सनगां

अमृतधारा से मुरदे भी जीवत

"आपकी "अमृतधारा" सचमुच यथा नाम तथा गुणः है। क्योंकि एक दि
मेरे भानजे को हैज़ा हुआ, परन्तु सरदी समझी गई, और ठंडा पानी पिला दि
गया बालक तुरन्तही ऐंठ गया और ठण्डा पड़गया, मैं उपस्थित न था, "अमृतधारा"

की शीशी मैंने वहिन की दी थी, उसे ध्यान आगया, अनुमान से उष्ण जल के साथ पिलाई गई, सब मुरदा समझ कर रोने लगेथे, परन्तु दो ही मिण्ट में लड़का चैतन्य होगया, उसे होश में देख कर सबको ढारस हुआ, औषधि हो तो ऐसी हो। जिस को अब भी "अमृतधारा" में सन्देह है, तो उसके दुर्भाग्य, आप का धन्यवाद जिह्वा द्वारा नहीं होसकता, निःसन्देह "अमृतधारा" से मुरदे भी जीवित होते हैं" ॥

लेखक—चन्द्रप्रकाश कमतर साहनपुर ॥

पांच मिण्ट के भीतर समाप्त था

"निवेदन है कि मैंने बहुत सी औषधियें सेवन कीं, परन्तु आपकी बनाई हुई "अमृतधारा" सच मुच जादू का प्रभाव रखती है ॥

प्रतिश्याय ज्वरादि—की तो पक्की शत्रु है ॥

बंधे जाते को छुड़ा दिया

"एक ठेकेदार जो सकतला गांव में लाल मुहम्मद नामक है, उसका पुत्र जिसकी आयु लग भग दो साल की होगी, उसको खेलते २ एक दम न जाने क्या होगया। मैं उस समय उपस्थित था। उसकी आंखें निकल कर डरावना रूप होगया था। यदि मैं उस समय "अमृतधारा" एक विन्दु पानी में डालकर न देता तो पांच मिनट में समाप्त था ॥

एक मास का रोगी दो विन्दु से चलने लगा

एक धोबी जिसका एक मास से कण्ठ सूज गया था, और घर में पड़ा रहता था, यहां तक कि चार दिन से तो पानी तक भी नहीं पी सकता था। मेरे भाई

साहिब बाबू नानकचन्द वर्म्मा सबओवरसियर उसी गांव की ओर दौरे पर गये थे, उन्हों ने धोबी की तरफ नौकर भेजा कि जाओ अमुक धोबी से जो वस्त्र धुलने दिए हुए हैं लाओ! वहां से ज्ञात हुआ कि वह धोबी तो १ मास से कठिन रोग ग्रस्त है, आपने धोबी के यहां जाकर मिठे तेल में दो बिन्दु "अमृतधारा" मिलाकर उसके गले पर लगाई और "अमृतधारा" कुछ मीठे तैल में मिलाकर दे आए, दूसरे दिन धोबी चलने फिरने लगा, और भोजनादि भली प्रकार करने लगा, उसके पांच दिन पीछे धोबी ने वस्त्र भेज दिए॥

जब ऐसे कठिन रोगों पर "अमृतधारा" ऐसा चमत्कार दिखाती है, तो छोटे छोटे रोग इस के सन्मुख कोई वस्तु नहीं"॥

लेखक—कर्मचन्द वर्म्मा रोड इन्सपैक्टर॥

पन्द्रह रोगों पर विचित्र प्रभाव

श्रीमान् पूज्यवर देशोपकारी पं० ठाकुरदत्त साहिब शर्म्मा वैद्य, नमस्ते! दास ने आप से तीन शीशियां "अमृतधारा" की मंगवाकर सर्व साधारण में मुफ्त तकसीम कीं, जिन २ रोगों पर देता रहा, तत्काल गुण प्रगट होता रहा जिनका वर्णन निम्न लिखित है:—

(१) एक रोगी जो कि दो तीन मास से आमातिसार में ग्रस्त था। और बहुत ही निर्बल होगया था, "अमृतधारा" की तीन चार मात्रा अनार दाना के पानी के साथ सेवन कराने से स्वस्थ होगया॥

(२) एक छोटा बालक दो दिन से निरन्तर वमन करता था। आधी बूंद "अमृतधारा" की दो तीन बार देने से सर्वथा निरोग्य होगया॥

(३) बीस पचीस दिन का उत्पन्न हुआ बालक और उसकी खांसी केवल दो मात्राओं से जाती रही॥

(४) तजरुबा से प्रमाणित हुआ है, कि "अमृतधारा" ने कास्टिक विषों को दूर करने के लिये तत्काल प्रभाव दिखाया है। केवल पानी में ही दो तीन बूंद डालकर देने से विष दूर होता रहा ॥

(५) ग्रावा का मचकोड़ थोड़ी सी "अमृतधारा" एक दो वार मलने से आराम होजाता रहा ॥

(६) दाद—वारम्वार लगाने से तुरन्त दूर होजाता है ॥

(७) किसी रोग या अन्य कारणों से हृदय घबरा रहा हो, व्याकुलता हो, या अचानक हृदय में घबराहट होकर हृदय बेचैन होगया हो, तो "अमृतधारा" दो बूंद खालिस पानी या उचित अर्क में डालकर देने से तुरन्त लाभ होजाता है। और हृदय शान्त होजाता है ॥

(८) आंखों की लाली—पीड़ा, मैल, कुचैल, को थोड़ी सी देर में ही लाभ होता है ॥

(९) दाढ़ की पीड़ा, दंत पीड़ा, खोखली दाढ़ आदि में थोड़ी सी लगने से पीड़ा दूर होती है ॥

(१०) शिरः शूल की निवृत्ति के लिये बहुत ही शीघ्र-गुणकारी औषधि है। थोड़ी सी माथे पर लगाने से पीड़ा को उसी क्षण दूर कर देती है ॥

(११) दास के बायें अण्डकोशों के नीचे पहिले दिन एक छोटा धप्पड़ प्रगट हुआ, जिसकी मैंने कुछ परवाह न की, निदान वह तीसरे दिन बढ़कर गिल्टी की न्याई एक बड़े बेर की तुल्य होगया, और दर्द व जलन पैदा होने लगी, गिल्टी मर्मस्थान में थी, इस लिये कुछ चिन्ता सी होगई, औषधि का विचार उत्पन्न हुआ, मैंने "अमृतधारा" उपरोक्त गिल्टी पर लगानी आरम्भ की, केवल दो तीन बार लगाने से गिल्टी नरम होकर फूट गई, और सम्पूर्ण विकार निकल कर पीड़ा और दाह को शान्ति हुई, गिल्टी के फटने से थोड़ा सा घाव भी होगया था, इस लिए दो तीन बार के लगाने से वह भी भर कर जगह साफ हो गई, यदि उस

समय मेरे पास "अमृतधारा" न होती तो अवश्य किसी डाक्टर का मोहताज होना पड़ता, फिर न मालूम डाक्टर चीरा देता या क्या करता, जिस से सप्ताहों पट्टी बांधनी पड़ती और क्या २ नौबत पहुंचती। "अमृतधारा" ने इन सर्व दुःखों से शीघ्र मुक्ति दी। ऐसी सद्यप्रभाव औषधि जो सच मुच अमृत का काम देती है। प्रत्येक मनुष्य की जेब में रहनी चाहिये, कोई घर इससे खाली न होना चाहिये यह बड़ा गुण करती है॥

(१२) मूत्र में रक्त के लिये श्वेत चन्दन के पानी में दो बूंद डालकर दो तीन वार सेवन कराने से मूत्र में रक्त आना बन्द होगया॥

(१३) मूत्र दाह व पीड़ा आदि के लिये "अमृतधारा" दो बूंद गाय „ दूध की कच्ची लसी में दो तीन बार देने से आराम होगया॥

(१४) चकलीदार फोड़ा जो बहुत पीड़ा किया करता है, "अमृतधारा" बारम्वार लगाने से आराम होजाता है॥

(१५) अजीर्ण के लिये अर्क सौंफ या ताज़ा पानी में दो तीन बूंद "अमृतधारा" डालकर पीने से अराम होता रहा॥

इस लिये "अमृतधारा" नितान्त गुणकारी है, जो कभी खाली नहीं जाती"॥

लेखक—(सुमेर चन्द एजण्ट बटाला)

एक मिण्ट में दूर
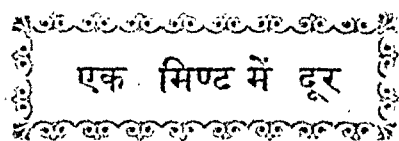
"आपकी "अमृतधारा" को बहुत ही गुणकारी पाया, क्योंकि मेरे मामूं साहिब की आंखों में बहुत पीड़ा होरही थी, जिसके कारण पड़ोसियों को भी कष्ट होरहा था, यह दुःख लग भग ८ बजे रात के आरम्भ हुआ, उस समय "अमृतधारा" की शीशी मेरे पास थी, परन्तु ध्यान में न आई थी, रात्रि को बारह बजे ध्यान आया, और "अमृतधारा" की कुछ बूंदों का नेत्रों पर लेप किया गया, लेप करना था, कि सर्वथा पीड़ा से आराम होगया, और रोगी सुख से सोगया॥

लेखक (बाबू मेलाराम पटवारी नहर)

ऋतुस्राव

"इससे प्रथम मैंने आपसे "अमृतधारा" नमूना अर्थ मांगा था, और परीक्षा स्वरूप एक रोगिणी पर जिसको एक मास से रंज वह रहा था, और किसी औषधि से आराम न होता था, आज़माया । सेवनविधिपत्र में आप ने इसका अनोपान नहीं लिखा, इसलिये मिश्री पर ३, ४ बूंद डालकर दिया, ईश्वर की कृपा से नमूना की शीशी नहीं समाप्त होने पाई थी, कि आराम होगया। रोगिणी की आयु लग भग चालीस वर्ष की है। ईश्वर आपके कार्य्यालय की सदैव उन्नति करे ॥

लेखक—(आफ़रीडर न्यामतउल्लाखां सैकंड लांसर्ज़ इम्पीरियल छावनी मह्)

अफ़ीमियों के अतिसार

"कहावत प्रसिद्ध है कि यदि अफीमियों को अतिसार होजावे तो मृत्यु की सूचक है । क्योंकि अफ़ीम अतिसार की वड़ी औषधि है, और अफ़ीमी मनुष्य के शरीर कीअंश वन जाती है, अफ़ीम से वढ़ कर अतिसार को रोकने वाली औषधि नहीं होती, इसवास्ते उक्ति प्रसिद्ध है, कि अफ़ीमी के अतिसार वन्द नहीं होते, और मृत्यु की सूचक है । एक अफ़ीमी मनुष्य को प्रवल अतिसार आरम्भ होगए, और मृत्यु के समीप पहुंच गया था, चेहरे पर मृत्यु के चिन्ह प्रगट थे, उस मनुष्य को "अमृतधारा" सौंफ़ के अर्क़ में तीन२ बूंद दो वार दी गई, जिससे पूरा आराम आगया; और वह मनुष्य अव तक जीवित है, और आपको अशीश देता है ॥

सात माससे कठिन आमातिसार ॥

"मेरी माता को सात मास से कठिन आमातिसार होरहा था । औषधि करने पर कुछ लाभ न हुआ । निदान "अमृतधारा" की बूंद अनारदाना के पानी के

साथ देने से पहिली ही बार में आराम होना आरम्भ हुआ, और चार मात्राओं से पूर्णतयः स्वस्थ होगई, और फिर अब तक रोग का उभार नहीं हुआ, ईश्वर आपको और आपके औषधालय को सदैव उन्नत करे, और आप की आयु सैंकड़ों वर्षों तक होवे, ताकि मनुष्यों को लाभ पहुंचता रहे ॥

(ना मालूम क्या रोग था)

"एक मनुष्य को निम्न लिखित रोग थे, दास को मालूम नहीं कि यह कौन सी बीमारी थी, और "अमृतधारा" से आराम हो गया था, उस मनुष्य को निद्रा नहीं आती थी और हर समय बेचैन रहता था। माथे का चर्म श्याम वर्ण हो गया था। माथे पर चाकू मारे तो किंचित पीड़ा नहीं होती थी, नेत्र उस के पत्थर की न्याई खुले रहते थे और नेत्रों से आंसू नहीं आते थे आखों की ओर देख कर भय प्रतीत होता था, हृदय हर समय धड़कता था, कास और श्वास का अत्यन्त वेग था, आमाशय से एक प्रकार का बुखार उठ कर मस्तिष्क को जाता था, जिस से वह बावला सा हो जाता था, और बाहिर को दौड़ जाता, जो वस्तु खाता दो घंटे के भीतर २ मल द्वार से निकल जाती, उसने कई यूनानी इलाज कराये। और कई डाक्टरों के इलाज कराये कुछ लाभ न हुआ। उस मनुष्य के गांव का एक धोबी जो हमारे वस्त्र धोने के वास्ते आया करता था, और उसको चातुर्थिक ज्वर दो वर्ष से चढ़ता था, मैंने उस धोबी को औषधि दी, जिससे उसका ज्वर टूट गया, उस धोबी ने रोगी को बताया, दलवान् में एक वैद्य हैं, जिसने दो वर्ष का चातुर्थिक ज्वर दूर करदिया। उसको मेरे पास लाया, और सारा वृत्तान्त कह सुनाया, मैं सुनकर चकित रहगया, हे ईश्वर ! यह क्या रोग है ! मैं कोई वैद्य न था, केवल देशोपकारक का ग्राहक हूं, वैद्यक से प्रेम रखता हूं, मैंने "अमृतधारा" उसके मस्तिष्क पर मल दी, जिससे उसकी आंखों से जल प्रवाहित होने लगा, जो आगे कभी भी नहीं हुआ था, इस मनुष्य को निश्चय होगया कि मुझको इस औषधि से लाभ होगा। उसको आधी शीशी "अमृतधारा" की देदी, और कहा, कि [illegible] का तैल तोला में दो बूंद मिलाकर सिर पर मालिश किया करो, और अर्क सौंफ व अर्क काशुवान में चार

बूंद "अमृतधारा" डालकर पी जाया करो, इस औषधि से उसे ऐसी नींद आई कि होश न रही, और दिन प्रति दिन रोग से मुक्त होने लगा, केवल एक शीशी सेवन करने से सर्वथा निरोग्य हो गया। अब राजी खुशी है, और अपने घर का काम करता है, आप को आशीर्वाद देता है।

भूल से उपदंश की वटिका खाने से गुदा पर घाव और पेट में कठिन पीड़ा और पेचिश शुरू, हुई ॥

एक अज्ञानी मनुष्य ने उपदंश की गोली खा ली, कारण यह कि उसके भ्राता को उपदंश का रोग था, और वह उस की गोलीयां खाया करता था, जिससे उसे दस्त आते थे, उसके भ्राता के पेट में किसी कारण से शूल हुआ, उस मूर्ख ने अपने मन में सोचा कि मेरा भाई जो गोलियां खाता है, उस से उस को दस्त आते हैं, यदि मैं भी एक गोली खा लूं तो मुझ को भी दस्त आवेंगे, और शूल को भी आराम होगा, जब उस ने गोली खाई तो कठिन शूल और पीड़ा पेचिश आरम्भ हुई। क्योंकि गोलियों में विष था, और उसके अन्दर घाव कर दिया हर समय ऐसी पीड़ा होती थी, कि जैसे कोई कुल्हाड़ी से काट रहा है ॥ कई रेचक औषधियें लीं, पर कुछ लाभ न हुआ। मुझ से कहा कि आप कोई औषधि देवें तो बड़ी अनुग्रह है, मैंने कहा कि एक पैसे का सौंफ अर्क मंगवाओ। उस ने सौंफ अर्क मंगवाया। तीन बूंद "अमृतधारा" डाल कर पिला दिया, रात को एक दस्त आया जिस से सब पीड़ा जाती रही, तीन मात्राओं से सर्वथा आराम आगया। शिरः शूल, प्रतिश्याय, विशूचिका, पार्श्व शूल, वृकद्वय शूल, ज्वर, अतिसार, आमातिसार, संग्रहणी, फोड़ा, फिंसी, दाढ़ पीड़ा, आंख पीड़ा, और अन्य कई प्रकार के रोगों पर परीक्षा की तुरन्त से पहिले लाभ होता रहा ॥ ईश्वर आप को और आप के औषधालय को चिरकाल तक स्थित रक्खे और दुनियां को आप के पवित्र हाथों से लाभ पहुंचता रहे" ॥

लेखक—प्रीतम सिंह ढिलवां ॥

हड़ताल का विष

श्री पंडित जी नमस्ते !

"अमृतधारा" और अन्य औषधियें पारसल द्वारा प्राप्त हुईं "अमृतधारा" यह नाम इस औषधि का यथार्थ है। हड़ताल के विष का प्रभाव दूर करने में जादू का काम किया। और ऐसा विष कि जो औषधि से दस घण्टे पहिले खाया गया था, और रोगी की दशा मृत्यु के तुल्य हो गई थी, इसकी दो मात्राओं ने (हरमात्रा में १२ बिन्दु थे) वमन और रेचन से विष को दूर कर दिया, और रोगी अच्छा हो गय ॥"

लेखक—रामचन्द्र सरवे आफ़िस भीखनगांव ॥

सोज़ाक का लेश न रहा

"आपकी "अमृतधारा" मानो अमृत है। निःसन्देह उसे सच्चा अमृत कहना चाहिये। आप से आगे जो दो तीन शीशियां "अमृतधारा" ख़रीद कर चुका था, वह निर्धनों को मुफ्त देता हूं, और एक ७ वर्ष के सोज़ाक के रोगी को फिटकरी की खील के साथ थोड़े दिन दिया था, सोज़ाक का लेशमात्र भी न रहा, अब वह आपको अशीशें देता है। दूसरा रोगी उदर शूल से पीड़ित था, उसे सौंफ और मिश्री के चूर्ण के साथ दिया, आध घण्टे के भीतर आराम होगया, मानो कि अमृत है, सचमुच वैद्यक चमत्कार है, आप सदैव आनन्द रहें" ॥

लेखक—सय्यद सय्यद अली ॥

किञ्चित सुन लीजिये

"बीस वर्ष से मैं अफीम का सेवन करता था, परन्तु बीस वर्ष से अधिक बढ़कर जीवन दूभर होगया था, प्रातः समय तो दो तीन रत्ती खाकर ऊपर से

कुछ खा लिया करता था, अर्थात् तीन रत्ती से ही छुटकारा होजाता था, जहां दोपहर का आहार १ बजे या डेढ बजे पाक हुआ, और शरीर गिरना आरम्भ होता था, अर्थात् डेढ़ या दो वजे पहिली मात्रा अफीम चार रत्ती खाली अभी १५ मिण्ट नहीं हुए कि जी फिर टूटना आरम्भ होगया, फिर चार रत्ती खाली, पांच मिण्ट का आराम रहा, फिर वही हालत हृदय टूटने की होगई, फिर चार रत्ती खाली, इसी प्रकार ६ या ७ वजे सायंकाल तक शरीर टूटने की अवस्था रहती थी, वहुत सी औषधियां करचुका था, और साधारण माउलजुवन भी कराया, परन्तु यह विपत्ती नहीं छूटती थी। अफीम की अधिकता के कारण नींद भी वहुत कम होगई थी, शरीर सूख गया था, अव देहली जाकर इलाज करने की इच्छा थी, इसीकाल में मेरे छोटे भाई ने आप का विज्ञापन दिखलाया, आपकी "अमृतधारा" पहुंची परन्तु मैं उसे घर भूल गया और कचहरी से दवाई लेने घर चला, परन्तु मार्ग में ही कष्ट आरम्भ होगया, अफीम तो पासही थी, मार्ग में ही खाली, और तीन वूंद "अमृतधारा" घर जाते ही पानी में खाई सायम् पर्यन्त अफीम की आवश्यकता नहीं रही, अव मैं उस दिन से तीन रत्ती अफीम खाकर ऊपर से "अमृतधारा" पीलेता हूं। फिर अफीम की आवश्यकता नहीं रहती। रात्रि को नींद खूव आती है, मैं आपका वहुत ही धन्यवाद करता हूं क्योंकि मैं अपने रोग को असाध्य समझ कर जल्दी तड़पकर मरजाना समझ रक्खा था. परन्तु परमात्मा की और आप की कृपा से आशा है, कि कुछ दिन और जीवित रहूंगा" ॥

लेखक—लाजपतराय नकलनवीस फारसी दफ्तर ॥
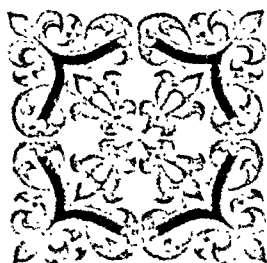
हैज़ा, खांसी, सर्प का डसना

"नमस्त । आप की "अमृतधारा" में जेसा कि इस का नाम है वेसे ही गुण मैंने देखे हैं । जिस२ रोगियों को देता रहा, वही राजा हुआ। मुझे बराबर दो वर्ष से कफ़ या खांसी आया करता था, तत्काल आराम होगया । एक बालक चार वर्ष को अचानक विशूचिका हुआ, मैंने इस रूमी मस्तगी के साथ दी तो स्वस्थ होगया । पश्चात् एक स्त्री को सर्प ने डसा था, उस को दी गई अद्यावधि वह भी जीवित है । कृपया शीघ्र एक शीशी "अमृतधारा" भेज देवें ॥

लेखक—मुन्शी भवानीदास भोजपुर ॥

आबहयात है अकसीर है

"मैंने "अमृतधारा" कई मनुष्यों को मंगवा दी है । और स्वयम् निम्न लिखित रोगों में अचूक पाचुका हूं :—

सर्प का डंक, प्लेग, फोड़ा, फुन्सी, दर्द पेट, दर्द दाढ़, दर्द चोट, दर्द आंख, विशूचिका, ज्वर, जुकाम, पित्त, खाज, जी मतलाना, दर्द हलक़ आदि पर केवल पानी से ही सेवन की है । छै मास की बालिका को सर्प ने काट खाया था, और मांस नोच कर घाव कर दिया था, आदमी जब तक दवा लेने को आया, वह मूर्च्छित होगई थी, इसको लगाते और सुंघाते ही उसने नेत्र खोल दिए, और फिर दूध पीने लगी । गिल्टी पर लगाने से गिल्टी दबी चली जाती है ॥

लेखक—चन्द्रप्रकाश 'कमतर' साहनपुर" ॥

फिर से काम पर लग गया

श्रीमान् पण्डित जी ! नमस्ते । निवेदन है, कि दास की आयु ७० वर्ष की है। गत मास में मुझे पेचिश होगई । सैंकड़ों दस्त हुआ करते, निर्बलता बहुत बढ़ गई थी, इसी अवसर पर ३ शीशियां "अमृतधारा" वी० पी० द्वारा पहुंचीं, ३ बूंद सायम् ३ बूंद प्रातः केवल शीतल जल के साथ सेवन करना आरम्भ किया, एक ही सप्ताह में सर्वथा अच्छा होगया । मैं अपने सब काम कार्य से लाचार होगया था, परन्तु आप की कृपा से सब काम फिर से करने लगा हूं" ॥

आप का—गौरीशंकर गणेशराम रोडमण्डी बम्बई ॥

बिजली गिरी का प्रभाव तत्काल दूर

"मैंने आप से सैकड़ों शीशियां "अमृतधारा" मंगवाईं । शीशी आने पर दो दिन भी नहीं रहने पाई...मेरे इष्ट मित्रादि और अन्य सम्बन्धी आकर लेगए । विचित्र प्रभाव इसमें ईश्वर ने दिया है । हाल में जिसको अर्सा १० दिन का हुआ, मुन्शी किफ़ायतउल्लाह साहिब अहलमद रजिस्टरी ने मुझसे एक शीशी "अमृतधारा" की लेकर अपनी छोटी साली के लिए जो ज्वर से बीमार थी भेजी, सेवन करने से उसे लाभ हुआ । इन्हीं दिनो में वर्षा भी खूब हुई, आकाश से बिजली गिरी, जिससे अहलमद साहिब की बड़ी साली का मुख और कपोल सर्वथा लाल बनात जैसा होगया, और आंखों की दृष्टि शक्ति जाती रही । "अमृतधारा" लगाने से तत्काल मुख और गाल अच्छा होगया, लाली और जलन सर्वथा जाती रही, और नेत्रों में ज्योति भी आगई ॥ "

आपका—सय्यद मुस्तफ़ा हुसैन अहलमद माल नरवल" ॥

मुसाफ़िरों से किस प्रकार प्रशंसा हुई

"मेरी कम्पनी में एक दर्ज़ी जो वर्दी आदि सिया करता था, वह शौचादि से निवृत्त होकर लौटा आरहा था, तो अचानक ही उसके पेट में विचित्र प्रकार का दर्द आरम्भ हुआ, जिसके कारण वह भूमि पर गिर पड़ा, और मूर्च्छित होगया, मैंने "अमृतधारा" दो बूंद उसके हलक़ में डालदीं, जिससे उसे होश आ गया, और दो घण्टा पीछे फिर "अमृतधारा" की ३ बूंद पिलाई गईं जिससे उसको पूरी स्वास्थ्य प्राप्त होगई ॥

(२) ज़ुकाम व सिर दर्द—की अचूक औषधि मानी गई है ॥

(३) मैं स्वयम् इसकी मालिश शिर पर किया करता था, अर्थात् २ बूंद सर्षप तैल में मिलाकर सिर पर मला करता था, इससे मस्तिष्क को सुख प्राप्त होता है, और आंखों को ज्योति मिलती है । चाहे कितनाही काम क्यों न हो, दिमाग़ कदापि नहीं थकता । बल्कि तर व ताज़ा रहता है ॥

(४) एक बार मैं नौशहरा से अमृतसर को जारहा था, तो कैम्बलपुर के स्टेशन पर एक मुसाफ़िर के मुख में सहसा पीड़ा आरम्भ होगई, और मसूड़े दुखने लगे, लार बहनी आरम्भ हुई । सौभाग्य से दास के पास "अमृतधारा" की शीशी वर्तमान थी, मैंने उसकी दो बूंदें उंगली पर डाल कर मुख और मसूड़ों पर मलने की प्रेरणा की, इसके दो बार मलने से सर्वथा आराम आगया, आपकी "अमृतधारा" की बहुत प्रशंसा मुसाफ़िरों ने की, इसके पीछे मुझको कोई अवसर इसकी परीक्षा का नहीं मिला" ॥

(आपका—बा० बिहारीलाल क्लर्क कं० नं० ४)"

अन्तिम समय पर सर्प का डसा बचगया

"श्रीमान् जी ! नमस्कार । आपकी बनाई हुई "अमृतधारा" अमृत है । और हुक्मी औषधि है । मैंने आज तक आपके औषधालय से बहुत सी शीशियां

"अमृतधारा" की मंगाई, जिस रोग के वास्ते सेवन कराया, फ़ौरन से पहिले लाभ हुआ, एक मनुष्य का **पेट फूल गया,** और कठिन पीड़ा होरही थी, और ५ मिण्ट में उसकी दर्द जाती रही। एक घण्टा के पीछे उसने भोजन किया। और सुनिये कि एक मनुष्य को विषैले सर्प ने काटा, मूर्च्छित होगया, मैंने "अमृतधारा" उस जगह पर जहां सर्प ने काटा था, मालिश कराना आरम्भ किया, और थोड़ी सी नाक में टपका दी, तुरन्त होश आगया और अच्छा हो गया। ऐसी प्रभावशाली औषधि कदाचितही किसी वैद्य या हकीम ने बनाई हो, कम से कम मैंने तो ऐसी औषधि आज तक नहीं देखी। श्री सीता जी आप के औषधालय की उन्नति करें॥

(आपका—देवीदयाल पेशकाकार)"

रोता आए हंसता जाऐ

"भ्रातृगण! "अमृतधारा" में यही प्रभाव है। अब तक तो अमृत का नाम ही नाम सुना जाता था, किन्तु यदि किसी वस्तु को अमृत कहा जासकता है, तो मेरे विचार में जिस दवाई को हमारे श्रीमान् पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य ने ईजाद किया है वही मैंने एक शीशी उनके औषधालय से मंगवाकर विविध रोगों में लोगों को मुफ्त दी, और प्रत्येक दशा में रामवाण पाया, और रोगों के अतिरिक्त **प्लेग ग्रस्त** जो इस शीशी के समाप्त होने तक मेरे पास आए ईश्वर की कृपा से अच्छे होगए। बाल बच्चे वाले मनुष्य को इसकी एक शीशी सदैव घर में रखनी चाहिए"॥

दासः—(ज्योतिप्रसादवर्म्मा लाइब्रेरियन रेलवे इन्स्टीट्यूट लखनऊ)

बाबू राधाकिशन साहिब महल्ला मखदूम से लिखते हैं:—

"नमस्कार के पश्चात् निवेदन है, कि एक मनुष्य को सर्दी का जोर होगया, और उसका आधा शरीर हिलने से रहगया। "अमृतधारा" दीगई हम सब हैरान हुए कि रात तक आराम होगया"॥

श्रीमान् बाबू गंगाराम प्रसाद साहिब मौजे कील से लिखते हैं:—

"आप की "अमृतधारा" हमने कई रोगों पर आज़माई, और अनुभवित पाई, एक मनुष्य के दोनों कानों के नीचे गिलटियां होगई थीं, और घोर पीड़ा थी, दो वार "अमृतधारा" की मालिश की, दर्द गिलटी दोनों को आराम होगया। पेचिश के रोगियों को भी आराम होगया, मेरे नाम चार शीशियां वी०पी० द्वारा और भेज दें" ॥

पांच मिण्ट में जान बचगई

"श्रीमान् पण्डित जी साहिब! तसलीम। सरदार मलसिंह साहिब इन्स्पैक्टर पौलीस का लड़का फ़ीरोजपुर से आया, उसके कान का निचला भाग सूजा हुआ था, न पानी उतरता था, न दूध! उसके जीवन से निराश होगए। सरदार मलसिंह साहिब ने तुरन्त "अमृतधारा" लगाई और मल दी, एक घण्टा के पश्चात् बालक ने पानी मांगा, और पीलिया, थोड़ी देर के पीछे उसने क्षुधा प्रगट की और तृप्त होकर दूध पीलिया, बालक की जान बच गई, सरदार साहिब आपके बड़े कृतज्ञ हैं दवाई। यथा नाम तथा गुणः है। फोड़े के लिए मैं हमेशा "अमृतधारा" की मरहम बनाता हूं। बहुत ही गुणकारी है" ॥

आपका दासः—स्टेशन मास्टर फ़ीरोज़पुर शहर" ॥

उत्तेजक तैल का काम दिया

" जनाब पण्डित साहिब तसलीम! मैंने आप से पहिले भी "अमृतधारा" मंगाया था, परीक्षा में सब जगह लाभ दायक पाया। एक तो तिला (लिंग तैल) के लिए बहुत गुणकारी है, दूसरे दर्द दांत के लिए बहुत लाभ हुआ। तीसरे मनुष्य को कई दिन से दस्त आते थे, मैंने उसे पानी में ईस्पगोल के लुआब से ३ बार

दो २ बूंद दिए, ईश्वर की कृपा से अच्छा होगया, अभी बाकी भी हैं लग भग आधी शीशी के। मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि यह सत्य लिखा है॥

कमतरीन हाफ़िज़ मेहरअली पेश इमाम जामामसाजिद"॥

"जनाब पण्डित साहिब दाम अक़बालहू, तसलीम ! निवेदन है, कि दास ने "अमृतधारा" का निम्न लिखित रोगों पर अनेक वार तजुर्बा किया है, इसका तत्काल गुण जादू के समान है :—वमन, अतिसार, उदरशूल, अजीर्ण, बुरी नज़र, गुड़गुड़ाहट, पुराना शिरःशूल, जूड़ी, ज्वर, बिच्छू का डंक, नासूर, दर्ददांत, सोज़ाक, दर्दकान, नासूर कान, दर्दशूल, कटिपीड़ा, पार्श्वशूल, सन्निपात, दर्द पसली, शुष्ककास, इत्यादि २ ॥

परन्तु तीन चार रोगों पर इसका सेवन आश्चर्यजनक प्रभाव करचुका है। जिनकी व्याख्या यह है :—

संखिया का विष उतार दिया

एक रोगी जो संखिया खा चुका था, और मृत्यु शय्या पर पड़ा था, इसकी तीन ही खुराक से कै व दस्त बन्द होगए, और रोगी चैतन्य होने लगा, जिसको हकीमों ने असाध्य कहा था, और अन्तिम समय जान कर चिकित्सा बन्द कर बैठे थे॥

सरसाम और अन्तिम समय

एक रोगिणी जिसको ज्वर वेग व सरसाम में ११ दिन होचुके थे, और अन्तिम समय वमन आरम्भ होकर कफ़ कण्ठ में [illegible] [illegible], दर्द शरीर [illegible]

और नाड़ी बन्द होचुकी थी, इसी दशा में २५ बूंद केवल "अमृतधारा" के दिए गए। पांच मिण्ट में ही रोगिणी हिलने जुलने लगी, और नाड़ी भी अपनी असली दशा पर आगई, और इसी प्रकार २५ बूंद प्रतिवार रोगिणी को ३ दिन तक दिए गए। शीतांग तथा सरसाम दूर होगया, और ज्वर में भी कमी होगई।

डाक्टर भी औषधि न करसके

एक रोगी जिसके उदर में किसी प्रकार का आहार नहीं पचता था, जिसने कई प्रकार के डाक्टरी, यूनानी, वैद्यक इलाज किए थे, इधर आहार खाया, और उधर वमन होजाती थी, २१ दिन "अमृतधारा" सेवन करने से पूर्ण स्वस्थ होगया ॥

मरने से बचालिया

एक रोगिणी को जिसके दक्षिण ओर शिर में शोथ होगया था, और लग भग दो फुट के चेहरा एक ही ओर को सूज गया था, और दवाने से रुई की न्याई नरम मालूम होता था, और उसमें अत्यन्त पीड़ा थी, रोगिणी अत्यन्त आतुर थी, "अमृतधारा" का सेवन किया गया, और दो शीशी समाप्त होने पर सम्पूर्ण व्याधि दूर होगई। और इसके साथही आप की नसवार, एक तोला नाक में दीगई, इसके अतिरिक्त कई चमत्कार "अमृतधारा" के देखने में आए। जनाब आली! अब तक "अमृतधारा" की ४ दर्जन शीशियां आप के यहां से मंगा चुका हूं, वह अब समाप्त होचुकी हैं ॥

बन्दह—महम्मद अबदुलहफ़ीज़ हकीम व आमिल गलौज़ "॥

एक पढ़ने योग पत्र

"नमस्कार के पश्चात् निवेदन है कि बहुत सी शीशियां "अमृतधारा" की आप से मंगवाकर मुफ्त वितरण करचुका हूं। इसके लाभ अनन्त और अवर्णनीय हैं।

जहां २ इसने जादू भरे प्रभाव दिखलाए हैं, कुछ निवेदन करता हूं:—प्लेग के रोगियों को कई बार दी गई ८० प्रति सैंकड़ा लाभ हुआ। मौसमी ज्वर व सब प्रकार के ज्वरों को दूर करने के लिए अक्सीरआज़म है ॥

एक गाय ने बच्चा दिया और आंवल न गिरी

गुड़ में १० बूंदें दीं और एक घण्टा पीछे सब आंवल गिर पड़ी। एक वर्ष के बालक को जबकि वह एक मास का था, दैनिक ज्वर आना आरम्भ हुआ, और वह सूख कर कांटा सा होगया। ईश्वर की कृपा से हरी गिलोय के स्वरस में दैनिक १ बूंद देना आरम्भ किया, दो सप्ताह में ही ज्वर दूर होगया। बालक स्वस्थ है। एक बालक की माता का रक्त ख़राब था, इसी कारण वह बालक भी बीमार था, निम्ब के पत्तों को रगड़ कर पानी मिलाकर २ बूंद "अमृतधारा" मिलाकर पिला दिया, एक सप्ताह में रक्त साफ़ होगया। एक दो ढाई वर्ष का बालक मरने के तुल्य अचेत पड़ा था, दो बूंद श्वेत इलायची व वंशलोचन के चूर्ण में दो बार देने से स्वस्थ होगया। घाव, फोड़ा, फुन्सी, दर्द दांत, दर्द दाढ़, को लाभदायक प्रमाणित हुई। और सहस्रपाद व भिड़ के काटे पर लगाने से आराम होगया। भीतर व बाहरी पीड़ा पर हितकर पाया। खांसी शुष्क व तर जाती रही। नेत्र रोगों पर भी हितकर पाया। पशुओं के कृमि पड़ने पर भी गुणकारी हुई है। घाव पर मरहम का काम देती है। आज कल प्लेग इन ग्रामों में ख़ूब ज़ोर से है इसी का सेवन करा रहा हूं, बहुत से रोगी स्वास्थ्य पाकर आप को आशीर्वाद देते हैं। इस समय केवल आधी शीशी बाकी रह गई है। क्या करूं बहुत धनवान् नहीं हूं, अन्यथा तीस चालीस शीशियां इकट्ठी मंगवाकर मुफ्त बांट दूं, यथा सामर्थ्य तो दिए जाता हूं, ईश्वर ने इस में क्या गुण भर दिया है, कि प्रत्येक रोग में गुण करती है। ईश्वर इस में अधिक गुण देवे" ॥

आपका दासः—काशीरामदत्त मुदर्रिस मदरसा पिंदी" ॥

जिसको डाक्टर ३ दिन में आराम न दे सके
इसने दस मिण्ट में आराम किया

"अमृतधारा" ने मुझे जो २ लाभ दिखलाए हैं, उनकी कदर मुझे ऐसी है, कि एक दिन को भी इस सच्चे मित्र की जुदाई पसन्द नहीं करता। मित्र के लक्षण यह होते हैं, कि अकस्मात आपद के समय सहायता देवे, वह इस में है। यों तो संसार में एक से एक बढ़िया औषधि वर्तमान है, परन्तु उनके प्रभाव जिस रोग के वास्ते वह नियत हैं उनमें होते हैं। और कुछ दो चार दिन में होते हैं, परन्तु इसमें सबसे अधिक प्रशंसा के योग्य यह बात है, कि बिना अनुपान के आराम होता है। और बहुत से रोगों में तत्काल इसका गुण होता है। **चोट लग जाना** अकस्मात आपद है इसकी २-३ बूंद मलने से चोट का चिन्ह तो रहजाता है, परन्तु पीड़ा ऐसी दूर होजाती है, मानो थी ही नहीं, जुकाम व शिर दर्द का दूर करना तो कोई काम ही नहीं है। बाज़ समय मेरे पास इस रोग के लोगों की इतनी भीड़ होती है, कि मैं घबड़ा जाता हूं, एक और दो सप्ताह से जिन लोगों की पेचिश और दस्त बन्द न होते थे इसकी दोही मात्राओं से बन्द होगए। खांसी, पेट का दर्द, वमन, कान दर्द, कान पकना, बिच्छू का डंक, चोट व दर्द बाहरी सब प्रकार, बवासीर, श्लीहादि जिन २ रोगों में इस को आज़माया हितकर पाया, एक मनुष्य को नकसीर हो रही थी तीन दिन से डाक्टरी इलाज हो रहा था, परन्तु बन्द न होती थी, इस की एक २ बूंद नथनों में डालने से दस मिण्ट में ही बन्द हो गई। एक गर्भिणी स्त्री के शिश्नस्थान पर कठिन पीड़ा थी, कई दिन से खान पान छूट चुका था, और डाक्टरी व यूनानी इलाज होता था, उसे एक बार के लगाने से निद्रा आगई, और दर्द जाता रहा बाजे रोग अकस्मात रात्रि को होते हैं, जब कि न वैद्य और न औषधि मिल सकती है, ऐसे समय में यही लाभ देती है।

मैं शीशियां मंगवा चुका हूं। और अब फिर इच्छा है।

बन्दा सय्यद अबुल क़ासिम भरतपुर" ॥

२८ मनुष्यों की दाढ़ दर्द

"अमृतधारा" की एक शीशी से २८ मनुष्यों का दाढ़ दर्द जाता रहा, और ६ मनुष्यों की खाज जाती रही, और ४ मनुष्यों का गंठिया जाता रहा। जिस को किसी रोग पर दिया तत्काल ही गुण किया" ॥

(एक ग्राहक)

रजस्वला से मैथुन

"श्रीमान् जी ! नमस्ते। एक भोला भाला मनुष्य भूल से अपनी स्त्री के साथ जो ऋतुवती थी, मैथुन कर बैठा, उसकी इन्द्री सूज गई, और पीड़ा होने लगी। मेरे पास अमृतधारा थोड़ी सी पड़ी हुई थी, मैंने इन को ५ बूंद दे दी और कहा कि हलदी का थोड़ा सा चूर्ण घृत में भून कर थोड़ी केशर मिलाकर अमृतधारा मालिश करें, केवल ३ वार ऐसा करने से विचारे को स्वास्थ्य हो गई, और शोथादि का नाम व चिन्ह तक नहीं रहा। सचमुच अमृतधारा जादू का प्रभाव रखती है। बेचारा सोजाक से बच गया" ॥

(लेखक–बिहारी लाल ग्राहक नं० १३५५)

असाध्य समझे जाने वाले घाव भी दूर

"श्रीमान् जी ! नमस्ते। आप की "अमृतधारा" बहुत से रोगों पर वर्ती और हितकर पाया, विशेष कर मेरे भाई के एक फोड़ा गुदा के समीप था, जो १५ दिन तक बढ़ता रहा, और किसी औषधि से न तो दबा और न बहा, "अमृतधारा" दोनों समय ५ दिन तक लगाने से सर्वथा दूर बिना पकने के हो गया।

दूसरे की औषधियों से. घाव लिंग पर और नसों पर थे, "अमृतधारा" ३ दिन ही लगाने से सर्वथा साफ हो गए, और मेरे मुख में छाले जो प्रायः हो जाया करते हैं, एक रोज में दो तीन वार लगाने से सर्वथा अच्छे हो गए। मैंने ऐसी शीघ्र प्रभावशाली औषधि आज तक नहीं देखी ॥

दास—कुंवर नौरत्नसिंह वर्म्मा रईस धूम" ॥
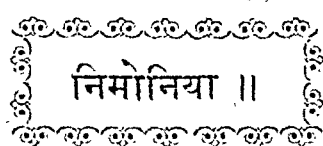
निमोनिया ॥

"श्रीमान् पण्डित जी नमस्ते! एक मनुष्य को निमोनिया का रोग हो गया था, उस पर सेवन किया बहुत लाभ हुआ। आप कृपया ४ बोतल वी० पी० द्वारा और प्रेषित करें, मैं बड़े हर्ष पूर्वक वसूल करूंगा ॥

आपका—लक्ष्मण दास सिग्नेलर स्टेशन अपगम" ॥

सर्व रोग नाशक शिरोमणी औषधि
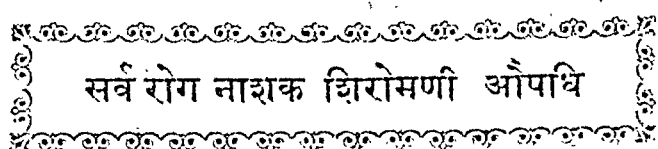
"जनाब पण्डित साहिब तसलीम। मैंने गत मास में दो शीशियां "अमृतधारा" की मंगाई थीं, सच मुच "अमृतधारा" आप की ऐसी शीघ्र गुण कारी औषधि है, जो बीसियों रोगों में रामबाण सिद्ध हुई है। यथा नाम तथा गुण है, यदि इसे **सर्व औषधियों की सरदार** कहा जाय तो सर्वथा सत्य है। इस की १ शीशी और औषधियों के बोझदार बकसों से उत्तम है। सर्व साधारण को धन्यवाद करना चाहिए कि आपने यह औषधि निर्म्माण की, ईश्वर आप को सदैव कुशल से रक्खे, मेरे तजुर्बे में "अमृतधारा" निम्न लिखित रोगों में आई है, नेत्र पीड़ा, दाढ़दर्द, उदरशूल, कर्णशूल, शिरः शूल, जुकाम, वमन, मसूढ़ा शोथ, भिड़का डंक, बिच्छू का डंक, पादवंशूल ॥

आपका चौधरी फ़ैज़ अहमद मौहदा" ॥

थोड़ी देर में मरा हुआ समझ लिया था

मुकर्रमी बन्दह तसलीम! "अमृतधारा" की प्रशंसा यह है, कि वह किसी समय किसी रोग में निष्फल नहीं जाती। जिस का तजुर्बा एक दर्जन शीशी खरच करके देख चुका हूं। व्याख्या कहां तक लिखूं, अभी ५ मार्च को एक मनुष्य को पार्श्वशूल हो गया। और उस की दशा बहुत खराब हो गई, ६ मार्च को उसका चचा मेरे पास आया, मैंने देखा कि वह बात नहीं कर सकता, और ज्वर में दग्ध हुआ जाता है। और पार्श्वशूल के कारण श्वास लेना भी कठिन हो रहा है मैंने तुरन्तु ६ बूंद "अमृतधारा" बिना अनुपान के पानी में डाल कर पिला दी। और शूलस्थान पर राई का पलस्तर कर दिया। अभी दो नहीं बजे थे, कि रोगी ने जाने का मार्ग लिया, दर्द सर्वथा न थी। और सब कष्ट दूर हो गया था। उसने कहा मैं अपने को थोड़े मिन्टों में मरा हुआ समझता था। पीड़ा ने मेरा श्वास बन्द कर दिया था। परन्तु अब कोई कष्ट बाकी नहीं, ज्वर भी कम हो गया था, और दो तीन रोज में सर्वथा जाता रहा॥

लेखक—मुहम्मद जमालउलदीन कुरेशी" ॥

प्रत्यक्ष मुर्दह था

" जनाब पण्डित साहिब तसलीम। एक शीशी "अमृतधारा" की अभी आई थी, मेरे नौकर का बालक पसली रोग में ग्रस्त था, आयु ६ मास की थी, मृत्यु के समीप था, मुख बन्द हो गया था। मुख और नाक में मैंने मालिश किया, थोड़ी सी जान बाकी थी, उस ने थोड़ा सा ओष्ट हिलाया, उंगली डालने से मुख खुलने लगा, मैंने बिना किसी अनुपान के एक बूंद मुख में टपका दिया, जिस ने अधिक मुख फैलाने लगा, एक बूंद माता के

दूध से मुख में डाला गाया, जिस से वह हाथ पांव हिलाने लगा, संक्षिप्त यह कि एक घण्टा में ४ बूंद १५–१५ मिन्ट के पीछे दी गई, चौथी मात्रा के पश्चात् अच्छी तरह माता का दूध पिया, और मालिश करके गरम रुई भी दर्द पर बांध दी, चार दिन हुए वहुत अच्छा है। ३ मनुष्यों को ज्वरावस्था में जो विना जाड़े के आया था, और गरमी से व्याकुल थे, पहिली मात्रा मिश्री के शर्वत एक औन्स में ५ बूंद दिया व्याकुलता जाती रही। दूसरी मात्रा एक घण्टा पश्चात् गरम पानी से दिया, तत्काल प्रस्वेद आगया, और ज्वर जाता रहा, वास्तविक "अमृतधारा" अन्मोल रत्न है। शिर दर्द तो तुरन्तु जाता है, दस पन्द्रह के लगाया तत्काल लाभ हुआ, एक मनुष्य को दाढ़ के दर्द में आराम हुआ, दो स्त्रियों को वादाम के तैल के साथ सेवन से बधिरपन दूर हो गया, अव शीशी समाप्त है। सच मुच अमृत है और मंगवाकर सदा रखने के योग्य है" ॥

लेखकः—अवदुलकरीम कनिस्टविल रायपुर मौदहा पारा ॥

नवीन तजुर्वा
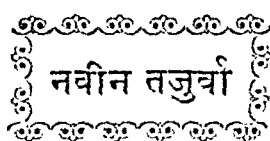
"श्रीमान् पण्डित ठाकुरदत्त जी साहिव नमस्ते। मैं और वावू शिवनाथ साहिव सवओवरसियर भ्रमणार्थ मास अगस्त १९०७ में वम्बई गए थे, वहां होटल में ठहरे हुए थे, प्रातः समय वावू शिवनाथ साहिब के होंठ पर कुछ जन्तु सा काट गया, जिसका पता न लगा, और उसी क्षण दाह होकर शोथ होगया। और ओष्ठ फट गया, मैनेजर होटल से भोजन बन्द करने को जो कहा, तो उस ने वताया कि यह वलास्टक नामक जन्तु गन्दी जगह में वम्बई में होता है, जो काट गया। इस का शोथ व दाह एक दो दिन तक कष्ट देता है। उस समय मेरे पास "अमृतधारा" थी, जो लगाने से पांच मिन्ट में दर्द बन्द, शोथ कम होकर आराम हो गया, और सायंकाल तक सर्वथा स्वास्थ्य हो गई। इस लिए निवेदन है कि इस को अंकित करें" ॥

दास रामकृष्ण ठेकेदार व वावू शिवनाथ सवओवरसियर करल" ॥

आंखपर चोट

"श्रीमान् पण्डित जी ! नमस्कार। मेरे तजुर्बा में "अमृतधारा" निम्नलिखित रोगों में आचुकी है, दन्तशूल, मरोड़, अतिसार, उदरशूल, अजीर्ण, नेत्रपीड़ा, डंकभिड़ आदि पर कई वार अपना शीघ्र प्रभाव दिखलाकर हैरान किया। और कभी २-३ वार सेवन करने से लाभ दिया। अब एक नया तजुर्बा निम्नलिखित है ॥

एक मनुष्य की आंख पर चोट लग गई, पीड़ा बहुत थी। पानी खूब बहता था, झट ईश्वर विश्वास करके आंख के ऊपर नीचे लगा दी, थोड़ी देर के पीछे वह मनुष्य आशीशें देता हुआ चला गया। अब वह मनुष्य चंगा भला है। मतलब कि जिस काम के वास्ते "अमृतधारा" को वर्ता गया वहांहीं कृतकार्य्यता प्राप्त हुई। ईश्वर आप को चिरंजीव रक्खे, कि ऐसी औषधियां निर्म्मित करके संसार को लाभ पहुंचा रहे हैं" ॥

आपकाः—हीरानन्द मुहर्रिर पोलीटिकल थाना रखनी "

सचाई का दर्पण

"जनाब पण्डित साहिब ! आप की "अमृतधारा" प्रशंसा के योग्य है। मैंने जिस रोग में चाहा परीक्षा की ज़रा भी फ़र्क़ नहीं पाया, ज्वर में तो तुरन्त अपना चमत्कार दिखलाया"

एक मनुष्य की लड़की का मसूड़ा सूज गया था, ओष्टों पर ८-१० फुन्सियां ऐसी निकल आई थीं, कि लड़की को देख कर पहिचानना कठिन था, यहां तक कि दन्त उखड़ने पर थे। ४-५ रोज़ से कुछ भी नहीं खाती थी। जवानी का ज़ोर था मैंने जाकर अजवायन पीसकर "अमृतधारा" ३ बूंद पिलाया, और ओष्टों में व मसूड़ों में लगा दिया। ईश्वर की कृपा से एक वार के लगाने से इतना आराम

आगया कि खाने पीने लगी और ज्वर भी चला गया, दो तीन बार लगाने से सर्वथा अच्छी होगई ॥

एक लड़की को ८-१० रोज से ज्वर आरहा था, बंगाली कविराज की बहुत सी दवा खिलाई थी, ज्वर नहीं जाता था । मैंने जाकर "अमृतधारा" सौंफार्क में चार बूंद ४ घण्टे के पश्चात् दो बार दिया, ईश्वर की कृपा से जो लड़की उठ नहीं सकती थी, प्रातः तालाब के किनारे बैठी मुख धोरही थी, । २-३ दिन में सर्वथा अच्छी होगई । एक मनुष्य के नेत्र सर्वथा जाने पर थे उसके नेत्रों पर परदह इतना कठोर होगया था कि पहिले पहिल "अमृतधारा" आंखों के भीतर दी जाती थी, और कुछ भी असर नहीं कुछ दिन सेवन कराया अर्थात् २ मास के सेवन से अच्छा होगया । एक मनुष्य को अन्धराता होगया था, अर्थात् रात्रि को कुछ भी नहीं देखसकता था, केवल दो बार दो रात्रि "अमृतधारा" लगाया गया । आंख अच्छी होगई । और रात भी अच्छी तरह काम करने लगा इसके अतिरिक्त जिस रोग में दी गई पूरा लाभ पाया । यह मनुष्य रतौंधी रोग में दो वर्ष ग्रस्त रहा था, बहुत इलाज कराचुका था, कुछ लाभ नहीं हुआ था" ॥

राकिम—सय्यद कुतुबुद्दीन अहमद व मुन्शी यार मुहम्मद
दीनाजपुर" ॥

अमृतधारा के चमत्कार

एक स्त्री को प्रसूत के ९ दिन पीछे कठिन कम्प ज्वर, तृषा व हृदय धड़कन हुई। उसकी सास घबड़ाई हुई मेरे पास आई, और कहा कि तृषा का इतना जोर है, कि एक घड़ा पानी पी जाती है । मैंने दो तोला मधु, २ तोला अर्क गावजाबान, व अर्क केवड़ा में तीन बूंद "अमृतधारा" मिश्रित करके दिया सायम् को उस स्त्री ने सूचना दी, कि बहुत आराम हुआ है, किंतु ताप अभी है तृषा व हृदय धड़कना बन्द होगई मैंने फिर सायम् को उतनीही मात्रा दी और दो दिन तक दोनों समय इतनीही देता रहा। सब व्याधि दूर होगई । "अमृतधारा"

वहुत उमदा अक्सीर है। प्रसूत सम्बन्धी रोग भयानक होते हैं। परन्तु "अमृतधारा" ने विचित्र प्रभाव दिखाया" ॥

लेखक—अवदुल रऊफ" ॥

झूठे विज्ञापन भी निकल रहे हैं

"श्रीमान् महाशय पण्डित ठाकुरदत्त वैद्य जी, मैंने आप की ७ शीशियां "अमृतधारा" की और ४) की अन्य औषधियां मंगाई "अमृतधारा" के लाभ लोगों पर प्रगट होगए हैं। और वहुत से विज्ञापन लाहौर, अमृतसर, कोहाट आदि से निकल रहे हैं, जिनका मूल्य आपकी रियायत के अपेक्ष भी कम हैं, परन्तु हाथों पर सरसों जमाना, आपकी दवाई के लिए यथार्थ है" ॥

दास—करमचन्द पटवारी हलका सरवानी" ॥

वधिरता

"आपकी 'अमृतधारा" की जो दो शीशियां स्वयम् अपने रोग के वास्ते मंगवाई गई थीं, अत्यन्त गुणकारी प्रमाणित हुई। मैं लगभग ६ मास से वधिर था। वहुतेरे हकीमों और डाक्टरों से इलाज करवाया, कुछ लाभ न हुआ। आप की "अमृतधारा" से जिसे जादू की शीशी कहना चाहिए, आराम आगया। मैं दावे से कहता हूं, कि ऐसी शीघ्र प्रभावशाली औषधि दुनियां भर में नहीं होगी। प्रत्येक घर में इसकी एक दो शीशी रखना आवश्यक है क्योंकि अचानक मुझको भी एक वार आधी रात्रि के समय उदरशूल होगया, मैंने उसी समय "अमृतधारा" की एक दो बूंद पानी में डालकर पी ली झट ४, ५ मिण्ट के पीछे आराम आगया, मैं प्रार्थना करता हूं कि परमात्मा आप के कार्य्यालय को दुगणा करे" ॥

लेखक—मुन्शीराम क्लर्क सैकिण्ड डवीज़न नहर जेहलम"॥

यह पोकिट हस्पताल है

आपकी प्रसिद्ध रत्न अन्मोल "अमृतधारा" एक ऐसी औषधि है कि जिसकी प्रशंसा नहीं होसकती। यह मनुष्य की सफर या घर से बाहर उजाड़ में एक प्रशंसनीया मित्र है इस कथन में कोई अत्युक्ति नहीं है कि पाकिट हस्पताल है। यह स्वयम ही डाक्टर है, और स्वयम ही औषधि, जहां कहीं कष्ट हो, विना विचार के २ बूंद लगालो और पीलो, दर्द नाम को नहीं रहता। विशूचिका और उदरशूल के लिए यह रामवाण का काम देती है। और अन्य रोगों पर भी वादशाह का सा हुकम रखती है। सुतरां॥

विशूचिका के दो दृष्टान्त वर्तमान हैं

कि हमारी पनचक्कियों अर्थात् घुराट के लाला साहिब के पुत्र इस दुष्ट रोग में ग्रस्त होगए,जिससे सब व्याकुल होगए, मैं शीघ्र वहां गया और अपने हाथ से दो बूंद पानीही में डालकर देदिए। न मिश्री ढूंडी न कुछ ढूंडा, बस देना था कि विशूचिका दूर होगया॥

नालौड़ एक कस्वा है जो यहां से एक कोस पर है। वहां के एक जाट नाई को हैज़ा होगया उसको मैंने आप से मंगवाई एक शीशी दी, वहां भी ऐसाही लाभ हुआ। वह आज प्रातः यहां भागा हुआ आया कि साहिब दाना पानी का कुछ कहा नहीं जाता आप आज यहां हैं वदली का हुकम आया तो वहां से खवर नहीं सौ कोस पर होंगे या वीस पर कृपा करके मुझे दो शीशी "अमृतधारा" की अवश्य मंगवादो॥

आप यह समझ लीजिए इस इलाके में जहां तक भाई साहिब का दौरा है आपकी दवाई हर एक के नोक जवान होरही है। नाम तो कोई इसका जानता नहीं, शीशी ही के नाम से प्रसिद्ध है और आया गया हमारे यहां से मंगवाकर ले जाता है। संक्षिप्त आपकी वदौलत यह गुनाह कदह मानों देशोपकारककी शाखा समझी जाती है। आप दो शीशी हमारे अगले पते पर कृपा करके भेज दें"॥

लेखक—मूलराज विरादर ज्ञानचन्द सबओवरसियर"॥

ओ३म

यद्यपि ॥

चिकित्सकों व प्रतिष्ठितों के प्रशंसापत्रों, व चमत्कारों और विविधि पत्रों के भीतर भी 'अमृतधारा, का प्लेग पर गुणकारी होना सिद्ध है, परन्तु इस जगह पृथक् प्लेग (ताऊन) पर 'अमृतधारा' के गुणकारी होने के सार्टीफिकेट मुद्रित किए जाते हैं। यह दुष्ट रोग भारत वर्ष को तवाह कर रहा है। 'अमृतधारा' जैसे और विषों का मार्ग है, इस विष को भी भलीभांति दूर करती है॥

(देखो पृष्ट २०)

'अमृतधारा' यद्यपि स्वयम् भी प्लेग के वास्ते अकसीर है, परन्तु इस के साथ हमारी निर्म्माण कृत "प्लेग की गोलियाँ" भी सेवन की जावें तो सोने पर सोहागा है। प्लेग के रोगियों पर 'अमृतधारा, मुफ्त बांटने वालों को हम बहुत रियायत देते हैं॥

'अमृतधारा, के नक्कालों से कोई पूछे कि धोके में आकर जो इस को खरीद कर ऐसे कठिन रोगों पर अकृतकार्य्य रहेंगे, और उनके भरोसा पर बुरी वस्तु प्राप्त करेंगे, उसका अपराध किस पर होगा॥

अब यहां से प्लेग के सार्टीफिकेट दर्ज हैं ॥

श्रीमान् स्वामी नित्यानन्द सरस्वती अनाथ भारत सेवक मौजा भूपाल से लिखते हैं:—

"अमृतधारा" प्लेग में गुणकारी प्रमाणित हुई । मैंने एक मनुष्य को रम्बड़ियाल में प्लेग के वास्ते दी थी, ईश्वर कृपा से दुष्ट प्लेग से बचगया । और यहां भी इस शीशी ने ४ मनुष्य प्लेग से बचाए" ॥

बाबू चन्द्रप्रकाश साहिब रियासत साहनपुर

से लिखते हैं:—"किंचित् टूटे हुए शब्द किन्तु यथार्थ "अमृतधारा" की कार्य्यवाहियों के विषय में प्रेषित करता हूं । एक दिन एक चौकीदार व्याकुलता की दशा में मेरे पास आया, और कहा कि रक्तातिसार से कठिन दुःख है । शीतल जल में ४–५बूंद डालकर पिलाई गई, और एकही मात्रा से स्वस्थ होगया । आज कल जहां कहीं उभार या पीड़ा ज्ञात हुई प्लेग का सन्देह हो जाता है, ऐसे कई रोगियों पर वर्ती लाभ हुआ । "अमृतधारा" में यह विशेष गुण है, कि चाहे गिल्टी बगल में हो या रान में, बद्ध हो, या चोट, या दूसरी फुन्सी, शोथ, गिल्टी प्लेग, बगल में कछराली हो, प्रत्येक दशा में विचित्र लाभ पहुंचाती है । किसी दशा में रोग की निर्णय की विशेष आवश्यकता नहीं होती । जो कि दुनिया की और किसी दवा विशेषतः इसतरह की दवा में आज तक नहीं देखा गया है, कि सम्पूर्ण औषधियों की शिरोमणि और सच्चा नाम तथा गुण है" ॥

ला० टीकाराम साहिब ग्राम मटोर जिला मेरठ से लिखते हैं

"आपका हज़ार २ धन्यवाद करता हूं, कि आपने ऐसे दुष्ट रोग से बचाने वाली औषधि निर्म्माण करके ईश्वर सृष्टि को लाभ पहुंचाया, आपकी गोलियों व "अमृतधारा" का मैंने तजुर्बा किया, सौ में ७० राजी हुए, और दूसरी जगह की दवाइयों से ५ फी सदी भी राजी नहीं हुए। दवाई की ऐसी प्रशंसा हुई कि आस पास के ग्रामों के लोग मेरे पास दवाई लेने के लिए आए, और उन्होंने निरोग्यता लाभ की" ॥

नवाब सय्यद अबूउलकासिम साहिब भरतपुर

से लिखते हैं:—" इस भरतपुर के इतस्ततः आगरा व मथुरा में जोकि १२ कोस का अन्तर है और भरत पुर के ग्रामों में प्लेग खूब होरहा है, जिसका वर्णन किसी पिछले पत्र में करचुका हूं, मेरे पास एक शीशी "अमृतधारा" की सदैव रहा करती है अपने आवश्यक सेवन को और विशेष आवश्यकता पर इष्ट मित्रों के भी काम आती है। परन्तु इन दिनों अपनी २ पड रही है, इस कारण "अमृतधारा" की शीशी को गुप्त रक्खा जाता है। निवेदन है कि ६ शीशियां "अमृतधारा" और ८० गोलियां दवाई प्लेग की वी. पी. भेजदें" ॥

श्रीमान् ला. टीकाराम साहिब

मटोर से पुनः लिखते हैं:—"आप की भेजी हुई औषधियां दास को मिलीं, उनका सेवन उसी समय से प्लेग पर आरम्भ किया, ८ १०, रोगियों पर "अमृतधारा" व गोलियां दीगईं, और दो घण्टे के पश्चात् हाल पूछने पर ज्ञात हुआ, कि सब रोगियों को कुछ २ आराम है। और रोगी ऐसे थे, उनका सन्निपात तक हुआ २ था,

वस्त्र तक उतार करके फेंक रहे थे। चार २ मनुष्यों को धकेल देते थे, मैंने मधु के साथ सेवन कराया, एक रोगी तो सर्वथा अच्छी दशा में है, दूसरे रोगी का वात चार घण्टा पीछे फिर भड़का और फिर उसी प्रकार सेनव करने से लाभ हुआ। यह दशा "अमृतधारा" की देखकर सारे ग्राम में शोर मचगया, कि बड़ी अपूर्व औपधि है, और सारा ग्राम इसकी प्रशंसा करता है। और कलम में इतनी शक्ति नहीं, कि इसकी प्रशंसा लिखसके। और नाहीं आपकी प्रशंसा वर्णन की जा सकती है, परमेश्वर आप के कार्य्यालय, आयु और धन की उन्नति करे। कृपया २ शीशियां "अमृतधारा" २०० गोलियां प्लेग की भेज दीजिए। विलम्ब न होवे। आशा है, कि उसके आने तक मेरे पास की औपधि समाप्त होजावेगी" ॥

ला. द्वारिका प्रसाद साहिब ठेकेदार मिस्करात तहसील किशनगढ़ रियासत अलवर से लिखते हैं:—

"यहां पर प्लेग ने ऊधम मचा रक्खा है। शीशी पार्सल न० २४३१ आप की भेजी हुई समाप्त होगई है। यहां पर नियत अनुपान अर्थात् दूसरी औपधियां नहीं मिलतीं। मैंने प्लेग रोग पर इस प्रकार किया, कि दस बूंद "अमृतधारा" लेकर गिल्टी पर मालिश करके ऊपर रूई गरम करके बांध दी, और किसी को पानी में डालकर २ बूंद पिलादी, जो बाहर ग्राम के आदमी आये उनको बताशा में ४ बूंद डालकर देदिये, और कहदिया कि बताशा खिलाकर पानी पिला देना, अब तक २० रोगी प्लेग के और कुछ अतिसार के जिनका यह हाल था; कि पेट में तमाम पानी होगया था, और १ घण्टा में २०—२५ दस्त आते थे इनको उपरोक्त विधि से आराम होगया। और प्लेग ग्रस्तों में से केवल ३ को आराम नहीं हुआ, शेप सब को आराम होगया" ॥

बाबू नानकचन्द साहिब वर्म्मा सबओवर-सियर कुटनी लिखते हैं

श्रीमान् पंडित साहिब जी ! एक गांव में जहां अधिक प्लेग थी संयोग से दौरा करता हुआ मैं भी वहां पहुंच गया । वह लोग सब बाहरही झोपड़ियों में पड़े थे वहां के मालगुजार की लड़की उसी दिन प्लेग ग्रस्त हुई थी, मेरे पास "अमृतधारा" थी। मैंने वह शीशी ही मालगुजार साहब को देदी और उनसे कहा, कि यद्यपि अब इसमें थोड़ी दवाई रहगई है, परन्तु आप इसको अवश्य आजमावें सेवन विधि मैंने बता दी तीसरे दिन मालगुजार साहब का पत्र मिला कि कृपा करके तुरन्त २ शीशी मंगा दीजिये । इससे मेरी लड़की को आराम आगया है । और इसमें से थोड़ी सी दवा बची थी उससे एक दूसरे बीमार को भी आराम होगया"॥

२२ में से ३ मरे

नमस्ते ! मैंने मास मई व जून १९०७ में आप के यहां से विविध तिथियों पर "अमृतधारा" की ११–शीशियां मंगाकर प्लेग ग्रस्तों को मुफ्त बांटी, जो कदाचित् २२ थे, इनमें से केवल ३ मरे, शेष ईश्वर की कृपा से स्वस्थ होगए । जिसके लिए चक निवासी आप के बहुत कृतज्ञ हैं । सचमुच "अमृतधारा" एक ऐसी वस्तु है, कि जितना इसका आदर किया जावे कम है"॥

लेखक—राजनारायण मुखतार कोट दयाकिशन ॥

एक शीशी के मुक़ाबले में लाखों मुख छिपाती हैं

"पण्डित साहिब तसलीम ! एक पुरुष प्लेग रोग से म्रियमाण था, मैंने "अमृतधारा" ३ बूंद अर्क गुलाब में पिला दिया, तुरन्त पसीना आना आरम्भ

हुआ, ज्वर कोसों दूर भाग गया, एक घण्टा पीछे फिर वैसेही पिला दिया, उसी क्षण रोगी चंगा होगया। इसी प्रकार और रोगियों पर आज़माया ॥

"मेरे विचार में 'अमृतधारा' मृत्यु के पञ्जे से बचा सकती है, इसकी एक शीशी के सन्मुख लाखों बोतलें मुख छिपाती हैं । पट्ठों का दर्द मेरी स्त्री को चिरकाल का था, डाक्टरों और हकीमों के इलाज किए कुछ लाभ न हुआ, 'अमृतधारा' एक बार मलने से लाभ होगया" ॥

लेखक—शहाबउद्दीन ठट्टा क़लन्दरशाह ॥

१२ में से ८ बचे ॥

"अमृतधारा" २ शीशी आप से जून में लायाथा, जो कि समाप्त होने वाली हैं। इस अमृत से प्लेग के १२ मनुष्यों में से ८ मनुष्य बचे और तीन २ घण्टा के पश्चात् केवल मिश्री पर डालकर दो बूंद दी गईं" । इसके अतिरिक्त दर्द शिर, दर्ददाढ़, दर्दपेट, दर्द आंख, चोट, मुख के छाले, फोड़ाफुन्सी, प्रतिश्याय आदि जहां इसे वर्ता अमृत ही पाया । परमात्मा आपको इसका फल देवे" ॥

लेखक—मंगलसिंह उम्मीदवार क़ानूनगोय सातरोड ॥

हज़ार में से सात सौ बचे

"निवेदन यह है, कि प्रथम आपको यह जितलाता हूं, कि प्लेग में 'अमृतधारा' और प्लेगवटिकाओं ने क्या २ गुण किए ॥

प्रथम—गोलियां मैं स्वयम् भी सेवन करता रहा हूं, और रोगियों को भी खिलाता रहा हूं, गोलियों ने तो अवसर पर प्रभाव दिखाया, और बहुत मनुष्यों के जिन्हों ने लग भग आठ गोलियां खाईं आराम होगया । परन्तु गोलियां कम से कम ६ खाते रहे, और अधिक से अधिक पांच । 'अमृतधारा' ने (विविध

रोगों वातग्रस्त, निमूनियां, सरसाम, सन्निपातादि (विस्तार भय से लिख नहीं सकता) प्लेग से जो २ रोग उत्पन्न हुए गुण किया। मेरे तजुर्बे में प्लेगग्रस्त इन चार सालों में, रजिस्टर संख्या में हज़ार गुज़रे, जिनमें से सात सौ तो बचे, शेष कुछ हकीमों के पास गए शेष मर गए" ॥

लेखक—पण्डित दीवान चन्द चोपड़ा ॥

रहमतअली साहिब पटवारी हलका गूजरकतराला लिखते हैं:—

"पण्डित साहिब! अर्ज़ है कि मैंने तीन शीशियां 'अमृतधारा' की आप से मंगवाई, और प्लेगग्रस्तों व दाढ़ दर्दादि पर मुफ्त लोगों को बांटी, जिस से लोगों को बहुतही लाभ हुआ। जिस रोगी को प्लेग की दवा खिलाई और गिल्टी पर लगाई सर्वथा आराम होगया" ॥

श्री मान् बाबा काहन दास साहिब लाहड़ी बिलोचिस्तान से लिखते हैं:—

"निवेदन है कि पहिले जो दो पार्सल मेरे पास आए, जिनमें चार शीशियां थीं, वह सब खर्च होचुकी हैं। अब केवल हमारे ग्राम के इतस्ततः प्लेग है। इस लिए चार शीशी "अमृतधारा" वी० पी० कर दें" ॥

जनाब द्वारिका प्रसाद साहिब ठेकेदार आबकारी तहसील किशनगढ़ रियासत अलवर से लिखते हैं:—

"पालागन के पश्चात् निवेदन है, कि मैंने एक शीशी "अमृतधारा" आपके यहां से मंगवाई थी, प्लेग रोगियों को मुफ्त बांटी, बहुत से रोगियों को

लाभ हुआ, जिससे वह 'अमृतधारा' और आपको हृदयगत भाव से आशीश देते हैं, अतएव निवेदन है, कि स्वास्थ्य रक्षार्थ ४ शीशी 'अमृतधारा' वी० पी० द्वारा शीघ्र भेज दीजिये। क्योंकि ईश्वरी सृष्टि मुसीबत में ग्रस्त है। देर होने से लोगों के हृदय बुझ जायगे"॥

जनाब अब्दुलग़फ़ूर साहिब सौदागर अकबरपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद लिखते हैं:—

"आपकी शीशियां 'अमृतधारा' गोली ताऊन सहित सेवन कीं, केवल अर्द्ध शीशी और बाकी है। और चालीस पचास रोगी प्रति दिन आते हैं। मैं स्वयम् प्लेग में ग्रस्त था, घर के लोग सब को बराबर बांटते रहे। मुझको कुछ सुध न थी, कि संख्या मालूम हो, परन्तु स्वस्थ होने पर पूछा तो ज्ञात हुआ कि लगभग पांचसौ मनुष्यों को औषधि दी गई है। जिसमें ४० मनुष्य मर गए शेष सब राज़ी होगए। सब लोग घरों से बाहर पड़े थे। आप ४ शीशी 'अमृतधारा' और २ शीशी प्लेगवटी तुरन्त वी० पी० द्वारा भेज दें, ताकि निर्धन लोग वञ्चित न रहें। आप की और औषधि की प्रशंसा इतस्ततः होरही है। आज तक ऐसी औषधि किसी ने निर्म्माण नहीं की है, न होगी। इस दवा की प्रशंसा असम्भव है। एकही दवा असंख्य रोगों को लाभ देती है, अतः तुरन्त भेजिए"॥

९९ पुरुष और ४८ स्त्रियां॥

'अमृतधारा' की शीशियां प्राप्त हुईं, परन्तु ताऊन यहां पर बहुत ज़ोर पर है, कोई ग्राम बाकी नहीं है। अब अधिकांश लोग ग्रामों से औषधि अर्थ आते हैं। उनको शीशी में दी जाती है, इस कारण से अधिक ख़र्च होता है। मैं पूर्णतयः

'अमृतधारा' की परीक्षा करचुका हूं, यह औषधि प्रत्येक रोग पर रसायन है। इसकी प्रशंसा नहीं करसकता हूं। निस्सन्देह आपने कमाल किया है। सुना जाता है, कि प्राचीन काल में लुक़्मान, अरस्तू, फ़लातूं, हकीम बड़े नामी थे, वैसे ही इस काल में आप भी हैं। इसके सन्मुख सब औषधियां तुच्छ हैं। अब की बार प्लेग में बहुत से मनुष्य स्वस्थ हुए। दो शीशियां मैंने खर्च कीं। ९९ पुरुष और ४८ स्त्रियों पर। जिसमें से ७ पुरुष और एक स्त्री मर गई, ९२ पुरुष और ४७ स्त्रियां अच्छी हुईं, केवल लगाने और पानी में पिलाने से, एक शीशी और बाकी है। खर्च अधिक है, अतः ५ शीशी 'अमृतधारा' रियायती मूल्य पर वी० पी० द्वारा भेज दीजिए। बीमार बहुत होते हैं और सब लोग आते हैं। अब हस्पताल और हकीम के पास बहुत कम लोग जाते हैं। जो दवा लेकर जाता है वह औरों को कहता है, वहां के लोग आते हैं, इस समय आपकी औषधि की धूम है"॥

लेखक—अबदुलग़फ़ूर सौदागर डाकखाना
अकबर पुर ज़िला फ़ैज़ाबाद

श्रीमान् रामानन्द साहिब असिस्टैण्टक्लर्क दफ़्तर पुलिस ज़िला गोंडा लिखते हैं:—

'अमृतधारा' निम्न लिखित रोगों में अत्यन्त गुणकारी हुई है, और मैं स्वयम् तजुरबा कर चुका हूं। सब प्रकार का शिरशूल, प्रतिश्याय, उदरशूल, कर्णशूल, दन्तशूल, तालशूल, अतिसार, आमातिसार, सब प्रकार के फोड़े फुन्सीआदि ॥

गतवर्ष जब मैं छुट्टी लेकर घर पर गया, तो वहां पर विशूचिका था, संयोग से मेरे पास 'अमृतधारा' की शीशी थी, जिसमें कुछ विन्दु शेष रह गए थे। मैंने पहिले दो रोगियों को ४-४ विन्दु बताशा में दिया, और एक को केवल दो विन्दु वैसेही दे दिए। ईश्वर कृपा से तीनों रोगियों को स्वास्थ्य प्राप्त होगई। उस समय से मैं 'अमृतधारा' और आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूं ॥

मैंने यह भी देखा है, कि 'अमृतधारा' दो रोगियों की गिल्टियों पर जो प्लेग में ग्रस्त थे अत्यन्त गुणकारी हुई ॥

र मिश्रत सार्टी-

 जाते हैं ॥

ओ३म्

यहां से आगे कुछ अ॥

मिश्रित

सार्टीफ़िकेट दिये जाते हैं। इसमें सब प्रकार के सार्टीफिकेट सम्मिलित हैं। देखिए किन २ रोगों पर 'अमृतधारा' अकसीर प्रमाणित हुई है। जो श्रीमान् इन पत्रों को विचार पूर्वक पढ़ेंगे उनको 'अमृतधारा' के लाभ अच्छी तरह ज्ञात होजावेंगे, और वह

इस योग्य होजावेंगे

कि अपनी बुद्धि से यथा अवसर इसे सेवन करसकें, जो श्रीमान सूची में से किसी साहिब के असली पत्र को देखना चाहें हम से देख सकते हैं, जब कभी किसी महाशय को लाहौर आने का अवसर हो. जो महाशय किसी प्रशंसा-पत्र दाता से पत्र व्यवहार करना चाहें वह सानन्द कर सकते हैं ॥

अब इसके आगे कुछ मिश्रत सार्टी-फ़िकेट दर्ज किये जाते हैं ॥

गिल्टियां जाती रहीं ॥

"जिन गिल्टियों के विषय में कार्ड लिखा था, वह 'अमृतधारा' के ८ दिन लगाने से जाती रहीं । सचमुच यह दवाई बहुत लाभ देने वाली है" ॥

लेखक—ताराचन्द साकिन हिल पो० मीरपुर ॥

कटि पीड़ा ॥

"मुझे एक वार 'अमृतधारा' के आज़माने का अवसर मिला है, मैंने नमूनावत आप से मंगाई थी । इन्हीं दिनों मद्य के नशे में एक नाली में गिर पड़ा, जिस से मेरी कटि में दर्द आरम्भ हुआ था । 'अमृतधारा' मालिश करने से २-३ दिन में आराम हो गया" ॥

लेखक—टांगा एजण्ट ॥

म्लेरिया ज्वर ॥

"मैं कृतज्ञतापूर्वक आपको सूचित करता हूं, कि आपकी दवाई "अमृतधारा" ने मेरे समस्त कुटुम्ब और स्टाफ़ के आदमी जो म्लेरिया ज्वर में ग्रस्त थे, जिन के वास्ते आपको बुलाने की तार दी थी, और आपने उत्तर दिया था, कि 'अमृतधारा' ही सेवन करावें, सर्वथा स्वस्थ हो गए । ऐसी

हितकर दवाई जो प्रत्येक रोग में वर्ती जा सकती है, प्रत्येक मनुष्य को अपने पास रखनी चाहिये। और खर्च व कष्ट दोनों से बचना चाहिए" ॥

लेखक—झण्डाराम स्टेशन मास्टर बढलाडा ॥

दद्रु दो दिन में दूर ॥

'अमृतधारा' में आप ने कोई जादू भर दिया है, थोड़े तेल सरसों में १·२ बूंदें डाल दी, और दद्रु पर लगाया, २ दिन में ही आराम होगया। इसी को बालकों की फुन्सियों पर लगाने से सब दूर हो गई। एक के स्थान में दो शीशियां भेज दें" ॥

लेखक—ईश्वर दास स्टेशन मास्टर फीरोजपुर शहर ॥

अतिसार, कमला, ज्वर को कैसे गुण किया ?

"आप से जो "अमृतधारा" की शीशी मंगवाई थी, उस में से २·२ बूंद मोचरस, मिश्री, में मिला कर चावलों के पानी से एक पेचिश के रोगी को दीं, एक ही दिन में आराम हुआ। फिर एक कामला ग्रस्त को छाछ भैंस से पिलाई तो ४ दिन में आराम हुआ, फिर ज्वर के २ रोगियों को सत्वगिलोय में ३ बूंद डाल कर सौंफ के अर्क से खिलाई २ दिनमें आराम हुआ ! आप की 'अमृतधारा' सचमुच सराहनीय और अमृत ही है" ॥

लेखक—पं० राधाकृष्ण शर्म्मा नावा ॥

दश मिण्ट में दर्द दूर हुआ ॥

"श्रीमान् पण्डित जी ! प्रणाम। वर्ष भर के भीतर एक दर्जन शीशियां

मंगवा चुका हूं। 'अमृतधारा' की जितनी प्रशंसा की जावे कम है। न जाने इसमें ईश्वर ने क्या २ गुण भर रक्खे हैं, बुद्धि काम नहीं करती। आज तक मैंने ऐसा रोग नहीं देखा जिसमें इसने लाभ न दिया हो। अभी एक सप्ताह का हुआ, कि मेरे पिता के यकृत शूल सरदी के कारण ऐसा उठा कि त्राहिमान्! रात्रि भर नींद न आई, प्रातः मैंने 'अमृतधारा' ४ बूंद थोड़े से तैल में मिलाकर मालिश किया, और ऊनी वस्त्र से लपेट दिया, ईश्वर कृपा से १० मिण्ट में दर्द दूर हो गया। फिर थोड़ा सा दर्द उठा, फिर वही 'अमृतधारा' सेवन कराई गई अब आप की कृपा से दर्द नहीं है। मुझे अब 'अमृतधारा' की ३ शीशियों की आवश्यकता है, वी० पी द्वारा भेजदें" ॥

लेखकः—रामरत्न लाल॥ मैनेजर॥ कोर्ट आफ़ वार्डस॥

घर में चोर आए॥

"निवेदन है, कि १३ जोलाई की रात को मेरे घर में चोर आए, और मुझे खबर होगई। इस लिए मैं उन से लड़ पड़ा, और भूषणादि जो वह ले चले थे छीन लिया। और दो लाठियां भी छीन लीं। परस्पर खूब लड़ाई की, जिस से एक घाव शिर में आया, एक बाज़ू में आया, गोडे की चपनी टूट गई। उस समय रक्त को बन्द करने और दर्द के वास्ते 'अमृतधारा' ने जो काम किया वह ईश्वर जानता है। जिस समय मुझे चारपाई पर लिटाया गया, उसके २ मिण्ट पीछे मुझे 'अमृतधारा' का ध्यान आया। उसी क्षण शीशी खोल कर लगाई गई। ज्यूंहीं घावों पर लगती गई त्यूंहीं दर्द और रुधिर बन्द होता गया। ५ मिण्ट के पीछे ऐसा ज्ञात होने लगा कि कोई घाव हुआ ही नहीं। और खांड में ४ बूंद मिलाकर खा भी ली, और लिहाफ़ ओढ़ कर सो गया। दो घण्टे तक गूढ़ नींद आई। आप विचार करें हड्डियों का टूटना, शिर में घाव होना, और फिर उसका कष्ट मालूम न होना, यह सब 'अमृतधारा' का चमत्कार था। ईश्वर आपको प्रसन्न रक्खे जो आपने ऐसी औषधि निर्म्माण की" ॥

लेखकः—रामलुभाया ठेकेदार सरगोधा ॥

हितकर दवाई जो प्रत्येक रोग में वर्ती जा सकती है, प्रत्येक मनुष्य को अपने पास रखनी चाहिये। और खर्च व कष्ट दोनों से बचना चाहिए" ॥

लेखक—झण्डाराम स्टेशन मास्टर बढलाडा ॥

दद्रु दो दिन में दूर ॥

'अमृतधारा' में आप ने कोई जादू भर दिया है, थोड़े तेल सरसों में १-२ बूंदें डाल दी, और दद्रु पर लगाया, २ दिन में ही आराम होगया। इसी को बालकों की फुन्सियों पर लगाने से सब दूर हो गई। एक के स्थान में दो शीशियां भेज दें" ॥

लेखक—ईश्वर दास स्टेशन मास्टर फीरोजपुर शहर ॥

अतिसार, कमला, ज्वर को कैसे गुण किया ?

"आप से जो "अमृतधारा" की शीशी मंगवाई थी, उस में से २-२ बूंद मोचरस, मिश्री, में मिला कर चावलों के पानी से एक पेचिश के रोगी को दी, एक ही दिन में आराम हुआ। फिर एक कामला ग्रस्त को छाछ भैंस से पिलाई तो ४ दिन में आराम हुआ, फिर ज्वर के २ रोगियों को सत्वगिलोय में ३ बूंद डाल कर सौंफ के अर्क से खिलाई ३ दिनमें आराम हुआ ! आप की 'अमृतधारा' सचमुच सराहनीय और अमृत ही है" ॥

लेखक—पं० राधाकृष्ण शर्म्मा नावा ॥

दश मिण्ट में दर्द दूर हुआ ॥

"श्रीमान् पण्डित जी ! प्रणाम। वर्ष भर के भीतर एक दर्जन शीशियां

मंगवा चुका हूं। 'अमृतधारा' की जितनी प्रशंसा की जावे कम है। न जाने इसमें ईश्वर ने क्या २ गुण भर रक्खे हैं, बुद्धि काम नहीं करती। आज तक मैंने ऐसा रोग नहीं देखा जिसमें इसने लाभ न दिया हो। अर्सा एक सप्ताह का हुआ, कि मेरे पिता के यकृत शूल सरदी के कारण ऐसा उठा कि त्राहिमान्! रात्रि भर नींद न आई, प्रातः मैंने 'अमृतधारा' ४ बूंद थोड़े से तेल में मिलाकर मालिश किया, और ऊनी वस्त्र से लपेट दिया, ईश्वर कृपा से १० मिण्ट में दर्द दूर हो गया। फिर थोड़ा सा दर्द उठा, फिर वही 'अमृतधारा' सेवन कराई गई अब आप की कृपा से दर्द नहीं है। मुझे अब 'अमृतधारा' की ३ शीशियों की आवश्यकता है, वी० पी द्वारा भेजदें" ॥

लेखकः—रामरत्न लाल॥ मैनेजर॥ कोर्ट आफ् वार्ड्स॥

घर में चोर आए॥

"निवेदन है, कि १३ जोलाई की रात को मेरे घर में चोर आए, और मुझे खबर होगई। इस लिए मैं उन से लड़ पड़ा, और भूषणादि जो वह ले चले थे छीन लिया। और दो लाठियां भी छीन लीं। परस्पर खूब लड़ाई की, जिस से एक घाव शिर में आया, एक बाजू में आया, गोडे की चपनी टूट गई। उस समय रक्त को बन्द करने और दर्द के वास्ते 'अमृतधारा' ने जो काम किया वह ईश्वर जानता है। जिस समय मुझे चारपाई पर लिटाया गया, उसके २ मिण्ट पीछे मुझे 'अमृतधारा' का ध्यान आया। उसी क्षण शीशी खोल कर लगाई गई। ज्यूंहीं घावों पर लगती गई त्यूंहीं दर्द और रुधिर बन्द होता गया। ५ मिण्ट के पीछे ऐसा ज्ञात होने लगा कि कोई घाव हुआ ही नहीं। और खांड में ४ बूंद मिलाकर खा भी ली, और लिहाफ़ ओढ़ कर सो गया। दो घण्टे तक खूब नींद आई। आप विचार करें हड्डियों का टूटना, शिर में घाव होना, और फिर उसका कष्ट मालूम न होना, यह सब 'अमृतधारा' का चमत्कार था। ईश्वर आपको प्रसन्न रक्खे जो आपने ऐसी औषधि निर्म्माण की"॥

लेखकः—रामलुभाया ठेकेदार सरगोधा॥

हास्पिटल असिस्टण्ट साहिब को ॥

"श्री मान् पण्डित जी ! मैंने ४ शीशी 'अमृतधारा' आपके कार्य्यालय से मंगवाई थीं, वह पहुंचीं और उन से वहुत लाभ हुआ। बाबू कालिका प्रसाद साहिब हास्पिटल असिस्टैण्ट जो मेरे वड़े मित्र हैं, उनको इसकी बड़ी आवश्यकता है। ४शीशी 'अमृतधारा' डाक्टर साहिब के नाम वी० पी० द्वारा भेज दीजिए। मैं आपका कृतज्ञ हूंगा" ॥

लेखकः—गणेश प्रसाद मुहर्रिर वलिया ॥

विचित्र प्रभाव गोंदा दूर ॥

"आप की भेजी २ शीशी 'अमृतधारा' पहुंची। उसके प्रभावों को देख कर अत्याश्चर्य्य और हर्ष होती है, कि भारतीय चिकित्सा ने भी ऐसी उन्नति की, इस काल में जवकि सम्पूर्ण जगत् में डाक्टरी का डंका वजरहा है, ऐसी प्रभाव शाली औषधि निर्म्माण की। और विशेषकर हर्ष इसी कारण से हुआ। मैं आपको इस आविष्कार पर बधाई देता हूं। और देशीय भाइयों को ऐसे अनुपम पदार्थ के मिल जाने पर यदि 'अमृतधारा' का मूल्य हज़ार रुपया प्रति शीशी रक्खा जाय तो भी उसके जादू भरे गुणों की तुलना में कुछ नहीं। वाज़ रोगों पर आज़माने का अवसर हुआ यथाः—वमन, पेचिश, विच्छू, अतिसार, उदरशूल, शिरशूल, मतली इत्यादि २। परन्तु दो बातें सर्वथा नई मेरे तजुर्बे में आईं। एक सात मास के वालक के दांत निकलते थे, ज्वर और दस्तों का वेग था, मैंने सौंफार्क में एक बूंद डाल कर ४-४ घण्टा के पीछे दिया। और मसूढ़ों पर एक बूंद दैनिक मलदी। जिस से कष्ट, ज्वर, दो तीन दिन में दूर होगए, और ७-८ दिन में दन्त सुगमता से निकल आए ॥

"मेरे एक मित्र ने अपने हाथ पर एक आवश्यकता से गोंदा (फूल) डलवाया था, उन्हों ने हंसी से दैनिक २-३ बूंद इस पर मलना आरम्भ किया। मैं मना करता था, कि यह औषधि यहां नहीं मिलती लाहौर से मंगानी पड़ती है, विना आवश्यकता खराब न किया करो, परन्तु वह नहीं मानते थे, कहते थे कि 'अमृतधारा' की परीक्षा है। ईश्वर की लीला उनके मखौल ने उनको 'अमृतधारा' के जादू भरे प्रभावों का विश्वासी कर दिया। २० दिन में वह गोंदा दूर हो गया। यह वह गोंदा है जो हम लोगों के हाथ मुंह पर वाल्यावस्था में ही हरे रंग से बनाया जाता है। हमारे हां इस गोंदा को पचावदू कहते हैं, ईश्वर जाने उत्तरी भारत में क्या कहते हैं"॥

लेखकः—गुलाम दस्तगीर हैदराबाद दक्खन॥

धन्य हो आप॥
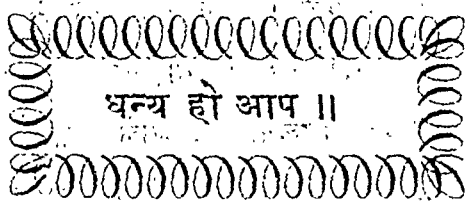
"मैंने 'अमृतधारा' को बहुत जगह आजमाया और हितकर पाया, जुकाम, खांसी, नेत्रपीडा, कर्णपीडा, शिरपीडा, उदरपीडा, मतली, अजीर्ण, चोट, मस्तिष्क का चक्कर खाना, और बहुत जगह सेवन किया है, बहुत हितकर प्रमाणित हुई। यदि सब लिखें तो एक पुस्तक बन जाय। परन्तु कुछ विचित्र चमत्कार यहां अंकित करता हूं:—(१) रात को मेरे भाई के पेट में दर्द हुआ और वह मारे दर्द के कहने लगा, कि मैं मरगया, मौत को आवाजें मारने लगा, मैंने झट एक बूंद पानी में डाल कर पिलादी। ज्यूहीं वह भीतर गई उसे आराम मालूम होने लगा, और फिर उसी क्षण एक वमन हुई। और साथही पीड़ा जाती रही॥

(२) एक स्त्री की आखें बहुत खराब होगईं, निशदिन निद्रा नहीं आती थी, एक दिन मैंने देखा तो उसका बुरा हाल था, एक आंख में थोड़ी सी फूली भी होगई थी, मैंने पहिले दिन थोड़ी सी आंखों के बाहर लगाई, यद्यपि बहुत चुभी तथापि पीड़ा कुछ कम हो गई, और फिर दूसरे दिन आप के सेवन विधि पत्रानु-

सार अर्द्ध खशखाश के लग भग आंख में डाल भी दी, बस फिर क्या था, पहि
थोड़ी सी चुभी फिर दर्द भी जाता रहा, और नेत्र भी खुल गए। और वह मुझ
आशीशें देने लगी। इसी प्रकार दैनिक नेत्रों में डालने से लाली आदि स
मिट गई, और नेत्र अच्छे हो गए॥

(३) एक दिन एक मनुष्य मेरे पास आकर कहने लगा, कि मेरे पांव ऊ
से फट गए हैं, और बहुत पीड़ा होती है। मैंने लगभग अर्द्ध बूंद के उसके प
पर मलदी, दूसरे दिन मुझे फिर मिला, कहने लगा, यह तो विचित्र है। उ
समय से आराम होगया है। विचित्र औषधि है॥

(४) इसी प्रकार एक विधवा स्त्री कास से व्याकुल मेरे पास आई, मैंने उ
दो बूंदें पीने को दीं, वह पीतेही कहने लगी अब मैं बच गई, अब मेरा श्वा
टिक गया, इसी प्रकार दूसरे दिन भी दी, बस फिर उसने आकर नहीं कहा
मुझे खांसी है। जब जब मिलती है आशीशें देती है। वाह! पण्डित साहिब
आपने औषधि क्या बनाई एक जगत् को विस्मित कर दिया है। दवाई क्य
है जादू है। इसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। जिस रोग पर दी जाती
तुरन्त आराम आजाता है। यदि किसी के शिर दर्द हुआ इधर जरा सी लगा
उधर आवाज आई, कि अब आराम है। और जादू की तरह शिर में फिरगई य
तो जादूसे भी बढ़ गई। एक मित्र से सुना वह कहने लगा एक दिन एक मनु
बालक को संग लिए हुए आया, और कहने लगा २ मास से इसके कान
दर्द है जिस से कुछ खाया नहीं जाता। और आज बहुत व्याकुल है। मैंने ३
बूंद, 'अमृतधारा' की तैल में मिला रक्खे थे, केवल २ बूंद डाल दिए वह च
चला गया। फिर सात दिन के पीछे मैंने उससे पूछा क्या हाल है? वह कह
लगा वाह यह तो कोई जादू है उसी क्षण से आराम है। श्रीमान् जी बहुत
लोग आप के प्रशंसक हैं। सचमुच यह घर का वैद्य है अधिक क्या कहूं, बहु
जगह सेवन की, तत्काल लाभ होगया है। वाह पण्डित साहिब धन्य हो आप"॥

लेखक—भक्तसिंह चड्डा॥

टिंकचर आयोडीन लगाने से लाभ नहीं हुआ था ॥

"नमस्ते । मेरे भाई के वाम फुप्फुस में जो सिल से बीमार हुआ था, चिरकाल से पीड़ा हो रही थी, कई वार टिंकचर आयोडीनादि लगवाई, परन्तु आराम न हुआ। और अन्त में आपकी 'अमृतधारा' की मालिश से ५ मिण्ट के भीतर रोगी को पूर्ण स्वास्थ्य होकर निद्रा आई। इस अनूपम औषधि के आविष्कार से आपने वास्तविक पवलिक पर वहुत उपकार किया है" ॥

लेखकः—गणेशदास उपमंत्री आ०स० ॥

तीन विन्दु से पेट हलका ॥

"जनाव वैद्य साहिव ! तसलीमात । आपकी प्रत्येकौषधि शीघ्र गुणकारी और प्रभावशाली है । चार वालकों ने (दो दो वर्ष के, और दो तीन २ वर्ष के थे) ज्वर और अतिसार से निरोग्यता पाई है । और दो युवकों ने जिनके दांत में दर्द था, सेवन विधि पत्रानुसार इसके दांत पर रखतेही दर्द जाता रहा । एक मनुष्य के शिर में दर्द था, मस्तक पर मलतेही दर्द जाता रहा, दो लड़कियों को जिनकी आयु ८–९ वर्ष की थीं पेट में पीड़ा थी, गरम पानी के साथ सेवन कराया दोनो अच्छी होगई। एक मनुष्य की आंख सूज गई थी, नेत्र के इतस्ततः लेप कर देने से शोथ दूर होगया । एक मनुष्य अधिक मार्ग चलने के कारण इतना पानी पी गया कि पेट फूल गया, वह व्याकुल था, ताजे पानी के साथ कुछ वूंद 'अमृतधारा' उसे पिलाई गई, तत्काल पेट हलका होगया । आपको और मुझको आशीषें देने लगा, क्योंकि मैं मुफ्त औषधि वितरण करता हूं। मेरे मित्र और सव शिष्य आपको आशीशें देते रहते हैं; कि आपको ईश्वर चिरकाल तक सकुशल रक्खे" ॥

लेखकः—करामत हुसेन मुदर्रिस वसन्तपुर ॥

अपस्मार ॥

"नमस्ते ! मैंने एक शीशा "अमृतधारा" का पहिले आप से मंगाई थी, उसका लाभ मैं ही जानता हूं, दो तीन रोगों के लिए अकसीर का हुकम रखती है, नेत्रशूल, उदरशूल, शुक्रमेह, आदि। मैंने एक अपस्मार के रोगी के (जबकि रोग का वेग था और वह मुर्छित था) मुख में चार पांच बूंद डाला तुरन्त आराम अगया" ॥

लेखकः—काहनसिंह मुदर्रिस चक न० ३४ हलांवाला ॥

कौड़ी का उतरना ॥

'अमृतधारा' की ४ शीशियां मेरे छोटे भाई ने मंगाकर दीं, चारों खोल कर खूब आजमाई गई, बहुत गुणकारी और शीघ्र प्रभावशाली सावित हुई। जिसको दवाई दी गई आराम हो गया। यहां तक कि एक दिन दो पहर से मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब होगया। रात्रि के समय दोनों पसलियों के मोड और अमाशय में कठिन पीड़ा आरम्भ हुई, लेटना दूभर होगया, कोई कहता था कि कौड़ी उतर गई है, इसको मलवालो, कोई चतुर मनुष्य इसको चढ़ाता है। परन्तु रात्रि के समय मनुष्य कहां खोजा जावे, थोड़ी देर में मैंने उसपर 'अमृतधारा' डाल कर धीरे २ मल दी, दो तीन मिण्ट में बहुत कठिन पीड़ा जाता रही, और मुझ को निद्रा आई। मैं आप जैसे योग्य पुरुष की कहां तक प्रशंसा करूं" ॥

आपका—बलदेवसिंह ब्रांचपोस्टमास्टर ॥

आर्दित वात ॥

"आप की 'अमृतधारा' का पार्सल मिला, एक लकवा के रोगी पर आजमाया, सचमुच रामबाण पाया। दवा आप के लेखानुसार सेवन की गई" ॥

लेखक—हकीम अबदुल सत्तार गन्टूर ॥
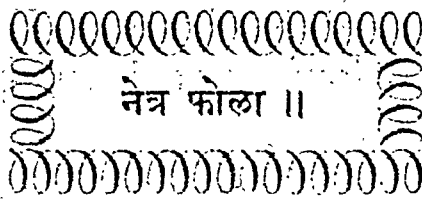
नेत्र फोला ॥

"एक मनुष्य के नेत्र में फोला पड़ गया, इसके लगाने से बहुत कम पड़गया ॥

(२) एक मनुष्य का हाथ रेलवे पर गिर कर उतर गया था, इसके लगाने से ठीक होगया । तिल के तेल में लगाई गई ॥

(३) एक मनुष्य की दाढ़ में कठिन दर्द था, इसके दो वार के लगाने से जाता रहा ॥

(४) कई मनुष्यों को भिड़ों ने काटा था, इसके लगाने से शीघ्र आराम आगया सोज़ तक नहीं हुई ॥

(५) विच्छू के काटे पर तजुर्वा किया गया गुण कारी पाया" ॥

लेखकः—गेंदनमल वर्मा नरखेड़ा ॥
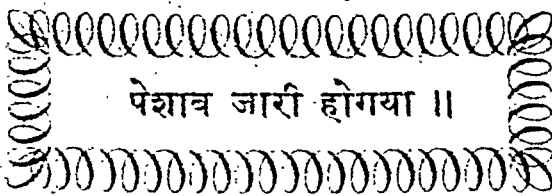
पेशाव जारी होगया ॥

"नमूना 'अमृतधारा' मिला, एक मनुष्य का पेशाब ३ दिन से रुका था, यूनानी इलाज किया गया कुछ लाभ न हुआ, डाक्टरी किया गया वह भी हितकर न हुआ । चार २ रेचक दिए गए, न मल आया न मूत्र । मैंने 'अमृतधारा' पानी में दिया, तीन वार के पिलाने से ४ घण्टा के पीछे खूब पेशाब हुआ, रोगी जो व्याकुल था अब अच्छा है" ॥

लेखकः—महम्मद अमीन उलदहर जालस ॥
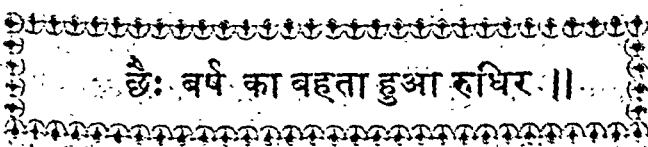
छैः वर्ष का बहता हुआ रुधिर ॥

"आपकी अद्वितीय औषधि 'अमृतधारा' तो मुरदों को जीवित करती है

मेरे एक नातेदार के दांत से छः वर्ष से एक पाव के लगभग खून आता था, इस अमूल्य औषधि के सेवन से सर्वथा स्वस्थ हो गया, और आपका बहुतही कृतज्ञ है" ॥

लेखकः—रुचिराम मञ्जालु वर्नेवाल ॥

कठिन दर्द गुर्दह से व्याकुल ॥

"आप की आविष्कृत 'अमृतधारा' की बड़ी प्रशंसा सुनता था, परन्तु अब स्वयम् एक विशेष तजुर्बा इस दवा का किया, एक मनुष्य दर्द गुरदह से बहुत व्याकुल था, मूर्च्छा पर मूर्च्छा आती थी, मृत्यु के समीप पहुंच चुका था, कि यह दवा दर्द स्थान पर मालिश की गई, १५ मिण्ट के भीतर ही शान्ति हुई। और ऐसा दर्द गया, कि फिर दूसरा दौरा नहीं हुआ, अतः आप की सेवा में निवेदन है, कि इस पत्र के पहुंचने पर 'अमृतधारा' की तीन शीशियों का वैल्यू तत्काल रवाना करें" ॥

लेखकः—महम्मद अबदुलमजीद बांकेपुर ॥

डाक्टर बना दिया है ॥

"श्रीमान् जी नमस्ते ! एक मास के लगभग हुआ है, कि एक पार्सल में ३ शीशी 'अमृतधारा' आप से मंगवाई थी। अबतक वह तीन शीशियां सर्व साधारण में खर्च होगई हैं, मानों कि आप की शीशी ने मुझे डाक्टर बना दिया है, और हंसी आती है। कोई दिन खाली नहीं जाता, कि रोगी मेरे पास न आवे, परन्तु ईश्वर की कृपा से सब को आराम हो जाता है। अब मेरे पास थोड़ी सी भी दवा नहीं रही। आप छोटती डाकद्वारा दो शीशियां वी० पी० द्वारा मेरे

पास भेज कर कृतज्ञ करें। आयु पर्यन्त आपका दास रहूंगा" ॥

लेखकः—बद्रीनाथ सब पोस्टमास्टर गोगीरा॥

तीन रोगों में एक २ मात्रा पर्य्याप्त हुई ॥

"जो तजुर्बा किया गया है सो लिखा जाता हैः—

(१) एक हवलदार मेरे पास आया और उसने कहा, कि मैं ८–१० दिन से **आधाशीशी** की पीड़ा से व्याकुल हूं। मैंने एक बार उसी क्षण दवाई लगाई, और फिर दूसरी बार रात को लगाया, वह पहिली ही बार के लगाने से अच्छा होगया। दूसरी बार इस लिए लगाया कि कदाचित् फिर पीड़ा न हो ॥

(२) **दमा का रोगी** था, वह हस्पताल में गया, ३ दिन के पीछे वापिस आया, परन्तु वह वैसाही बीमार था, मैंने उसको मात्रा ४ बूंद दी और छाती पर मालिश करने को, उसने पुनः दवाई नहीं खाई, हां छाती पर पुनः मालिश कराई, वह स्वस्थ हो गया ॥

(३) मैं सदैव सफर में रहता हूं, और प्रायः लिखने पढने का काम अधिक रहता है, सप्ताह में अवश्यही एक दो बार शिर दर्द करता था, मुझको एक समय का लगानाही पर्याप्त है। और मैं बराबर सफर करता हूं। सचमुच देशोपकार-कौषधि **'अमृतधारा'** बहुत उत्तम और जैसी इसकी प्रशंसा लिखी है उसके अनुसार है, नाकि इश्तिहारी दवा फ़रोशों के अनुसार, जो अपने ही देश को लूट रहे हैं। मैं बड़े हर्ष से आप की **'अमृतधारा'** के अनुभूत होने के विषय में प्रशंसा पत्र धन्य वाद के साथ भेजता हूं" ॥

दासः—मुन्शी नबीबख़्श खां पलटन नं० १२६ बिलोचिसतान
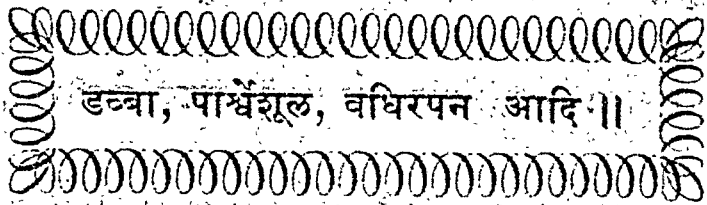
डब्बा, पार्श्वशूल, वधिरपन आदि ॥

"प्रणाम के पश्चात् निवेदन है, कि दास प्रति वर्ष कई शीशी 'अमृतधारा' की मंगाकर मुफ्त वितरण करता हूं, इसके गुण असंख्य प्रगट हो रहे हैं, न जाने ईश्वर ने इसमें क्या जादू भर दिया है, ताजा वृतान्त अंकित करता हूं। २८ जनवरी की रात्रि को ८ बजे सफर से वापिस आया तो घर में आकर देखा, कि मेरा छोटा बालक जो लगभग ५-६ मास का था डब्बा रोग में ग्रस्त है, 'अमृतधारा' २ बूंद गुलाब के क्वाथ में दी, तुरन्त आराम हुआ। फ़रवरी में मुझे लायलपुर जाने का अवसर हुआ, चक नं० ७४ में रात्रि के समय एक दुकानदार की दूकान में बैठे हुए ज्ञात हुआ कि उसका बच्चा डब्बा रोग में ग्रस्त है। तत्काल जेब से शीशी निकाल दो बूंद अर्क गुलाब में मिलाकर बालक को दी, और पसली पर मालिश कर दी झट आराम हुआ। ग्राम नं० ६६ में एक स्त्री को निमोनिया पार्श्वशूल, ज्वर, खांसी और शिरदर्द था, मालिश की गई और सौंफ, अजवायन रगड़ कर उसके पानी में चार बूंद दी, मस्तक पर मालिश करदी, पूर्ण स्वस्थ होगई। ग्राम नं० ४६ में एक मनुष्य को सुनाई न देता था, बादाम रोगन में मिलाकर एक बूंद कान में डाली गई, सुनने लग पड़ा मैं धर्म्मार्थ देता हूं, परन्तु क्या करूं बड़ा धनवान् नहीं हूं। अन्यथा सौ शीशी इकट्ठी खरीद कर बांट दूं" ॥

लेखकः—काशीराम दत्त मुदर्रिस मदरसा पिंडी ॥
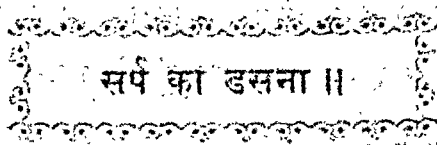
सर्प का डसना ॥

"आपकी 'अमृतधारा' की निम्न लिखित रोगों पर परीक्षा की गई, सर्पदंश, मौसमी बुखार, शिरपीड़ा, खांसी, प्रतिश्याय, उदरशूल, अफारा, गलपड़ना।

जिव्हा में इतनी सामर्थ्य नहीं कि आपकी 'अमृतधारा' की प्रशंसा करूं, क्योंकि प्रशंसा के लिय एक पर्याप्त समय चाहिए " ॥

आपका:—तालिबअली मोमिन तहसील सेवी
ग्रा० न० ४६७ ॥

निःसन्देह स्वास्थ्य प्राप्त होगी ॥

'अमृतधारा' वास्तविक अमृत है, जो देवताओं को प्राप्त था, वह आपने इस काल में हमको प्रदान कर दिया, इसको मैंने निम्न लिखित रोगों पर आजमाया और हितकर पायाः—

"उदरशूल, विशूचिका, दर्ददाढ़, नेत्रपीड़ा, जी मतलाना, अतिसार, वातपीड़ा, शिरपीड़ा, ज्वर, अजीर्ण, कटिशूल, तिल्ली, इनके अतिरिक्त और रोगों पर भी आजमाया, इसने अपना प्रभाव पूरा दिखाया। मैं कहता हूं, कि कोई रोग जो समझ में न आया हो, यदि 'अमृतधारा' उस रोगी को मिलजावेगी तो निःसन्देह उसको पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त होगा" ॥

लेखक—ठाकुर गोवर्द्धन सिंह ग्रा० नं० १४३६ ॥

मानो मुरदह शरीर में प्राण डाले ॥

'अमृतधारा' को मैं गतवर्षों में मंगाकर सेवन कर चुका हूं। मैं ज़िला अम्बाला में वैकसीनेटर हूं। ग्रीष्म ऋतु में वास्ते कार्य्य वैकसीनेशन, और शीतऋतु में वास्ते किताब "मौत पैदायश" जिला अम्बाला के ग्रामों में जाना पड़ता है, सहस्रों की संख्या में रोगियों से वास्ता पड़ता है। बाज़े २ ऐसे रोगी कि जो अपने जीवन से हाथ धो बैठे थे, इसने उनको नवजीवन प्रदान किया,

'अमृतधारा' मानो एक मन्त्र है। मैं जोर से यह कहे विना न रहूंगा, कि 'अमृतधारा' सचमुच एक योग्य वैद्य का काम दे रही है, आज तक इस प्रकार की औषधि देखी तो क्या सुनी भी नहीं है" ॥

लेखकः—गंगाराम वैक्सीनेटर ॥

उपदंश थोड़े दिनों में दूर ॥

"नमस्ते। मैंने एक मास हुआ आप से एक शीशी 'अमृतधारा' मंगाई थी, उसके प्रभाव शाली होने के विषय में क्या लिखूं, एक जन को उपदंश के कारण अत्यन्त कष्ट हो रहा था, थोड़े दिनों के सेवन करने से लग भग ३ चौथाई रोग दूर हो गया। एक वार मैंने ज्वर की दशा में इसकी परीक्षा की, केवल पानी में ४ बूंद मिलाकर पीने से दस मिण्ट के भीतर २ अंग पीड़ा और शिरदर्द दूर होगया। और आधघण्टे पीछे ज्वर भी उतर गया। मैं आप को दिलजान से इस नए आविष्कार के लिए धन्यवाद देता हूं" ॥

आपका शु० चिं०:—बेनीराम शर्म्मा पटवारी हलका पाली न० ८ ॥

कई प्राण बचाए ॥

"ईश्वर आप की आयु दीर्घ करे, और आप के लेख व आपण में दिन दुगणी रात चौगुणी उन्नति होजाय। आप संसार में एक प्रकार के अवतार उत्पन्न हुए हैं, जिन्हों ने लाखों करोड़ों रोगियों के प्राण बचाए। परमेश्वर की कृपा से आप की बुद्धि और मस्तिष्क नित्य उन्नति पर रहे। दुनिया भर में कोई आप की प्रशंसा करने के योग्य नहीं है। धन्यवाद है, उस ईश्वर का जिसने इस

प्रकार के मनुष्य अपनी सृष्टि को लाभ पहुंचाने के लिए उत्पन्न किए, मुझे और देशों का तो हाल मालूम नहीं, परन्तु भारतवर्ष की सारी प्रजा हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, आदि आप के नाम पर बलिहार हैं, और निशि-दिन आशीशें देते हैं। आप इस लेख को खुशामद न समझें वरन् हृदयगत भाव से लिखा है। इस को स्वीकार करें, यदि भारतवर्ष में आपकी उपमा का और भी उत्पन्न हो जाय तो क्या सम्भव है, कि किसी रोग का लेश मात्र रह जावे। बहुत शोक है कि दास आप के दर्शन से बञ्चित है। आप प्रातः समय स्मरण करने के योग्य हैं और आपकी वक्तृता नेत्रों के आगे उपस्थित है। ईश्वर का धन्यवाद है, कि भारतवर्ष में फिर युनान से भी कहीं बढ़कर चिकित्सा होने लगी है। सार यह है, कि आपके नमूने ने कई प्राण बचाए, हर समय आप पर ईश्वर की अनुग्रह हो। (आप का सद्भाव है मैं किसी योग्य नहीं, सम्पादक)॥

राक़िमः—जीवनदास मुदर्रिस अव्वल कोट राधाकृष्ण

चन्द घण्टों में आराम॥

"मैंने शिरपीड़ा, प्रतिश्याय, फोड़ा, फुन्सी, आदि पर सेवन की बहुत उत्तम गुण किया, अर्थात् चन्द घण्टों में आराम आगया, इसी वास्ते मैंने पहिले ही तीन शीशियां मंगवाई थीं। अन्यथा आजकल इश्तिहारी दवाइयों की दशा किस को मालूम नहीं। परन्तु अब आप की दुकान का भी तजुर्बा हो चुका है। इस में सन्देह नहीं कि आप का औषधालय देशोपकारक है, आप सच्चे वैद्य और आपकी औषधि सच्ची है। जहां तक मुझ से हो सकेगा प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक रोगी को आप जैसे भद्र पुरुष की दूकान से औषधियां मंगवाने के लिए कहूंगा"॥

आपकाः—किशोरी लाल सब ओवरसियर

नहर दीपालपुर॥

कुछ अख़बारों की सम्मतियां

"रफ़ीक़ प्रश्न मुरादाबाद २८ सितम्बर १९०६—'अमृतधारा' की एक शीशी हमारे पास समालोचनार्थ पहुंची, हमने स्वयम् दो चार रोगों पर सेवन किया, वास्तविक सर्वरोगों पर 'अमृतधारा' अचूकवाण का काम देती है। यद्यपि इश्तहारी औषधियों से सबका विश्वास जाता रहा है, परन्तु पबलिक को इस का आदर करना चाहिए। और पं० ठाकुरदत्त साहिब शर्मा वैद्य लाहौर का शुकरगुज़ार होना चाहिए कि उनकी निर्म्माण की हुई 'अमृतधारा' सर्वरोगों को गुणकारी है। प्रत्येक घर में इस शीशी का रहना बहुत आवश्यक है" ॥

सादिक़ुल अख़बार रेवाड़ी :—'अमृतधारा' तीन मनुष्यों को परिक्षार्थ दी गई। एक मनुष्य को मधुमक्खियों ने काटा था, और उसका सम्पूर्ण शरीर सूज गया था, शरीर में लालश्वेत धप्पड़ खून के फसाद के होगए थे, वमन जंगारी आती थी, लगाने और खाने को दिया गया, लग भग दो घण्टे के आराम हो गया। दूसरा मनुष्य जिसको प्रतिदिन मिर्गी का दौरा हुआ करता था, खाने और नाक में टपकाने के वास्ते दिया गया। उसका कथन है, कि जब से सेवन करता है दौरा नहीं होता। तीसरा जिसके अंगों में दर्द रहा करती थी, तिल के तैल में मिलाकर दी गई, अब और कई मनुष्यों को दिया गया है जो परीक्षा के पश्चात् लिखूंगा" ॥

अलहुक्म क़ादियान:—'अमृतधारा'। डाक्टर ठाकुर दत्त साहिब शर्म्मा वैद्य लाहौरी ने 'अमृतधारा' के नाम से एक विचित्र औषधि तैयार की है, जो बीसियों रोगों के लिए हितकर बताई जाती है, मानों तत्कालिक रोगों का तत्कालिक इलाज है। मेरे बालक का हाथ जल गया था, मैंने इसकी परीक्षा की अति हितकर पाया। मेरी सम्मति में इसकी एक शीशी रखनी बाल बच्चों वाले घर में अत्यन्तावश्यक है। मूल्य प्रति शीशी २॥) है" ॥

अख़बार मिनर्वा अमृतसर:—'अमृतधारा' इस औषधि के रचिता

पं० ठाकुर दत्त शर्म्मा वैद्य का दावा है, कि इसके सेवन से सम्पूर्ण रोग दूर होजाते हैं, किन्तु हमें केवल भिड़ के काटे, उदरशूल, दर्दशिर, के रोगियों पर आज़माने का अवसर हुआ, और उनको सर्वथा स्वास्थ्य प्राप्त होगई है। निःसन्देह औषधि गुणकारी है । पाठकों को इस से लाभ उठाना चाहिए। मूल्य प्रति शीशी २॥) है" ॥

वफ़ादार लाहौरः—'अमृतधारा' के हैडिंग से देशोपकारक औषधालय की अनुपम औषधियों के विज्ञापन हमारे १४ जनवरी के अंक में प्रकाशित होचुके हैं, उनके अवलोकन से लोगों को अच्छी तरह ज्ञात होगया था, कि उक्त कार्य्यालय में बड़ी नादिर और प्रभावशाली औषधियां बनती हैं, जिन से रोगी बराबर स्वस्थ होरहे हैं। और प्रशंसा पत्रों के देखने से ज्ञात होता है, कि बड़े २ रईस और पदाधिकारियों ने इमानदारी के साथ औषधियों के प्रभावशाली होने का इकरार किया है । अब क्या सन्देह रहा, देश को चाहिए कि इस कार्य्यालय की औषधियों से लाभ उठावे, और निराश न हो। यद्यपि बाज़ इश्तहारी हकीमों की औषधियां निकम्मी सिद्ध होती रहीं, परन्तु पांचों उंगलियां एक जैसी नहीं होतीं। 'अमृतधारा' मंगावें उस से लाभ प्राप्त करके इस औषधालय की सब औषधियां मंगावें। जो लाभ देंगी । सब अनुभूत हैं ॥

सम्पादिका परदहनशीन—किशनगढ़ से लिखती हैं:—'अमृतधारा' की समालोचना अक्तूबर मास में कर दी है, मेरी इच्छा है कि इस उत्तम औषधि की एजन्सी भी लूं" ॥

इसी प्रकार की समालोचनाएं॥

पैसा अखबार, ओरमीन्यूज़, हितकारी आदि २ ने की हैं जो कि समाचार पत्रों के पाठकों ने देखी होंगी ॥

कुत्ता, तोता और लड़का ॥

"अभी जल्दी जो तजुर्वा मुझे 'अमृतधारा' का हुआ है उस का वर्णन करता हूं:—एक कुत्ता जिस की आंखें ऐसी धुंधली थीं, कि देख नहीं सकता था, केवल आवाज सुन कर इधर उधर जाता था, उस की आंखों में 'अमृतधारा' तीन चार वार लगाने से अच्छी होगईं, आंखें पहिले देखने में सफेद थीं, अव सफेदी दूर होने पर असली अवस्था पर आ गईं, यह कुत्ता अभी छोटा बच्चा ही है" ॥

मेरे पास एक तोता छोटी किस्म का है ॥

"उस के दाएं पंख में एक प्रकार की खाज थी, उस के कारण से उसने अपने सारे वाल नोच दिए थे, 'अमृतधारा' लगाने से वाल नोचना वन्द होगया, अव उस के पंख जम रहे हैं, और अच्छी अवस्था में आ रहा है, आशा है कि किञ्चित् दिनों के लगाने से पूर्णतयः अच्छा हो जावेगा और पंखादि उग आवेंगे" ॥

एक सोला वर्ष के लड़के के मूर्छा रोग होता था ॥

पहिले उस को गतवर्ष जवलपुर में वेग हुआ, इस वर्ष यहां हुआ, बीमार होने से एक मिण्ट पहिले उस के मुख से यह शब्द निकले कि मेरा शिर घूमता है, और जमीन पर आ गिरा, हाथ पांव में कम्प होगया, आंखें वदल गईं, मुख पीला पड़ गया, मैंने तुरन्त 'अमृतधारा' उसकी नाक में डाल दी और

फूकना आरम्भ किया, ३, ४ वार करने से और माथे के लगाने से वह लड़का उठ बैठा, अभी तक अच्छा है, और मेरे पास है, इसका नाम संगाई है, सरवे डीपार्टमेन्ट में मेरे हां नौकर है । मैं यथा अवसर पशुओं पर आज़माने की चेष्टा कर रहा हूं ॥

एक कुत्ते ने दो रोज कुछ न खाया था ॥

"वड़ी चिन्ता थी कि इस को क्या दिया जावे, निदान मन में आई कि 'अमृतधारा' देनी चाहिए अतः शक्कर में मिलाकर जबरदस्ती उस के मुख में डाली गई, एक घण्टा पीछे थोडे चावल और रोटी का टुकड़ा दिया तो थोड़ा सा खाया, दूसरा वार 'अमृतधारा' देने से राजी होगया, फिर अव तक बीमार नहीं हुआ, मेरी ६ शिशियां ६ मास में समाप्त हुई हैं । १२ शीशियों का आर्डर अव दिया जाता है । काश ! कि 'अमृतधारा' का मूल्य अल्प होता । जिस से दिल खोल कर पशुओं की सहायता की जाती, आशा है इस लेख को आप देशोपकारक में सर्व साधारण के लाभार्थ प्रकाशित करदेंगे ॥

लेखक—राधाकिशनसिंह इन्स्पेक्टर कन्टौन्मेण्ट सरवे सैकशन न० २ सरवे आफ इण्डिया मकान न० ५ रसूलपुर छावनी शिकन्दरावाद दक्षिण" ॥

राय दीवानचन्द साहिब एम ए० एल २ बी ॥

फरमाते हैं किः—उन की घोड़ी को कठिन शूल था, जो 'अमृतधारा' देने से जाता रहा, इसी प्रकार उनका कुत्ता बीमार होगया तो 'अमृतधारा' ने लाभ पहुंचाया ॥

एक गऊ ने बच्चा दिया और आंवल न गिरी ॥

तो तुरन्त गुड़ में १० बूंद देदी और एक घण्टा के पश्चात् आंवल गिर पड़ी ॥

लेखक—काशीराम मुदर्रिस मदरसा पिंदी ॥

बैल का सींग टूट गया था ॥

"पण्डित साहिब नमस्ते ! 'अमृताधरा' पहुंची मेरे बैल का सींग टूट गया था, 'अमृतधरा' के १० बूंद डालने से तुरन्त खून वन्द होगया, और जिस रोग के ऊपर दी जाती है तुरन्त आराम होजाता है, सच मुच यह अमृत है" ॥

लेखक—दलीप सिंह स्थान अलीपुर ॥

घोड़ी के रोगों पर भी वर्ता ॥

'अमृतधरा' की शिशि मैने केवल दो ही दफा मंगाई है और कई मनुष्यों ने वहादुर पुर में मंगवाई है । जहां २ मैंने इस को आजमाया है निवेदन करता हूं । सिर दर्द, घाव, सूखा दर्द, सोजाक, ज्वर, व्याकुलता, दर्द, मसूढ़े व दन्त । और घोड़ी के गले में खुनाक सा होगया था, वहां अन्य दवाई के साथ मिलाकर दी गई, वदहजमी, गले पड़ना, सुरमा की भांति सेवन की गई, अर्थात् सुरमे में डालकर, तुरन्त आरम आता रहा" ॥

लेखक—हरचरणसिंह ग्राहक नं० ३१३७ ॥

घोड़े के घाव के कीड़े डालते ही गिरपड़े ॥

"मैं अत्यन्त हर्ष से इस बात का अनुमोदन करता हूं कि आपकी निर्मित 'अमृतधारा' यथा नामा तथा गुणः औषधि है । जिस रोग के वास्ते मैंने इसे

अपने इष्ट मित्रों पर भी वरता हितकर पाया, विशेष प्रकार की पीड़ाएं, यथा दर्द शिर, दर्द पेट, दर्द कान, व अपाचन के लिये बहुतही शीघ्र प्रभाव कारी दवा है। एक सप्ताह का असा हुआ कि मेरे एक घोड़े के पांजर में जीन का कोई कांटा चुभकर गहरा घाव होगया, और ८, १० दिन के पीछे बहुत से कीड़े पड़ गये, मैंने 'अमृतधारा' ४, ५ बूंद घाव में टपका दिये, सत्य लिख रहा हूं, कि क्षण भर में सब बडे कीडे जमीन पर गिर गए और दो ही चार दिन में घाव भर आया; दो सप्ताह में सवर्था घाव अच्छा होगया। प्रत्येक सुशिक्षित मनुष्य को ऐसी हितकर दवाई हर समय घर में और बाहर यात्रा में मौजूद रखनी चाहिये। विशेषतः 'अमृतधारा' गृहस्थों के वास्ते ग्रामों में जहां कोई हकीम वैद्य हर समय नहीं मिलता बड़ी हितकारी है, मुझे आशा है कि भारतवर्ष के सब भाई इस दवा से अवश्य लाभ उठावेंगे"॥

लेखक राजेन्द्र प्रसाद साही जमींदार मौजा बतरा॥

प्रत्यक्ष मुर्दह था॥

"पण्डित साहिब तसलीम! एक शीशी 'अमृतधारा' आई थी, मेरे नौकर का लड़का आयु ६ मास पसली रोग से मर चुका था, मुख बन्द होगया था; मैंने 'अमृतधारा' मुख और नाक में लेपन किया कुछ प्राण बाकी थे, उसनेकिञ्चित् ओष्ठ हिलाया, उंगली डालने से मुख खुलने लगा। मैंने बिना किसी अनुपान के १ बूंद मुख में टपका दिया। जिससे अधिक मुख फैलाने लगा, १ बूंद माता के दूध में डालकर दिया गया, जिस से कुछ हाथ पांव हिलाने लगा, संक्षिप्त १ घंटा में ४ बूंद पन्दरह २ मिण्ट पीछे दी गई। चौथी खुराक के पीछे अच्छी तरह माता का दूध पिया और मालिश करके रुई भी दर्द पर बांधी थी, ४ दिन हुए बहुत अच्छा है। ३ आदमियों को ज्वर था और बहुत व्याकुल थे, पहली खुराक मिश्री के शर्बत लग भग एक औंस में ५ बूंद देदिया, बेचैनी दूर हुई, दूसरी खुराक एक घण्टा या दो घण्टा पश्चात् गरम पानी से दिया, तुरन्त आराम आगया और ज्वर जाता रहा। सच मुच 'अमृतधारा' अन्मोल रत्न है। शिर दर्द तो तुरन्त जाता है। १०, १५ के लगाया गया तुरन्त लाभ हुआ। दो स्त्रियों को बादाम रोगन के साथ देने से ६ रोज में कर्णरोग जाता रहा। अब शीशी समाप्त है सचमुच अमृत है और मगवाकर हमेशा रखने के योग्य है"॥

लेखक—अबदुलकरीम कनिस्टबिल रामपुर मोधापारा॥

श्रीमान् सरदार हरनाम सिंह साहिब चक नं० २१ डाकखाना मड़ विलोचान से लिखते हैं :—

"मेरा एक बैल १५०) का रोगग्रस्त था। बन्धा पड़ गया था। पीड़ा होती थी, मैंने बहुत सी औषधियां उसको दीं थीं, परन्तु कोई भी गुणकारी न हुई उसके जीवन से हाथ धो बैठे थे, गुदा से रुधिर बहना आरम्भ होगया था, विचार था, कि किसी ने विष दिया है, अन्तिम समय मुझको 'अमृतधारा' का स्मरण आया, आधी शीशी के लग भग दी ५ पांच मिण्ट के भीतर वह बैल उठ बैठा, और उसकी जान बच गई। जितनी प्रशंसा कीजावे कम है" ॥

श्रीमान् सरदार अरूड़ सिंह साहिब अध्यापक स्कूल निहाल खेड़ा तहसील फ़ाज़िलका ज़िला फीरोज़ पुर लिखते हैं :—

"माननीय श्री पण्डित जी नमस्ते! मैं सन १९०७ से 'अमृतधारा' का विश्वासी हूं, और प्रतिवर्ष ५–७ शीशी किसी न किसी के द्वारा मंगवाता हूं। वास्तविक विचित्र औषधि है। गत वर्ष मेरी गाय के वत्स की आंख में फ़ोला पड़गया, मैंने तीन दिन निरन्तर प्रातः काल आंख धोकर दो २ बिन्दु डाले आंख साफ़ होगई। और प्रायः इस ओर सन्निपात होजाता है, इसी के द्वारा जितने मनुष्यों ने औषधि स्वास्थ्य पाई अभी ३–४ मास हो चुके हैं" ॥

एक १६ वर्ष के बालक को बारम्बार मूर्च्छा होती थी ॥

पहिले इस को गत वर्ष जबलपुर में दौरा हुआ, इस वर्ष वह यहां इस रोग में ग्रस्त हुआ। मूर्च्छित होने से १ मिण्ट पहिले उस के मुख से यह शब्द निकले, कि मेरा शिर घूमता है, और पृथिवी पर आगिरा। हाथ पांव कांपने लगे, नेत्र बदल गए, मुख का रंग पीत होगया। मैंने उसी समय बिना सोचे समझे 'अमृतधारा' उसकी नाक में डाल दी, और फूंकना आरम्भ किया, ३–४ बार ऐसा करने से, और माथे के ऊपर लगाने से वह लड़का उठ बैठा, अभी अच्छा है, और मेरे पास है। उस का नाम संगाई है। सरवे विभाग में मेरे यहां नौकर है। मैं यथा सामर्थ्य पशुओं पर परीक्षा करने का उद्योग कर रहा हूं" ॥

पाठक गण !

मैंने इस सूची को महीन टाइप में छपाया है, और केवल चुने हुए सार्टीफिकट दर्ज करने चाहे, सूची के पृष्ट इतने बढ़ गए, कि अब)॥ के स्थान में ~) आने का टिकट लगेगा, और इस प्रकार सैंकड़ों रुपये का अधिक महसूल डाक खर्च होगा, हज़ार उद्योग किया,कि सब अच्छे२ प्रशंसापत्र दर्ज करूंगा, परन्तु यहां पर पहुंच कर मैं क्या करूं, कि सार्टीफिकेट अभी बहुत से बाकी हैं, और कोई दिन खाली नहीं जाता कि ८—१० सार्टीफिकेट ताज़े न आजाते हों, दुनियां में कोई मनुष्य सार्टीफिकेट इतने बिना मांगे प्राप्त करने का दावा नहीं करसकता है । बहुत से श्रीमानों के प्रशंसा पत्र दस २ बार प्राप्त हो रहे हैं, क्योंकि ज्यों २ नया तजुर्बा होता है, वह खुशी से लिखते हैं । हमने पिछले पृष्टों पर नमूना दिखला दिया है ।

'अमृतधारा' सचमुच एक ईश्वरीय दान है ॥

जो मुझको उसकी कृपा से मालूम हुई । बहुत तजुर्बों और उद्योगों के पश्चात् इसको मैंने निकाला (देखो पृष्ट २७) इसके द्वारा जो कृतकार्य्यता मुझको प्राप्त हुई है इससे असंख्य हृदयों में ईर्षा की अग्नि भी भड़की, सब प्रकार से उन्हों ने इसके विपरीत उद्योग किया, परन्तु कोई क्या करसता है, जब ईश्वर कृपालु हो ॥

मैं शपथ पूर्वक निवेदन करता हूं ॥

कि मेरा हृदय साफ है, मैंने कभी किसी एक मनुष्य को भी किसी भी लालच में धोखा नहीं दिया है । तो पबलिक के सन्मुख एक ऐसी औषधि कब पेश कर

सकता हूं, जिसको मैं हृदय से सच्ची और असली न समझता हूं। मेरे विज्ञापन में केवल वही शब्द होंगे, जिनको मैं हृदय से सत्य जानता हूं। कभी कोई ऐसी औषधि प्रकाशित नहीं हो सकती है, जिसका मुझे थोड़ा भी सन्देह होजावे, जिन लोगों ने मेरे साथ वर्ताव किया है, वह भली भान्ति जानते हैं। और आप विचार कीजिये, कि इस सूची में 'अमृतधारा' की इतनी प्रशंसा मेरे लेख में नहीं है, जितनी कि उसके सेवन करने वाले श्रीमानो के पत्रों में है॥

जब से 'अमृतधारा' ने नाम पाया है और सब जगह प्रसिद्ध हुई है, लग भग सब छोटे वड़े इश्तहरवाज़ ऐसी औषधि का मालिक बनना चाहते हैं। विविध नामों से विविध विज्ञापन निकलते हैं। बड़े २ नामी हुकमा भी इस औषधि के विज्ञापन देने लग गए हैं। लाहौर में तो कोई शिक्षित होगा, जिसकी जिह्वा पर 'अमृतधारा' का चर्चा न हो। दफ्तरों में क्लर्क, स्कूलों में लड़के, कचहरियों में ओहदेदार तक उद्योग करते रहे हैं, कि 'अमृतधारा' का योग मालूम हो। नव युवकों की वहुत सी सुसाइटियां ऐसी हैं; जो अपने जलसों में इसकी चर्चा छेड़ बैठते हैं। जो उठता है, इधर उधर की चीजें मिलाकर सबको कहता फिरता है, कि मैंने 'अमृतधारा' वनाली है। इश्तहारी अत्तार अर्द्ध हकीम भी यही दावा करते हैं। बाज धोखे से हमसे सेवन विधि पत्र लेजाते हैं, लोगों को अपनी झूठी औषधि 'अमृतधारा' के नाम से अल्प मूल्य पर बेच देते हैं। हमारे पास बाहर से जो श्रीमान् मिलने आते हैं, और वह ईश्वर न करे उनसे पूछ बैठे, कि ठाकुरदत्त का मकान किधर है, तो वह कहते हैं 'अमृतधारा' हम बनाते हैं, हम से चाहे योग भी लें, वह क्या जानता है। और विलक्षणता यह कि कई :—

ठाकुरदत्त भी स्वयम् ही बने बैठे हैं॥

हम सदैव ऐसे लोगों के वृतान्त सुनते हैं, और हैरान होते हैं, कि यह लोग क्या कर रहे हैं, कई श्रीमान् समाचार पत्रों में कोई योग लिखवाकर कहते हैं कि यह 'अमृतधारा' के प्रभाव रखता है। कोई लोग विज्ञापन देते हैं, और साथ यह भी लिख देते हैं कि असली औषधि हमारी है। बहुत से हमारे पास आकर नौकर हुए और जाकर विज्ञापन निकाल दिया, सार यह कि व्यापारीय और विज्ञापनीय

जगत् में लाहौर में विशेषतः और बाहर साधारणतः खिलवली मची हुई है। जैसी नक़ल यह लोग करते हैं, वह भी हमने तैयार कर रक्खी है, और स्वयम् ॥।) शीशी पर बेचते हैं ॥

अन्त में पाठकों से यही निवेदन है, कि धोखे से बचें, और 'अमृतधारा' के बिना इसके धोखे में किसी अन्य औषधि को न खरीदें। ऐसे किसी का जी चाहे खरीदे परन्तु यह खयाल न करे कि वह 'अमृतधारा' जैसे गुण रखती है। 'अमृतधारा' में एक दो नहीं बहुत सी औषधियां ऐसी हैं जिनकी तैयारी में महीनों लगजाते हैं, और ऐसी औषधियां भी सम्मिलित हैं जो झूठे विज्ञापन बाज़ों के स्वप्न में भी न आई हों। इस सूची को पढ़कर कौन है, जो 'अमृतधारा' के गुणों का निश्चय नहीं करता ॥

मुझे कई बार लाहौर में अवसर हुआ, कि किसी साहिब ने आकर वर्णन किया कि 'अमृतधारा' भी सेवन की, परन्तु आराम नहीं आया है। जब हैरान होकर दरियाफ्त और तहक़ीक़ात कीजाय तो ज्ञात होता है कि उन्होंने किसी और औषधि का सेवन किया था, जिसके विषय में निश्चय दिलाया गया था, कि 'अमृतधारा' है। बहुत से क्लर्क जो कि दफ्तरों में नौकर हैं झूठा 'अमृतधारा' बनाकर बेचते हैं। यह सब बातें यह प्रगट करती हैं, कि 'अमृतधारा' वास्तविक एक ऐसी वस्तु है, जिसकी प्रत्येक मनुष्य को इच्छा करनी चाहिए ॥ असल को खरीदना चाहिए। बाज़ार में प्रत्येक वस्तु असल नक़ल के नाम से मिल रही हैं। कोई नक़ल को असली कहकर उसी मूल्य पर बेच कर अपना विश्वास गंवाते हैं, कोई नक़ल को नक़ल कहकर अल्प मूल्य पर बेचा करते हैं; ताकि नक़ल जिसने खरीदना हो खरीदे, जिसने असल खरीदना हो, असल खरीदे। परन्तु जहां प्रश्न स्वास्थ्य का है, वहां क्यों न असल को खरीदा जावे ॥

अन्तिम निवेदन यह है, कि इस सूची को ध्यान से पढ़िये ॥

दासः—ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य ॥

अपने अमृत प्रेस

(रेल्वे रोड) में

छपा ॥

सर्व साधारण और विशेष कर झूठे विज्ञापन वाजों की सूचना के लिये प्रकाशित किया जाता है कि—

'अमृतधारा' और 'आबेहयात'

नियम पूर्वक गवर्नमेन्ट आफिस में रजिस्टरी होचुकी हैं और इन का मालिक मैं हूं—कोई मनुष्य, इस नाम की औषधि या पुस्तक लिखकर लाभ के बदले हानि न उठावें ॥

ठाकुर दत्त शर्म्मा वैद्य

लाहौर ।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

॥ उस्ताद इंदरमन ॥

सांगीत सतसागर

पुरनमल का पहला भाग

असली सांगीत खरीदने हों तो नीचे की शैर को पढ लेना।

शेर—जिस पुस्तक में आगे दोनों की तसवीर हो।
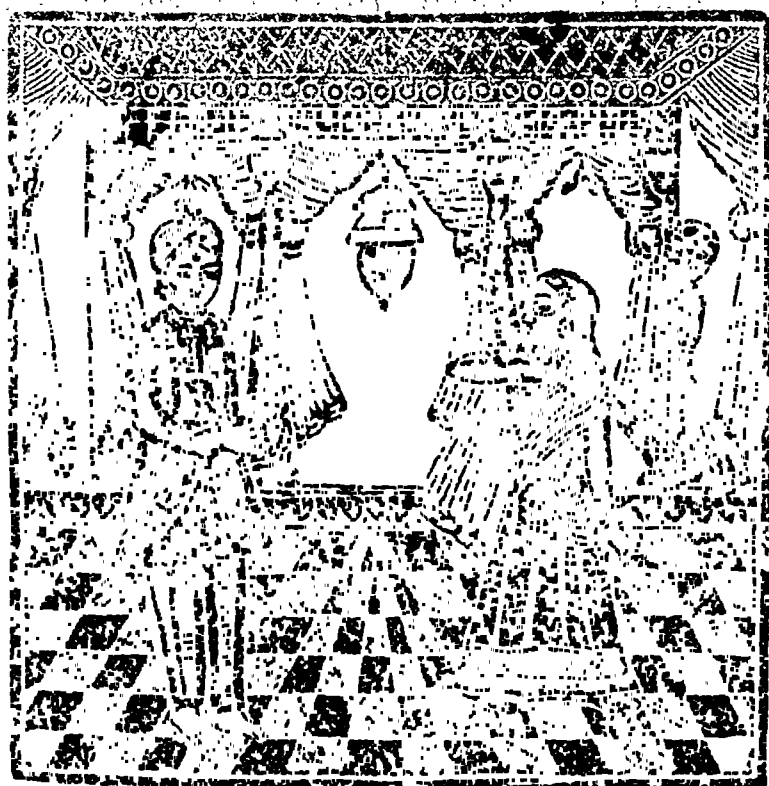
अन्दर ( ) चिरंजीलाल नथाराम की तसवीर है।

जिसको

चिरंजीलाल नथाराम हाथरस निवासीने बनाकर

बा. राजनरायन गोकुलचन्द के कैलास प्रेस हाथरस

में छपाकर प्रकाशित किया।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

सांगीत सतसागर

यानी

पूरनमल भक्त लि०

॥ मङ्गलाचरण ॥

दो०—ओं श्री भैरव नमः, काली तनय विशाल ।
चक्र दंड त्रिशूलकर, राजत कलित कपाल ॥
चौ०राजतकलित कपाल ब्याह यज्ञोपवीत गलधारत ।
महाकाल बिकराल भेष धर दैत्य दलन संहारत ॥
नाशत तम अज्ञान ज्ञान रूपी रवि किरण पसारत ।
श्री बटुकायं श्रीबटुकायं त्राहिमां प्रणतारत ॥
दो०—नमोरुद्रं अवतारं । अमंगल मूलविदारं ॥
स्वान आरूढ विशालं । कोतवाल काशी कृपाल
गुरु इन्द्रदास प्रति पालं ॥ १ ॥

अ॰ रंग। का

दो०—सतलज झेलम ब्यास सरि, रावी और चनाव ।
इन पांचों के दरमियां, बसै मुल्क पंजाब ॥
चौ०—बसे मुल्क पंजाब खुदाकी वहां महरबानी है ।
पैदा हो माहरु हसी माशूका लासानी है ॥ दुनियांमें

मशहूर नूर लखि हूर पशेमानी है। उसी मुल्क में स्यालकोट छोटी सी रजधानी है॥

कव्वाली—सुनाता हूं वहीं की बस ये लासानी कहानी है। रखो गर बन्द शोगे गुल तो होगी महरबानी है॥ सिर रे हिंद अफसर ताज वहां नृप शंखपति आला। उसे फरजन्द पूरनमल जती बख्शा था हकताला॥ एक दिन खत स्वयम्बर का अचानक शाहपर आया। तो पढकर भूपने चलने का बन्दोवस्त करवाया॥

दो०—अदा धज से बनठनके। गये अन्दर महलन के॥ सजावट देखी रानी। जान इरादा सफर उचारी अम्बादे ने बानी॥ २॥

व० अम्बादे का राजा से

दो०—बनठन सज धज अदा से, शहनशाह पंजाव।
किया इरादा कहां का, फरमाइये जनाव॥

चौ०—फरमाइये जनाव क्यों दिलही दिल मुसकाते हो।
वने ठने चौधवीं रात के चांद नजर आते हो॥
नौजवान से महरबान मन बिलकुल दिखलाते हो।
जापनाह क्यों किधर कहां तशरीफ लिये जाते हो॥

दो०—बसन भूषण सज तन पर। कसे हथियार बदन पर॥ सुरत कहां करी गवन की। प्राणपती भूपती प्रजापति, कहिये अपने मनकी॥ २॥

ज० क्षत्रपति का

दो०—कुसुम नगर से प्राण प्रिय, ये खत आया आज।
रचा स्वयम्बर सुताका, फूलचक्र महाराज॥
चौ०—फूलचक्र महाराज टंगा मछली यह पैज करी है।
जो कोई मारे मीन उसी को जावे सुता वरी है॥
खत पढते ही जगा काम येही दिल बीच भरी है।
क्षत्रपतिन के मान मार फूलन्दे बरूँ परी है॥
कव्वाली—दिलोजानी रहे अनवर स्वयम्बर का मैं जाऊँगा। रहूं घर बैठ खत पढकर तो मैं कायर कहाऊंगा॥ वहां पर जोर जौहर नृपन के देखूं दिखाऊंगा। कमाऊंगा निशाना मीन को धरणी गिराऊंगा॥
दो०—पैज नृप पूरी करके। लऊं जयमाल पहर के॥ नाम पाऊं जहान में। शाहों का सरताज बनूं दुनियां के दरमियान में॥ ४॥

ज० अम्बादे का

दो०—प्राण प्रिया की प्राणपति, सलहा मानिए नीक।
महाराज अब आपको, करनो व्याहन ठीक॥
चौ०करनो व्याह न ठीक पिया क्या मति बौराय रही है।
इसीगज विधे न मीन हीनता बदन समाय रही है॥
श्रवण समीप सफेदी पति बालों पर आय रही है।
स्वपन देखो प्राणनाथ प्यारी समझाय रही है॥
दो०—व्याह दूजा नहिं कीजे। मान पति मेरी लीजे॥ हंसी होगी दुनियां में। एक म्यानमें नहीं

प्राण पति दो तलवार समामें ॥ ५ ॥

ज० शालपति का

दो०—सुनकर तेरी बातको, अचरज भयो विशेष।
क्षत्राणी होकर हमें, देती यह उपदेश ॥

चौ०—देती यह उपदेश बनावे कायर पंचाननको।
कितसे बूढो भयो ठरगजी बजा रही गालनको ॥
भकभकात क्रोधानल दूनी सुन २ तेरे वचनको।
बेठ रहूं घर अगर दाग लागे मम क्षत्रापनको ॥

कव्वाली—धर्म रजपूत क्षत्रिन के, नित नये व्याह करते हैं। जावजा जा स्वयम्बरमें, अनेकों नारिवरते हैं ॥ देख श्रीकृष्णने आगे, बरीं कितनी त्रिया प्यारी कि जिसकी वेद औ इतिहास अबतक साख भरतेहैं।

दो०—दूसरी लामें रानी। परम शुभ सुमुखि सयानी। ठान ये दिलपर ठानी। करूं उजागर महिपालनमें स्यालकोट रजधानी ॥ ६ ॥

ज० अम्बादे का

दो०—जो चाहे सो करसके, समरथ को नहिं दोष।
समता श्री गोपाल की, करो हाय अफसोस ॥

चौ०—करो हाय अफसोस जानकर जहरबेल बोओगे।
अशुभ फल महाराज लगें जब खावोगे रोओगे ॥
अपकीरति यश कान शान रंखी तमाम खोओगे।
करके व्याह दूसरो पति सुखनींद नहीं सोओगे ॥

तोड़—व्याह दूजा नहिं कीजे। मान पति मेरी लीजे।

करे सब खलकत ठट्ठा। खान्दान और सुलतानी को लगे प्राणपति बट्ठा ॥७॥

ज० शस्त्रपति का

दो०—जो कुछ देती नसीहत, मुझको नहीं पसंद।
चुपरह मत बातें बना, रख जवान को बंद॥
चौ०—रख जवान को बंद कहानी मुझे न ये भाती है॥
रँग चढाती है अपना क्या खूब गीत गाती है॥
खुदही समझ रहा हूं सब जो कुछ तू समझाती है।
टलजा मेरे सामने से बस गुसा मुझे आती है॥
दौ०—दूसरी लावें रानी। परम शुभ सुमुख सयानी।
अन ये दिलपर ठानी। करूं उजागर महिपालन में स्यालकोट रजधानी ॥८॥

ज० अम्बारे का

दो०—ब्याह करो पति दूसरो होइ पिआरी ख्वार।
मानो २ कहन मम, समझाऊं हरबार॥
दादरा—कही मानो स्वयंवर को जाओ मती।
जमाना है बुरा क्या जापनाह करते हो। शजरगम रंज का पैदा क्यों शाह करते हो॥ है फ हसपन में लुगाई की चाह करते हो। सितम करते हो बुढापेमें ब्याह करते हो॥ प्यार अपने जनममें थुकाओ मती॥
कही०॥सब तरह कर रखी ईश्वरने महरवानी है। मिसाले चंद एक फरजन्द भी लासानी है॥ सफेदी आगई सब ढल चुकी जवानी है॥ रामका नाम जपो छोड दो नादानी है। देखो इज्जत को बट्टा लगाओ मती॥ कही०॥ आप बुड्ढे हुए वो नौ जवान

आवेगी । लज्जते वस्ल जब जनाब में न पावेगी। तके गेरों को तुम्हें सींग पै खिलावेगी। ये सारी शान शेखी खाक में मिलावेगी। बूढ़ेपन में फजीता कराओ मती। कही०। नहीं मानोंगे अगर जिद्द को बढाओ गे। हमारी कहन पर मुतल्क न ख्याल लाओगे॥ पिया ता उम्र कलेजे पै दाग लाओगे। कयामत तक न कभी चैन पाओगे। पिया गमे की जड़को जमाओ मती। कही मानों ०॥९॥

ज० रंगा का।

दो०—मनी रानी की नहीं, ततक्षण कियो पयान।
कुसुमनगर गये पहुंच कर, श्यालकोट सुल्तान।
चौ०—श्यालकोट सुलतान स्वयंवरमें शूरता दिखाई। मीन मार नृप मान झार गल जयमाला गिरवाई। श्रीपंजाव नरेश प्रशंसा सब भूपनमें पाई। फूलन्दे को व्याहि चले ग्रहको गोविंद मनाई॥

दो०—लगाई सुगति सफरमें। आये आपने नगरमें॥ महल तट पहुंची डोली। तादम फूलन्दे रानी यों शँखपती से बोली॥१०॥

ज० फूलंदे का

दो०—कदम न इस घर में रखूं, कहो चहैं हरचन्द।
सौत पास रहना पिता, मुझको नहीं पसन्द।
चौ०—मुझको नहीं पसंद सौत सूरतसे दिल घबरावे। आप करे उतपात प्राणपति पातक हमैं लगावें॥ चलते फिरते सोते जगते हरदम सौत सतावे। इससे

महल सौत संग रहना पलभर नहीं सुहावे ॥
दो०-महल दूजे पति प्यारे । होयंगे मरे गुजारे॥
अर्ज मेरी सुन लीजे । प्रीतम न्यारो महल कोई
दासी को बतला दीजै ॥११॥

ज० रंगा का

दो०-सुनत बचन तजवीज कर, चट दूसरा मकान ।
जाय टिकाया उसीमें, रानी को सुलतान ॥
चौ०-रानीको सुलतान आन रक्खा मकान सानीमें।
अम्बादे से तजा प्यार लौ लगी नई रानी में ॥
राजा निस्फ जई फ दिवानी फूलन्दे ज्वानी में ।
इसी सबब तबियत रानी की रहे परेशानी में ॥
दो०-जवानी तन लहरावे । रात दिन काम सतावे ॥ न दिल को चैन परे है । फूलंदे रानी विचार
ऐसें मन माहिं करे है ॥१२॥

ज० फूलन्दे का मन ही मन मे

दो०-महाराजकी होगई, सब ताकत बेवाक ।
सिर्फ हंकी के और कुछ, धूल रही ना खाक ॥
चौ०-धूल रही ना खाक हुए बिलकुल निराश ज्वानी
से । कोरे ठंठनपात्र बन चुके है पहली रानी से ॥
घबराते हांपते दो मिनट की ऐंचातानी से । लाख
गुना बेहतर मरना इस कदर जिंदगानी से ॥
दाहग-करूं कैसी बालम निखट्टू मिले । इधर तो
रोज नौ जोबन की कली खिलती है । उधर देखूं तो
निगोड़े की नार हिलती है । मुए इस बुड्ढे से तबि

यत न जरा मिलती हो मदन गोलेकी चोट हाय नहीं छिपती है ॥ बड़े ढीले व बीले टुकट्टू मिले । करूं कैसी० ॥ अगर कोई जवान धनवरे रुखसार मिले । महजबीं माहरू माशूक महनिगार मिले । सारमें सार मिले यार तरहदार मिले । मजा आवेगा जभी जब कोई दिलदार मिले । ये तो बिलकुल लदेने के टट्टू मिले । करूं कैसी मोइ बालम० ॥ १३ ॥

ज० रंगा क०

दो०—शबो रोज इस फिकरमें, रानी रहे समूल ॥
  चूर जवानी जोशमें, होश रही सब भूल ॥

चौ०—होश रही सब भूल पलंग उठ२ पछार खाती है। कभी झरोखन में देखन खुशनुमा ज्वान आती है॥ इधर सवारी पूरनमल की गुलशन को जाती है। चहरा चांद जुल्फ़ काली नागिनसी लहराती है ॥

छड़ा—प्यारेजी कलेदार छबिदार हुस्न लाखों में आला। रँग २ चूये नूर मिस्ल सांचे का ढाला ॥ प्यारेजी लखि जवान की शान इश्क़ का खाया भाला। जी जामा मुश्ताक हुई रानी नववाला ॥

दु०—मुश्ताक हुई पूरनमल पर दिल तीर इश्कका खाइ गई ॥ खफगान बावली सी होकर इकटक टक टकी लगाइ गई ॥

दौ—हुई ये गति रानी की। इश्ककी दीवानी की॥ चटाचट चटकी चोली ॥ ऐसी दशा देखकर फूलांदे को बांदी बोली ॥ १४ ॥

ज० बांदी का

दो०—किस गम में हो मुज़्तिला, ए साहिबे जमाल।
महरबान माहेलका, कहिये दिल का हाल ॥
चौ०—कहिये दिलका हाल किधर को नज़र लड़ाय रही हो। बुतमिसाल चुपचाप खड़ी टकटकी लगाय रही हो क्यों जनाबमन किस फिराक किस गममें छायरही हो। झांक झरोखन में झुक २ झोके से खाय रही हो ॥
दो०—लगी लौ किस में प्यारी। कैफियत कहिये सारी ॥ मुज़्तरिब बेकरार हो। खाकसार को बत लाओ किस गम में गिरफ्तार हो ॥ १५॥

ज० फूलन्दे का बांदी मे

दो०—नजर लड़ाकर देखतो, जरा इस तरफ आन।
बा मिसाल इन्सान ये, क्या माशूक जवान ॥
चौ०—क्या माशूक जवान अदा से जाय नचाता घोड़ा। लगा जिगर दरम्यान आन इसको कांकुल का कोड़ा ॥ चश्म चोट कर चला गया ऐसा बेदर्द निगोड़ा। निकले दिल अरमान मिले गर इस जवान से जोड़ा॥
कव्वाली—लिवाला साथ हमदम को, कि तू जाने कि मैं जानूं मिलादे मुझसे जालिम को। कि तू जाने कि मैं जानूं ॥ लिपट जेटे अगर ये गुल आन पहलू मो बुलबुल के। रफे करलूं विरह गम का, कि तू जाने कि मैं जानूं। तमन्ना हो दिली हासिल कोई तरकीब ऐसी कर। खबर नहिं होय बालम को कि तू जाने कि मैं जानूं। कदम चूमूं तेरे बांदी

कर दिलबर से दो बतियां। लगा छतियां ले वो हमको कि तू जाने कि मैं जानूं॥

दो०—देख उस नौ जवान को। माहताब की शान को॥ हूं आशक दिलोजान से। बांदी मुझे मिलादे उस घोड़े वाले जवान से॥१६॥

ज० बांदी का

दो०—सितम न ये कर सितमगर, बस २ बस खामोश।
खिरदमन्द हो खामखां, बनती हो बेहोश॥

चौ०—बनती हो बेहोश महरबां क्या कलाम करती हो। तोबा २ करो गजब क्या गुलदाम करती हो॥ अदब कायदा हया शर्म सब को खलाम करती हो। बेटे पर आशक हो क्यों बदनाम नाम करती हो॥

कव्वाली—चूर जोबन में मस्तानी फिरे होकर दिवानी है। जगत में कुछ अनोखी ना चढ़ी तुझको जवानी है॥ तुम्हारी सौतका लडका सगे फरजन्द से ज्यादह। वस्ल चाहे है बेटे से तेरे क्या दिल समानी है॥

दो०—जबां को जरा संभालो। न कलमा कुफ्र निकालो॥ उड़े रुसवा जहान में। नीच ऊंच सोचो समझो बेठो चुप हो मकान में॥१७॥

ज० फूलन्दे का

दो०—दिलबर के दीदार बिन, बंधे न सब्र करार।
जरा तरस करले मेरा, ए बांदी गमख्वार॥

चौ०—बांदी मुझको आज कौन चक्कर में पटक रही है।

दिलोजान की शकल मेरे सीनेमें खटक रही है ॥
यहां पर मेरा शरीर जान जाना में अटक रहा है।
जोबन लेत हिलोर जोर से चोली चटक रही है ॥
कव्वाली—दिलोजानी के दरसन बिन न ये दिल धीर धरता है। बसारग२में महपारा न मुतलकचैन परता है बराबर वर्ष के बांदी मुझे पल२ गुजरता है। लिवाला जा उसे जल्दी मदन अति जोर करता है।
दो०—देख उस नौ जवान को। माहताब की शान को ॥ हूं आशक दिलोजान से। बांदी मुझे मिला दे उस घोडे वाले जवान से ॥१८॥
ज० बांदी का
दो०—महरबान मातहत को, मिन्नत लीजे मान।
जान बूझकर मत करै, दोजख का सामान ॥
चौ०—दोजखका सामान करै अकल पर पडे अंगारे। रानी चतुर सुजान सगे पूरनमल पुत्र तुम्हारे ॥ जुलम करे क्या आज दिखावे दिन में चंदा तारे। न जाने की नहीं चहे तुम टुकडे करो हमारे ॥
दादरा—क्या सूझी तुझे तू बतातो सही। गजब अफसोस सितम इस कदर तू करती है। खुदाके खोफ बेहया न जरा डरती है ॥ सरासर नर्कमें अंधी हो कूदी परती है। चूरहो इश्क में बेटे के ऊपर मरती है ॥ जरा आंख से आंखें मिलातो सही ॥ क्या सूझी तुझे तू बतातो सही ॥१९॥

ज० फूलदे का

दादरा—चल चुपरह क्यों बातें बनाने लगी। एक तो इश्ककी आतिश मुझे जलाती है। दूसरे तू मेरे कानों को खाये जाती है॥ नहीं समझूंगी जरा क्या मुझे समझाती है। हाथ जोडूं तेरे तू क्यों न उसे लाती है। खाली मगज हमारा पचाने लगी चल चुपरह क्यों बातें ० ॥२०॥

ज० चांदी का

दादरा—क्या सूझी तुझे तू बताती सही। मान देख मान क्यों दीवानी हुई जाती है॥ दाग पंजाब के क्यों तख्त को लगाती है। हैफ सद हैफ हाय गैरत न तुझे आती है। वस्ल फरजन्द से चाहे न खौफ खाती है। कहीं ऐसा लिखा है दिखाती सही। क्या सूझी तुझे तू ० ॥

ज० फूलदे का

दादरा—चल चुप रह क्यों बातें बनाने लगी। जवानी जोर से हिलोर लहराती है॥ मेरी रग २ में काम देव को जगाती है। बिना उस गुलके ये तबियत मेरी घबराती है॥ लगे छातीसे तब शीतल हो मेरी छाती है। मैं तो खुद ही पढ़ी क्या पढ़ाने लगी चल चुप रह ०॥

ज० चांदी का

दो०—मान कही देख मत कर दोजख का सामान मरजवी इस जबां को दले जरा लगाम ॥

दादरा—जरा चुपरह जवां को चलावे मती। ज्वानी में हो दीवानी सुतपर चित्त डिगावे मती ॥जरा०॥ मात तात और सास ससुरकी खाकमें इज्जत मिलावे मती॥जरा०॥हाथ जोड़कर हारखाऊँ रुसवा जहां में करावे मती ॥जरा ॥रख ईमान सम्हार इन्द्रकहे पानी में आग लगावे मती ॥ जरा चुपरह० २४॥

ज० फूलंदे का

दो०—बस २ बस खामोश रह, रख जवान को बंद।
बांदी ऐसी नसीहत, मुझको नहीं पसंद ।
चौ०—मेरी नहीं पसंद मुझे चक्कर में पटक रही है।
दो घंटे से नई २ कानून निकाल रही है ॥
क्यों हरामजादी लुच्ची बातों में टाल रही है।
जल्द बुलाला उसे देर क्यों लगा छिनाल रही है॥

दादरा—जातीना छिनाल लाती ना उस गुल हजारे को।बातें बनाती बताती है टाल । अपनी ही गाती बजाती है गाल ।जाती०॥ कहने हमारे पर करती न ख्याल।जवां को चलाती कतरनी मिसाल।।जाती० अगर अब करेगी जवाबो सवाल । तो कोड़ों के मारे उड़ादूंगी खाल ।।जाती०।।लावे सनमको तो करदूं निहाल।उजरगर किया तो अभी दूं निकाल।।जाती०।।

ज० रंगा का

दो०—समझात समझाई नहीं, दोनी जुलम कठोर।
बांदी चाली महल से, मनमें खाय मरोर ॥

दादरा सारंग—लचकती गुलशन जाय बांदी। कटि पतली केहरिसी चलत बल तीन२खायबांदी॥लच०॥ इत उत नैन चलावै मनहिं मनमें मुसकाय बांदी॥लच० चंद मिनट के अन्दर चमनमें पहुँची आय बांदी॥लच० जहां खेले सार पूरनमल वहां बोली समझाय बाँदी। लचकती बागन जाय बाँदी ॥२५॥

ज० बांदी का पूरनमल से

दो०—विनय करूँ करजोर कर, सुनों गरीब निवाज।
याहि किए हौ महल में, श्री राजन महाराज॥
चौ०—श्रीराजन महाराज सुनो एक मेरी बात छोटीहै
जुल्म हुआ महलन में मौसी फिरे सेज लोटी है॥
कहीं हार कहीं चीर कहीं बल खाइ रही चोटी है।
दर्द उदर में होत मर्ज सरकार बडी खोटी है॥
दौ०—खिवामन तुमको आई। महलमें पडी तवाई। जरा मत देर लगैये। सार बन्दकर महाराज महलन को चलना चहिये ॥२६॥

ज० पूरनमल का यार से

दो०—बांदी की सुनदास्ताँ, छूटा सब करार।
मुश्फक मन इस वक्त अब, नहीं सुहाती सार॥
चौ०—नहीं सुहाती सार यार भर २ आवे छाती हैं।
इसदम दमपर दम तबियत गममें गोते खाती हैं।
एकतो सख्त दरद बाँदी मौसी के बतलाती हैं॥
दोयम बाई आँख फडकती कुशल न दिखलाती हैं॥
—सोच में जान पडी है। क्या आफत हुई

रही है ॥ व मुश्किल कटै घडी है ॥ जाकर देखूं मौसी को ऐसी क्या मर्ज कडी है ॥ २७ ॥

ज॰ महताब का पूरनमल से

दो॰—तनक तसल्ली कीजिये, बांधो सब्र करार ।
ऊंच नीच का महरवां, करलो जरा बिचार ॥

चौ॰—करलो जरा बिचार यार क्यों इतना घबराता है।
बीमारी में वक्त रातके बता कौन जाता है ॥
बाई फरके आंख अशुभ फल असगुन दरसाता है।
यार महल मौसी के मुझको शुभा नजर आता ॥

दो॰—यार जाना नहीं चहिये ॥ चतुर को क्या समझाइये ॥ मुझे संदेह यही है । श्रीराजन मौजूद महल क्यों तुझे बुलाय रही है ॥ २८ ॥

ज॰ पूरनमल का

दो॰—बेशक हों मौजूद घर, पिता मेरे गमख्वार ॥
मगर मामसी का बड़ा, मुझ पर दीखै प्यार ॥

चौ॰—मुझपर भारी प्यार इस सबब मुझे बुलाती दीखे।
मेरे देखने को उसकी तबियत घबराती दीखै ॥ बीमारी है सख्त मुसीबत मौसी पाती दीखे ॥ अगर न जाऊं यार बुराई मुझको आती दीखै ॥

क॰वाली—मेरे हमदम मेरा इसदम न जाना ना मुनासिब है । उजर इनकार और हीला बहाना ना मुनासिब है । सदां दुख सुख नहीं रहता बनी एक बात रहती है । न जाने की सलाह मुझको बताना ना मुनासिब है । बुलाया है मुझे उसने समझ फरजन्द

से ब्याह है। तरस मौसी का हमको भी न लाना ना मु-
नासिब है। महल मौसी के जाने में शुबा किस बात
का बतला। मनें मत कर किसी का दिल दुखाना
ना मुनासिब है। है बिलकुल गैर मुमकिन इस घडी
पर रोकना मुझको। झमेला, जेल जिद हुज्जत
बढ़ाना ना मुनासिब है॥

दो०—सोच में जान पड़ी है। बमुशकिल कट घड़ी
है॥ क्या आफत हुई खडी है। जाकर देखूं मौसी
को ऐसी क्या मर्ज कड़ी है॥ ९९॥

न० थ १ का

दो०—जिस दिन से मौसी तेरी, व्याही आई पार।
बतला तुझको आज तक, बुलवाया के बार॥

चौ०—बुलवाया के बार प्यार कर गोद बिठाया कब२।
समझ मिस्ल फरजन्द जड़ित जेवर पहनाया कब२॥
लाड चाव के साथ कटोरे दूध पिलाया कब २। पंखा
लेकर व्यार ढोलकर तुम्हें जिमाया कब कब॥

क०—अमल कहने हमारे पर भी लाना ही मुनासिब
है। न जाने का बहाना कोई बताना ही मुनासिब है।
एक तो रात का मौसम हो रहे बदसगुन दायम। जमा
ना है बुरा सायम न जाना ही मुनासिब है॥ यहां
रूम औरतें हर पेच से पुरकार होती हैं। इन्हों की
बात में आकर मुश्फक न आना ही मुनासिब है।
नजर आता है बेशक पार मुझको दाल में काला। इसे
धोका दे कुछ टालो बहाना ही मुनासिब है॥ अगर

हम तक जाओगे, तो खतरा अबिस पाओगे। हमारे प्यारे हो इससे जताना ही मुनासिब है॥ मेरी मानों न मानों आपको इख्तियार है साहब हमें हर बला से तुम को बचाना ही मुनासिब है॥

दो०—यार जाना नहिं चाहिये। चतुर को क्या समझइये॥ ये बांदी बहकाती है। पूरनमल मौसी के महलन दगा नजर आती है॥ २० ॥

ज० पूरनमल का बांदी से

दो०—बांदी तेरी बातका, मुझे न हो इतवार॥
सच २ कह मौसी मेरी, सचमुच हो बीमार।

चौ०—सचमुच की बीमारी हुइया दीगर कोई सबब है। सुनकर तेरा सखुन हमारा घबड़ा रहा कलब है॥ सरे शाम तक कछु न जिकर था अब क्या हुआ गजब है सख्त तअज्जुब मुझे बतादे सही २ मतलब है॥

दो०—जो चाहै खैर जानकी। बात कहना इमान की॥ यही बस अचरज आया। आज तलक तो कभी नहीं मौसी ने मुझे बुलाया॥ २१ ॥

ज० बांदी का

दो०—तड़फड़ाय तन बदनकी, रही सकल सुधि भूल।
मारे डारे नारि को, पसली में का सूल॥

चौ०—पसली में का सूल बड़ी बेकल घबड़ाय रही है। लोटी २ फिरै गिरै पलका पर खाय रही है॥ हाय २ डकराय गायसी रुदन मचाय रही है। सब आओ देख महल में तुम्हें बुलाय रही है॥

कव्वाली—दरशन तुम्हारे को दिल उसका भटक रहा है। मुआ निगोड़ा नाहक माली का बक रहा है। कहने लगा ये बांदी बहका रही है तुमको। सुन ये कलाम मेरा, सीना भभक रहा है॥ असगुन सगुन विचारै पहले से नाक मारे। अपने ही गीत गावै तुमको हटक रहा है। फड़के है आंखबाईं, मौसीपड़ी दुखारी। असगुन का फल सरासर जाहिर झलक रहा है। कहती हूं सच हलफ से रानी का नहीं ठिकाना अब तो चलोगे तुम या कुछ और शक रही है॥

दो०—मर्ज उलझा बेढब है। यक बयक हुआ गजब है। न कोई आरसबब है। सूरत देख दिखाओ बस इतना ही मतलब है २२॥

ज० पूरनमल का

दो०—बांदी तेरी बात में, न कुछ बाल भर फर्क।
माली का ये कम अकल, करता झूठी तर्क॥

चौ०—करता झूठी तर्क न रहूं इसके बहकाने से। मेरा भी हो भला मामसी के दरशन पाने से॥ उसको भी हो जाय तसल्ली मेरे पहुंचजाने से। शायद हो आराम दवा दारू के करवाने से॥

दौ०—तसल्ली देखूं मनको चलूं। फौरन महलन को॥ न अबेर जरा लगाऊं। वैद्य हकीम बुलाय मामसी का इलाज करवाऊं॥ २३॥

न० रानी का

छींक सामने से हुई, डाल पड़ी तलवार ।

ज० थार का

दो०—दानाई को छोडकर, क्यों बनता नादान ।
छींक सामने से हुई, मान अमाने मान ॥

छंद—माने न जो मेरा कहा मूरफक बहुत दुख पायगा । गिरता है तेगा म्यान से खतहून न खाली जायगा ॥ मुझको कुशल दीखे नहीं, अलबत्त खता खायगा । मत जा महल मत जा महल मत जा महल पछतायगा ॥ ५३ ॥

ज० पूरनमल का

दो०—बेहूदी बातें करे, बजा रहा क्यों गाल ।
बेवकूफ की दोस्ती, हो जीका जंजाल ॥

छंद—जंजाल जीका हो बिल शक, दोस्ती नादान की । कम अकल ओछी नसल भी अकल भी हैवान की ॥ सुहबत शरीफों की से दानिशमन्दी कुछ दिख लायगा । लेकिन तुख्म तासीर और जो असर कहां जायगा । बकरन का बस बैठ चुप टाली बहुत ठानूं नहीं । जाऊंगा मैं जाऊँगा मैं जाऊँगा मैं मानूं नहीं ५४

ज० रंगा का

दो०—पाली का हरतौर से, समझावे हरचन्द ।
पूरनमल को नसीहत, आती नहीं पसंद ॥

चौ०—आई नहीं पसन्द नसीहत कोई पूरनमल के । कसे कमर फेंटा कटार फौरन चल दिया उन्दर के ॥ रस्ता काटा सर्प बाग से जाता हुआ पर चलके । सन्मुख

रोए स्यार जबकि पहुँचा नजदीक महल के।

क०—इस कदर बद सगुन होते न कुछ दिलमें विचारी है। गया सीधा चला महलन बना ऐसा अनारी है। लिवा बांदी गई ऊपर सजी जहां चित्रसारी है किए शृंगार सोलह हू खड़ी मौसी निहारी है॥

दो०—न कुछ उसको बीमारी। और ही है तैयारी॥ सेज पर बिछ रही शिलमें। पूरनमल गम गर्क खड़ा सोचे यों दिल ही दिलमें॥ २७

ज० पूरनमल का मनहीं मन में

दोहा—चौकन्ना हो चौतरफ, देख रहा कर गौर।
आता है मुझको यहां, नजर और ही तौर।

क०—और ही तौर यहां पर है खुदा खैर करे। कजा आधी का अब गजर है खुदा खैर करे॥ हैफ सद हैफ सितम ना कोई बीमार यहां। न कोई मर्ज का जिकर है खुदा खैर करे। वखूबी दीखती मौसी के खुशी चहरे पर। न कोई गम, अलम फिकर है खुदा खैर करे॥ गिलम तकिए गुलों से सेज सजा रक्खी हैं। अजल का घर ये सरासर है खुदा खैर करे॥ और सामा भी कुछ एय्याशी नजर आते हैं। सुराही जाम गुलसागर है खुदा खैर करे॥ हाय अफसोस कहां परमें यहां आन फंसा। कजा का मौतका चक्कर है खुदा खैर करे। याद अब आरही है यार की बातें मुझको। बिलाशक यहां कोई खतरा है खुदा खैर करे॥

दो०—कुछ न कुछ यहां बवाल है। चाल छल फंद जाल है॥ मेरे हाफिज हकताला। इन्दरमन की करो हिफाजत जचे दाल में काला॥३१॥

ज० फूलन्दे का पूरनमल से

दो०—आओ जो आओ यहां, पलके पर तशरीफ।
है तो इसदम आपका, कहो मिजाज शरीफ॥

चौ०—कहो मिजाज शरीफ न बोला किस सोचमें पड़े हो
कौन तरद्दुत रंज फिक्र किस आफत में जकड़े हो॥
क्या गम अलम वहम है जो ऐसे बेजार बड़े हो।
कहो सबब क्या चकाचका हो कर चुपचाप खड़े हो॥

दो०—जरा मुझसे तो बोलो। कैफियत दिलकी खोलो॥ जिगर पर क्या धकपक है। चमक दमक उड़गई कहो चहरे का रंग क्यों फक है॥४२॥

ज० पूरनमल का

दो०—बांदी ने जाकर कहा, है मौसी बीमार।
उसी वक्त बस चल दिया, रहा न सब्र करार॥

चौ०—रहा न सब्र करार हुई दिल गमकी पैदायश है।
एक मिनट हांस की न फिर डटके की गुंजायश है।
क्यों ये धोखा दिया करी क्या मेरी आजमायश है।
हूं फरमाबरदार कहो मौसी क्या फरमायश है॥

दो०—तेरी बांदी खंदी ने। दगा की छलबन्दीने॥ बताऊं मजा जाल का। उड़ा दूं सर छिनालका॥ कराही बड़ी फिक्र है। यहां सब तरह अमन न

बीमारी का कोई जिकर है ॥३३॥

ज० फूलन्दे का

दो०—इसी राह होकर चमन, जाते हो दिन रात।
यहां न आते हो कभी, क्यों साहिब क्या बात

चौ०—अपने आप जनाब कभी तशरीफ नहीं लाते हो।
धोखे से बुलवाये तो नाराज हुए जाते हो॥
बुलवाने का सबब कहूं बैठो क्यों घबराते हो।
खता वार बंदी हैं क्यों बांदी को धमकाते हो॥

क०—खता को माफ फरमाओ कि ऐसा होही जाता है। ख्याल दिलपर न कुछ लाओ कि ऐसा होही जाता है॥ न इतना चाहिये करना कभी गुस्सा गरीबों पर। अजी बैठो यहां आओ कि ऐसा होही जाता है॥

दो०—इधर तशरीफ लाइये। पलंग पर बैठ जाइये॥ लियाकत से शहूर से। क्या फरमायश क्या फरमायश करते खड़े दूर से ॥३४

ज० पूरनमल का

दो०—जो कुछ फरमाना तुम्हें, फरमादो फरमान।
नहीं बैठने की मुझे फुरसत अम्माजान॥

छन्द—एक मिनट की फुरसत नहीं जाकर करूं आराम है। क्यों कर बुलवाया क्या सबब बतलाइये क्या काम है॥ हाजिर हूँ अब इरशाद करना होसो इरशाद कीजिये। कहना है सो कह लीजिये वरने

इजाजत दीजिये ॥ जाऊँ सुबह आऊं तेरी खिदमत बजालाऊं सभी । माता से ज्यादा मामसी नहिं उजर कर सक्ता कभी ॥४२॥

ज० फूलदे का

दो०—खुद फरमाबरदार क्या, फरमावे फ़रमान ।
बुलवाने का सबब सब, सच२करूं बयान ॥

चौ०—सच२ करूं बयान मगर कहते २ डरती हूं। करो नवाजिश सनम गुजारिश हाथ जोड करतीहूं॥ कहो नअम्माजान आपके कदमों सर धरती हूं । दिलोजान से दिलोजान मैं तो तुमपर मरती हूं ॥

क०—अगर आराम करना तो करो आराम सेजों पर। कहां जाओ यहां आओ दिखे आराम सेजोंपर चमनकी सैरका गरशौक है तो सैरभी करलो ॥ सनम के वास्ते ये कर रखे सब काम सेजोंपर । यहां है बाग फूलों का यहां जोवन बगीचा है॥ तोडलो पक रहे नीबू नरंगी आम सेजोंपर ॥ सुना मैंने हमेशा यारके संग सार खेलो हो ॥ हमारे साथभी खेलो यहां गुलफाम सेजों पर । इश्क चौसरके हम भी देखलें कितने खिलाडी हौ । फतह किसकी हो दोनों में गुले अन्दाम सेजोंपर॥रहो शब आज की हिलमिल मजा लूटो जवानीका । लिपट पीओ पिलाओ वस विसालत जाम सेजों पर ॥

दौ०—जान तुमपर निसारथी । वरलकी तलबगार थी ।बडी उम्मेदवार थी । आए आप बडी महरबानी

की थी बंदी बेक़रार ॥ ४२ ॥

ज० पूरनमल का

दो०—दीवानी या बावली, ज़रा सम्हालो होश।
कहो न कुफ्र कलाम ये, बस२ बस खामोश।
चौ०—बस२बस खामोश सखुन क्या नाकिस फरमाती
होगज़ब सितम अफ़सोस खुदाका भी न खोफ़ खाती
है॥ बेटे संग चाहती वस्ल टुक शर्म नहीं आती है।
सुन तेरी गुफ्तार कलब काँपे रूः थर्राती है॥
दो०—यहां हक नाहक आया। आनकर मैं पछि
ताया॥रक्ख ईमान ठिकाने। हो जाय हमपर पि·
हर मती फ़रजन्द बिरानों जाने॥४४॥

ज० फूलदे का

दो०—दिल उलझा सुलझे नहीं,बुरा इश्क जंजाल।
सनम शिताबी सेज चल,न बन मेरा फ़रजन्द।
चौ०—न बन मेरा फ़रजन्दचन्दमुखहंस२गले लगालो
कहो न मौसी हमें सनम अपनी माशूक बनालो॥
हा २ खाउं पड़ूं पैयां सैंयां अरमान मिटालो।
जंग मचालो जोबन से दिलजानी मजा उड़ालो॥
दो०—जान तुमपर निसार थी। वस्लकी तलबगार
थी॥ बड़ी उम्मेदवार थी। आये बड़ी महरवानीकी
बंदी बेकरार थी ॥४५॥

ज० पूरनमल का

दो०—जो कुछ पतिव्रत धर्म का, है वेद में बयान।
तुमको समझाऊं वही, सुन माता धर ध्यान॥

लावनी–सुनले पतिब्रता के शुमार होती हैं । उत्तम मध्यम लघु अधम चार होतीहैं ॥ मेरी मात वही उत्तम पतिब्रताहै । जिसने स्वप्न में भी पर पुरुष न देखा [illegible] है ॥ मध्यम पतिब्रता उसको देव कहै हैं । [illegible] पति को पितु सुत भ्रात समान वहै है । मेरी [illegible] पतिव्रतके लघु अवसि गैर इन्सान । मगर खान्[illegible] की लिहाज से बचा रखा ईमान

शेर–जो [illegible] हर जगह तकती फिरै हर एक नुकीला ज्वान है । हरवक्त हरदमही उसे घेरे रहे शैतान है । मौका न पावे गैर से जो ले सके रतिदान है । भगवान उस का किसी बिधि साबित रखे ईमान है ॥

लावनी–मेरी मात अधम ये ही पतिब्रता जान । लक्षण भेद सकल समझाये अब फल करूं बयान ॥ उत्तम तो भवबन्धन से छूट जाती है । मध्यम पतिब्रता देवयोनि पाती है । लघु मनुज जन्म धर फिर जगमें आती है ॥ हो अधम पशु श्रुति स्मृति बतलाती है। मेरी मात समझ कुछ करो हृदय में ज्ञान । जोश जवानी को डाटो रक्खो सम्हाल ईमान । जो जरा देर सुख का अ धर्म खोती हैं ॥ अपना पति तज गैर के सातसो ती है ॥ निश्चय बिधवा बालापन में होतीहै । बस इसी पापसे जन्म २ रोती हैं ॥ मेरी मात रांड हो जाय करे बदफैल । मलकुल मौत उसे देते हैं घोर नर्क में ठेल ॥

दौ०–नसीहत ये उर धारो । मात ईमान सम्हारो ॥ वस्ल की हैं गर ख्वाहिश । राजन को लो बुला खो

बंदे पर ज़रा नवाजिश ॥ ४६ ॥

न० फूलदे का

दो०—दिलोजान से नसीहत, करूंगी मंजूर ।
मगरहमारी अरजभी, सुन लो जराहुजूर ॥

कव्वाली—मिले मुझको अरज अपनी सुनानेकी इजाजतहै॥लिखा ऋुगवेदमें ऐसा बताने की इजाजत है ॥ मुखन्निस हो मरद जिसका बुड्ढाया निकम्माहो दिगर शौहर जरूरत को बनाने की इजाज़त है ॥ अजीइसके अलावह और क्या एक बात अच्छीहै दुबारा व्याह विधवाका करानेकी इजाजतहै। बमूजिब वेद के तो आपको, हमको न कुछ डर है ॥ हर एक इन्सां को अपना मन मनाने की इजाज़त है ॥

दो०—छोड़ वेद पुराण को । भाड़ में पटक ज्ञान को ॥ दे नाहक होती है । चलो सेज पर सनम आप की कुल दलील थोती है ॥ ७५ ॥

न० पूरनमल का

दो०—क्यों तू फंसत कुपंथ में, छोड़ सनातन धर्म।
बेटे से शौहर कहे, तुझे न आती शर्म ॥

चौ०—ज़रा न आती शर्म क्या कोई तैने नशा पियाहै किसी मूढ़ने वेद मंत्र का उलटा अर्थ किया है ॥ निज पति अछत पर पुरुष को सतसंग बताय दियाहै हाय इस कदर झूंठे को तूने सच समझ लिया है ॥

कव्वाली—सनातन धर्मको छोड़े महज तेरी हिमाकतहै । भला झूंठी मिसालोंकी कहीं होती समायत है ॥

लिखा जिसने पराये पति रति और ब्याह विधवा का ॥ न उस कलयुगके पापी को जरा आई नदामत है। चाहे हो हीन, अन्धा बधिर बूढ़ा प्राणपति अपना उसे भगवान सम माने, ये वेदों में इजाज़त है ॥ दिलोजां से करे खिदमत न पति के हुक्म को टाले। करे निज धर्म की रक्षा लिखी ऐसी हिदायत है ॥ जो लावें काम को बस में रखें ईमान को साबित ॥ उन्हें हरकिस्म की उन्नत में हो हासिल नियामत है। पतिव्रत धर्म जो छोड़े सुनों ये कैफियत उनकी ॥ यहां भी हो हिकारत है वहांभी हो हिकारतहै ॥ उचित अनुचित समझ मनमें छोड़ इन बद ख्यालों को। पतिव्रत धर्म उरधारो करो मुझपर इनायतहै ।कयामत तक न मैं अपना डिगाऊं सत्वव्रत माता । सनातन धर्म को पालूं ये जबतक दम सलामत है।

दो०—धर्म पर रहू आमादा। तजे मत कुल मर्यादा॥ तंग कर मुझे न ज्यादा । कदमों पर सर रखूं मती दोजख का करे इरादा ॥ ४८ ॥

ब० फूलदे का

दो०—तुम्हें ज्ञान सूझे सनम, यहां, खलल शैतान॥
जोश जवानी ने मुझे, कर रक्खा खफ़गान॥

दादरा—दिलबर जानी छूटे ना जवानी॥ तुम्हें मेरी कसम हंसके तो जरा बोल सनम । सितमगार बेहद रसकी तो गिरह खोल सनम । मेरी जोबनकी जमा व का कर मोल सनम । [illegible] वे तोल सनम । मेरे सीने [illegible]

दिलवरजानी० ॥ सनम देखो मेरा जोवन भँवर गुजार रहा ॥ कटीला डंक सब नस २ में मेरे मार रहा। हर तरह जानमन ये कर मुझे बेजार रहा। दरद हरले मेरा फर किस लिये इनकार रहा ॥ चढा मन्मथ का नशा हो रही मैं दिवानी ॥ दिलवर० ॥ दिलोजां दिलरुवा दिल से दुई को दूर करो। महरवां मातहतहूं मिन्नतें मंजूर करो। हुई हैरां हिरास हुज्जत न हुजूर करो ॥ मुझे मशकूर करो माफ सब कसूर करो। पिया पैयां परूं प्यासी को पिलादे पानी ॥ दिलवर० ॥ चाह के चाह में चक्कर ऐ चित खाता है। काम कमबख्त कलेजे पै सर चलाता है॥ कोई दममें तमाम काम हुआ जाता है। निगोडे निर्दई तुझको न तरस आता है। जरा जालिम गले लगले तो होवे जिंदगानी दिलवरजानी डटे ० ४९ ॥

न० पूरनमल का

दो०—दिनकर हो शीतल चहै, शशि बरसावे आग।
मूशक हने बिलाव को, खाय गरुड को नाग॥

चौ०—खाय गरुड को नाग शिरोमणि काग बने हंसन में। होय प्रकाशित दिवस मध्य तारागण चहै गगन में। मृगमृगेश कारि प्रीति परस्पर हिल मिल विचरें बन में॥ इतने हों उत्पात तदपि तो संग न करूं रमन में ॥

सवैया—कामके कोपसों बाम भई बुधि त्याग सुपंथ कुपंथ परैतु। लोक की लाज भलें करकी लाज त्रिलोक के नाथ से नाहिं डरे तू ॥ नर्क निवास की

आस करे उपदेश न उत्तर कान धरे तू । मैं निज धर्म न क्षीण करूं चाहे कोटि सहस्र प्रपञ्च करे तू ॥

दौ०—तजे मत कुल मर्यादा । धर्म पर रह आमादा ॥ तंग कर मुझे न ज्यादा । कदमोंपर सर धरूं मती दोजख का करे इरादा ॥ ५० ॥

ज० फूलन्दे का पूरनमल्ल से

दो०—मन मतंग मदमें भरी, छूटे नहीं दिलदार ।
हो सवार नेंक डाटले, हट२ अंकुश मार ॥

छंद—अंकुश लगा बन महावत कर बस इसे क्यों नटे है । जोबन से करले जंग क्यों रण छोड़ पीछे हटे है ।। उठती हिलोरें मदन की पल२बरससमकटे है । प्यासी को प्यावे नीर इसमें धर्म ना कुछ घटे है ॥

बहर तवील कव्वाली—क्यों तू आसा निरासा करे है मुझे मेरे दिलको दिलासा दिलातो सही । ये धरम का शरम का वहम दूर कर दिलोजानी पलंग पे तू आतो सही ॥ कभी चक्खा न हो वोचखाऊं मजा मुझे हंसके गले से लगा तो सही । प्यारे सीने से सीना मिला तो सही जरा पहलू में अपने लिटाते सही ॥ ५१॥

ज० पूरनमल का

बहर तवील—तू जनम के जती को सतावै मती यहां रती के पती की हवा ही नहीं । चाहे लाखों करोड़ों तरह से कहो मुझे आना पलंग पै रवा ही नहीं । जिस मरज में हुई मांसी तू मुब्तिला कोई इसकी बराबर दवाही नहीं । ये अरज है मेरी जो गरज है तेरी

मिलन का पता

इन मरीजों को मुझपर दवाही नहीं ५२

न० फूलन्दे का

ब०त०क०—इस जमाने में कोई जती वा सती मैंने आंखों से देखा बशर ही नहीं। जिसे ताबे हशर ना लगी हो हवा ऐसा दुनियां में कोई शजरही नहीं। मेरी मानों सखा, है इसी में भला जो करोगे उजर तो गुजर ही नहीं। तेरे सरकी कसम तुझे भेजूं अदम में भी करनी में रक्खूं कसरही नहीं ॥ ५३ ॥

ज० पूरनमल का

बहरतबील—ऐसी धमकी दे किसको डराती है तू जरा मुल्के अदम कातो गमही नहीं। तुझे करनाहो सो कर गुजरना सखी मुझे मरने का रंजो अलमही नहीं ॥ जो धर्म पर मरूँ तो परमपद मिले लूंगा जगमें दुबारा जनम ही नहीं। तेरे सरकी कसम चाहे सर हो कलम तो भी सेजों पे रक्खूं कदम ही नहीं ५४॥

न० रंगा का

दो०—यों कह पूरनमल्ल चला, फूलमती खिसियाय।
दौड़ झपट चट कुमरको, फेंटा पकरो जाय ॥

छंद—सन्मुख खड़ा मगरोक पूरनमल नजर जोड़े नहीं। बलकर छुड़ावे फेंटको रानी मगर छोड़े नहीं ॥ कुछ बस न वसियाना सो दी फेंटा कटारी त्यागकर ईमान अपने को बचा द्वारे पै आया भागकर। रानी जवानी की दीवानी हाथ मलती रहगई। कर ख्याल रंज मलाल दोऊ दृग लाल कर कहती भई ॥५५॥

ज० फूलन्दे का

०—इस दम आधी रात तू, भाग चला अब खैर।

फजर दिखाऊंगी तुझे, जालिम अपनी सैर ।
छंद-इस दगाबाजी का अबसि तुझको चखाऊंगी मजा । मुझको तड़फती क्या तजे सर छारही तेरे कजा । अब भी समझ आ बगद नहीं झगड़ा बड़ा बढ जायगा होते फजर ये बेखतर सूली पै तू चढ जायगा । मरने के पीछे भी तेरी बदहालतें करवाऊंगी । आंखें निकलवा कर तुझे झेरे में फिर गिरवाऊंगी ॥ ५६ ॥

ज० पूरनमल का

दो०-मेरे मरने से तेरी, शीतल छाती होय ।
तो माता बेशक फजर, मरवा दीजो मोय ॥
छंद-अच्छी लगे सो कीजियो माँसी तुझे इख्त्यार है । कढवाइ लीजो नैन या दिलवाइ दीजो दार है । लेने को मेरी जान तू बैरिन बनी बीमार है ॥ बुलवाय मुझ को महल में अच्छा किया ये प्यार है ॥ होगा फजर सो देखलूं मालिक मेरा भगवान है ॥ ईमान जिन साबित रखा वोही बचावे जान है ॥ ५८ ॥

॥ इति प्रथम मंजिल समाप्तम: ॥

अथ द्वितीय मंजिल प्रारम्भ ।

ज० रंगा का

सो०-पूरनमल रुखसत हुआ, कहकर ये बानी ।
बांदी से कहने लगी, फूलन्दे रानी ॥ ५९ ॥

ज० फूलंदे का

दो०-समझ मेरी तेरी कजा, आ पहुँची नजदीक ।
किसी कदर दीखे नहीं, अब बचने का ठीक

चौ०—नहीं बचने का ठीक शीश चौगिर ही छाई दीखे। मिली न दिली मुराद मुफ्त होती रुसवाई दीखे॥ जान चुकी आसान जानकी नहीं रिहाई दीखे॥ कथा कारली तहरीर सब तरह आफत आती दीखे॥

क०—मदद गर तू करे मेरी तो पूरा गुल खिलादूंगी। फजर होते फरेबो जाल का फंदा बिछादूंगी॥ अगर जो शाहसे वह शोख गर चुगलीभी खावेगा। तो उसका रंग हटाकरके मैं अपना रंग चढादूंगी॥ मुझे तो नीम बिस्मिल हर तरह करही गया जामिल। मगर मैं भी निशां उसका जहां में से मिटादूंगी। चाहे कोई लाख समझाओ न मैं मानूं किसीकी भी॥ करूंगी अन्नजल पीछे दार पहले दिलादूंगी॥ निकलवाके आंख फिर कूए में डलवादूं सितमगरको। कही जो २ मैंने उससे सो सब करके दिखादूंगी॥

दो०—अगर तू मददगार हो। तो मेरी नाव पार हो॥ न कोई दिगर सलाही। त्रिया चरित्र दऊं रचकर जो तू भरदेइ गवाही ५९॥

ज० बांदी का

दो०—नमक ख्वार हूँ आपकी, बनूं न नमक हराम। दिलोजान से करुंगी, जो फरमाया काम॥

चौ०—जोफरमाओ काम हुक्मको कभी न दासीपटके महरबान मन दिल आवे सो रचो जाल बेखटके। पूछेंगे सरकार गवाही दऊं न जाऊँ हटके। खूंटी पर ईमान रख इजहार करूं डट२ के॥

कव्वाली—गवाही आपके मूजिब ही मैं ऐसी बना दूंगी ॥ मामला झूंठ है लेकिन सही साबित करादूंगी । पक्की हरतौर से महाराज के दिल को दिलादूंगी ॥ कहो जिस तौर तुम उस तौर हां मैं हां मिलादूंगी । तरफ अपनी से प्यारी और दस बातें लगादूंगी ॥ रहो मेरे भरोसे पर न मैं तुमको दगा दूंगी ॥

दौ०—कहूँ सच२ ईमानसे । हूं हाजिर दिलोजान से हर तरह मददगार हूं । खिदमतगार खवास खास खादिम हूँ खाकसार हूँ ॥ ६० ॥ ज० फूलदे का

दो०—तेरे कहने से जरा दिलको हुआ करार ।
वडे फजर ही जायकर, हाजिर हो दरबार ॥

चौ०—हाजिर हो दरबार मुसीवत मेरे वास्ते सहना । जब तक जिंदा रहूं तेरा अहसान न भूलूं बहना ॥ छिपी हुई चुपचाप किसी जां खडी अलहदी रहना । आवें जब महाराज पास हो पेश इस तरह कहना ॥

दौड़—किये हो याद भवनमें । देर मत करो गवन में ॥ कचहरी करन न देना । मैं इत त्रिया चरित्र रचूं तू ला राजन को भेना ॥६१॥ ज० रंगा का

दो०—सुबह होत दरबार को, दीनी रानी भेज ।
इत रानी कौतुक रचो, औंधी मारी सेज ॥

चौ०—औंधी मारी सेज बंद चटकाय लिये चोलीके । सब शृङ्गार बिगार टूक कर सारी अनमोली के ॥ कुच कपोल मलमिसल लाल मानिंद किये रोलीके । खटपाटी ले पड़ी हूबहू हो मिसाल होली के ॥

दो०—चरित्र रानी ये कीना। इधर किंकरी प्रवीना। छिपी दरवार खड़ी है। जिसदम आये थाद करी यों कर बिनती बड़ी है ॥ ६२ ॥

ज० बांदी का शंखपति से

दो०—अरज हमारी बस्ता खड़ी, करती खिदमतगार।
महारानीजी आपको, याद करें साकार ॥

चौ०—याद करे सरकार महल चालिये फरमायइनायत लाना साथ खिवाय इस कदर काहे मुझे हिदायत। बेकरार गम गिरफ्तार तड़फे बेजार निहायत। क्या जाने कोई मर्ज हुआ या दीगर कोई शिकायत।

दो०—उन्हें कुछ नहीं खबर है। बदन की नहीं खबर है। तसल्ली तनक न दिलको। फिर करना दरबार चलो पहले हुजूर महलन को ६३॥ ज० रंगा का

दो०—बांदी के सुनकर सखुन, गये महल भूपाल।
कहैं विकल हो लखि नृपति, रानीको बदहाल।

ज० शंखपति का फूलन्दे से

दो०—क्यों प्यारी फक्क हो रहा, सब चहरे का रंग।
कौन सबब कुम्हला गया गुलगुलाब सा अंग।

चौ०-गुल गुलाबसा अंग रहा मुरझा सुध नहीं बदनकी मन मलीन गमगीन हुई क्यों तजी सेज फूलनकी। बहै चश्म से अश्क खुश्क सब रौनक उड़ी बदनकी। किस गममें मुब्तिला जानमन कहदो अपने मनकी।

दो०—फिक्र मुझको कमाल है। बड़ा रंजो मलाल है। जमीं पर क्यों सोती हो। अमन पाटी लिये किस सबब जार २ रोती हो ॥ ६५ ॥

ज० फूलदे का

दो०-महरवान पूछो न कुछ, जो है रंज मलाल।
दिलही मेरा जानता, दिल अंदर का हाल॥
चौ०-दिल अन्दर का हाल कहूं क्या शर्म मुझे आती है। साफ२ कैफियत आपसे कही नहीं जाती है॥ जो यव गुजारा गजब था दिकर भक भका ति छाती है। मरूं कटारी मार और कुछ पार न बसियाती है॥
दो०-प्राणपति मेरे हाल का। अलमरंजो मलाल का॥ पूछना सब फिजूल है। जीते जी आपके मेरी सब इज्जत हुई धूल है॥६५॥

ज० शंखपति का

दो०-कुछ बतलाती हो नहीं, रोओ पड़ी फिजूल।
जरा जबां से कहो तो, क्या इज्जत हुई धूल॥
चौ०-क्या इज्जत हुई धूल छिपातीहो किस खोफखतर से। वु कदवाय नैन जिसने देखा हो कडी नजरसे अगर पेश जबरन कोई आया हो किसी कदरसे। हूं उडाय उस नाबकार का सर सितावी खंजर से॥
दो०-किसीने की हो हांसी। दिलवादूं उसको॥ चलाया हो जबान को। गडवादूं जिंदा जमीन अन्दर उस बेईमान को॥६६॥

ज० फूलदे का

दो०-कल जहान में आपका, बंता रहा इकबाल।
कहे अलिफ से बे मुझे, क्या गैर की मजाल॥
चौ०-क्या गैर की मजाल जो मुझको देखे कडी नजर से। खुलवाओ तो खोल कहूं घरही में पत्थर बरसे

सितम करगया पूरनमल नहीं डर आपके डरसे मेरा
या उसका किसका सर काटोगे खंजर से ॥
दो०—इस सबब मेरे हाल का । अलम रंजो मलाल का ॥ पूछना ही फिजूल है । जीते जी आपके
मेरी सब इज्जत हुई धूल है ॥६८॥

६० शंखपति का

दो०—दिलोजान क्योंकर नहीं, कहो खुलासा बात।
पूरनमल ने क्या सितम, किया तुम्हारे सात॥
चौ०—किया तुम्हारे साथ सितम क्या कहदो सभी हिदायत॥ खिरदमंद सुहवत शरीफ शागिर्दा पिसर निहायत। मक्तब और स्कूल पाठशाला की मिली हिदायत। कभी आज तक पूरनमल की सुनी न कोई शिकायत ॥
कव्वाली—कहींसे भी शिकायत कुछ न पूरनमलकी आती है। जाबजा शहरमें उसकी सुनी तारीफ जाती है ॥ तेरा ऐसा सखुन सुनकर मुझे अफसोस आता है। नये ढंग की अजायब बात क्या बेदब सुनाती है॥ बड़ा लायक अदबसे कायदे हर तरह वाकिफ है। करे तुझसे वो गुस्ताखी न ये दिलमें समाती है॥ अगर मादर समझ कुछ चोनकरले गया तुझसे। तो क्या डर है वो लड़का है क्यों दिलपर ख्याल लाती है॥ अलावह इसके हरकत और क्या तुझसे करी होगी। बता ऐसी खता क्या की कि जिसपर सर कटाती है॥
दो०—ओढ शिर सारी फाटी पड़ी लिये खटपाटी॥

वहाँ अँसुआ ढाली। ऐसी क्या पूरनमल ने तेरी जागीर छिनाली ॥ ६९ ॥ ज० फूलन्दे का

दो०—जो कुछ करो सो ठीक है, वह बेटा तुम बाप।
या शरीफ़ फरज़न्द है, या शरीफ़ हैं आप ॥

चौ०—याशरीफ़ हैंआप खूब अच्छी तरकीब निकाली।
शरम न आवे फरमाते हो क्या जागीर छिनाली ॥
इज्जत लेगया और तुमभी देलो दस गाली।
हां महाराज सही है मैं अँसुआ ढलकाऊं ढाली ॥

कव्वाली—नजरसे गौर कर देखो कि क्या हालत हमारीहै। आपके शाहजादेने करी किस्तौर ख्वारीहै॥ मुलाहिजा किजिये चोलीका चटकी है हरएक जांसे। बटित गोटा किनारीकी फटी तनपर की सारी है॥ दुतर्फा दाग दंदानों के रुखसारोंपे हैं जाहिर। निशां नाखुन पिस्तों पर कि जिनसे खून जारी है। ज़िना जबरन किया मुझसे है हरकत इससे ज्यादे क्या। नकी कुछ आपकी दहशत मेरी इज्जत बिगारी है॥ जरा दिल सोचिए कैसा गजब किया है संग मेरे। हुई शादी मेरी उसको कि या मेरी तुम्हरी है ॥

दो०—पियामैं नहिं जिऊंगी। हलाहल घोल पिऊंगी॥ मती खुकबोत मोपै। बेटा की करी नारि अधर्मी पत्थर परे न तोपे ॥ ७० ॥

ज० शंखपति का

दो०—क्या बकती है बेशरम, बेहुदी हैवान।
सुनली तेरी दास्तां, बस चुप रक्ख ज

चौ०-बस चुप रखना जबान अकल क्यों ज्यादह दौड़ाती है। फितनेगरी फरेब फन्द का फिरका फैलाती है॥ बेलिहाज हो बदन दिखाती शरम नहीं आती है। बना जाल खंदी छिनाल क्यों अंसुआ ढलकाती है॥

दो०-लाज दी मिला खाक में। अदब रख दिया ताक में। अबर अपने खोले है। चुप रह चल चोचले न कर क्यों रस में बिस घोले है॥ ६१॥

ज० फूलदे का

दो०-शरम गई हुरमत गई, इज्जत हुई खराब।
जिसपर ये तुमने मुझे, बख्शा खूब खिताब॥

चौ०-बख्शा खूब खिताब मुझे ही उलटी धमकाते हो। बेलिहाज खंदी छिनाल बेहूदी बतलाते हो॥ मैं लिहाज से मरूं आप कुछ गैरत नहीं खाते हो। अपने आगे आप हमारी ये गति करवाते हो॥

गजल-शौकत व शान आपकी महाराज घट गई। किस लाल बाग में हो हुकूमत पलट गई। उस सोच ने आ धूम मचाई थी किस कदर॥ देखो तो सेज मेरी सारी सिमट गई॥ जबरन झपट पटक में और खेंचातान में। सरी के टूटे हुए चोली भी फट गई॥ सिर फूल बेना बंदी टूटे रतन जड़े। माथे की पिया बिंदी अब रूपे हट गई। बेसर की गूंज मुरकी भलका हुआ है चूर। बाले व बालियों में ये लट लिपट गई॥ माला व गुलूबंद ये टूटा गले का हार। जौहर बिखर रहे ये वो लर उलट गई। ने खौफ खुतर

सबेवत की मुझ से सुबह तक । मोधू तुम्हारी नाक तो अड़में से कट गई ॥

दो०—इसी लिये मोहि व्याही । पुत्र पै कुगति कराई ॥ भेजदो पीहर डोला । मेरे जाने श्यालकोट पै परे गजब के गोला ॥ ७२ ॥ ज० शंखपति का

दो०—अमी जाय आकाश को, व्योम जायपाताल ।
अन्ध निहारे सृष्टि को, मूक होय वाचाल ॥

चौ०—मूक होय वाचाल पंगु पहुंचे पहाड़चोटीपै । मुक्ता त्याग मराल चहै रोजा खोल राट पे ॥ गजको हने श्रगाल सिंह पिट जाय अजा छोटीपै । ये सबहों फ़रज़न्द मगर नहिं चले चाल खोटी पै ॥

सवैया—कानि करैन कलंकिनतू निकलंक ललाहिं कलंक लगावे ॥ फन्द करै छलछंद कों हरचन्द चरित्र नवीन दिखावे । क्यों परपंच करे नडरे मन रंचहु तोइ लिहाज न आवे । फूलमती मम पूत जती डका मान मती विष बेलि बढावे ॥

दो०—लाजदी मिला खाकमें । अदब रख दिया ताकमें ॥ खबर अपने खोल है । चुपरह चल चोचले न कर क्यों रस में विस घोले है ॥ ७३ ॥

ज० फूलन्दं का

दो०—आगे भागे पति गये, देवन के मन डोल
पीछे भागे सुताके, ब्रह्मा धोती खोल ॥

चौ०—ब्रह्मा धोती खोल भगे मनमथकी आन लहर से । कामातुर हो इन्द्र गये गोतम मुनीश के घरमें ॥

गुरुपत्नी संग रमण कियो शशि सोचों पियाजिगरमें ।
जती सतीकी डिगे मती पति रति पति चक्कर में ॥

सवैया—ज्ञानके धाम जहान में नाम से, सोज मनोज तमाम भगाडे । जाप जपी न कृप णपती तप ध्यान समाधि तपीन के तोड़े ॥ नारद कौशिक संत डिगे तब पुत्र की कौन प्रतीत निगोडे । सत्यव्रती पुनि सिद्ध जती या रती के पतीने नचायके छोडे ॥

दौ०—डिगे साधु तपधारी । जटाधारी ब्रह्मचारी ॥ प्रबल मदकी मस्ती है । सुर मुनि से डिग गये तुम्हारे सुत की क्या हस्ती है ॥ ७४ ॥

ज० शंखपति का

दो०—दानिश्वर फरजन्द का, डिगे न कभी इमान ।
शनी तेरी बात का, मुझे न इतमीनान ॥

चौ०—मुझे नइतमीनान कुफ क्यों बेहूदी बकती है । सुत शरीफ से कभी न ऐसी हरकत हो सकती है ॥ ली मैंने पहचान सौत के सात बदी तकती है । पूरनमल की बदफैली का क्या सुबुत रखती है ॥

क०—बक२ न कर चल चुपरह क्यों झूठ बकरही है । कर लाल२ आंखे नागिनसी तक रही है ॥ जानी तेरी कहानी मैंने सभी दिमानी । क्यों कर हराम जादी टाली ठिनक रही है । तुहमत शरीफ लड़का तुहमत जिसे लगाकर ॥ उसकी कजा का काफिर पहलू पटक रही है । सच्ची है अगर तो तू कुछ है सबूत इसका । वरने न तेरी शामत आने में शक रही है

दो०—लाज दी मिला खाक में। अदब रख दिया ताक में। अरे आपने खोले हैं। चुपरह चल चोचले नकार क्यों रस में विस घोलै है ॥ ७५ ॥

न० फूलदे का

दो०—मुझ पर ही होते गुस्सा, कर२ आंखें लाल ॥
बांदी से तो पूछिये, जरा रात का हाल ॥

चौ०—जरा पूछिये हाल हुई मुझ संग क्या सीना जोरी। आन अमानिक पूरनमल ने बहियां मरी मरोरी। चम्पकली धुक धुकी पचलड़ी मोहनमाला तोरी चढ पलंक निशंक अंक भर धरि२ कर भकझोरा॥

कव्वाली—ऐसी मुझे झंझाड़ी रग२ मड़क रही है। उस शोखको किसी की कुछ हक न धक रही है॥ रुच का गया कमर में बल खागई कलाई। रसली में पीर होती नस२ कलक रही है। सब तौर हुई ख्वारी इज्जत गई हमारी। जिसपा भी आप कहते ठाढी ठिनक रही है। है आप सत्यधारी फरजन्द ब्रह्मचारी। बांदी ही बद चलन है सो झूठ बक रही है। बातें न बस बनाओ जाओ यहां से जाओ। ज्यादह सती जलाओ छाती भवक रही॥

दो०—इस लिये लोहि ब्याही। पुत्र पे कुमति काई। मन दो पोहर होला। मेरे जाने श्याल कोट पै पड़े गजब के गोला॥ ७६॥

न० शालपति का

दो०—अच्छा तेरी बात की, करलूं तहकीकात।
कह बांदी हलफियान, क्या वारदात हुई रात।

व० बांदी का शंखपति से

दो०—कभी झूंठ बोलूं नहीं, रखिये इत्मीनान ।
जान मेरी जावो मगर, ना हारूं ईमान ॥

चौ०—हारूं ना ईमान बात सच्च२ ही जाय कही है । जो कुछ गुजरी वारदात सब कहूं सही२ है ॥ कानों सुनी न आंखों देखी जैसी रात भई है । बरतन लगी घोर कलयुग अब कसर न कोई रही है ॥

कव्वाली—सुनाऊं रात का किस्सा इधर तो शमैं जलती थी । इधर रानी पड़ी सोती इधर पंखा में झलती थी । अचानक आन पूरनमल्ल पकड़ पलके पै ली इनको निकलने वह न देता था ये बहुतेरा निकलती थी । सफा हो२के झुझलाती फड़कती थी उछलती थी । सम्हलने वह न देता था ये बहुतेरा सम्हलती थी । कभी रुख को छिपाती थीं कभी चोली को ढकती थी । वो बोसे को बढ़ाता है व ये उसका मूं मसलती थी । कभी दांतों से काटे थी व नाखूनों से नोचे थी । मगर छुट के निकलने की न कुछ तरकीब चलती थी । जबरदस्ती से जावेजा किये थे काम सब उसने । हरकतें देख कर उसकी मैं दोनों हाथ मलती थी ॥

दो०—मैं जिस दम गई छुटाने । लगा शमशेर दिखाने । सुनाई क्या क्या गारी । जान बचा मैं आपना ह भागी थी डरकी मारी ॥ ७८ ॥

व० शंखपति का रानी व बांदी से

दो०—जो यह कहे सो कहे तू, वाह २ जी वाह ।
पहले ही से कर रखी, तुमने एक सलाह ॥

चौ०—तुमने एक सलाह करली मालूम साफ होता है। सिवा चोर का चोर गवाः भी कहीं शरीफ होता है। वादी इन बातन में तिलका कोहकाफ होता है दोनों का इजहार समायत से खिलाफ होता है ॥

दो०—करलिया इम्तहान है महज झूठा बयान है॥ ये सब नखरे थोथे हैं। ऐसे बने सबूत न काबिल एतबार होते हैं ॥७९॥

न० फूलन्दे का।

दो०—जाने दो मेरे सबी, हैं झूठे इजहार।

आला दरजे की बड़ी, मैं झूठी सरकार ॥

चौ०—मैं झूठी सरकार गवाही भी झूठी इसकी है। सच्चे आप पिसर सच्चा तारीफ करी जिसकी है॥ सुन२सखुन जिगर में जलती होली सी रिसकी है॥ चश्म खोलकर देखो तो ये फेंटा कटार किसकी है ॥

क०—जरा पहिचान तो करलो पिया फेंटा कटारी की। किसीकी औरकी है या तुम्हारे ही ब्रह्मचारी की इसी विरते पे करते थे बड़ी तारीफ तुम इसकी॥ लिया कब की अदब की शर्म और होशियारी की ॥ यही स्कूल मक्तब पाठशाला की हिदायत है॥ हयाली शर्म ली इज्जत वो और ख्वारी हमारी की ॥ तुम्हारे दखलपर कब्जा जबरदस्तीसे कर उसने। जिना मौसी से करना ये नई कानून जारी की॥ गजब है सितम है अलम है रंज है अफसोस। बनाई हैं मुझे झूठी उसकी तरफ

दासी की खुदबखुद ही रहो खामोश अब वे लोग क्यों साहबा के फिअत खुलरही सारी जाती की धर्म धारिकी

दो०—और कोई छान बीन है। कि बिलकुल अब यकीन है॥ अर्जी कुछ तो उत्तर दो। महरबान मन इस सबूत को भी अब झूंठा करदो ॥८०॥

ज० शंखपति का अफसोस में होना

दो०—गजब सितम अफसोस है, गया कलेजा कांप।
पैदा हुआ यकबयक, आस्तीन में सांप ॥

दो०—आस्तीन में सांप बना है रानी अम्बादे ने। खानदान को दाग लगाया उस सीधे साधे ने। ऐसा किया न काम हमारे दादे परदादे ने। किया काम जैसा गुलाम पाजी हरामजादे ने ॥

दो०—नतीजा बुरे काम का। जिना फैले हराम का॥ अभी उसको दिखलादूं तुम। जल्द जल्लादों को फौरन सूली दिलवा दूं ॥८१॥

ज० फूलन्दे का

दो०—जैसा मेरे संग किया, उसने काम हजूर।
उसी मुताबिक चाहिये, देनी सजा जरूर॥

छंद—दीजे सजा वैसी उसे जैसा मेरे संगमें किया बदकार बेईमानको सूली पे चढ़वादो पिया॥ जिस हाथ पगसे की मेरी बेइज्जती खोई शरम। सो हाथ पग कटवाय तन इसमें गिरवादो सनम॥ जिन नैन से बद नजर देखा है मुझे उस खोटने॥ वे नैन निकलवाकर भेजदो मेरे कने॥ पड़ी तल दूं

…तलके खाना पिया जब खाऊंगी। बदले जहरखाके कटारी मार कर मरजाऊंगी ॥ ८२॥

ज० शंखपति का

दो०—दे दे उसकी निशानी, फेंटा और कटार।
जो२ कहै सो सब करूं, जाता हूं दरबार ॥

ज० रंगा का

दो०—श्री पंजाब नरेश ले, फेंटा और कटार।
चिंता युत अति क्रोध युत, आइ गए दरबार॥
चौ०—आइ गए दरबार क्रोधसे प जलरही सब काया।
जरा न करी अबार बैठ गद्दी पर हुक्म सुनाया॥
कोतवाल को भेज महलसे पूरनमल बुलवाया।
आते ही वा अदब पिसर झुककर आदाब बजाया॥
दो०—तरफ सुतकी खयालकर। सकल को देख भालकर॥ गजब गुस्सा कमालकर। शहन्शाह पंजाब कहे यों आंखें लाल २ कर ॥८४॥

ज० शंखपति का

दो०—सीधे साधे तू बना, असल पोनियां नाग।
लगा दिए बद जातने, सात पुश्त को दाग॥
छं०—ये दाग हशरतका हमारी हशरतक छूटे नहीं।
जैसा गजब तूने किया ऐसा गजब हुआ कहीं।
बदमाश बद ऐमाल मस्ती इस कदर छाई तुझे॥ बद फेलको बदकार क्या मौसीही बस पाई तुझे॥ बेशरम क्या लगती तेरी सोया तू जिसके साथमें। कमबख्त ये तो बता क्या अन्तर है मौसी मात में॥ बद काम

का कमबख्त देता हूं तुझे कैसा मजा। बस आ गई तेरी कजा सूली की पावेगा सजा ॥८५॥

ग० पूरनमल का

दो०—दादाजी मशहूर ये, जाने सभी जहान।
होती है बीसो बिसे, मौसी मात समान॥

छं०—मौसी को देखे बदनजर वो वह बड़ा बदकार है। उसको खुदाके यहां सदा दोजख रहे तैयार है॥ सुन२ सखुन सरकारका दिलको न सब्र करारहे॥ विलकुल नजर आया मुझे अब मोतका आसारहै॥ झूठी किसी की बातपर करिये मती इतबार है। तशखीश कर तकसीर कुछ बेशकदिलदोदारहै॥ मागेगे बेइन्साफ गरतो भी न कुछ इनकार है। यों भी तुम्हें इख्तयार है यों भी तुम्हें इख्तियार है॥८६॥

ग० शंखपति का

दो०—पाजी क्या तुझपर करूं, मैं कायम तकसीर।
खुद कसूर साबित करे, तेरा तेरी नजीर॥

छं०—मोजूद जबकि नजीर तब क्या जरूरत इंसाफकी सब कैफियत खुद बखुद हो जाहिर हो तुम्ह अशराफ की॥ तू बच नहीं सक्ता है कर सोच बिचारी देखले। पाजी तेरी हाजिर है ये फटा कटागा देखले॥ बिनतेरे जाये पहुंच ये कैसे महल अंदर गई। कोई फरिश्ता ले गया या खुद बखुद पर कर गई॥ अब तो खता कायम हुई ज्यादा न बस गुफ्तार कर। बदकार बेईमान मत नक २ बहुत मक्कार कर॥८७

ज० पूरनमल का

दो०—बागन बांदी भेज मोह, लीना महल बुलाय।
मोसी ने झूठा दिया, ये इल्लजाम लगाय ॥
छंद—इल्लजाम झूठा होय सच्च ये कथा गजब की बात है।माता पिता वैरी बनें तो पेश किसकी जात है॥ गोरख गुरू साखी मेरा मौसी धर्म की मात है ॥ बद फैल की तो क्या चली छूआ न मैंने हाथ है। लेकिन मिला अब आपको फूटा कटारी का पता। कैसे बनूं अब बेखता सब तौर ही मेरी खता॥ मोसी भी सच्ची आप सच्चे न्याय भी सच्चा छना। गर्दिश मेरी तक दीर की सच्चे से मैं झूठा बना ॥
लामनी—जानी अब मैंने मौत शीश पर गाजी। मौसो की राजी करिये आप पिताजी ॥ महाराज हुक्म से ना मेरे इनकार॥ चाहे देन से उजर करे उस बेटेको धिक्कार॥ मरनेका गम नहीं है अफसोस इसीका सिर लगा मेरे नाहक कलंक का टीका ॥ महाराज मुझे बेशक दिलवादो दार। मात पिता को करना चाहिये इसी तरह का प्यार ॥ ८८ ॥

ज० शंखपति का

दो०—बस२ बस खामोश रह, न कर बहुत बकवाद।
ले जाओ इसको पकड़, आओ दो जल्लाद॥
छंद—जल्लाद आओ जल्द लेजाओ पकड़ बदकारको बाज़ार पर कर खतम दो भेजो अदम मक्कारको॥ दोऊ चश्म इसके काढ कर मानी कोजा तत्काल दो। करदस्त पा दोनों कलम झेरे में इसको डालदो ॥ ८९ ॥

ज० जल्लादों का

दो०—जो होवे महाराज की, हाजिर हैं जल्लाद।
अभी बजावें आपकी, जो कुछ है इर्शाद॥

झूलना—जो कुछ है इर्शाद वह बजा लावें नहीं पड़ाकी करें अवार हैजी जल्लाद जालिम नहीं हम करते फांसी दार देते यही कार हैजी। हाथ पांव दोनों इसके कत्ल करके देंगे लहाश डारे अंदर हार हैजी हो बेदर्द इस कर्द से नैन काढ़ें जाकर गनी के घर अगार हैजी॥ १०॥

ज० रंगा का

दो०—पूरनमल की मुश्कें कस, लेकर चले कलाम।
ता दम अपने पितासे, करे कुमर अरदास॥

ज० पूरनमल का

दो०—दिन२ सुबस आपका, बसे मुल्क पंजाब।
पूरनमल सुतका पिता, लो अखीर आदाब॥

लावनी—अब अखीर का आदाब पिताजी लीजे। जो कुछ होमेरी खता माफकर दीजे। महाराजआज पे करूं जोडकर हाथ। बाद मेरे मरनेकेकुछ तकलीफ न पावे मात। ताजेवर भाव अब तोकुछ नहि निभ लो मरती बिरियां तो मुझको गले लगालो। महाराज चलेपेस घर फिर जावेंगे॥ तावाहशर न फिरतुमसे मिलने को आवेंगे। एक अरज और बाकी है तुम्हें सुनाना। ऐसी जाप सूली मुझको दिलवाना। महाराज जहां पर देखें लोग तमाम। मौसी भोछ देख

कि जिसने किया मुझे बदनाम ॥ बरवक्त दार तशरीफ आपभी लाना । यार को मेरी मैया को बुलवाना ॥ महाराज मेरे दिलका भी मिटै गुबार । कर २ दो २ बात मिल लऊं सब से मरती बार ॥९२॥

ज० शंखपति का

दो०—अब फरजन्द कहां रहा, जो मैं करूं पियार ।
तू तो कोई जन्म का, निकला दावादार ॥

चौ०—निकला दावादार दिया फल भारपोनियांवनको। अच्छा किया सलूक पिता संग धर्म यही बेटनको॥ खैर किया सो किया मुआफिक होगा तेरी कहनको। तुझे लगेगी दार मुत्तसिल रानी के महलन के ॥

दो०—कनासों कदम बढाओ । इसे जल्दी ले जाओ ॥ न हो इरशाद अदूली । रनवासों के एन सामने इसे लगाना सूली ॥९३॥

ज० रंगा का

दो०—सुनत हुक्म महाराज का, कर नंगी शमशेर ।
पकड कुमरको ले चले, जरा न कीनी देर ॥

चौ०—जात कुमरको लिये हाथ नंगी शमशेर सम्हारे। हैं कनास क फिर बेदर्दी किसका तरस विचारे। जिसके हुए पाबन्द उसीके गिन २ धक्के मारें ॥ रोवत जावे कुमर शहरके सब नर नारि निहारें ॥

दो०—तरस सबको आता है । न कुछ बस बसि पाता है ॥ निरख रोवत नर नारी । नगर निवासी

न से पूरनमल ऐसे गिरा उचारी ॥१४॥

ज० पूरनमल का

दो०—नगर निवासी मेरा सब, करना माफ कसूर।
रोओ मत होता वही, जो रब को मंजूर॥

गजल—उसे मंजूर हो जो कुछ वही सब कर दिखाता है। जहांमें उसकी कुदरत का न कोई भेद पाता है॥ घड़ीमें देखलो भाई हुई हालत क्या बंदे की। सवारी बिन न चलता था सो नंगे पैर जाता है॥ जो मुझको सर झुकाता था हुक्म हरदम बजाता था। वही जल्लाद जालिम जोरसे धक्के लगाता है॥ पिता मेरा मुझे जो प्यारसे गोदी बिठाता था। आज वोही बना दुश्मन मुझे सूली दिलाता है॥ बिना किए लगा पातक खुदाकी देखिये कुदरत। जती था ब्रह्मचारी था सो व्यभिचारी कहाता है॥ करे तौ भी डर रब से न करे तो भी डर रब से। किसी कविने कहा मिसरा मुझे अब याद आता है॥ आप रोतेहो मैं रोता हूं ये रोना है बेमतलबा नहीं करतार के आगे किसी का बस चलाया जाता है॥९५॥

ज० रंग क०

दो०—पूरनमल सबके तईं, जान बंधावत धीर।
नगर निवासी संग चले, झरत नैन से नीर॥

चौ०—झरत नैनसे नीर तीर सब राज भवन के आए। इन्तजाम सब सूली के इत राजा नें करवाए॥

फुलमती मोजुद सिपाही बुला यार कोलाए उतमहल
न ये समा चार सब अम्बादे सुन पावे ॥
दो०-रोवती पीटत छाती बिल बिलाती घबराती
द्वार पर दौरी आई।सो पछार पुनि उठ संभारि निज
पतिको गिरासुनाई ॥९६॥

ज० अम्बादे का

दो०-सुत इकलौता पति मेरे, और न हैं दो चार।
विना खता तो पुत्रको, क्यों दिलवाओ दार
चौ०-क्यों दिलवाओ दार पिया मम जीवन आधारी
को।अति अगाद दुलमती दिखाओ मो अवलानारीको
पुत्र शोक मम शोक न है पति दूजो महतारी को।
हाहा खाऊं मती निपूती करो प्राण प्यारी को ॥
दो०-मैंने बैठन को छैया लगायो बिरवा सैदा॥
तरस तनक न लाओ हो। कोन कसुर कुमर कीनोंजो
सूली दिलवाओ हो ॥९७॥

ज० रंगा का

दो०-अम्बादे पति से करे, विनती भर भर नैन
फुलमती तादम तमकि, बोली ऐसे बैन ॥

ज० फूलदे काअम्बादे से

दो०-ऐसो ये तैने जनो, तोय न आई मौत।
प्रीतम से सुतकी खता, क्या पूछे है सौत ॥
चौ०-क्या पूछे है सौत कियो इन जैसो फल पायो है
कभी नहीं क्या तैने रात जो कौतुक करिवायो है ॥

जान बूझ बनकर अज्ञान अब मक्कर फैलायो है।
भोली बन क्या पूछरही क्यों सूली चढ़वायो है ॥
दो०—सौत ये तेरी लाला नाग विषधर है काला॥
निडर संडा पाचंडा। लऊं नेन कढ़वाय मेरा जब
होय कलेजा ठंडा ॥९९॥

व० अनादे का

दो०—कुजस केरई नारि को अब तक मिटा न मैन।
लाल मेरे को सहराऐ, मान हमारी केन ॥
रागिनी—सती मरवावे वेटा को मांगूं गोद पसार
सती०॥फुलन्दे नेक निहार कर अपनों ही सुत जान।
पूरनमल के दरश विन वचे न मेरे प्रान॥ सती०॥
लाज तनक तोकू नहीं वोले खोटे बैन ॥ पूरनमल
से जतीको लगी दोष तू देन॥सती०॥ऐसना निकरै
न कुछ इन वातन में सार। मेरे तेरे बीच मे है ये
इकली हार।सती०॥ सही न मोपर जायगी सुत
विछुरन की पार, इन्दरमन उस्ताद को मान निहारी
वीर ॥ सती मरनावे वेटा ॥१००॥

व० फुलन्दे का

दो०—मो संग कुकरम करत में,लाज न आई ताहि
बनो रात मेरो पती, जती बतावे जाहि ॥
दादरा—जाको जती बतावे। शरम नहीं आवे॥
क्यों बहुत लजावे। कर२नककवाद। जाको०॥ निधड़क
गयो महलन में। न डरपो मन में॥ गेहै,हरफन में

पूरा उस्ताद ॥ जाको० ॥ जवग्न करी राति मोसे लिए हमवोसे ॥ कहू क्या तोसे। सब जड़ बुनियाद । ॥ जाको०॥ कैसे रहा मेरोबेटा । अदब सब मेटा । सेज संग लेटा ॥ ताड़ी मरियाद । जाको०॥ जब तो न रोकोसण्डा । निडर परचण्डा ॥ करे अब रगड़ा। शोर फरियाद । जाको०॥ जीसे इसे मरवालुं । दार दिल वलुं ॥ नैन कढवाळूं । जब दिल हो शाद । जाको जती बतलावे ॥ १०१ ॥

न० अम्बादे का

दो०—पूत बिराने को तनक, तरस न आवैं तोय ।
सुत जन्मे निज कोख से, जब तोइ मालुम होय ॥
चौ०—जब तोइ मालुमहोय फिरतू किस उमग मेंफूली
दगादार हर तरह हूं क्यों मेरी जान पर झूली ॥
सिर मेरा लेकाट न मैं करने की हुक्म अदूली ॥
बेटा को दे बख्श मुझे बेशक दिलवादे सूली ॥
कव्वाली—माफ करते हैं सब बालक पे जो तक सीर होतीहै । गजब अफसोस है तु इस कदर बेपीर होतीहै ॥ पीर वेटा बिछुरने की बुरी हमशीर होती है। क्यों मेरी जान की गाहक तू मेरी बीर होती है॥
दौ०—बदी मत लावे मन में । परूं तेरे पैरन में ॥
समझ कर अपनी दासी । बख्श पुत्र के प्राण करूं मैं चोकू पास निरासी ॥ १०२ ॥

ज० फूलन्दे का

दो०—क्या असुआ ढङ्काय का, सौत रही है रोय।
खसम बनाऊं मैं इसे, जब तू राजी होय ॥

कव्वाली—सरक हट चल प हां से मगज मोर क्यों खाली है। और सब बांझ दुनियां में तुही एक बेटे वाली है ॥ मुझे तो दोष देती है न कुछ बेटेसे कहती है। कराये सब तेरे कौतुक असल नागिन तू काली है ॥ कहीं ऐसा भी हुआ है किया जैसा तेरे सुतने ॥ सगी मौसी को किसर न बता जोरू बनाली है ॥ खला ऐसे सितम गरकी करावे माफ तू मुझसे। कि जिसने कर जबरदस्ती मेरी हुरमत हयाली है ॥ बके मत इस हरामी के मुझे है नाम से नफरत। बरसता खून आंखों से निकलती मुख से गाली है १०३।

ज० रंगा का

दो०—ऐसे फूलंदे कही, अरुण बरुण करि नैन।
तादम पूरनमल कहे अम्मादेसे बैन ॥१०४॥

ज० पूरनमल का माता से

दो०—ये माता मत रुदन कर, धर अपने मन धीर।
होनहार सो होगई, लिखा मेरी तकदीर ॥

छं०—जो कुछ लिखा किस्मतमें इसतनकी वही गति होयगी। जा सबर करघर बैठ तू कहा तक उमर भर रोयगी ॥ मालुम हुआ इस जगत से मौसी हमें तू खोगई। इस पाप के बदले कभी भव नींद न नहीं

सोहगी।करुणा करे तू कौन से गाहक पे मेरी जानकी
मानै न विनती नागिनी भूखी है मेरे प्राणकी ॥
मिलगा असीरी है मेरा छाती लगाले प्यार से।
कोई घड़ी में इन्द्र कहे जाता हूं इस संसारसे १०५

म० अम्बादे का

दो०-ए बेटा मैं कौन विधि, बांधू दिलको धीर।
दुख करके पाळा तुझे. होत कलेजा पीर ॥
छं०-उठती कलेजा पीर सुत नहीं धीर मन मेरो धरे।
धरकार जगमें जीमनों माके अगारी सुत मरे।होवें
दुख ये बात की बातें करी जिन जालको।जो जानकी
गाहक बनी मेरे कन्हैयालाल की। जन्म चाहे सौ धरूं
तोसो कुमर नहीं पाऊंगी। तेरे बिना प्यारे कुमर
मन कौन विधि समझाऊंगी ॥१०६॥

म० पूरनमल का

दो०-सगर २ की नारि ने, धीरज कीनों धार।
जिनके बलशाली सुवन, मरे साठि हज्जार॥
चौ०-मरे साठि हज्जार पुत्र नृप रविकुल बलधारीके।
राम लषण बन गये प्राण कब निकरे महतारी के॥
भारत में एकसौ एक सुन खिपे गांधारी के॥ गले
हिमाचल माहि पांच बेटा कुंती नारी के॥
छंद-हित गेंदके श्रीकृष्ण काली दहमें डूबे जायके
जीवत रही माता जशोदा ना मरी विष खायके मरते
के संग कोई ना मरे क्यों रही रुदन मचायके जन्मो

न पूरनमल मैंने लीजो यों मन समझाय के ॥

दो०—मात समझाले जी को । दोष मत देय किसी को । किस लिये मोह बढावे । होनहार नहीं मिटे मुझे रो २ कर मती रुलावे ॥१०७॥

ज० अम्बादे का

दो०—तेरे बिछुरन को कुमर, दुःख सह्यो नहिं जाय।
रात दिना डकराऊंगी, ज्यों बछरा बिन गाय।

छंद—बछरा बिन ज्यों गाय सुत बिन मात यों घबरात है। गोदी से सुत जिनके छिने क्यों बच सके वो मात है। मैं अभागिन पापिनी नहिं काल मुझको खात है। पालो पढायो हाथ से तोता उडो मेरो जात है॥१०८॥

ज० पूरनमल का

लावनी—माता कर मन में सबर कजा शिर झूली। मोसीने कीना प्यार दिलाई सूली ॥ मेरी मात उमर भर कहां तक रोवेगी। बुरी पुत्र की चोट कभी सुख नींद न सोवेगी। सुन मैया तेरी बात फटे मेरी छाती ॥ कि स्मत से मेरी एक न पार बस्याती। क्यों रोह जार बेजार नीर बरसाती। इस जग में एक दिना कजा सबों को खाती। मेरी मात हाथ मिलने से धोवेगी। बुरी पुत्र की चोट कभी सुख नींद न सोवेगी॥१०९

ज० अम्बादे का

लावनी—सुन २ तेरी बात होत दुख दूना।

समैया हैना ॥ मेरी मात नाव तेरी मोसी होवैगी बुरी पुत्र की चोट कभी सुख नींद न सोवेगी ॥११३॥

ल० अम्बाई का

लामनी—है तुही अकेली लाल सुनै मेरे लाला। दुख पाय पाय कर दूध पिलाके पाला। हे मेरे भव न का तुही सुत चंद उजाला। सुत सुख के बदले घाव कलेजा साला। मेरे लाल कर्म मेरा सब बिधि हीनाजी। धरूं किस तरह धीर हाथ से चला नगी ना जी ॥ ११४ ॥

ल० पूरनमल का

लामनी-दुजा धर कर संतोष बैठियो मनको। छाती फटै मा सुन२ तेरे रुदन को। ना अमर रहै काई मरना पडै सबन को। इहां कहै पूरण करूं पिता के मन को। मेरी मात लिखी किस्मत की होवैगी। बुरी पुत्र की चोटी कभी सुखनींद न सोवैगी ॥११५॥

ल० अम्बाइ का रानी से

ला०—कोई नहीं दूसरा जाने पीर पराई। तड़फूंगी तोबिन यों बछरा बिन गाई। मेरे हृदय में दौलगी न बुझे बुझाई। इन्दा कहै कहां चले मेरे कुमर कन्हाई। मेरे लाल मेरा जग धृक २ जीनाजी। धरूं किस तरह धीर हाथ से चला नगीनाजी ॥११६॥

ल० रंगा का

दो०—माता बेटा का हुआ, बहुत देर सम्वाद। थी पंजाब नरेश तब, फटकार जल्लाद ॥ ११७ ॥

क० छत्रपति का

दो०—आवे काफिर कनासों, बेईमान बदकार।
मा बेटे की होयगी, अब कब तक गुफ्तार॥
चौ०—बंद करो गुफ्तार हटारे रानी अम्बादे को। दिया मातसे मिला किया पूरा अपने वादे को॥ और भाइको अलग हटादो बुला एक प्यादे को॥ मिला यार से चढा दार पर दो हरामजादे को॥
दो०—जल्द इरशाद बजाओ। न अरसा जरा लगाओ॥ करो बातें मामूली। हुक्म अदूली न हो मुअय्यन वक्त जाय लग सूली॥११८॥

ज० बेरहम जल्लाद का पटरानी से और अपने लड़के से

दो०—बसबस हट होचुका, सुत से तेरा मिलाप॥
बैठ सबर कर महल में, जा रानी चुप चाप॥
चौ०—जा रानी चुपचाप हाथ रोनेसे क्या आवेगा। किसी कदर ये बचे नहीं सूली जरूर पावेगा॥ कह लड़के क्या करें सलहा कुछ इसमें बतलावेगा॥ जब तक मिले यार से तबतक वक्त निकल जावेगा॥
दो०—समझ मेरी यह आवे। किस लिये देर लगावे॥ खतम जल्दी से करदे। क्या रक्खा यारके मिलाने में सूली पर धरदे॥११९॥

ज० जल्लादों के बेटे का

दो०—दो घंटे पीछे कहीं, होय दार का वक्त।
तब तक इसको यार से, दे मिलाय कमबख्त॥
चौ०—दे मिलाय कमबख्त रहम चाहिये दिल

ना । दुख सुखको कह लेइ यारसे जब सूली पर धरना॥ नेकी वदी करे जैसा फल पे सबीको भरना॥तू भी एक दिन मरे रहेगा जगमें सदां अमरना ॥

दौ०—न बन बेदरदी ज्यादा । दया कर इसकी दादा । नहीं कलपाना चहिये । बालापन के यार दोऊ है इन्हें मिलाना चहिये ॥१२०॥

ज० बेरहम जल्लाद का

दो०—क्या हम जानें दया, किस चिड़ियाका नाम।
सूली फांसी दार दें, यही हमारा काम ॥

चौ०—यही हमारा काम वता किसपर का रहम करें हम । सगा बापहो खतावार उसको भी दार धरें हम ॥ हत्या करने मे हरामजादे किस तौर डरें हम । दया धार्मिक बनकर क्या भूखे परदूद मरें हम ॥

दौ०—समझ मेरी ये आवे । क्यों नाहक देर लगावे ॥ खतम जल्दी से करदे । क्या रक्खा यारके मिलने में सूली पर धरदे ॥१२१॥

अ पुन्नमल का जल्लादों से

दो०—क्यों तुम आपसमें लड़ो, जाकर लेउ इनाम ।
मुझे जानसे मारकर, करदो काम तमाम ॥

चौ०—करदो काम तमाम हमारे शिरपर कजा [illegible] जी । [illegible] य से चढ़ा दार होना इरशाद पिताजी॥ [illegible] हो तो मो या [illegible] दीजे हमें मिलाजी । कहना [illegible] अगारी रही आपकी राजी ॥

दौ०—सुनो जल्लाद हमारी । मदद हो जा

तुम्हारी । पास मेरे आने दो । मरते वक्त यारसे भी दो बातें हो जाने दो ॥१२२॥

ज० सरदार के लडकों का अपने बाप और यार से

दो०—इस मुलजिम की बात में, अपना कौन बिगार।
मिला पेश्तर यार से, पीछे देना दार ॥

चौ०—पीछे दीजो दार मान कक्कू तू मेरी भला है। नेकी बदी बिचार काम कर इसमें सदा भला है ॥ पाप किए से घोर नर्क हो जगमें पुण्य फला है। हाय गजब इस बेकसूर का मुफ्ती कटे गला है ॥

दो०—मान चाहे मत माने। मुझे दिया रहम खुदाने ॥ मिलाऊं इसे यार से। आओ जी महताब यार से मिललो खूब प्यारसे ॥१२३॥

ज० रंगा का

दो०—पास कुमर के उसी दम, आकर पहुंचे यार।
रो २ पूरनमल मिले, दोनों भुजा पसार१२४॥

ज० पूरनमल का

दो०—जोडी बिछुडे आज से, मेरी तेरी यार।
दोनों भुजा पसार अब, मिलले मरती बार॥

छंद—आलिम गले से लग ये मौका हाथ फिर आना नहीं। सौ जन्म तक महताब तुमसा यार फिर पाना नहीं। परदा पडा इस अकल पर असगुन से दहलाना नहीं। अनु चत उचित तुझसे कही तेरा कहा माना नहीं सीधा था और भोला था मैं छल फन्द पहचाना नहीं। पोशी थी डायन बनेगी ऐसा मैंने जाना नहीं ॥

लामनी—मालूम न था मोसी ऐसा दुख देगी । इलजाम लगाकर प्राण हमारे लेगी ॥ मेरे यार हृदय हुआ कौन जन्मका पापबिना गुनाः तकसीर होगया दुश्मन मेरा बाप । जो होना था सो हुआ खुदाकी मरजी लेकिन करता हूं हाथ,जोड़ एक अरजी मेरे यार मुझे तो सूली होवैगी।देखरकर मुझे मात अम्बादे रोवेगी। देता रहियो तू हरदम इसे दिलासा । अब हुई मेरी मह तारी आस निरासा ॥ मेरे यार विचारी की खोटी तकदीर ॥ चोथेपन में लिखी विधाता सुत वियोग की पीर । वस ऐन इनायत तू भी ये फरमाना । कह ने सुनने मेरे पर ख्याल न लाना । मेरे यार हमारा हो अब काम तमाम । तोड मुहब्बत मोह अखीरी । ले ले मेरा सलाम ॥१२५॥

ज० महताब का

दो०—तुम हम दोनों बाग में, रोज खेलते सार ।
आज बिछोहा होत है, कहा रची करतार ॥

छं०—कैसी रची करतारने मुझको अकेला कर चला बिन खता मरवावे तुझे राजा का ना होगा भला॥ दिलको सबर होता नहीं अब देखकर यह गति तेरी । सुन२ के तेरे रुदनको छाती फटी जावै मेरी । चल साथ मैं तेरे चलूं मोसीकी बिनती कीजियो । वोही बचावेगी तुझे उसकी शरण तू लीजियो ॥१२६॥

ज० रंगा का

दो०—प्रानमल्ल ने यार के, कीने बचन प्रमान ।

खुदाकर दारपर इसको । खतम करता न खाली खामखां अरसा लगाता है ॥ १२९ ॥

ज० पूरनमल का

दो०—ऐ भाई जल्लाद हो, क्यों कर रहीअवार ॥
मोली की राजी करो, मुझे चढ़ा दो दार ॥

क०—चढ़ूं दारपर इसदम खुदा से लो लगाता हूं। खड़े हो महूजन जितने अरज सबको सुनाता हूं । किसीके साथ में कोई खता मुझसे हुई होगा। गुजारिज दस्त बस्तह कर माफ सबसे कराता हूं । हमारा आव दाना आज तक ही था जहां अन्दर । खलकसे हो रवानह अब फलक पर घर बनाता हूं । न कुछ लेकर के आया था न मैं कुछ ले चला भाई । बांध मुट्ठी को आया अब पसारे हाथ जाता हूं । मोहसे नेह से सब दुनियां के झगड़े से । पाक बेबाक होकर खाक पर बिस्तर छिपाता हूं । इनायत कर अखीरी बंदगी आदाव ले लीजे । कहैं इंहा वड़े छोटे सबों को सर झुकाता हूं ॥ १३० ॥

ज० रंगा का

दो०—पूरनमल जब कर चुका, सबको दुआ सलाम।
चढ़ा दार जल्लाद तब, कीया काम तमाम ॥

छंद सूली पै काम तमाम कर दीना जमींपर डालकर नश्तर से चट जल्लादने दोनों दें आंख निकाल कर । सो नैन उस कम्बख्त छबन्दे को दीने जाय कर ॥ पापिन के महलों के महल फेंके अलग ढुकाय

कर ॥ फिर लाश पूरनमलकी को जल्लादले चलते भये । झेरे में गेरी जाय सब देखत के देखत रह गये ॥ मकतूल जिनने कुमर को देखा सो टप२ रोरहा । नहीं अन्नजल कोई करे मातम [illegible] में होरहा । महताब संग में मात रोती पहुंच झेरे पर गई । मा[illegible] [illegible]रज देइ बहु बिलखप यों काती भई ॥ १३१ ॥

न० अम्बादे का

दो०—कुमर कन्हैया लाडले, बेटा छौना तात ।
तुम सोए सुखनींद में, बिलकत छोड़ी मात ॥

बहरतवील व क०—मेरे तोता क्यों सोता जमीं में पड़ा जरा गोदी हमारी में आतो सही । तेरी गयासी मैया बिलकती बड़ी मेरे छैया तसल्ली बंधातो सही । बेटा तेरा खिवैया सपूती से मैं क्यों बनी हूं निपूती बतातो सही । मेरे छौना खिलोना किधर को गया मुझ बोली अमोली सुनातो सही ॥ १३२ ॥

न० महताब का

बहरतवील व क०—तेरा छौना खिलौना खतम हो गया बुला गोदी में माता बिठावे किसे । न ये बोले न डोले न आवै कने मरी मिट्टी है बेटा बनावे किसे । थरी तोता तोसोता कजाका बसा[illegible] येजागेगा माता जगावे किसे । बेटा छैया कन्हैया है मैया कहां मैया पहुंचा अदम तू बुलावे किसे ॥ १३३ ॥

न० अम्बादे का

बहरतवील व क०—मैंने पाला था तुमको बड़े प्यार

को तू आंसू बहावे मती । हाय पूरन कुंवर हाय पूरन कुंवर कर कलेजा मेरा बस हिलावे मती ॥१३७॥

ज० रंगा का

दो०—जैसे तैसे मात को, समझा कर महताब ।
गया लिवाकर महलको, आगे सुना जनाब॥

छं०—आगे को सुनिये दास्तां साहब सबी चितलाय कर । कुल शहरमें घरघरमें पूरन का रहागम छायकर । चेलन सहित गोरख इधर रमते कहींसे आगये।करकरद जानिब चीनको ओर पै होकर जारहे ॥ पूरन का रहाथा पडगया यक बयक ओगढ़की नजर होकरके गैरत में गरक बोला गुरू से जोड़कर ॥२३८॥

ज० औगड़नाथ का

ब०त०—कर नजरसे जरा गौर देखो गुरू ये पड़ा किसका रहाथा पिसाले कमर । किसने मारा है गुंचे दहनके तई हा सितम हा सितम होके पत्थर जिगर कैसी भोली शकल खूबसूरत बनी मेरी छाती फटे है इसे देखकर । जिसके पैदा शिकममें हुआ खासकर वो करे कैसे मैया बिचारी सबर ।'

ज० गुरू का

ब०त—कोई लेता जनम कोई जाता अदम ये लगाही रहे जगमें आवा गमन । जो हुआ पैदा निश्चय सो ना पैद हो ना बचे कोई कालाव गोरा बदन॥ हो बिरागी न दुनियाके फंसरागमें रह अलग मोह मायासे मेरे सुजन।ऐसे झगड़ोंसे चेला हमें काम क्या चलो चलने में अपनी लगाओ लगन ॥१४०॥

सूचीपत्र असली चिरंजीलाल नथारामके सांगीतोंका

आल्हा का विवाह ।-)॥
माडोकी लड़ाई ।)
ऊदल का विवाह ।)
संभर का घाट यानी तालासैयद
का विवाह ।)
जागन का विवाह ।)
चांदो संग्राम ।) इन्दलहरण ।)
आल्हा निकासी ≡)
चंद्रावल का झूला ≡)
मलखान संग्राम ≡)
लंकादीप संग्राम ≡)
लाखन का गौना ।)
शंकरगढ़ संग्राम ।)
गजचरित्र ≡) ढोलामारू ।)
झूलना कालीदह के -)
" नरसीजी के भात के -)
सीताहरण ≡)
रामबनोवास =)
चित्रकूट चरित =)
ध्रुव चरित्र =)
श्रीकृष्णचरित्र माखन चोरी व
दामोदर लीला -)॥
धर्म पताका यानी कंवलचरित्र=)
गोपीचन्द =) भैन भैया =)

कत्ल जानआलम तीनोंभाग
जिल्द बंधा ।॥)
कतलजान आलम अव्वल ।)
तथा दूसरा ≡) तथा तीसरा≡)
शिया पोश =)
सांगीत नौटंकी =)
गुजरी -)॥ चम्पापोश =)
लालरुख गुलफाम =)
पूरनमल चारोभागजिल्दबंधा।॥)
सतसागर यानी पूरनमल भक्त
पहला भाग≡) दूसरा भाग =)
तीसरा भाग ≡)
चौथा भाग =)
रूपबसन्त -)॥
निहालदे पहला हिस्सा ≡)
निहालदे दूसरा भाग ≡
देहली दरबार -)
पद्मावत ≡) प्रहलाद =)
अमरसिंह का पहला भाग ।-)
यशवन्तसिंह ।)
रुकमणी मंगल ≡)
सत्यसिन्धु हरिश्चन्द्र =)
दयाराम गूजर =)
मदनसैन =)

नोट—ग्राहकों को चाहिये कि अपना पूरा पता साफ २ लिखें।

पता—चिरंजीलाल नथाराम

राजपूताने का भूगोल।

दूसरा भाग.

पश्चिमी राजपूताना स्टेट रज़ीडेन्सी.

इस रेज़ीडेन्सी में बीकानेर, जोधपुर, जैसलमेर और सिरोही चार रियासतें हैं। रज़ीडेण्ट साहब जोधपुर में रहते हैं।

१ बीकानेर.

पश्चिमी राजपूताने में रियासत भावलपुर और पंजाब से लगता हुआ बीकानेर एक रेतीला राज्य है। इसके उत्तर को पंजाब के अंगरेज़ी जिले फ़ीरोजपुर और हिसार. पूर्व को राज्य जयपुर दक्षिण को मारवाड़ और पश्चिम को जैसलमेर और भावलपुर की रियासतें हैं।

क्षेत्रफल—इस रियासत का क्षेत्रफल २३३१५ वर्गात्मक मील है जिसमें सात लाख के लगभग मनुष्य रहते हैं।

नदी पहाड़—सुजानगढ़ की छोटी२ पहाड़ियों के सिवाय कोई बड़ा पहाड़ इस राज्य में नहीं है। परन्तु पहाड़ जैसे रेत के टीबे बहुत हैं जिन्हें यहां के लोग धोरा कहते हैं। दर्या हाकड़ा जिसे घग्गर भी कहते हैं एक सूखी नदी है।

ज़मीन और पैदावार—ज़मीन इस राज्य की प्रायः रेतीली है, साल में केवल एक शाख मोठ बाजरी आदि की होती है और भादरा, हनुमानगढ़ मिरजावाला वगैरह में जहांपर कि

मिट्टी कड़ी है वहां दूसरी शाख भी होती है। मतीरा जिसे तरबूज भी कहते हैं इस रियासत में बड़ी बहुतायत के साथ होता है। खेजड़ा, रोहीड़ा, जाळ और बेरी के सिवाय दूसरे वृक्ष यहां बहुत कम हैं।

जल वायु—जलवायु बीकानेर का निरोग है गर्मियों में हवा बहुत चलती है। कुछ जगहों को छोड़कर कुओं में पानी बहुत गहरा है इसी लिये लोग चरस का पानी पीते हैं बीकानेर से पश्चिमोत्तर को कुछ गावों में जहां का पानी खारा और विराइजनां (विषैला) है कुएं कम हैं लोग गढ़ों और तालावों का बरसाती पानी पीते हैं और उनके भी सूख जाने पर गाड़ियों और पखालों में पास के गावों से पीने का पानी लाते हैं।

खानें—खानों में प्रसिद्ध खान कोयले की है जो बीकानेर के पास ही पलाने में खोदा जाता है। खारी में लाल पत्थर और मढ़ में मुलतानी मिट्टी निकलती है। रियासत के उत्तरी स्थानों में एक प्रकार के छोटे पौधे को जलाकर सज्जी तैयार की जाती है। सुजानगढ़ के पास दरीबां में तांबे की खान है।

रेलवे—बीकानेर भटिण्डाब्रांच और दिगाना हिसार रेलवे दो राज्य की लैनें हैं और इन पर राज्य ही का सब प्रबन्ध है।

आमदनी—खालसे की सालियाना आमदनी ३६००००० रुपये के लगभग है और करीब दस लाख का देश जागीर, माफ़ी वगैरह में है।

निज़ामतें और तहसीलें—इस रियासत में ४ निजामतें और १५ तहसील और सब तहसीलें हैं। महाजन, भूकरका रावतसर, बीदासर और जसाना आदि मुख्य ठिकाने हैं।

निज़ामतें	तहसीलें.
बीकानेर	बीकानेर, लूनकरनसर, मगरा, सूरपुरा ।
सुजानगढ़	सुजानगढ़ रतनगढ़, सरदारशहर, डूंगरगढ़ ।
रेणी	चूरू, भादरां, रेणी, राजगढ़ नोहर ।
सूरतगढ़	सूरतगढ़, हनुमानगढ़, अनूपगढ़ टीबी, मिरजावाला ।

प्रसिद्ध स्थान.

बीकानेर—बड़ा शहर है यहां पर लालगढ़, क्लब, पुस्तकालय आदि अनेक देखने लायक स्थान हैं । लोई, मिश्री, हाथीदांत के चूड़े और जैल के बने गलीचे आदि बहुत प्रसिद्ध हैं । देशनोक में करणीजी का प्रसिद्ध मंदिर है। कोलायत और कोडमदेसर में बड़े मेले भरते हैं । मुक़ाम में जांभाजीका समाधि मन्दिर है। पूगल पहिले भाटियों का एक अलग राज्य था। लूनकरनसर में एक नमकीन झील है । महाजन इस राज्यमें सबसे बड़ा ठिकाना है ।

सुजानगढ़—राज की कचहरियां, और एक किला है । रतनगढ़ में साहूकारा बहुत है । सरदारशहर एक बड़ा और मालदार कस्बा है, इसके ओर पास चूना बहुत निकलता है । बीदासर साहूकारों की बस्ती है ।

चूरू—एक बड़ा कस्बा है यहां के अनेक लखपती, करोड़पती सेठ साहूकार कलकत्ता, बम्बई आदि व्योपारिक नगरों में बड़ेर व्योपार करते हैं । रेणी और राजगढ़ में राजकी कचहरियां हैं । नोहर में मिट्टी के बरतन अच्छे बनते हैं । गोगामेड़ी

में एक बड़ा मेला भरता है, इस मेले में पशुओं का लेन देन बहुत होता है।

सूरतगढ़—राजकी कचहरियां और एक बड़ा तालाब है। हनुमानगढ़ का पुराना नाम भटनेर है, यहांपर बादशाही समय का बहुत दृढ़ किला है। टीबी का परगना दरबार को गदर सन ५७ की खैरख्वाही में मिला था।

---

२ जोधपुर वा मारवाड़.

जोधपुर लम्बाई चौड़ाई और क्षेत्रफल के हिसाब से राजपूताने में सबसे बड़ा राज्य है। इसके उत्तर को बीकानेर पूर्व को जयपुर, किशनगढ़ अजमेर और मेवाड़ दक्षिण को सिरोही और पालनपुर, पश्चिम को थरपरकार, सिंध और जैसलमेर हैं।

क्षेत्रफल—सम्पूर्ण क्षेत्रफल ३४९६३ वर्गात्मक मील है जिसमें २०५७००० के लगभग मनुष्य निवास करते हैं।

नदी पहाड़—लूनी, सूकड़ी, बांडी, लीलड़ी और जोजरी बरसाती नदी हैं। सूंदां, बबाइचा, धूमड़ा, बड़ाल और आडावाला मशहूर पहाड़ हैं।

ज़मीन और पैदावार—मारवाड़ की ज़मीन अधिकतर रेतीली है इसीलिये इस देश को मारवाड़ (जो मरुस्थल का अपभ्रंस है) बोलते हैं। देश सूखा होने के कारण मोठ, बाजरी वगैरह की एक शाख उत्तम होती है परन्तु आडावाला की तराई और लूनी नदी के आसपास गेहूं वगैरह दूसरी जिन्सें भी होती हैं। पश्चिमोत्तर हिस्सा बिल्कुल रेतीला है।

जलवायु–अर्वली पहाड़ की तराई को छोड़कर मारवाड़ का जलवायु बीकानेर के समान ही है। जोधपुर से उत्तर फलोदी की तरफ़ कितनेक गावों में कुएँ यहां परभी नहीं हैं लोग गढ़ों और तालावों का वरसाती पानी पीते हैं या गाड़ियों और पखालों में पीने का पानी पास के दूसरे गावों से लाते हैं। परन्तु अव जगह२ बंध और तालावों के वन जाने से पानी की वैसी तकलीफ नहीं रही है।

खानें–वहुत प्रसिद्ध खानें मारवाड़ में पत्थर की हैं। मकराने में संगमरमर निकलता है, सोजत और नागोर में इमारती पत्थर की खानें हैं। सांभर, नांवा, पंचभद्रा, फलोदी और डीडवाणे में नमक वनाया जाता है।

रेलवे–मारवाड़ में राजपूताना मालवा रेलवे के सिवाय (जिस पर इस राज्य के खारची, सोजत आदि वड़े स्टेशन हैं) कई एक और रेलवे लैनें हैं। खारची जंकशन से एक रेल की शाख जोधपुर, होती हुई वीकानेर और भटिण्डाको जाती है। मेड़ता रोड़ से एक रेल की शाख फुलेरा को गई है। दिगाना से एक रेल की शाख हिसार तक जारी है। लूनी जंकशन से एक रेल की शाख वालोतरा और वाड़मेर होती हुई सिंध को चली गई है और इसीकी एक शाख वालोतरा से पचभद्रे की नमक की खानों तक है। इन में अधिकतर लैनें राज्य की हैं।

आमदनी–राज्य की सालियाना आमदनी ५७०००००
रुपये के लगभग है और अनुमान ४० लाख का मुल्क जागीर और माफी आदि में है।

परगने—मारवाड़ में इस समय २३ परगने हैं।* महाराजा साहब जोधपुर में रहते हैं। पोहकरन, आसोप नीवाज, आउआ, कुचामन आदि बड़े ठिकाने हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

जोधपुर—राजपूताने में जोधपुर एक बड़ा नगर है। यहां पर लाल पत्थर की बढ़िया २ इमारतों के सिवाय कुंड और तालाब बहुत हैं। जोधपुर का अनार मशहूर है, चूंदड़ी की बन्दिश और रँगाई भी अच्छी होती है। मंडोर इस राज्य की पुरानी राजधानी है। सालवास और सथलाणे में कांसे की कटोरी अच्छी बनती हैं। पोहकरन में किसमिसी रंगकी ओढनी सुन्दर तैयार होती हैं और रामदेवजी का मेला भरता है ओसियां गांव में पुरानी कारीगरी के कई सुन्दर मंदिर हैं।

फलोदी—माताजी का एक सुन्दर मन्दिर है। लोहावटमें ऊन का व्यापार बहुत होता है।

नागोर—यहां पर किला और सुलतान तारकीनकी दरगाह देखने लायक हैं। हाथीदाँत के खिलौने तथा पीतल के बर्तन बहुत सुन्दर बनते हैं और नागोरी बैल हिन्दुस्थान भरमें प्रसिद्ध हैं। रोहल के कड़ाव अच्छे होते हैं। मांगलोद में दधमत माता का पुराना मंदिर और एक कुंड है। काठोतीमें अकबर बादशाह की बनाई हुई एक सुन्दर मसजिद है।

---

* जोधपुर २ फलोदी ३ नागोर ४ डीडवाणा ५ मारोट ६ सांभर, ७ परबतसर ८ मेड़ता ९ जेतारान १० बीलाड़ा ११ सोजत १२ पाली १३ सिवाना १४ देसूरी १५ बाली १६ जालोर १७ जसवंतपुरा १८ सांचोर १९ मालानी २० पचभद्रा २१ शिव २२ सांकड़ा २३ शेरगढ़

डीडवाणा—यहांपर पीतलकी पिचकारियां सुन्दर बनती हैं और बादशाही समय की एक मसजिद है। लाडनू में साहूकार अच्छे हैं।

मारोठ—यहां की टुकड़ी (रेजी) बहुत सुन्दर होती है।

सांभर—यह कस्बा और झील दोनों जयपुर और जोधपुर के शामिलात में हैं और दोनों ही राज्यों के हाकिम रहते हैं; देखने योग्य स्थानों में नमकसमन्द, शाकम्भरी देवी का मंदिर और देवयानी का कुण्ड है। नावां में गंगाजी का एक बड़ा मन्दिर है। कुचामन एक बड़ा ठिकाना है यहां के लुहार और खाती अपने काममें पूरे उस्ताद हैं, जस्त की सुराइयां, काठके डिब्बे आदि यहां से दूर२ लों जाते हैं। परवतसर में तेजाजीका बड़ा मेला भरता है। मकराने में संगमरमर की खान है।

मेडता—यहां पर बादशाही समय की एक मसजिद और चतुर्भुजजी का मन्दिर बहुत सुन्दर है मेडते का साबन, खस ऊन और हाथीदांत का काम दूर२ लों प्रसिद्ध है। फलौदी के जैन मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।

जैतारण—लकड़ी का काम अच्छा होता है। रायपुर के ठिकाने में एक बड़ा तालाब है।

बीलाड़ा—यहां की रेजी प्रसिद्ध है, आईजी का मन्दिर और बानगंगा का कुण्ड दो देखने लायक स्थान हैं। पीपाड़ में रंगाई और छपाई का काम सुन्दर होता है।

सोजत—यहां के लुहार सिलावट और खाती अपने काम के अच्छे उस्ताद हैं, आउवे में महादेवजी का प्रसिद्ध मन्दिर

है। बगड़ी में हाथी दाँत और लकड़ी की खराद का काम अच्छा होता है।

पाली—रँगाई, छपाई और हाथी दांत के चूड़े बागवाड़ी आदि दूर२ लौं प्रसिद्ध हैं, सोमेश्वर महादेव और पारसनाथ के सुन्दर मंदिर हैं। रोहट और खेरवा दो बड़े ठिकाने हैं।

सिवाना—यहां पर एक किला और थोड़ी दूर पर हल-देश्वर महादेवजी का मंदिर है। समदड़ी में ओढ़नी छापी और रँगी जाती हैं।

देसूरी—इस परगने में एक घनी झाड़ी है, जिसमें सिंह का शिकार खूब हाथ आता है। घानेरा और नाडोल में पुराने मन्दिर हैं।

वाली—बांस की टोकरी अच्छी बनती है। सादड़ी का जैन मन्दिर बहुत सुन्दर है। ठिकाना बूसी में चोल की रंगाई और जाजम आदि की छपाई सुन्दर होती है।

जालोर—एक पुराना राजस्थान है और उस समय का एक किला तथा कोट है। भद्राजनमें सुभद्रामाताका मंदिर है।

जसवन्तपुरा—यहां पर पहाड़ के ऊपर राज के महलात हैं। भीनमाल में कांसे की कटोरियां उत्तम बनती हैं। वहगांव तलवार की मूठ के लिये प्रसिद्ध है।

सांचोर—इस परगने की गायें मशहूर हैं।

मालानी—के घोड़े अच्छे होते हैं, बाड़मेर इस परगने का मुख्य स्थान है और यहां मुलतानी मिट्टी की खान है। गुड़ा अच्छे घोड़ों की नस्ल के लिये प्रसिद्ध है।

पचभद्रा—यहां का नमक बहुत बढ़िया होता है। बालोतरे के पास गांव तळवाड़े में घोड़े आदि पशुओं के लेनदेन का एक अच्छा मेला भरता है।

शिव—मुलतानी मिट्टी की खान है।

शेरगढ़—के परगने में खड्डी मिट्टी (जो एक प्रकारका पुख्ता चूना है) निकलती है।

---

३ जैसलमेर.

पश्चिमी राजपूताने में सिंध से लगता हुआ जैसलमेर एक कम आबाद राज्य है। इसके उत्तर को बहावलपुर का राज्य पूर्व को बीकानेर और मारवाड़ दक्षिण को मारवाड़ और पश्चिम को सिंध है।

क्षेत्रफल—क्षेत्रफल १६०६२ वर्गात्मक मील है जिसमें ८८००० के लगभग मनुष्य निवास करते हैं।

नदी पहाड़ इत्यादि—इस राज्य में नदी कोई नहीं काकनय इत्यादि पानी निकलने के कुछ नाले हैं। परन्तु कानोड़, खाबा और मुहार की बरसाती झीलें बड़ी२ हैं। पहाड़ों में छोटी२ पहाड़ियों के सिवाय बड़ा पहाड़ कोई नहीं, परन्तु पथरीली भूमि बहुत है जिसे यहां वाले ठर्रा बोलते हैं।

भूमि और पैदावार—भूमि यहां की प्रायः ठर्री और रेतीली होने से मोट, बाजरी इत्यादि भी कहीं२ होती हैं। भादों-

कार में अच्छी बरसात हो जाने से बन्ध और तालाबों के किना
थोड़ा बहुत गेहूं भी हो जाता है।

आबहवा—आबहवा यहां की बीकानेर और मारवा
से भी अधिक गर्म है और वृष्टि का ओसत साल में छः सा
इञ्च है।

खानें—खानकुड़कुड़ा में पीले रंग का, खान बिछुआन
काला पीला और खान हबूबर में लाल माइल व स्याह पी
छींटेंदार पत्थर निकलता है, देवा में मुलतानी मिट्टी की औ
देवीकोट में गेरू की खान है।

रेलवे—रेलवे की तो कहे कौन इस राज्य में उत्तम सड़कें
तक नहीं हैं लोग तारों और धोरों का ख्याल रखकर चलते हैं।

आमदनी—सालियाना आमदनी १००००० रुपये के
करीब है और अनुमान पचास साठ हज़ार का देश जागीर
और माफ़ी वगैरह में है।

तहसीलें—रियासत में इस समय १६ तहसीलें हैं* राजधानी
जैसलमेर है, ठिकानों में वीकमपुर, और बरसलपुर मुख्य हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

जैसलमेर—यहां का किला और उसके भीतर के महल
तथा जैन मन्दिर बड़े ही सुन्दर हैं, प्याले, गिलास, रकाबी, चौकी

---

* जैसलमेर २ पाप ३ नोख ४ वाहलाचूल्ही ५ मोहनगढ़ ६ देवा ७ समखाया ८ किशुनगढ़ ९ तनोट १० घोटरू ११ रामगढ़ १२ फतहगढ़ १३ शाहगढ़ १४ महाजलार १५ लाला १६ देवीकोट।

आदि पत्थर की चीज़ें बहुत सुन्दर बनती हैं । लुद्रवा इस राज्य की पुरानी राजधानी है । यहां प्याज और छुआरे उत्तम होते हैं । सागड़ में आईजी का स्थान है और जाजमें छापी जाती हैं। वापमें भैरों जी का एक मठ है । नाचणा में कोट और दो टांके हैं । नोखमें प्याज, मिरचें और तम्बाकू अच्छा होता है । बीकमपुर में एक उत्तम किला है । बरसलपुरमें एक किला है जिस में हुमायूं बादशाह शेरशाह से हारकर शरण आया था परन्तु किलेवालों ने आने नहीं दिया । देवा में गुसाईं रहते हैं और एक छत्री है । शाहगढ़, घोटरू और समखावे के ऊँट अच्छे होते हैं। महाजलार में हिङ्गलाजगढ़ नामक एक किला है और वहां मेला भरता है। देवीकोट में पत्थरका काम अच्छा होता है। कानोध में नमक बनाया जाता है ।

---

४ सिरोही.

राजपूताने के नैऋत्य कोण में गुजरात से लगता हुआ सिरोही का छोटा राज्य है । इसके उत्तर पश्चिम को मारवाड़, पूर्वको उदयपुर और दक्षिण को पालनपुर है ।

क्षेत्रफल—सम्पूर्ण क्षेत्रफल १९६४ वर्गात्मक मील है जिसमें १८९००० से ऊपर मनुष्य आबाद हैं ।

नदी पहाड़—पश्चिमी बनास और सूकड़ी दो बड़ी नदी हैं पहाड़ों में आबू का पहाड़ और माल पहाड़ मुख्य हैं ।

ज़मीन और पैदावार—इस राज्य की ज़मीन बड़े२ पहाड़ों की तलेटी में होने के कारण अच्छी है । जौ, गेहूं कपास हल्दी

आदि सभी जिन्सें होती हैं, पर किसानों की कमी के कारण बहुतसी भूमि परती पड़ी रहती है।

जलवायु—जलवायु के लिये सिरोही का आबू पहाड़ राजपूताने में बहुत प्रसिद्ध है। गर्मियों में आबू पहाड़ पर अनेक राजा महाराजा और अङ्गरेज आफीसर आबहवा बदलने को आया करते हैं।

खानें—खराड़ी में काला इमारती पत्थर निकलता है। अनादरे के पास एक गांव में सफेद पत्थर भी निकलता है।

रेलवे—राजपूताना मालवा रेलवे रियासत को चीरती हुई निकली है और आबू रोड़ (खराड़ी) इस राज्य का बड़ा स्टेशन है।

आमदनी—वार्षिक आमदनी लगभग ४ लाख रुपये के है और अनुमान २ लाख का देश जागीर, माफ़ी वगैरह में है।

तहसीलादि—रियासत में इस समय १४ तहसीलें* हैं। राजधानी सिरोही है ठिकानों में नीमज, पाली, कालिन्द्री आदि मुख्य हैं।

प्रसिद्ध गांव.

सिरोही—तलवार, सरोता पेशकब्ज और कटारी बहुत प्रसिद्ध हैं, श्री सारणेश्वर महादेवजी का मन्दिर देखने योग्य स्थानों में मुख्य है। आबू की आबहवा अच्छी है और राज-

---

* सिरोही २ आबू ३ अनादरा ४ भाखर ५ झोरा ६ खराड़ी ७ मंडार ८ मगरा ९ पामेरा १० पिण्डवाड़ा ११ पोसालिया १२ रोहिड़ा १३ सांतपुर, १४ शिवगंज.

पूताने के एजेंट गवर्नर जनरल के रहने का सदर मुकाम है। यहां जैन मत के बहुतही सुन्दर मन्दिर हैं। अनादरे के पास क्रोड़ी-ध्वज भगवान का प्रसिद्ध मन्दिर है। खराड़ी से आबू पहाड़ को सड़क जाती है, इसलिये खराड़ी को आबूरोड भी बोलते हैं। यहां से कुछ दूर पर हृषीकेश भगवान का प्रसिद्ध मन्दिर है। पिंडवाड़े से कुछ दूर मारकण्डेश्वर और गोपेश्वर महादेव के मन्दिर हैं और एक सोता पानी का बहता है। बामनवाड़जी में फाल्गुण सुदि में एक बड़ा मेला भरता है। रोहेड़ा में एक पारसनाथजी का मन्दिर है। सांतपुर से डेढ़ कोस पर चंद्रावती नगरी के खण्डर देखने लायक हैं। ऐरनपुरा फौज की छावनी है। नीबज सिरोही में सबसे बड़ा ठिकाना है इस ठिकाने के आसपास सीताफल की झाड़ी है जिसमें सफेद मोर पाया जाता है।
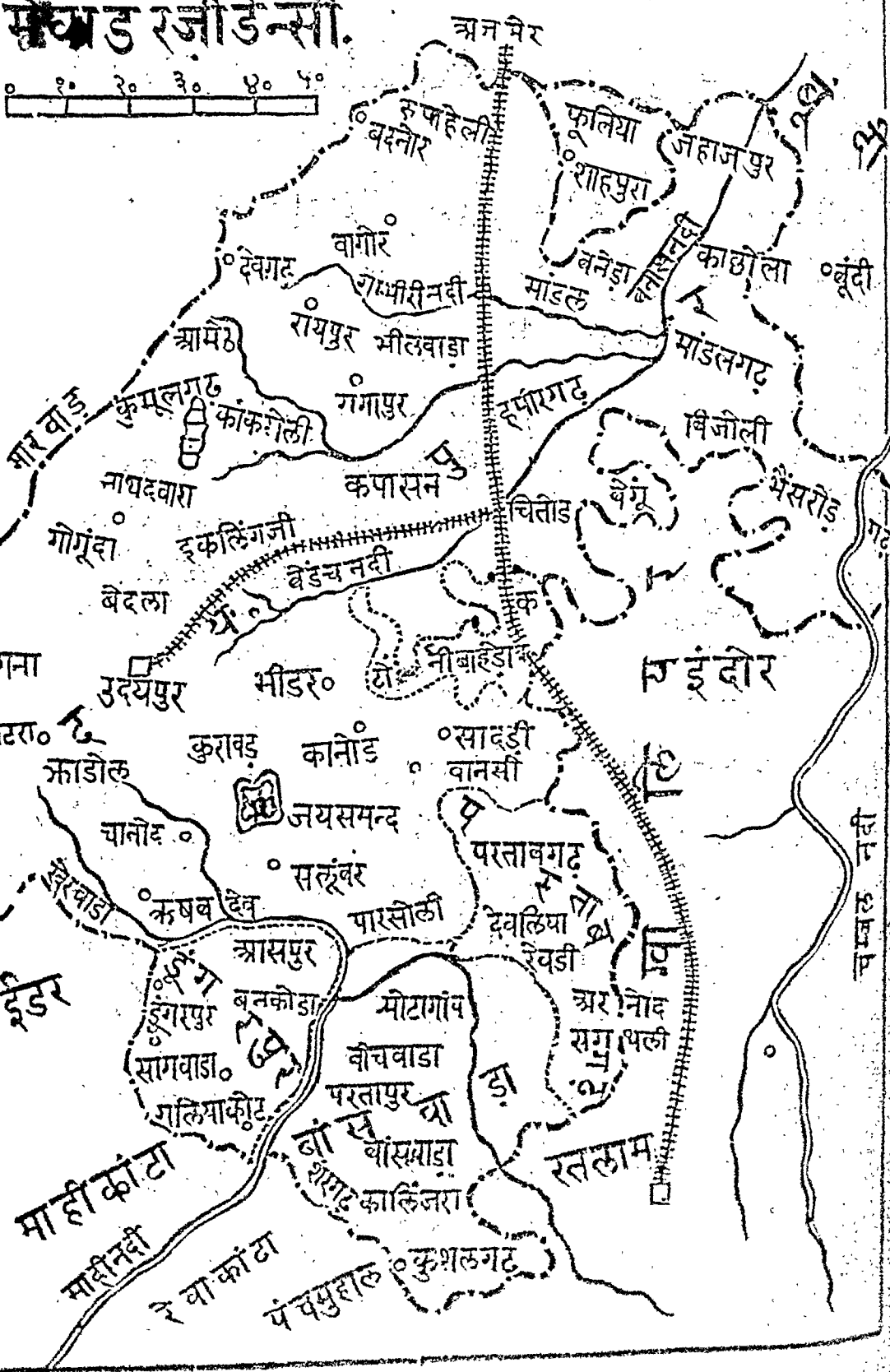
२ मेवाड़ रज़ीडेन्सी.

इस रज़ीडेन्सी में उदयपुर और शाहपुरा दो रियासतें हैं। यहां के रज़ीडेंट की देखरेख में डूंगरपुर, बांसवाड़ा और परतापगढ़ की अब एक अलग एजेन्सी हो गई है।

५ मेवाड़ या उदयपुर.

उदयपुर मान मर्यादा के हिसाब से राजपूताने में अव्वल नम्बर की रियासत है। इसके उत्तर को अजमेर मेरवाड़ा पूर्वको बूंदी कोटा और ग्वालियर का इलाका दक्षिणको परतापगढ़, बांसवाड़ा, डूंगरपुर और माहीकांठे की रियासतें और पश्चिमको सिरोही और जोधपुर का राज्य है।

विस्तार—सम्पूर्ण क्षेत्रफल १२७५६ वर्गात्मक मील है जिसमें १८९३००० से ऊपर मनुष्य आबाद हैं।

नदी, झील और पहाड़-पूर्वी, बनास, गम्भीरी, खारी, बेड़च आदि नदियों के सिवाय कोटे से लगती सीमापर थोड़ीसी चम्बल नदी भी बहती है। जयसमंद, राजसमद, और उदयसागर बड़ी झीलें हैं पहाड़ों में कुम्हलगढ़, जरगा वगैरह के पहाड़ मुख्य हैं।

भूमि और पैदावार—भूमि इस राज्य की पहाड़ी होने परभी उपजाऊ है जिसमें रुई, हल्दी और अफीमको आदि लेकर दोनों ही फसलें उत्तम होती हैं। परन्तु उदयपुर का दक्षिणी पहाड़ी भाग जो इज़लाय मगरे के नाम से मशहूर है वैसा उपजाऊ नहीं है।

आबहवा-नदियों की अधिकता और पानीकी तरी के

कारण मेवाड़ की आवहवा बहुत अच्छी नहीं है। यहां का पा
पीने आदि से नहरू की बीमारी बहुत होती है.

खानें—लोहा, तांबा गन्धक और जस्ता आदि की खा
इस राज्य में बहुत हैं परन्तु इमारती पत्थर की कुछ खानों
सिवाय खोदी एक भी नहीं जाती हैं।

रेलवे—राजपूताना मालवा रेलवे रियासत को दो हिस्स
में बांटती हुई एक सिरेसे दूसरे सिरे तक जारी है। चित्तोरगढ़
से एक रेल की शाख उदयपुर तक आई है।

आमदनी—खालसे की सालियाना आमदनी लगभग
३० लाख रुपये के है और इससे दुगुने का देश जागीर माफी
आदि में होगा।

तहसीलें—रियासत में इस समय १७ के लगभग मुख्य
तहसीलें* हैं। कोटड़ा और खेरवाड़े के आसपास का देश भौमट
के नाम से प्रसिद्ध है। मेवाड़ में ठिकानों की संख्या बहुत अधिक
है, सलूंबर,देवगढ़, बेगूं, सादड़ी, बेदला, बनेड़ा वगैरह मुख्य हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

उदयपुर—देखने लायक नगर है, पीछोला तालाबके भीतर
और तीरपर संगमरमर की बहुत सुन्दर इमारतें हैं। सुनहरी,
रुपहरी छपाई और खरादी लकड़ी का काम अच्छा होता है।
उदयपुर सें लगभग १३ मील पर इकलिङ्गजी का प्रसिद्ध मन्दिर
है। चित्तोरगढ़ बहुत प्रसिद्ध किला है, किले के भीतर अनेक

* उदयपुर, थांगोर, भीलवाड़ा, चित्तोड़, छोटीसादड़ी, गिरवा, हुरड़ा,
जहाजपुर, कपासन, समनोर, कुम्हलगढ़, मगरा, मांडलगढ़, राजनगर, रासमी
सहाड़ा सायरा।

महल और मन्दिर ऐसे हैं कि जिनके देखनेसे बहुतसी तवारीखी बातें याद आती हैं। नाथद्वारा—वल्लभकुल सम्प्रदायका प्रधान धर्मस्थान है, यहां पर श्री नाथजी का प्रसिद्ध मन्दिर है जिनके दर्शनों को हज़ारों यात्री रोज आते जाते हैं। कांकरोली में द्वारिकाधीश का मन्दिर और राजसमंद नामक एक बड़ा तालाब है। भीलवाड़े में तांबे और पीतल के वर्त्तनों पर पक्की कलई का काम बहुत सुन्दर होता है। जहाजपुर में खरादी लकड़ीका काम अच्छा होता है। ऋषभदेवजी में जैन तीर्थंकर ऋषभदेवजी का प्रसिद्ध मन्दिर है, यहां पर श्याम पत्थर के प्याले वगैरह अच्छे बनते हैं। जिला मगरे में ढेबर नाम की एक बड़ी झील है मनुष्य की बनाई हुई झीलों में संसार में इतनी बड़ी और कोई झील नहीं है और इसीको जयसमंद भी कहते हैं कुम्हलगढ में एक प्रसिद्ध किला है। खेरवाड़ा और कोटड़ा प्रसिद्ध छावनियां हैं। कनेरा गांव में सुखानन्द का मन्दिर और एक गर्म पानी का सोता है। नागदा एक प्राचीन शहर है, यहां उस समयके कई अच्छे मन्दिर हैं। काछोला का परगना राजाधिराज शाहपुरा की जागीरमें है।

---

६ शाहपुरा.

शाहपुरा अजमेर के पास एक छोटा राज्य है। इसके उत्तरको अंगरेजी इलाका, अजमेर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम को उदयपुर का राज्य है।

क्षेत्रफल—सम्पूर्ण क्षेत्रफल जिसमें काछोला की जागीर भी शामल है ६०० वर्गात्मक मील के लगभग है और आबादी ६०००० से ऊपर है

भूमि—भूमि यहां की अच्छी है जिसमें रुईको आदि लेकर दोनों ही शाख उत्तम होती हैं। बनास और खारी इस राजकी बड़ी नदियां हैं।

आमदनी—सालियाना आमदनी लगभग ३००००० रुपये के है और इससे कुछ कमका देश जागीर माफ़ी आदि में होगा।

तहसीलें—सब मिलाकर रियासत में आठ तहसीलें हैं (शाहपुरा, अमली, ढीकोला, कानेचां, कोठियां, फूलिय सांगरिया, काछोला)

शाहपुरा—इस राज्य की राजधानी और रामसनेही साधुओं का मुख्य गुरु द्वारा है, फाल्गुन के महिने में यहां एक बड़ा मेला भरता है।

---

३ दक्षिणी राजपूताना स्टेट एजेन्सी.

इस एजेन्सी में डूंगरपुर, बांसवाड़ा और परतापगढ़ तीन रियासतें हैं। एजण्ट साहब नीमच में रहते हैं।

७ डूंगरपुर.

डूंगरपुर दक्षिणी राजपूताने में एक छोटी रियासत है। इसके उत्तर को उदयपुर, पूर्वको बांसवाड़ा, दक्षिणको रेवाकांटा और पश्चिम को माहीकांटा और उदयपुर का राज्य है।

क्षेत्रफल—क्षेत्रफल १४४७ वर्गात्मक मील है जिसमें १५९००० से कुछ ऊपर मनुष्य आबाद हैं।

भूमि इत्यादि—राज्य का अधिकान्श भाग पहाड़ी और

जंगल है परन्तु घाटियों के मध्य में दोनों ही साख उत्तम होती हैं। माही और सोम मुख्य नदियां हैं।

खानें—संगमूसा (काले पत्थर) और एक प्रकार के हरियाली माइल चिकने पत्थर की यहां खाने हैं।

आमदानी—सालियाना आमदनी २५०००० रुपये के लगभग है और अनुमान इतनी ही आमद का देश गीर माफी वगैरह में है।

तहसीलें—डूंगरपुर और सागवाड़ा दो तहसीलें हैं। ठिकानों में बनकोरा, पीठ, कूंवा आदि मुख्य हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

डूंगरपुर—इस राज्य की राजधानी है। यहां काले पत्थर की (जिसे परेवा का पत्थर कहते हैं) मूर्तियां प्याले खिलौने आदि बहुत सुन्दर बनते हैं। गलियाकोट में फखरुद्दीन शाह साहब की दरगाह है, यहांपर साल में एकबार बड़ा मेला जुड़ता है। बाणेश्वर माही और सोम नदी के संगमपर हिन्दुओं का पवित्र स्थान है, यहां एक मेला भी भरता है।

---

८ बांसवाड़ा.

सीमा—उत्तर को उदयपुर, पूर्व को परतापगढ़ और मालवे की रियासतें, दक्षिण को पञ्चमुहाल और पश्चिम को डूंगरपुरका राज्य है।

क्षेत्रफल—क्षेत्रफल १९४६ वर्गात्मक मील और आबादी १८७५०० आदमियों की है।

भूमि और पैदावार—भूमि यहां की प्रायः मालवी होने से दोनों ही फसलें उत्तम हो जाती है। जंगलों में शीसम और सागवान की कीमती लकड़ियां भी बहुत पाई जाती हैं।

नदी, पहाड़—इस रियासत में माही बड़ी नदी है। पहाड़ों में मदारिया और जगमेर की पहाड़ियां मुख्य हैं।

आबहवा—पानी की तरी और जंगलों की अधिकता के कारण यहां फोड़ा फुन्सी और नेहरूकी बीमारी बहुत होती है।

आमदनी—सालियाना आमदनी लगभग डेढ़ लाख रुपये के है और इससे दुगुने का देश जागीर वगैरह में होगा। कुशलगढ़ के राव यहां के खिराज गुज़ार हैं।

तहसीलें—रियासत में इस समय ९ तहसीलें हैं* महारावल साहब बांसवाड़े में रहते हैं। कुशलगढ़ गढ़ी बड़े ठिकाने हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

बांसवाड़ा—यहां पर रामेश्वर महादेव का एक बड़ा मेला भरता है, देखने लायक स्थानों में राज के महलात और कुछ छत्रियां हैं। कालिंजरा में पत्थर की कोरनी का एक बहुत पुराना जैन मन्दिर है। सौदलपुर भीलों का ठिकाना है, यहां का भील सरदार रावत कहलाता है।

कुशलगढ़—बांसवाड़े में राठोरों का एक बहुत प्रसिद्ध ठिकाना है।

---

* १ बनगढी २ डूंगर ३ बागड़ूगर ४ दानपुर ५ कालिंजरा ६ खाप-मेरा ७ लुहारिया ८ गरतापुर ९ कोटरा.
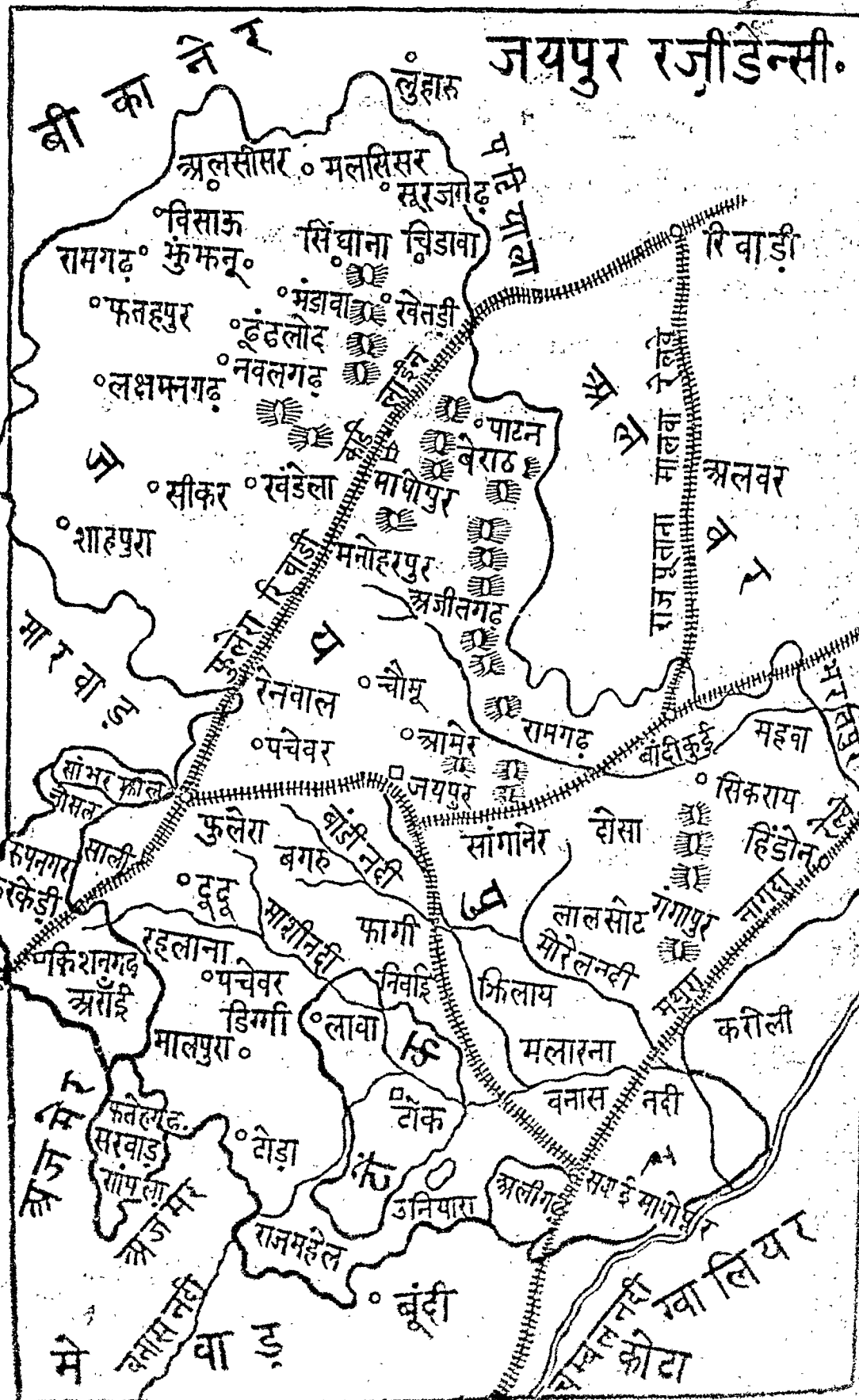
४ जयपुर रज़ीडेन्सी.

इस रज़ीडेन्सी में जयपुर, किशनगढ़, टोंक की रियासतें और एक लावा का छोटा सा ठिकाना है। रज़ीडेंट साहब रज़ीडेन्सी डाक्टर सहित राजधानी जयपुर में रहते हैं।

१० जयपुर वा ढूंढार.

जयपुर—धन, बल, और आबादी के हिसाब से राजपूताने में सब से बड़ा राज्य है। इसके उत्तर को बीकानेर, लुहारू, और पटियाले का राज्य पूर्व को अलवर, भरतपुर, करोली और ग्वालियर का इलाका दक्षिण में कोटा, टोंक, बूंदी और उदयपुर का राज्य और पश्चिम को अजमेर का अंगरेजी इलाका, किशनगढ़ और जोधपुर का राज्य है।

क्षेत्रफल—सब क्षेत्रफल १५५७९ वर्गात्मक मील है जिसमें २६३७००० के लगभग मनुष्य आबाद हैं।

पहाड़ और नदियां—नाहरगढ़, सिंघाना और जीलोपाटन मुख्य पहाड़ हैं। बांडी, साबी, बाणगंगा, ढूंढ, गम्भीरी, डाई, मोरेल, मासी छोटी२ नदियों के सिवाय चम्बल, बनास बड़ी नदी हैं जो इस रियासत के अग्निकोन में होकर बहती हैं।

भूमि और पैदावार—रियासत का पश्चिमोत्तर हिस्सा छोड़ कर जहां रेत के बड़े २ टीले हैं भूमि यहां की उत्तम है। जिसमें रुई, और अफीम को आदि लेकर दोनों ही फसलें उत्तम होती हैं।

जलवायु—यहां का जलवायु नीरोग और सुन्दर है, शेखावाटी में गर्मी और सर्दी दोनों ही अधिक पड़ती हैं और कूओं में पानी भी बहुत गहराई पर निकलता है।

खानें—इमारती पत्थरोंके सिवाय तांबा, फिटकरी, लालड़ी और नीले थोथे की खानें हैं। और सांभर झील के पानी से नमक बनाया जाता है।

रेलवे—राजपूताना मालवा रेलवे के सिवाय बांदीकुई आगरा ब्रांच, फुलेरा रिवाड़ी कार्डलाइन, सवाई माधोपुर ब्रांच और मथुरा नागदा रेलवे इस राज्य में होकर जारी हैं।

निजामतें और तहसीलें—रियासत में इस समय १ निजामतें और ३५ तहसीलें हैं। सीकर, खेतड़ी, उणियारा झिलाय, चौमू सामोद वगैरह बड़े२ ठिकाने हैं।

निज़ामतें	तहसीलें.
जयपुर	जयपुर, चाकसू, जमुआ रामगढ़, कालख।
बांदीकुई	बांदीकुई।
दौसा	दौसा, बसवा, लालसोट सिकराय।
गंगापुर	गंगापुर, बामनियांवास, वजीरपुर।
हिंडोन	हिंडोन, घोंसला, महुवा, रतनजिला, टोडाभीम, वालघाट।
कोटकासिम	कोटकासिम।
माधोपुर	माधोपुर, बौंली, खंडार, मलारणा।
मालपुरा	मालपुरा, निवाई, टोडा रायसिंह।
सांभर	सांभर, दांतारामगढ़, मुअज्जमाबाद, नराणा, फागी।
शेखावाटी	झुनझुनू, उदयपुर।
तोरावाटी	बैराठ, सवाई रामगढ़। खंडेला।

प्रसिद्ध स्थान.

जयपुर—राजपूताने में सब से बड़ा और दर्शनीय नगर है, देखने लायक स्थानों में रामनिवासबाग, सुदर्शनगढ़ हवामहल, श्री गोविन्दजी का मन्दिर वगैरह मुख्य हैं। संगमरमर की मूर्तियां और लाख की चूड़ियां यहांसे दूर २ तक जाती हैं, सुनार और चित्रकार भी जयपुर के अपने काम में पूरे उस्ताद हैं। आमेर इस राज्य की पुरानी राजधानी है यहां का किला और उसके भीतर के महल मन्दिर देखने लायक हैं। सांगानेर की रँगाई, छपाई अच्छी होती है। बगरू के चादरे, दुपट्टे अच्छे गिने जाते हैं।

बांदीकुई—बहुत बड़ा जंकशन है, यहां से दिल्ली, आगरा और बम्बई को रेल जाती है।

दौसा—के सिलावट मूर्तें बहुत सुन्दर बनाते हैं। बसवा के ...ी के बर्तन बहुत प्रसिद्ध हैं। लालसोट में आमों की और ...खोह में नारङ्गियों की बड़ी मौज है।

गंगापुर—गंगाजी का मन्दिर और एक पानी का सोता है। ...पनियावास के चांवल मशहूर हैं। वजीरपुर एक व्योपारिक ...ा है यहां अफीम और गल्ले का लेन देन बहुत होता है।

हिंडोन—बड़ा कस्बा है यहां लाल और सफेद पत्थर की ...क सुन्दर इमारत हैं। महवा में गढ़ है मंडावर में रेल का स्टेशन ...र रुई का पेच है।

कोटकासिम—की रेजी उत्तम होती है।

माधोपुर—यहां का कागज, पत्थर और लकड़ी का खराद ...र रंगत का काम बहुत सुन्दर होता है, यहांपर रणथंभौर का

खानें—इमारती पत्थरोंके सिवाय तांबा, फिटकरी, लालड़ी और नीले थोथे की खानें हैं। और सांभर झील के पानी से नमक बनाया जाता है।

रेलवे—राजपूताना मालवा रेलवे के सिवाय बांदीकुई आग ब्रांच, फुलेरा रिवाड़ी कार्डलाइन, सवाई माधोपुर ब्रांच अ मथुरा नागदा रेलवे इस राज्य में होकर जारी हैं।

निजामतें और तहसीलें—रियासत में इस समय निजामतें और ३५ तहसीलें हैं। सीकर, खेतड़ी, उणियाः झिलाय, चौमू सामोद वगैरह बड़े२ ठिकाने हैं।

निज़ामतें	तहसीलें.
जयपुर	जयपुर, चाकसू, जमुआ रामगढ़, कालख।
बांदीकुई	बांदीकुई।
दौसा	दौसा, बसवा, लालसोट सिकराय।
गंगापुर	गंगापुर, बामनियांवास, वजीरपुर।
हिंडोन	हिंडोन, घोंसला, महुवा, रतनजिला, टोडाभीम वालघाट।
कोटकासिम	कोटकासिम।
माधोपुर	माधोपुर, बौंली, खंडार, मलारणा।
मालपुरा	मालपुरा, निवाई, टोडा रायसिंह।
सांभर	सांभर, दांतारामगढ़, मुअज्जमाबाद, नराणा, फागी।
शेखावाटी	झुनझुनू; उदयपुर।
तोरावाटी	बैराठ, सवाई रामगढ़। खंडेला।

प्रसिद्ध स्थान.

जयपुर–राजपूताने में सब से बड़ा और दर्शनीय नगर है, देखने लायक स्थानों में रामनिवासबाग, सुदर्शनगढ़ हवामहल, श्री गोविन्दजी का मन्दिर वगैरह मुख्य हैं। संगमरमर की मूर्तियां और लाख की चूड़ियां यहांसे दूर तक जाती हैं, सुनार और चित्रकार भी जयपुर के अपने काम में पूरे उस्ताद हैं। आमेर इस राज्य की पुरानी राजधानी है यहां का किला और इसके भीतर के महल मन्दिर देखने लायक हैं। सांगानेर की रँगाई, छपाई अच्छी होती है। बगरू के चादरे, दुपट्टे अच्छे गिने जाते हैं।

बांदीकुई–बहुत बड़ा जंकशन है, यहां से दिल्ली, आगरा और बम्बई को रेल जाती है।

दौसा–के सिलावट मूर्त बहुत सुन्दर बनाते हैं। बसवा के ठठेरों के बर्त्तन बहुत प्रसिद्ध हैं। लालसोट में आमों की और सिखोह में नारङ्गियों की बड़ी मौज है।

गंगापुर–गंगाजी का मन्दिर और एक पानी का सोता है। पनियावास के चांवल मशहूर हैं। वजीरपुर एक व्योपारिक कस्बा है यहां अफीम और गल्ले का लेन देन बहुत होता है।

हिंडोन–बड़ा कस्बा है यहां लाल और सफेद पत्थर की सुन्दर इमारत है। महवा में गढ़ है मंडावर में रेल का स्टेशन और रुई का पेच है।

कोटकासिम––की रेजी उत्तम होती है।

माधोपुर–यहां का कागज, पत्थर और लकड़ी का खराद और रंगत का काम बहुत सुन्दर होता है, यहांपर रणथंभौर का

प्रसिद्ध किला है बाँकी की रँगाई और चाकू प्रसिद्ध हैं। काला डूंगर में खड़िया मिट्टी और रामरज निकलती है। भगवन्तगढ़ में गेरू की खान है। खंडार का किला पहाड़ पर सीधा बना हुआ है और नदी के घिराव के कारण दुर्गम है। मलारणे का गुड़ और पिढाणे का खश का इत्र प्रसिद्ध है। उणियारा मान मर्यादा के हिसाब से जयपुर में सबसे बड़ा ठिकाना है।

मालपुरा—ऊन के जमाये हुए चकमें, आसन, घूघी, और चारजामें बहुत सुन्दर बनते हैं। टोडाकी मेंहदी प्रसिद्ध है और इसीके पास फ़ीरोजा भी निकलता है। डिग्गी एक बड़ा ठिकाना है और यहां कल्याणजी का एक अच्छा मेला भरता है। राजमहल बनास नदी के क़िनारे एक रमणीक स्थान है, यहांसे कुछ दूरप काले रंग की खालड़ी निकलती है।

सांभर—में नमक का कारखाना, देवयानी तीर्थ, शर्मिष्ठा तीर्थ, और शाकम्भरी देवी का मन्दिर है। दांता में लोहे का काम अच्छा होता है। नराणा दादू पंथियों का मुख्यगुरुद्वारा है यहां अनाज और रुई का व्योपार खूब होता है। फागी में अनाज और जीरा बहुत पैदा होता है।

झुनझुनू—शेखावाटी का सदर स्थान है, यहां भरत की कलियां और लोहे के ताले, चाकू आदि बहुत सुन्दर बनते हैं; कमरुद्दीन शाह साहब की खानकाह, नो महला. बादलगढ़ आदि देखने लायक इमारतें हैं। सिंघाना में शाह गुलाम इमाम साहब का उरसों का मेला भरता है और यहां के मोची अपने काममें पूरे उस्ताद हैं। सीकर—लगभग ७ लाख रुपये सालियाना की उपज का बड़ा ठिकाना है। राव राजा साहब का किला देवीपुरे के बाग की कोठी देखने लायक इमारतें हैं, यहां के जूते और

नीला अमौआ प्रसिद्ध है। रामगढ़ लक्षमनगढ़। फतहपुर साहूकारों की बस्तियां हैं।

खेतड़ी—लगभग ५ लाख रुपये वार्षिक की उपज का बड़ा ठिकाना है, राजा साहब के महल और अजीतसागर बन्ध अच्छे हैं। चिड़ावा में साहूकार अच्छे हैं।

बिसाऊ—नवलगढ़, डूंडलोद, सूरजगढ, मंडावा, अलसीसर, मलसीसर आदि और भी शेखावाटी में बड़े ठिकानें हैं।

बैराठ—तोरावाटी में एक पुराना कस्बा है, यहांपर लकड़ी के कलमदान अच्छे बनते हैं। खँडेला में लकड़ी के सिंगारदान डिब्बे, पलँग के पाये रंगीन और सादा अच्छे मिलते हैं और चमड़े का काम भी सुन्दर होता है। पाटन तँवर राजपूतों का टीकाई ठिकाना है। मौजा बूचारा में सफेद मिट्टीकी खान है, जिसके आर्टस्कूल में चीनी मिट्टी कैसे बर्त्तन बनाये जाते हैं। मौजा किशनगढ़ में गर्म पानीका एक सोता है और मेला भरता है।

---

११ किशनगढ़.

किशनगढ़ अजमेर के समीप एक छोटी रियासत है। इसके उत्तर को मारवाड़ पूर्व को जयपुर, दक्षिण को अजमेर और मेवाढ़ और पश्चिम को जिला अजमेर है।

क्षेत्रफल—क्षेत्रफल ८५८ वर्गात्मक मील और आबादी ८७२०० के करीब है।

नदी पहाड़—डाई, माशी, रूपन मुख्य नदी हैं, पहाड़ों में बिराई, मोडा और चौबुर्जा मशहूर हैं।

भूमि और पैदावार—भूमि पहाड़ी होने परभी उत्तम और उपजाऊ है। शाख दोनों ही होती हैं पर बड़ी पैदावार जौं की है। आबहवा उत्तम और नीरोग है।

खानें—इमारती पत्थर के सिवाय सरवाड़ के पास तामड़ा निकलता है! नरबर और टोंकड़े में संगमरमर से कुछ हलका पत्थर निकलता है।

रेलवे—राजपूताना मालवा रेलवे रियासत में पूर्व पश्चिम को जारी है और किशनगढ़ एक स्टेशन है।

आमदनी—कुल आमदनी ५००००० रुपये के लगभग है और इतने का ही देश जागीर, माफी वगैरह में है।

तहसीलें—किशनगढ़, रूपनगर, अराई सरवाड़ और फतहगढ़ पांच तहसीलें हैं, ठिकानों में रलावता, करकेड़ी, ढमूक मुख्य हैं।

किशनगढ़—में रुई, सूत और कपड़े बुनने के कारखाने हैं। घांघरों की छींट, चोल (लुंगी) के थान प्रसिद्ध हैं करकेड़ीमें रेजी अच्छी बनती है।

रूपनगर—गढ़ के भीतर पीर सुल्तान शाह की कबर है. जिसकी जियारत को दूर२ के मनुष्य आते हैं। सलेमाबाद निम्बार्क सम्प्रदाय की प्रधान गद्दी है। सुरसुरा में तेजाजी का अच्छा मेला भरता है।

अराई—यहां पर श्री कल्याणरायजी की प्रसिद्ध धाम है और एक मेला भरता है।

सरवाड़—सरवाड़ में अच्छा किला है और लखेरों का बड़ा मेला भरता है।

फतहगढ़—यहां चांवल बहुत सुन्दर होते हैं।

---

१२ टोंक.

इस रियासत का फैलाव ऐसा तित्तर वित्तर है कि हम और राज्यों की भांति इसकी सीमा नहीं ठहरा सकते । टोंक और अलीगढ़ की तहसीलें बूंदी के उत्तर को, नींमाहेड़ा की तहसील उदयपुर में छबड़ा पिरावा और सिरोंज तीन तहसीलें कोटा और झालावाड़ के पूर्व को सेंट्रलइंडिया में जुदीर आन पड़ी हैं ।

विस्तार—क्षेत्रफल २५५३ वर्गात्मक मील और आबादी सब मिलाकर तीन लाख से ऊपर है ।

भूमि और पैदावार—रियासत का अधिकतर भाग मालवे में आजाने से भूमि यहां की बहुत उपजाऊ है जिसमें रुई अफीम को आदि लेकर दोनों ही फसलें उत्तम होती हैं । तहसील सिरोंज में एक बहुत बड़ा जंगल है जिसमें सागवान और कत्थाकी बड़ी पैदावार है ।

आमदनी—सालियाना आमदनी ११ लाख रुपये के लगभग है और अनुमान ७ लाख का देश जागीर माफी आदि में होगा ।

तहसीलें—टोंक, अलीगढ़, नींबाहेड़ा, छबड़ा, पिरवा, सिरोंज छः तहसीलें हैं ।

प्रसिद्ध स्थान.

टोंक—बनास नदी के किनारे पर अच्छा शहर है, हरीतरकारियां और खरबूजा बड़ी बहुतायत के साथ होते हैं । रबीउल अव्वल बारह वफात में एक बड़े धूमधाम का मेला भरता है । यहां में सोने चांदी की ढेस अच्छी बनती है ।

अलीगढ़—का पुराना नाम रामपुरा है, यहां का परकोट
बहुत सुन्दर और मज़बूत बना हुआ है।

नीमाहेड़ा—यहां पर केली मियां का मज़ार है, जिसकी
ज़ियारत को दूर २ के मनुष्य आते हैं। कन्नोज पहाड़ों से घिरा
हुआ एक रमणीक स्थान हैं डूंगला में साहूकार बहुत है।

छबड़ा—इस कस्बे के नीचे से एक पानी का सोता निक
लता है और कादरी बाग की नारंगियां प्रसिद्ध हैं। गूगोर का
किला प्रसिद्ध है।

सिरोंज—में एक बड़ा मीनार है, ज़री के काम दार शेला
मंदील और साड़ियां उत्तम बनती हैं।

लावा—टोंक का एक खिराज गुजार ठिकाना है।
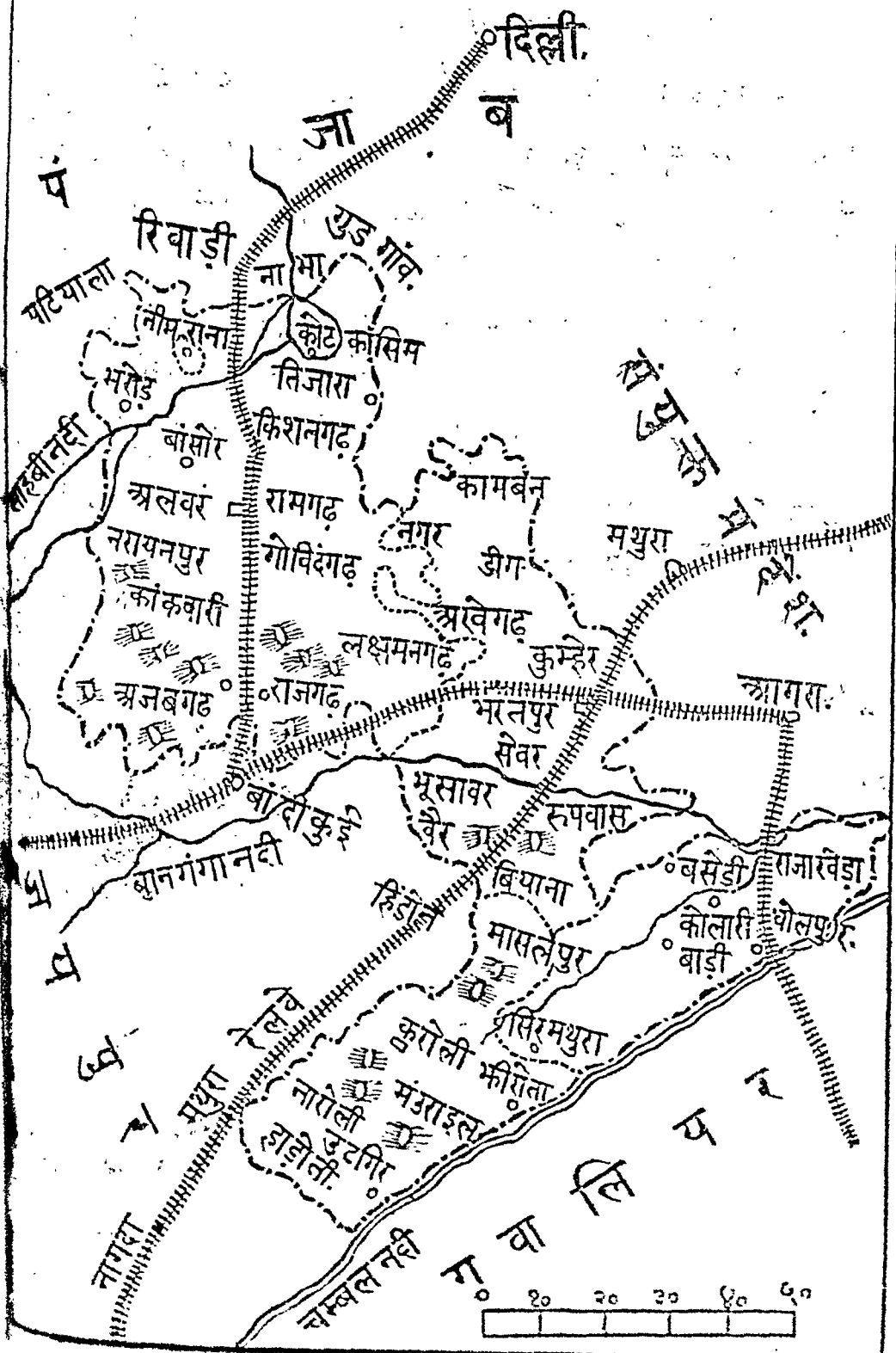
५ पूर्वी राजपूताना स्टेट एजेन्सी.

इस एजेन्सी में अलवर, भरतपुर, धौलपुर, और करोली चार रियासतें हैं। पोलीटिकल एजेंट एजेन्सी सर्जन सहित भरतपुर में रहते हैं।

१३ अलवर.

पूर्वी राजपूताने में पंजाब और युक्तप्रदेश से लगता हुआ अलवर एक अच्छा राज्य है। इसके उत्तर को पंजाब का अंगेरेज़ी इलाका गुडगांव जिसमें कुछ भाग पटियाला और नाभा का भी शामिल है, पूर्व को भरतपुर और दक्षिण पश्चिम को जयपुर का राज्य है।

क्षेत्रफल—क्षेत्रफल ३१४१ वर्गात्मक मील और आबादी आठ लाख के लगभग है।

नदी, पहाड़—रूपा, साहबी, बाँडी नदी हैं। पहाड़ों में राजगढ़ का पहाड़ और कांकदारी की पहाड़ियां मुख्य हैं।

भूमि और पैदावार—भूमि उपजाऊ होने से दोनों शाख उत्तम होती हैं और जलवायु साधारण है।

खानें—दरीबां और जोधावास में तांबे की खान है, परगना राजगढ़ और थाना गाजी में लोहा निकाला जाता है, झिरी में संगमरमर जैसा चिकना पत्थर निकलता है, बनोखर में अभ्रक, बिदरका में गेरू, और बिलासपुर में स्लेट का पत्थर बहुत मिलता है।

रेलवे—इस राज्य में राजपूताना मालवा रेलवे की दिल्ली अजमेर और आगरा अजमेर की दो शाखें हैं।

आमदनी—सालियाना आमदनी ३३०००००[illegible] रुपये के [illegible]भग है. परन्तु जागीर आदि के गांव और रियासतों के देखते [illegible]त थोड़े हैं।

तहसीलादि—रियासत में बारह तहसीलें* हैं और नीम-[illegible]ाना, खोरा, गढ़ी वगैरह बड़े ठिकाने हैं.

प्रसिद्ध स्थान.

अलवर—पहाड़ की जड़ में बसा हुआ बड़ा सुन्दर नगर [illegible] यहां की रँगाई बहुत प्रसिद्ध है। बहादुरपुर के नेवें अच्छे [illegible]ते हैं।

भरोड़—भादों के महिने में जाहर पीरका मेला भरता है। [illegible]ांठन में एक किला है और स्लेट का पत्थर निकलता है।

बांसोर—यहां एक किला है। नरायनपुर से कुछ अन्तर [illegible]र ताल वृक्ष नामक रमणीक स्थान है, यहांपर तीन कुंड हैं [illegible]जिन में एक का पानी गर्म रहता है। हमीरपुर में देशी ढगपर [illegible]लोहा बनता है। हरसोरे में जाजम तोसक आदि की छपाई [illegible]त्तम होती है।

खटूमर—व्योपारिक कस्बा है। गढ़बसई में छींट छापी [illegible]जाती है।

किशनगढ़—छींट अच्छी बनती है। फतहाबाद के मिट्टी के बर्तन मशहूर हैं।

मंडावर—पुरानी बस्ती है, उस समय का एक जैन मन्दिर

---

* अलवर २ भरोड़ ३ बांसोर ४ गोविन्दगढ़ ५ खटूमर ६ किशन-[illegible]गढ़ ७ लक्ष्मणगढ़ ८ मंडावर ९ राजगढ़ १० रामगढ़ ११ थानागाजी १२ तिजारा।

और कई टूटी फूटी इमारतें हैं। मौजा सामदा में एक हिलते हुए पत्थर के नीचे शिव मूर्ति और कुंड है।

राजगढ़—यहां के बागों में नारंगियां बहुत होती हैं, हाथ में रखने की रंगी हुई छड़ियां अच्छी मिलती हैं। कांकवारी का बांस उत्तम होता है।

रामगढ़—हनुमानजी का मेला भरता है। मादल में श्याम पत्थर के प्याले सुन्दर बनते हैं। लसवाड़ी के मैदान में अंगरेजों और मरहट्टों में एक बड़ी लड़ाई हुईथी।

थानागाजो—में एक किला है। और मालूताने की तम्बाकू अच्छी होती है।

तिजारा—बड़ा कस्बा है, यहां की लाल मिर्च और मेथी प्रसिद्ध है।

नीमराना—पहिले चौहानों का बड़ा राज था, अब रियासत अल्वर का एक ठिकाना है।

---

१४ भरतपुर.

भरतपुर—आगरे के पास जाटों की प्रसिद्ध रियासत है इसके उत्तर को गुड़गांव पूर्व को मथुरा और आगरे के जिले दक्षिण को धौलपुर और करौली का राज्य, पश्चिम को जयपुर और अलवर की रियासतें हैं।

विस्तार—क्षेत्रफल १९८२ वर्गात्मक मील और आबादी ५६०००० के लगभग है।

नदी, पहाड़—बाणगंगा (उटङ्गन) गम्भीर, रूपारेल,

काकंद बरसाती नदियां हैं। पहाड़ों में डांग, और सिद्धगिरि मुख्य हैं।

भूमि और पैदावार—भरतपुर की भूमि और पैदावार दोनों अच्छी हैं। शहर के चहुंपास कई कोस में एक बनी है जिसे घना बोलते हैं। साधारण तापतिल्ली को छोड़कर आब-हवा अच्छी है।

खानें—बारेठे और बांगेरे में लाल तथा सफेद पत्थर की खानें हैं।

रेलवे—राजपूताना मालवा रेलवे और मथुरा नागदा रेलवे इस रियासत में होकर निकली हैं।

आमदनी—कुल आमदनी ३१ लाख रुपये के लगभग है जागीर आदि के गाँव इस रियासत में भी थोड़े हैं।

निजामतें और तहसीलें—रियासत में इस समय दो निज़ामतें और १० तहसीलें हैं और वल्लभगढ़ बड़ा ठिकाना है।

निज़ामतें	तहसीलें.
भरतपुर	भरतपुर, अखेगढ, बियाना, रूपवास, वैर।
डीग	डीग, कामा, पहाड़ी, कुम्हेर, नगर।

प्रसिद्ध स्थान.

भरतपुर—यहां का किला बहुत प्रसिद्ध है. हाथी दांत की चौंरी, पंखे और मिट्टी के हुक्के अच्छे बनते हैं। सेवर में रियासत की फौज रहती है.

बियाना—यहां का किला बहुत प्रसिद्ध है. फरसू बाणगङ्गा के किनारे एक छोटा गांव है।

रूपवास—एक पुराना कस्बा है, यहांपर उस समयकी अच्छी इमारतें और तीन बड़ी प्रतिमा हैं। खानवा एक छोटासा गांव है इसके पास बाबर और सांगाराणा के बीच बड़ी लड़ाई हुईथी। भूसावर की मिंहदी और आम प्रसिद्ध हैं।

वैर—पहिले यहां तोप ढालने का कारखाना था. नोलखा बाग और राज के महलात अच्छे हैं।

डीग—के भवन और फव्वारे बहुत प्रसिद्ध हैं। भादों बदि अमावस को व्रजयात्रा का अच्छा मेला भरता है और यहां खजूर के पंखे अच्छे बनते ह।

कामा—हिन्दुओं का तीर्थस्थान है, यहांपर चौरासी खम्भ और कई एक अच्छे मन्दिर हैं।

पहाड़ी—खानज़ादा पीर की दरगाह है, यहां लकड़ी के खिलौने, प्याले सुन्दर बनते हैं।

कुम्हेर—में मल्हारराव का लड़का खांडेराव जाटों के हाथ से मारा गया था।

नगर—मिट्टी के बर्त्तन और खिलौने अच्छे बनते हैं सीकरी मेवात का सदर है, यहां आटे की खजूर अच्छी बनती हैं।

१५ धौलपुर.

धौलपुर—ग्वालियर से लगती हुई जाटों की रियासत है। इसके उत्तर पूर्व को आगरा, दक्षिण पूर्व को ग्वालियर, पश्चिम को करोली और भरतपुर का राज्य है।

विस्तार—क्षेत्रफल ११५५ वर्गात्मक मील और आबादी २६४००० के लगभग है।

नदी, पहाड़—चम्बल, वाणगङ्गा, पारबती मुख्य नदी हैं

और रियासत के दक्षिण पश्चिम को छोटी२ पहाड़ियां हैं जिनमें सुर्ख पत्थर निकलता है।

भूमि और पैदावार—भूमि अच्छी है मुख्य पैदावार गेहूं चने और ज्वार की हैं और आबहवा भी कुछ बुरी नहीं है।

खानें—पचगांव और जिरोली में सुर्ख, सफेद पत्थर की खानें हैं।

रेलवे—इंडियन मिडलैंड रेलवे इस राज्य में होकर निकली है, बड़ा स्टेशन धौलपुर है।

तहसीलें—गिरद तहसील, बाड़ी, बसेड़ी, कोलारी और राजाखेड़ा पांच तहसीलें हैं। सिरमथुरा, बिजोली, निमरोल बड़े ठिकाने हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

धौलपुर—कई भागों में बटा हुआ अच्छा शहर है, नरसिंह बाग और उसमें की कोठियां बहुत सुन्दर हैं, यहां शरदपूनों का अच्छा मेला भरता है। बाड़ी में सैयद राजबुखारी की दरगाह है, यहां लकड़ी और लोहे का काम सुन्दर होता है। सिरमथुरा में खजूर के पंखे उत्तम बनते हैं। सैपदू में शिवरात्रि को मेला भरता है। मच्छकुंड धौलपुर के पास एक तीर्थ है।

—×—

१६ करोली.

करोली—यादवों का मुख्य राज्य है। और इसी से यहां के महाराजा साहब यदुकुल चन्द्रभान कहलाते हैं इसके उत्तर को जयपुर, भरतपुर का राज्य। पूर्व को धौलपुर और ग्वालियर दक्षिण को इलाका ग्वालियर और पश्चिम को जयपुर का राज्य है।

विस्तार—क्षेत्रफल १२४२ वर्गात्मक मील आबादी १५७००० के लगभग है।

नदी पहाड़—चम्बल, मोरेल बड़ी नदियां है, पहाड़ भी बहुत हैं जिनमें शेर वगैरह जानवर अधिकता के साथ मिलते हैं।

भूमि और पैदावार—भूमि इस राज्यकी प्रायः पहाड़ी और बेहड़ है। फसलें दोनों ही होती हैं। मुख्य पैदावार गेहूं, चना, ज्वार की है। रुई, कपास, जीरा और घी यहां से बाहर को बहुत जाता है।

आबहवा—करोली की आबहवा राजपूताने में सब जगह से अच्छी है।

खानें—करोली में हर जगह इमारती पत्थर की खानें हैं इसी से हजार रुपये में बहुत सुन्दर हवेली तैयार हो सकती है।

आमदनी—सालियाना आमदनी ५००००० रुपये के लगभग है और दो तीन लाख का देश जागीर वगैरहमें होगा।

तहसीलें—हुजूर तहसील, सपोटरा, मंडराइल, उटगिर और माशलपुर पांच तहसीलें हैं। हाड़ोती, अमरगढ़, रावँटर बड़े ठिकाने हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

करोली—भद्रकाली नदी के तटपर बहुत स्वच्छ और सुन्दर नगर है, पलँग के पाये खिलौने आदि अच्छे बनते हैं छींट और पत्थरकी कूंडी वगैरह भी पाएदार होती हैं और शिव रात्रिको बड़ा मेला भरता है। माशलपुरका पान बहुत प्रसिद्ध है। केवड़ा रतालू भी बहुत होता है। मंडराइल और उटगिर में सुन्दर किले हैं। तवनगढ़ में एक बड़ा तालाब और किला है। कुड़गांव एक व्योपारिक क़स्बा है।
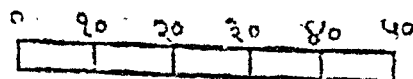
९ हाड़ोती एजेन्सी.

इस एजेन्सी में बूंदी, कोटा और झालावाड़ तीन रिया
हैं। यहां के पोलीटिकल एजेंट एजेन्सी के डाक्टर सहित क
में रहते हैं।

१७ बूंदी.

बूंदी हाड़ा खांप के चौहानों की एक प्रसिद्ध रियासत
इन्हीं हाड़ों की इस ओर अधिक बस्ती होने से इस एजेन्सी
नाम हाड़ोती प्रसिद्ध है।

सीमा—इसके उत्तर को टोंक और जयपुर का रा
पूर्व को कोटा और दक्षिण पश्चिम को मेवाड़ वा उदयपुर
राज्य है।

विस्तार—सम्पूर्ण क्षेत्रफल २२२० वर्गात्मक मील औ
आबादी २११००० के लगभग है।

नदी, पहाड़—चम्बल, मेज, नेज मुख्य नदी हैं, पहाड़
की भी बड़ी बहुतायत है जिनमें शेर वगैरह विकट जानवर भ
पड़े हैं। बूंदी का शेर राजपूताने में बहुत प्रसिद्ध है।

भूमि और पैदावार—बूंदी की ज़मीन पहाड़ी है प
पानी की अधिकता से कपास और अफीम को लेकर दोनं
शाख अच्छी होती हैं। बूंदी की आबहवा भी बुरी नहीं है।

आमदनी—कुल आमदनी वार्षिक छः लाख के लगभग
और दो तीन लाख का देश जागीर माफी आदि में होगा।

तहसीलें—रियासत में इस समय खेराड़, नागरचाल, बरड़
और वावनन्याळीसा चार हल्के और तेरह तहसीलें* हैं। दुगाड़ी
भैरोंपुरा, पगरां बड़े ठिकाने हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

बूंदी—का कटार और कुसुम की रँगाई बहुत प्रसिद्ध है.
न, भादों की तीजों के मेले अच्छे भरते हैं। डवलाने में सर
री सवार रहते हैं। दुगाड़ी में बहुत बड़ा तालाव है। नैनवा
और लाखेरी में पान पैदा होता है। हिंडोली के तालाब में मुर्गा-
यां बहुत हैं। पाटन में हाड़ों के कुल देवता का प्रसिद्ध मन्दिर है।

१८ कोटा.

मालवे से लगती हुई कोटा एक बड़ी रियासत है इसके
र को बूंदी और जयपुर का राज्य, पूर्व को ग्वालियर दक्षिण
झालावाड़, पश्चिम में मेवाड़ और बूंदी का राज्य है।

विस्तार—क्षेत्रफल ५६८४ वर्गात्मक मील और आवादी
१०००० के लगभग है।

नदी पहाड़—चम्बल, काली सिंध, पारव, तीपरवन,
ाज, अंजार मुख्य नदियां हैं और मकुन्दरा बड़ा पहाड़ है।

भूमि और पैदावार—भूमि यहां की चम्बल नदी की
ाई और मालवे में आजाने से बहुत उपजाऊ है जिसमें रुई,
ीम, ईख आदि को लेकर दोनों ही शाख बहुत उत्तम होती हैं।

आबहवा—नदियों की अधिकता और पानी की बहुतायत
सबब आबहवा यहां की बहुत अच्छी नहीं है बरसात के अंत
मलेरिया का बहुत ज़ोर रहता है।

---

* अटोला २ अरनेटा ३ वरुधान ४ देई ५ गोटरा ६ चुन्दोवली
हिंडोली ८ खेराद ९ लाखेरी १० नैनवा ११ पाटन १२ सीलोर
१३ तलवास।

रेल्वे—मथुरा नागदा रेल्वे के सिवाय वीना से बारॉं त
और बारॉं से कोटा तक एक रेल्वे लाइन और है।

खानें—दरा तथा सीमल हेड़ी में लाल पत्थर और खीम
में सफेद पत्थर निकलता है।

आमदनी—सालियाना आमदनी ३१००००० रुपये
लगभग है और दस बारह लाख का देश जागीर माफी आदि में है

निजामतें—कोटे में इस समय २० निजामतें* हैं. कोटरिय
और ठिकानो में अंतरदा, वलवन, गेंता, इंदरगढ़, पीपलदा वगै
रह मुख्य हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

कोटा—चम्बल नदी के किनारे पर एक व्यापारिक न
है, मथुराधीश का मन्दिर और राज के महलात देखने लाय
स्थान हैं मलमल, महमूदी, डोरिया आदि बारीक वस्त्र यहां बह
सुन्दर तैयार होते हैं। अन्ता में शाही महल हैं। बारां यहां
दड़ी की बन्दिस अच्छी होती है। इटावे में हाथी दांत के खिलौ
और कलमदान बहुत सुन्दर बनते हैं। किशनगंज में पॅलग
पाये सुन्दर बनते हैं। शाहाबाद में एक बड़ा पुराना किला
और शेर की शिकार खूब हाथ आती है। गागरोन में उत्त
किला है और यहांके तोते प्रसिद्ध हैं। इन्दरगढ़ एक बड़ा ठिकान
है, यहां खरादी लकड़ी के रंगे हुए खिलौनों का बड़ा व्यापा
है। शेरगढ़ में भी एक उत्तम किला है।

---

* अन्ता, २ बारां, ३ बड़ोद, ४ डीगोद, ५ इटावा, ६ कनवास, ७ चेचट, ८ खानपुर, ९ किशनगंज, १० कुंजेर, ११ लाडपुरा, १२ मांगरोल, १३ मनोहरथाना, १४ सांगोद, १५ शाहाबाद, १६ शेरगढ, १७ छीपाबड़ोद, १८ अकलेरा, १९ असनावर, २० बकानी,

१९ झालावाड़.

कोटे से दक्षिण को झालावाड़ एक छोटी रियासत है। इस के उत्तर को कोटा पूर्व को, ग्वालियर और टोंक का परगना पिरावा दक्षिण पश्चिम को सेन्ट्रल इंडिया की रियासतें हैं।

विस्तार—क्षेत्रफल ८१० वर्गात्मक मील और आबादी एक लाख के लगभग है।

नदी, पहाड़—क्षिप्रा, कालीसिंध, पिपलाज आदि मुख्य नदियां हैं और बड़ा पहाड़ कोई नहीं ॥

भूमि और पैदावार—भूमि यहां की मालवी होने से बहुत उपजाऊ है जिसमें रुई, अफीम को लगाय दोनों ही शाख उत्तम होती हैं।

आबहवा—आबहवा यहां की बहुत सुन्दर है, इसी लिये हेडक्वार्टर कोटा होने परभी पोलीटिकल एजेंट साहब अकसर यहां रहते हैं।

रेलवे—मथुरा नागदा रेलवे इस राज्य में होकर गुजरी है. जिसपर गंगधार, डग, झालरापाटन रोड बड़े स्टेशन हैं।

आमदनी—सालियाना आमदनी ५००००० रुपये के लगभग है और एकतिहाई का देश जागीर वगैरह में है।

तहसीलें—पाटन, आवर, डग, गंगधार और पंचपहाड़ पांच तहसीलें हैं।

प्रसिद्ध स्थान.

झालरापाटन—इस राज्य की राजधानी है, राज के महलात द्वारिकानाथ का मन्दिर और पहाड़ीश्वर का किला देखने लायक स्थान हैं। छावनी में राज के महल और कचहरियां हैं।

आवर—आहू नदी से घिरा हुआ रमणीक स्थान है, स्या
रंगके पोमचे (दुपट्टे) मशहूर हैं। पहाड़ियों में खुदे हुए क
देखने लायक स्थान हैं।

डग—बड़ा सुन्दर ग्राम है, गुरु चेला की समाधि, डगेश्वरी देवी
का मन्दिर, हक्कानी की दरगाह, रानी का मकबरा अच्छी इमारतें
हैं। सरौते, बरछे, कटारी आदि लोहे का सामान अच्छा बनता
है। डग के समीप इकासरागांव में शिवजी का प्राचीन मंदिर है

गंगधार—यहां से चोल के थान, जाजम, फरदें और आव
के रंगीन वस्त्र विदेश को बहुत जाते हैं। रामानुज सम्प्रदाय का
मठ और नौगजे पीर का चबूतरा देखने लायक स्थान हैं। राव
तपुर में एक प्रसिद्ध झरना है, यहांपर सिंध नदी का पानी पच्चीस,
तीस फीट की ऊँचाई से गिरता है।

पंचपहाड़—पांच पहाड़ियों से घिरा हुआ पिपलाज
नदी के किनारेपर अच्छा कस्बा है। मिसरोली में अन्नपूर्णा देवी
का मन्दिर है।

२१—राजपूताने के भूगोल का निचोड़.

संख्या	नाम राज्य	रईस का लकब	जाति	राज किस सन में हुआ	सलामी की तोप		क्षेत्रफल वर्ग मीलों में	जन संख्या वा आबादी १९११ ई०	सालियान आमदनी रुपयों में	सरकारी खिराज रुपयों में	औसतन साल इंचों में
					राजकी	जिला					
१	बीकानेर	महाराजा	राठौर	१४७२	१७	०	२३३१५	७००९८३	३६०००००	०	११
२	जोधपुर	महाराजा	राठौर	१२१३	१७	०	३४९६३	२०५७५५३	५७०००००	२२५०००	१३
३	जैसलमेर	महारावल	यादव	८००	१५	०	१६०६२	८८३११	१०००००	०	७
४	सिरोही	महाराव	चौहान	१३१४	१५	०	१९६४	१८९१२७	४०००००	६८८१	२१
५	उदयपुर	महाराणा	शीशोदिया	७३४	१९	२१	१२७५६	१२९३७७६	३००००००	२०००००	२५
६	बांसवाड़ा	महारावल	शीशोदिया	१५३०	१५	०	१९४६	१८७४६८	१५००००	२२५००	४०
७	परतापगढ़	महारावत	शीशोदिया	१४८४	१५	०	८८६	६२७०४	३०००००	३६३००	३४
८	डूंगरपुर	महारावल	शीशोदिया	१३२५	१५	०	१४४७	१५९१९२	२५००००	१७५००	२५
९	जयपुर	महाराजा	कछवाहा	९६७	१७	२१	१५५७९	२६३६६४७	६५०००००	४०००००	२३
१०	किशनगढ़	महाराजा	राठौर	१६०८	१५	०	८५८	८७१९१	५०००००	०	२०

राजपूताने के भूगोल का निचोड़

संख्या.	नाम राज्य	रईस का लक़ब	जाति	राज स्थापन सन् ई०	सलामी की तोप राजकी	सलामी की तोप निजी	क्षेत्रफल वर्ग मीलों में	जन संख्या वा आबादी १९.११ ई०	सालियानां आमदनी रुपयों में	सरकारी खिराज रुपयों में	औसत वर्षा साल में इंच
११	लावा	राजा	नरूका	१८६७	०	०	१९	२५६४	५१०००	२२५	२२
१२	अलवर	महाराजा	नरूका	१७७६	१५	०	३१४१	७९१६८८	३३०००००	०	२२
१३	भरतपुर	महाराजा	जाट	१७१०	१७	०	१९८२	५५८७८५	३१०००००	०	२५
१४	धौलपुर	महाराजराणा	जाट	१७६१	१५	०	११५५	२६३१८८	११०००००	०	२६
१५	करौली	महाराजा	यादव	११००	१५	१७	१२४२	१४६५८७	५०००००	०	२९
१६	टौंक	नव्वाब	पठान	१८००	१५	१७	२५५३	३०३१८१	११०००००	०	३२
१७	बूंदी	महारावराजा	चौहान	१३४२	१७	०	२२२०	२१८७३०	६०००००	१२००००	२०
१८	शाहपुरा	राजाधिराज	सीसोदिया	१६३०	०	०	४०५	४७३२७	३०००००	१००००	२६
१९	कोटा	महाराव	चौहान	१६२५	१७	०	५६८४	६३९०८९	३१०००००	४३५०००	३१
२०	झालावाड़	राजराणा	झाला	१८३८	१५	०	८१०	९६२७१	५०००००	३००००	३७

अभ्यासार्थ प्रश्नोत्तर.

प्रश्न—निज़ामत किसे कहते हैं ?

उत्तर—निज़ामत देश के उस बड़े विभाग का नाम है जिस में एक नाज़िम के आधीन कई एक तहसीलें हों।

प्रश्न—बीकानेर की निज़ामतों के नाम लो ?

उत्तर—बीकानेर, सुजानगढ़, रेणी और सूरतगढ़।

प्रश्न—राजपूताने में ऊंची भूमि किधर को है और यह कैसे जाना ?

उत्तर—राजपूताने की ज़मीन बीकानेर आदि की तरफ उत्तर को ऊंची है क्योंकि उस ओर को यहां की कोई नदी नहीं बहती है।

प्रश्न—चम्बल नदी की सहायक नदियों के नाम लो ?

उत्तर—क्षिप्रा, काली सिंध, मेज, पारबती और बनास।

प्रश्न—राजपूताने में सरकारी फौज की छावनियां कहां२ हैं।

उत्तर—एरनपुरा, देवली, नसीराबाद, कोटरा और खैरवाड़े में।

प्रश्न—मारवाड़ में नमक कहां२ पर बनाया जाता है ?

उत्तर—सांभर, डीडवाणा, फलोदी और पचभद्रे में।

प्रश्न—जयपुर और जोधपुर की पुरानी राजधानियों के नाम लो ?

उत्तर—जयपुर की पुरानी राजधानी आमेर और जोधपुर की मंडोर है।

प्रश्न—जोधपुर की क्या चीज मशहूर है ?

उत्तर—अनार।

प्रश्न—वह कौनसे बड़े ठिकाने हैं जिनकी आमदनी यहां की कई एक रियासतों से भी अधिक है।

उत्तर—सीकर और खेतड़ी यह दोनों ठिकाने राज जयपुर में हैं, सीकर की आमदनी ७००००० रुपय और खेतड़ी की ६००००० रुपये सालियाना है।

प्रश्न—राजपूताने में सब से अधिक और सब से कम वर्षा कहां होती है?

उत्तर—सब से अधिक आबू के पहाड़ पर और सबसे कम जैसलमेर में।

प्रश्न—हाथीदांत के चूड़े आदि कहां अच्छे बनते हैं?

उत्तर—बीकानेर जोधपुर, पाली, मेढ़ता और किशनगढ़ में

प्रश्न—राजपूताने में सब से कम आबाद रियासत कौन है?

उत्तर—जैसलमेर।

प्रश्न—जैसलमेर में किस चीज़ की प्रसिद्ध खान है?

उत्तर—पीले और लालमाइलस्याह पीले छींटेदार पत्थर की।

प्रश्न—सिरोही क्यों मशहूर है?

उत्तर—तलवार, सरोता, पेशकब्ज़ और कटारी के लिये।

प्रश्न—आबू को कहां से सड़क जाती है।

उत्तर—खराड़ी (आबूरोड) से।

प्रश्न—आबू क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर—आबू की आबहवा और देलवाड़े के जैन मन्दिर लायक तारीफ़ के हैं।

प्रश्न—राजपूताने में रुई और सूतके बड़े कारखाने कहां२ हैं

उत्तर—ब्यावर और किशनगढ़ में।

प्रश्न—राजपूताने में घोड़े और ऊँट कहां के अच्छे होते हैं

उत्तर—घोड़े मालानी राज मारवाड़ के और ऊँट बीकानेर और जैसलमेर के प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न–कोटा चम्बल नदी के कौन से किनारे पर है।

उत्तर–दाहिने किनारे पर।

प्रश्न–मेवाड़ की क्या चीज प्रसिद्ध है।

उत्तर–अफीम।

प्रश्न–उदयपुर की बड़ी२ झीलों के नाम लो?

उत्तर–जयसमंद, राजसमंद, उदयसागर और पीछोला।

प्रश्न–मेवाड़ में दो बड़े रुतबे के ठिकाने कौन से हैं?

उत्तर–सलूंबर और देवगढ़।

प्रश्न–अगर हम ब्यावर से रेलके रास्ते आगरे को जावें तो कौन२ बड़े शहर और क़स्बे पड़ेंगे।

उत्तर–अजमेर, किशनगढ़, नरेणा, फलेरा, जयपुर, दौसा, बांदीकुई और भरतपुर।

प्रश्न–दक्षिणी राजपूताना स्टेट एजेन्सी में कौन२ रियासतें हैं

उत्तर–डूंगरपुर, बांसवाड़ा और परतापगढ़।

प्रश्न–जयपुर, जोधपुर और उदयपुर की रियासतें किस२ बात में बड़ी हैं।

उत्तर–जयपुर आमदनी और आबादी में, जोधपुर क्षेत्रफल में और उदयपुर मान मर्यादा में।

प्रश्न–माही और सोम नदी के संगमपर डूंगरपुर का कौनसा तीर्थ स्थान है?

उत्तर–बाणेश्वर।

प्रश्न–कहां के निवासियों में अधे से ज़ियादा भील हैं।

उत्तर–बांसवाड़ा के।

प्रश्न–बांसवाड़े के बड़े२ ठिकाने बताओ?

उत्तर–कुशलगढ़ और गढ़ी।

प्रश्न—प्रतापगढ़ क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर—यहां का टेवा (मीनाकारी) अच्छा होता है।

प्रश्न—जयपुर में देखने लायक स्थान कौन२ हैं ?

उत्तर—रामनिवास बाग, राजके मन्दिर और महलात, गलता, घाट और आमेर के महल।

प्रश्न—मेवाड़ और मारवाड़ को क्या अलग करता है?

उत्तर—अरावली व आडावाला पहाड़।

प्रश्न—राजपूताने में शेर कहां का प्रसिद्ध है?

उत्तर—बूंदी का।

प्रश्न—सांगानेर नकशे में बताओ और क्यों मशहूर है ?

उत्तर—सांगानेर जयपुर में है और यहां की रंगाई छपा प्रसिद्ध है।

प्रश्न—राजपूताने में तामड़े की खानें कहां२ हैं ?

उत्तर—किशनगढ़ में सरवाड़ के पास और जयपुर में राज महल के नज़दीक में।

प्रश्न—दादू पंथी साधुओं और राम सनेही साधुओं के मुख गुरु द्वारे बताओ ?

उत्तर—दादू पंथियों का गुरुद्वारा नरेणा (जयपुर) में औ राम सनेही साधुओं का शाहपुरा में है।

प्रश्न—निज़ामत शेखावाटी का सदर स्थान बताओ ?

उत्तर—झुंझुनू ?

प्रश्न—रियासत अलवर की वार्षिक आमदनी कितनी है।

उत्तर—३२००००० रुपये।

प्रश्न—डीग कहां है और क्यों मशहूर है ?

उत्तर—डीग भरतपुर के उत्तर को है यहां के भवन औ फुव्वारे बहुत प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न–धौलपुर में कौन सा बड़ा मेला भरता है ?

उत्तर–शरद पूनौं का जो दशहरे से दिवाली तक रहता है।

प्रश्न–टोंक की कौन२ तहसीलें सेन्ट्रल इंडिया में आन पड़ी हैं।

उत्तर–सिरोंज, छबड़ा और पिरावाकी तहसीलें।

प्रश्न–राजपूताने में चौहानों की कौन२ रियासतें हैं ?

उत्तर–बूंदी, कोटा और सिरोही।

प्रश्न–बूंदी की रियासत में पान कहां पैदा होते हैं ?

उत्तर–लाखेरी और नैनवा में।

प्रश्न—कोटे की क्या चीज़ प्रसिद्ध है ?

उत्तर–मलमल, महमूदी, डोरिया आदि बारीक वस्त्र।

प्रश्न–धौलपुर चम्बल नदी के कौनसे किनारे पर है ?

उत्तर–बाएँ किनारे पर।

प्रश्न—करौली के महाराज क्या कहलाते हैं ?

उत्तर–यदुकुल चन्द्रभान।

प्रश्न–करौली में पान कहां का प्रसिद्ध है ?

उत्तर–माशलपुर का।

प्रश्न—अगर धौलपुर से लेकर जैसलमेर तक एक सीधी सड़क बनाई जावे तो वह कौन२ रियासतों में होकर गुजरेगी ?

उत्तर—धौलपुर, करौली, जयपुर, किशनगढ़, जोधपुर और जैसलमेर की रियासतों में होकर जावेगी।

प्रश्न—झालावाड़ की तहसीलों के नाम लो !

उत्तर–पाटन, आवर, डग, गंगधार पंचपहाड़।

प्रश्न—गंगाधर से कौन२ चीज़ें बाहर को जाती हैं ?

उत्तर—चोल (लुंगी) के थान, जाजमें, फरदें और आलके रंगीन वस्त्र।

प्रश्न–कुओं में पानी कहां बहुत नीचा है ?

उत्तर–बीकानेर और मारवाड़ में फलोदी की तरफ।

प्रश्न–देशनोक कहां है और क्यों मशहूर है ?

उत्तर–देशनोक रियासत बीकानेर में है, यहां करणी माता का प्रसिद्ध मन्दिर है।

प्रश्न–राजपूताने में साहूकारा कहां पर बहुत है ?

उत्तर–बीकानेर और शेखावाटी में।

प्रश्न–मेवात कौनसा इलाका कहलाता है ?

उत्तर—अलवर का पूर्वी और भरतपुर का पश्चिमोत्तर हिस्सा।

प्रश्न—ढूंढार किसे कहते हैं।

उत्तर–जयपुर के इलाके को।

प्रश्न—बाणगंगा का दूसरा नाम क्या है ?

उत्तर—उटङ्गन नदी।

प्रश्न—कोटा की रियासत किधर को ऊँची है ?

उत्तर—दक्षिण की तरफ।

प्रश्न–हाड़ोती में कौन२ रियासतें गिनी जाती हैं ?

उत्तर–बूंदी, कोटा और शाहपुरा।

प्रश्न–मारवाड़ का ढाल किधर को है ?

उत्तर–दक्षिण पश्चिम को।

प्रश्न–अजमेर के पहाड़ो के नाम लो ?

उत्तर–तारागढ़, नागपहाड़, मदारपहाड़।

प्रश्न–जयपुर की रियासत में कौन२ नदियां बहती हैं ?

उत्तर–चम्बल, बनास, बांडी, साबी, बाणगंगा, ढूंढ, गम्भीर डाई, मोरेल और माशी।

प्रश्न-बनास नदी के किनारे सबसे बड़ा शहर कौन है ?

उत्तर-टोंक ।

प्रश्न-जयपुर का कौनसा इलाका अलवर के उत्तर को है?

उत्तर-कोटकासिम ।

प्रश्न-मेवाड़ में जो टोंककी तहसील है उसका नाम बताओ ?

उत्तर—नींबाहेड़ा ।

प्रश्न-किशनगढ़ के उत्तर में क्या है ?

उत्तर-मारवाड़ ।

प्रश्न-मारवाड़ में गायें और बैल कहां के उत्तम होते हैं ?

उत्तर-गायें सांचोर की और बैल नागोर के ।

प्रश्न-कौनसा कस्बा दो रियासतों के सीर में है ।

उत्तर—सांभर ।

प्रश्न-बीकानेर में सर्कार अङ्गरेज की मदद को जो ऊंटों का रिसाला है उसका क्या नाम है ?

उत्तर-गंगारिसाला ।

प्रश्न-लोइयां कहां की अच्छी होती हैं ?

उत्तर-बीकानेर की ।

प्रश्न-मेडता कहां है और क्यों प्रसिद्ध है ?

उत्तर-मारवाड़ में और वहां का साबुन, खस, ऊन और हाथीदांत का काम प्रसिद्ध ।

प्रश्न-राजकुमारों के पढ़ने के लिये राजपूताने में कहां पर और कौनसा कालेज है ?

उत्तर-अजमेर में म्योकालेज ।